॥ श्रीः ॥

निवेदन ।

—

इस पुस्तकके रचयिता भी वही, स्वर्गके रत्न आदिके कर्त्ता पण्डितवर अमृतलाल सुंदरजी पढ़ियार हैं । इसका नाम भाग्य फेरनेकी कुंजी है । समझदार पाठक इसको ध्यानसे पढ़ेंगे तो अवश्य स्वीकार करेंगे कि सचमुच यह भाग्य फेरनेकी कुंजी है। भाग्यके विषयमें हमारे ही देशमें नहीं सारे संसारमें तरह तरहके मत प्रचलित हैं । अधिकांश लोग इसके उलझनमें पड़कर आलस्य और लापरवाहीके दास बनजाते हैं और शोक दुःख कष्टके शिकार बनकर अपनी अनमोल जिन्दगी नाहक बिगाड़ते हैं । इस पुस्तकके पढ़नेसे उन्हें विपदसे छूटनेका उपाय सूझेगा, मनचाही उन्नति करनेका मार्ग दिखाई देगा, अपनी जिंदगी सुधारनेका मन करेगा और फिर ऐसा करनेपर आप सुख और शांति भोगकर दूसरे प्राणियोंको सुखी बनानेका अवसर मिलेगा ।

यही सोचकर मैंने गुजराती भाषासे इसको हिन्दीमें लिखा है । हिन्दी पाठकोंसे मेरा निवेदन है कि इसको एकाग्रचित्तसे पढ़ें, इसके उपदेशोंको अपने चित्तमें बिठालें और उनपर अमल करें । फिर तो भाग्य पलटते देर नहीं लगेगी ।

गहमर
देवोत्थान एकादशी १९७३ } महावीरप्रसाद गहमरी

ग्रंथकारकी प्रस्तावना ।

पन्द्रह वर्ष पहले जब मैंने पहलेपहल थियासोफीकी पुस्तकें पढ़ीं तो उनमें विचार सम्बन्धी बातें मेरे देखनेमें आयी थीं और वे बातें मुझे बहुत पसन्द आयी थीं। इसके बाद मेरे जीमें खयाल आया कि विचारके बलकी बातें हमारे भाई बहन समझें तो उनको बड़ा लाभ हो। ज्यों ज्यों विचारोंका असर, विचारोंका बल, विचारोंकी महत्ता और विचारोंकी शक्ति मेरी समझमें आती गयी त्यों त्यों मेरा यह खयाल जमता गया कि अगर एक आदमीके हृदयमें भी एक भी अच्छा विचार डाला जा सके तो बड़ी भारी सेवा हो। ऐसा खयाल जमनेसे विचारों की शक्ति समझानेवाला लेख लिखनेकी मेरी इच्छा हुई। उसी से यह पुस्तक बनी है।

इस संसारसे और प्राणीमात्रसे गरीबी दुःख रोग, बुढ़ापा और मौत घटाना सबसे अधिक जरूरी है। इसीके लिये जगतके सब शास्त्र, सब धर्म, सब विद्याएं, सब कलाएं और सब तरहके शिल्प तथा रोजगार हैं। इसलिये प्राणियोंको हैरान करनेवाले इन सब तरहके दुःखोंको घटाने तथा मिटानेकी कुंजियां इस पुस्तकमें बतायी हैं। ये सब बातें पहले दिलमें बैठें और फिर जीवनमें बरती जायं तो इनसे काम बनजाय। अनेक प्रकारके दृष्टान्त दलीलोंसे, विद्वानोंके अनुभव और शास्त्रके प्रमाणोंसे इस पुस्तकमें यह साबित किया है कि अगर हम चाहें

तो बहुत कुछ कर सकते हैं इतना कि जिसकी कुछ सीमा नहीं। इतनी बड़ी शक्ति हममें है और उस शक्तिसे काम लेना अपने हाथमें है, वह शक्ति अपने अधिकारमें है और वह शक्ति बाहर निकलनेके लिये अन्दरसे पंख फड़फड़ा रही है। उसे जरा हवा देनेका काम इस पुस्तकमें किया है। जैसे—आत्मिक बलके खिलनेके लिये शुभेच्छा और उत्तम विचारों की कितनी बड़ी जरूरत है तथा विचारोंका असर, विचारोंकी गति, विचारोंका बल, विचारोंका स्वभाव, विचार बदलनेकी युक्ति, विचार विकसानेकी कला, भाग्य बदलनेमें विचार किस तरह उपयोगी होसकते हैं इसका खुलासा और अपने विचारोंको परमात्मातक पहुंचानेके रास्ते इस पुस्तकमें बताये हैं। मेरा विश्वास है कि विचारोंके बलका जितना अधिक भेद लोग समझेंगे उतना ही उनका तथा देशका लाभ होगा। इसलिये विचारोंका बल समझानेवाले विशेषरूपसे जानने योग्य मुख्य मुख्य विषय इस पुस्तकमें बताये हैं।

विचारोंका बल समझानेवाली और अपनेमें बहुत कुछ करा सकनेकी सामर्थ्य साबित करनेवाली पुस्तकोंका प्रचार लोगोंमें जितना होसके करना चाहिये। इसलिये अमीरोंको चाहिये कि ऐसी पुस्तकें गरीब लोगोंमें मुफ्त बांटनेकी कृपा करें। ऐसा न होसके तो बहुत कम या लागत दामपर ऐसी पुस्तकें लोगोंको देनी चाहिये। मेरी ऐसी ही इच्छा है परन्तु लाचार हूं कि मुफ्त देनेका सुबीता नहीं मिला। तथापि भावनगरके एक स्नेही सद्गृहस्थ वकील दामोदरदास हीराचन्दने अपनी स्वर्गीया धर्मपत्नीके स्मरणार्थ लागत दामपर देनेका सुबीता कर दिया है। इसके लिये मैं उक्त सज्जनका मान सहित उपकार मानता हूं।

यह भाग्यकी कुंजी पढ़कर अपना गरीब भाग्य फेरनेका हजारों मनुष्योंको मन हो और कोई कोई भाग्यशाली मनुष्य इसके अनुसार चलें तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूंगा ।

बम्बई संवत् १९६५ असाढ़ सुदी २

वैद्य अमृतलाल सुंदरजी पढ़ियार चोरवाड़कर ।

भाग्य फेरनेकी कुञ्जी।

भाग्य माने क्या ?

जब कोई अच्छी या बुरी बात होती है और जिसमें अपना अखतियार नहीं चलता या अपनी कल्पना नहीं पहुंचती उस समय आदमी अपने कपार पर हाथ रखता है और कहता है कि हमारा भाग्य ! हमारी जिन्दगीमें ऐसी बहुतेरी घटनाएं हुई हैं और होती हैं जिनमें हम अपने भाग्यका दोष देते हैं और दूसरे आदमियोंको भी दोष देते सुनते हैं। इसलिये हमको यह जानना चाहिये कि भाग्य माने क्या, और हमारे भाग्यको किसने बनाया। क्योंकि जो सुख हमें पसन्द है वह भी भाग्यसे होता है और जो दुःख हमें नापसन्द है वह भी भाग्यसे होता है। इससे हमारा भाग्य कहांसे आया ? हमारे भाग्यको किसने बनाया ? यह जानना बहुत ज़रूरी है। कितने ही आदमी बिना कुछ अधिक सोचे बिचारे कह बैठेंगे कि यह कौन बड़ी बात है ! भाग्य को और दूसरा कौन बनावेगा ? भगवानने भाग्य बनाया है।

हमारे भाग्यको प्रभु नहीं बनाता।

भाइयो ! बिना कुछ सोचे बिचारे ऐसा कह देना बड़ा सहज है पर ज़रा अधिक ध्यानसे चित्त लगाकर विचार कीजिये तो तुरत ही मालूम होगा कि भगवान तो (भगवद्गीतामें) ऐसा कहता है—

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते।

अध्याय ५ श्लोक १४

आदमियोंमें जो कर्तापन है अर्थात् "यह काम मैं करता हूं" इसमें जो मैंपन है वह तथा कोई काम करनेकी इच्छा या प्रेरणा जिसको कर्त्तापन कहते हैं उसको प्रभु नहीं बनाता। इसी तरह आदमी जो कर्म करते हैं उस कर्मको भी प्रभु नहीं बनाता और कर्मका जो फल मिलता है उस फलको कर्मके साथ संयोग कर देनेका काम भी प्रभु नहीं करता। परन्तु प्रभु कहता है कि यह सब स्वभावसे ही होता है। अर्थात् प्रकृतिके-कुदरतके नियमसे ही यह सब होता है। मैं इसमें कुछ नहीं करता और न किसीसे कुछ कराता हूं।

प्रभु कुछ नहीं करता इतना ही नहीं, इससे भी आगे बढ़कर वह कहता है कि मैं सब करता हूं तौभी मैं कुछ नहीं करता और सब विकारोंसे अलग हूं ऐसा तू समझ। जब तू ऐसा समझेगा तभी तेरा उद्धार होगा। इसके बिना तेरा उद्धार होनेका नहीं। इस विषयको अच्छी तरह समझानेके लिये प्रभु कहता है कि—

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं, गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां, विद्ध्यकर्तारमव्ययम्॥

अ० ४ श्लो० १३

मैंने गुण और कर्मके भेदसे (ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) चार वर्ण सिरजे हैं। अर्थात् गुण और कर्म विचार कर मैंने वर्ण बनाये हैं इससे मैं उनका कर्ता हूं तौभी मुझे अकर्त्ता जान और विकार रहित जान।

यह तो हुई जगतकी उत्पत्तिके समय चार वर्ण बनाये उसकी

बात और इसमें अपना अकर्त्तापन बताया, पर इससे भी आगे बढ़कर प्रभु कहता है कि तुम्हारे शरीरमें मैं हूं तौभी मैं कुछ नहीं करता। इसलिये प्रभु कहता है कि

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः।
शरीरस्थोऽपि कौंतेय न करोति न लिप्यते॥

अ० १३ श्लो० ३२

हे अर्जुन! ईश्वर अनादि है, निर्गुण है और ऐसा है कि उसमें कुछ फेरफार नहीं होता। वह शरीरमें है तौभी कुछ नहीं करता और अच्छी या बुरी किसी बातसे उसका कुछ सम्बन्ध नहीं है।

क्योंकि प्रभु कहता है कि—

न मां कर्माणि लिम्पंति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बद्धयते॥

मुझे कर्मके फलकी इच्छा नहीं है इससे कर्म मुझको बन्धनमें नहीं डालता। और जो मनुष्य मुझको ऐसा समझता है कि प्रभु न कुछ करता है और न कराता है; निरंजन निरंकार, अकर्त्ता, अभोक्ता, अव्यय, निर्गुण, कूटस्थ, अचिन्त्य और अविकारी है वह मनुष्य भी कर्मके बन्धनमें नहीं पड़ता।

अब विचार कीजिये कि ऐसी खरी बात होने पर भी, ऐसी खरी आज्ञा होनेपर भी हम ईश्वरको अपने भाग्यका बनानेवाला समझते हैं तो यह हमारी कितनी भारी भूल है? कितना बड़ा अज्ञान है? और प्रभुसे कितनी बड़ी विमुखता है? यह बात बार बार विचारने योग्य है क्योंकि प्रभु कहता है कि जो मुझको 'अकर्त्ता' समझता है अर्थात् ऐसा समझता है कि मैं कुछ नहीं करता और न किसीसे कराता हूं वही ठीक समझता है, वह

कर्ममें नहीं फंसता। और जो कर्ममें नहीं फंसता उसकी मुक्ति होती है। इसलिये हर एक हरिजनको चाहिये कि प्रभुको "अकर्त्ता" समझे। इसके बदले हम यह समझते हैं कि हमारे भाग्यका बनानेवाला परमेश्वर है। यह समझ बहुत ही खोटी है। यह विचारना चाहिये कि ऐसी भारी भूल हमसे क्यों होती है।

इसके लिये प्रभु कहता है—

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्॥

अ० ७ श्लो० १३

(सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण इन) तीन गुणवाले स्वभावपर यह सारा जगत मोहित है। इससे यह नहीं जानता कि मैं इन तीनों गुणोंसे अलग हूं, श्रेष्ठ हूं और विकाररहित हूं।

प्रभु और कहता है—

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्॥

अ० ७ श्लो० २५

मैं योगमायासे ढका हुआ होनेसे सबको दिखाई नहीं देता। इससे मोह पाये हुए आदमी नहीं समझते कि मैं विना जन्मके हूं और विना विकारके हूं।

ईश्वरका निर्विकारी स्वरूप लोगोंकी समझमें नहीं आता इसीसे आदमी प्रभुको अपने भाग्यका कर्त्ता समझते हैं, परन्तु यह भूल अज्ञानतासे ही होती है यह बात खुलासः तौरसे समझानेके लिये महात्मा श्रीकृष्णने फिर कहा है—

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः॥

अ० ५ श्लो० १५

सर्वव्यापक ईश्वर न तो किसीका पाप लेता है और न पुण्य लेता है । परन्तु मायाके अज्ञानके कारण ईश्वरका ज्ञान ढक गया है इससे पशु समान बने हुए जीव मोह जाते हैं ।

अगर प्रभु हमारे भाग्यको बनाता तो फिर पाप पुण्यकी जिम्मेवारी हमपर क्यों होती ?

श्रीमद्भगवद्गीताके इनसब वचनोंसे पाठकोंको विश्वास होगा कि ईश्वर हमलोगोंके भाग्यका बनानेवाला नहीं है ; वह तो सबसे श्रेष्ठ और सबसे अलग है । इसलिये अपने भले बुरे भाग्यका दोष ईश्वरपर न डालना चाहिये, बल्कि इस विषयमें ध्यान पूर्वक ऐसी जांच पड़ताल करनी चाहिये जिससे मनका समाधान हो । ज़रा और गहरा विचार करें तो तुरत ही यह सवाल पैदा होता है कि अगर प्रभु हमारे भाग्यको बनाता तो फिर बुरे कर्म का पाप हमें क्यों लगता ? और भले कर्मका पुण्य हमें क्यों मिलता ? क्योंकि प्रभु हमारे नसीबमें जैसा लिख देता वैसा होता । अगर प्रभुने हमारा भाग्य खराब लिख दिया और उससे कोई खराबी हमारे हाथसे हुई तो उसमें हमारा क्या दोष ? भगवानका लेख झूठ नहीं होता । वह जैसा लिखेगा वैसा होगा इसमें कहना ही क्या है ? और जब उसकी मर्जीसे उसके लिखनेसे होगा तो उसे हम कैसे रोक सकेंगे ? नहीं रोक सकते । इससे अगर हमारे भाग्यको प्रभु बनाता तो हमारे ऊपर किसी तरहकी जिम्मेवारी नहीं रहती । परन्तु हम जानते हैं कि हमारे ऊपर पाप पुण्यकी बहुत बड़ी जिम्मेवारी है इसलिये यह बात अच्छी तरह समझना चाहिये कि हमारा भाग्य कौन बनाता है और वह कैसे बनता है ।

अगर ईश्वर हमारे भाग्यको बनाता तो वह न्यायी न कहलाता।

दूसरे यह भी विचारना चाहिये कि अगर हर एक आदमीका भाग्य ईश्वर बनाता तो वह न्यायी नहीं कहलाता। क्योंकि हम देखते हैं कि कोई राज करता है, कोई झाड़ू देता है, कोई स्त्री बालविधवा होती है, कोई कोढ़ी होता है, कोई विचारक होता है, कोई जेलमें सड़ता है, कोई मालदार होता है, कोई रोटीके एक टुकड़ेके लिये तड़प तड़पकर मरता है, कोई बचपनमें मरजाता है और कोई लम्बी उमर पाता है। अगर प्रभु न्यायी और दयालु हैं तो संसारमें ऐसी ऐसी विषमताएं क्यों होती हैं? इससे अगर ईश्वरको अपने भाग्यका बनानेवाला समझें तो उसमें ऐसी ही ऐसी कितनी ही शंकाएं खड़ी होती हैं और आदमी बड़ी उलझनमें पड़जाता है। ऐसा न होने देनेके लिये शास्त्रकी आज्ञानुसार हमें ईश्वरको अकर्त्ता और अविकारी समझना चाहिये।

हम किसकी प्रेरणासे पाप करते हैं?

अब यह प्रश्न खड़ा रह जाता है कि हमारे भाग्यको किसने बनाया। और हम पाप करते हैं तो किसकी प्रेरणासे? यह शंका होती है। यह शंका हमको ही नहीं होती है बल्कि हमेशा भगवानके पास रहनेवाले अर्जुन जैसे उत्तम अधिकारीको भी यह शंका हुई थी। उसने श्री कृष्ण भगवानसे पूछा—

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

अ० ३ श्लो० ३६

हे वृष्णीकुलमें उत्पन्न श्रीकृष्ण! पाप करनेकी इच्छा न रहने

पर भी मानो किसीके खिंचावसे लाचार होकर आदमी पाप करते हैं। इस प्रकार आदमीको पापकी ओर झुकानेवाला कौन है मुझे बताइये। इसके उत्तरमें प्रभु कहता है–

मनुष्योंको पापमें खींचनेवाली उनकी विषय भोगनेकी तृष्णा है।

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशना महापाप्मा विध्येनमिह वैरिणम् ॥

अ० ३ श्लो० ३७

आदमीको पापमें खींच ले जानेवाली उसकी विषय भोगनेकी तृष्णा है। यह तृष्णा बाहरसे अच्छी तरह नहीं दिखाई देती और भीतर भी बहुत गहरे है; उसको काम कहते हैं। यह काम ही क्रोध बन जाता है। यह काम रजोगुणसे पैदा होता है, इससे ऐसा है कि कुछ न कुछ नयी इच्छा किया ही करता है और कभी शान्त नहीं रहता और बड़ा खवक्कड़ है इससे चाहे जितने समय तक चाहे जितना भोग भोगनेको मिले तो भी इसकी तृप्ति नहीं होती। यह बड़े तेज स्वभावका महापापी है। इस कामको तू अपना शत्रु समझना।

यह श्लोक कहकर प्रभु समझाता है कि तेरी इच्छा, तेरी वासना, तेरे पूर्वका संस्कार, तेरी तृष्णा, तेरी आसक्ति, तेरा रागद्वेष, तेरा मोह, तेरा अज्ञान, तेरा स्वार्थ और तेरी इन्द्रियोंकी विषय भोगनेकी लालसा ये सब जिनका छोटासा नाम काम है तुझे कर्मकी ओर प्रेरणा करते हैं।

प्रभु कहता है कि मैं तेरे भाग्यका बनानेवाला नहीं हूं, तू ही अपने भाग्यका बनानेवाला है।

यह स्पष्ट बताकर प्रभु समझाता है कि मैं तेरे भाग्यका बनानेवाला नहीं हूं, तू ही अपने भाग्यका बनानेवाला है। यह कैसे ? प्रभु बताता है–

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते ।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
अ० २ श्लो० ६२

इन्द्रियोंको जो जो विषय भोगनेका मन होता है उन विषयोंकी चिन्ता मनुष्य किया करता है। इस चिन्ताके कारण उन विषयोंपर उसे प्रेम पैदा होता है; प्रेमके कारण उन विषयोंका सुख भोगनेकी इच्छा उसको होती है। परन्तु सब इच्छाएं पूरी नहीं हो सकतीं इससे भोगनेकी इच्छाओंमेंसे क्रोध उत्पन्न होता है। और पीछे–

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥
अ० २ श्लो० ६३

क्रोधसे बहुत मोह पैदा होता है और बहुत मोहके कारण याद रखनेकी शक्ति भटक जाती है; इससे क्या अच्छा है क्या बुरा है और यह काम करने लायक है या नहीं, इसका कुछ खयाल नहीं रहता। याद रखनेकी शक्ति घटजानेसे बुद्धि नष्ट होजाती है और बुद्धिका नाश होनेसे अपना नाश हो जाता है।

अब प्रभु यह बताता है कि काम किस तरह ज्ञानको ढक देता है।

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथाऽऽदर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

अ० ३ श्लो० ३८

जैसे धूआं आगको ढक देता है, मैल आइनेको ढक देता है और झिल्लीका पर्दा गर्भको ढक देता है वैसेही काम ज्ञानको ढक देता है। इतना ही नहीं बल्कि-

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौंतेय दुष्पूरेणानलेन च॥

अ० ३ श्लो० ३९

हे अर्जुन! यह काम अग्निकी तरह जलाया करता है। यह किसी तरह किसी दिन शान्त नहीं होता और ज्ञानियोंका तो हमेशाका वैरी है। यह काम ज्ञानको ढक देता है।

हमारा स्वभाव ही हमसे अच्छा बुरा कर्म कराता है।

इस प्रकार पहले जीवकी विषय भोगनेकी इच्छाके कारण ही मोह होता है और मोहके कारण ज्ञान छिप जाता है। इससे मोह दिन दिन बढ़ता जाता है और विषय भोगनेकी इच्छाएं जिनको काम कहते हैं रोज रोज बढ़ती जाती हैं और मजबूत होती जाती हैं। ये वासनाएं स्वभावके रूपमें आजाती हैं। स्वभावका जोर इतना बड़ा है कि जो काम हमारे करने लायक नहीं है वह काम भी हमको अपनी इच्छाके विरुद्ध जबरन करना पड़ता है। याद रखना कि यह हमसे और कोई कुछ नहीं कराता बल्कि हमारा स्वभाव ही हमसे सब काम कराता है। इसके लिये श्रीमद्भगवद्गीतामें श्रीकृष्ण भगवानने अर्जुनसे कहा है कि-

यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति॥

अ० १८ श्लो० ५९

अहंकारके वश होकर अगर तू यह समझता हो कि मैं युद्ध नहीं करूंगा तो तेरा यह निश्चय गलत है। तेरा स्वभाव जरूर तुझे युद्धमें लगावेगा। क्योंकि,

स्वभावजेन कौंतेय निबद्धः स्वेन कर्मणा।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्॥

अ० १८ श्लो० ६०

हे अर्जुन! तू अपने कर्मोंसे ही स्वभावमें बंध गया है; इसलिये इस समय मोहके कारण जो काम करनेकी तेरी इच्छा नहीं है वह काम भी परवश होकर अपने स्वभाव के कारण तू करेगा।

भाइयो! स्वभावमें इतना बड़ा बल है कि वह मनुष्यको पराधीन बना डालता है; अर्थात् आदमी अपनी इच्छाके अनुसार नहीं चल सकता, स्वभावके अनुसार उसको चलना पड़ता है। यह स्वभाव हमारे रोज रोजके कामकाजसे ही बनता है और हमारे रोजके कामकाज हमारी आशा तृष्णासे यानी कामसे होते हैं; इतना ही नहीं बल्कि इन कामोंके अनुसार ही हमको फल मिलता है; इससे हम अपने खराब कामोंसे ही बन्धनमें पड़ते हैं और अच्छे कामसे ही हमारा उद्धार होता है। इसीलिये प्रभुने भी कहा है

तुमको अपने कर्मोंसे ही तरना है।

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु॥

अ० १८ श्लो० ४५।

अपने अपने कर्ममें लगेहुए मनुष्य अच्छीसे अच्छी और बड़ीसे बड़ी सिद्धि पाते हैं। कैसे पाते हैं सुन—

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विंदति मानवः॥

अ० १८ श्लो० ४६

जिससे यह जगत उत्पन्न हुआ है और जो सबमें व्याप रहा है, उस ईश्वरको अपने अपने कर्मसे अच्छी तरह पूजकर मनुष्य सिद्धि पाते हैं।

मतलब यह कि अपनी जिन्दगीका फर्ज अदा करने, शास्त्रमें कहे हुए अच्छे काम करने और भगवानकी इच्छानुसार चलकर अपने अपने स्वभावसे पैदा हुए तथा देशकाल और संयोगसे मिले हुए कर्म अच्छी तरह करनेका नाम ईश्वरका पूजन है। ऐसे कर्म करके ही ईश्वर प्रसन्न किया जा सकता है तथा ऐसे कर्मसे ही मनुष्य तर सकता है। इसलिये देश कालके अनुसार हमको अपनी जिन्दगीका कर्त्तव्य पालन करना चाहिये। इसीसे हमारी बढ़ती होनेवाली है, इसीसे हमारी उन्नति होनेवाली है और इसीसे हमारा उद्धार होनेवाला है। याद रखना कि यह सब कहीं ऊपरसे होनेका नहीं, बल्कि अपने कर्मसे ही होता है। और कर्म अपनी वासनाके अनुसार, अपने हृदयकी इच्छानुसार, अपने स्वभावके अनुसार तथा अपनी मरजीके अनुसार होता है। क्योंकि अपने भीतर जो काम है वह काम ही हमको कर्मके लिये उकसाता है। (पाठक यहां काम और कर्मका भेद याद रखें; काम शब्दकी परिभाषा गीताके तीसरे अध्यायके ३७ वें श्लोकमें की गयी है। कर्मके माने कृत्य करना, साधारण बोलचालमें कर्मको काम भी कहते

हैं) इसलिये अब हमको यह जानना चाहिये कि जो हमारी जिन्दगीपर इतना बड़ा असर डालता है वह

काम कहां पर रहता है ?

इसके लिये श्रीमद्भगवद्गीतामें कहा है कि-

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥

अ० ३ श्लो० ४०

कामके अन्दर ही इन्द्रिय, मन और बुद्धि ये तीनों हैं। इससे शरीरको चलानेवाली इन्द्रियोंमें यह काम रहता है। इन्द्रियोंसे ऊपर-इन्द्रियोंको चलानेवाला मन है, उसमें भी काम रहता है और मनसे ऊपर मन पर हुक्म चलानेवाली बुद्धि है, उस बुद्धिमें भी काम रहता है। इन तीनों ठिकाने रहकर वहींसे विषयवासना उत्पन्न करता है। पीछे यह विषयवासना ज्ञानको दबा देती है और जीवको मोहमें डाल देती है।

इसलिये भगवान कहता है कि अगर कामको मारना है तो पहले तू अपनी इन्द्रियोंको जीत। इसके वास्ते कहा है कि-

तस्मात्त्वमिंद्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥

अ० ३ श्लो० ४१

हे भरतकुलमें श्रेष्ठ अर्जुन! पहले तू अपनी इन्द्रियोंको वशमें कर, अपने मनको वशमें कर तथा अपनी बुद्धिको वशमें कर और पीछे सुने हुए ज्ञानका और तजरबेमें आये हुए ज्ञानका नाश करनेवाले कामको जरुर ही मार डाल, क्योंकि यह काम ही पापका मूल है।

कामको जीतनेका उपाय।

अब यह प्रश्न उठता है कि ऐसा पक्का दुश्मन जो काम है, उसके रहनेके मन, बुद्धि और इन्द्रियाँरूपी मजबूत किले हमसे जीते जा सकते हैं या नहीं। ये किले जीते जायं तो हम कामको जीत सकते हैं, तभी भाग्यको फेर सकते हैं और कामको जीत लेनेसे मोक्ष मिल सकता है। इसलिये काम कैसे जीता जाय, यह जानना जरूरी है। क्योंकि मनको जीतना चाहिये, इन्द्रियोंको जीतना चाहिये और बुद्धिको वशमें रखना चाहिये। सिर्फ जबानी कह देनेसे कुछ नहीं होता। इन सबको जीतना चाहिये यह कह देना बड़ा सहज है पर कहनेके अनुसार करना बड़ा कठिन है। लेकिन इतना जरूर समझ लेना चाहिये कि ये सब बहुत कठिन होने पर भी ये सब वशमें रक्खे जा सकते हैं। अगर हमारे वशकी बातें न होतीं तो उनको वशमें करनेके लिये प्रभु नहीं कहता। प्रभु कहता है कि पहले इन्द्रियोंको वशमें रख। अपनी इन्द्रियोंको, मनको और बुद्धिको वशमें रखनेकी कुंजी प्राप्त करनी चाहिये। इसके लिये प्रभु कहता है कि—

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥

अ० ३ श्लो० ४२

शरीरसे इन्द्रियां अधिक बलवान हैं, अधिक सूक्ष्म हैं और अधिक श्रेष्ठ हैं। इन्द्रियोंसे मन अधिक बलवान है, अधिक सूक्ष्म है और अधिक श्रेष्ठ है। मनसे बुद्धि अधिक बलवान है, अधिक सूक्ष्म है और अधिक श्रेष्ठ है। और बुद्धिसे आत्मा अधिक बलवान है, अधिक सूक्ष्म है और अधिक श्रेष्ठ है। इसलिये—

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

अ० ३ श्लो० ४३

हे बलवान अर्जुन! इस प्रकार आत्माको बुद्धिसे भिन्न और श्रेष्ठ जानकर आत्माके द्वारा आत्माको स्थिर कर और बड़े परिश्रमसे जीतने योग्य कामरूपी महावैरीको जीत ले।

जीवका गुरु जीवको बनाओ।

ऊपरका श्लोक कहकर भगवान समझाता है कि आत्माके जरिये परमात्माको स्थिर कर यानी जीवका गुरु जीवको बनाकर जीवको शान्त रख। इसके सिवा इसका एक अर्थ यह भी होता है कि परमात्माकी मददसे जीवको स्थिर कर। जब जीव स्थिर हो जाता है तब मुश्किल काम भी बहुत आसानीसे बन जाते हैं। क्योंकि इन्द्रिय, मन और बुद्धिसे आत्मा अधिक बलवान है, अधिक सूक्ष्म है, अधिक श्रेष्ठ है और सबसे अलग है; इतना ही नहीं आत्माकी सत्तासे ही वे सब सत्तावान हैं; इसलिये अगर जीव स्थिर हो जाय तो कामको जीत लेना कोई बड़ी बात नहीं है।

आत्मासे ही काम जीता जा सकता है। इसलिये भगवान कहता है कि तेरी आत्मा ही तेरा मित्र है और तेरी आत्मा ही तेरा शत्रु है। इसको भगवद्गीतामें और खुलासा करके कहा है कि–

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बंधुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

अ० ६ श्लो० ५

आत्मा ही आत्माका मित्र है और आत्मा ही आत्माका शत्रु है, इसलिये आत्माका उद्धार करना परन्तु आत्माका नाश नहीं करना। अर्थात् जीवका गुरु जीवको बनाकर अपने जीवको जगाना पर जीवको गफलतमें मत पड़े रहने देना।

तुम्हारी आत्मा ही तुम्हारा मित्र है और तुम्हारी आत्मा ही तुम्हारा शत्रु है।

अब यह जानना चाहिये कि आत्मा मित्र कैसे होती है और शत्रु कैसे होती है। भगवान समझाता है कि—

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥

अ० ६ श्लो० ६

जिसने अपनी आत्माको अपनी आत्मासे जीता है अर्थात् आप अपने जीवको जगाकर तत्त्व समझा है उसकी आत्मा अपनी आत्माका मित्र है और जो अनात्मा है यानी जो आत्मा ही नहीं है अर्थात् जो आत्माका स्वरूप नहीं जानता तथा आत्माका ज्ञान नहीं पाता उसीकी आत्मा उसके साथ शत्रुका बर्ताव करती है।

यह कहकर भगवान बताता है कि मैं तुम्हारे कर्मका कर्त्ता नहीं हूं। बल्कि तुम्हीं अपने कर्मका कर्त्ता हो। क्योंकि तुम अगर तत्त्व को न समझो और जैसा करना चाहिये वैसा न करो तो तुम्हारी आत्मा ही तुम्हारा शत्रु है। और अगर तत्त्वको समझकर अच्छी रीतिसे चलो तो तुम्हारी आत्मा ही तुम्हारा मित्र है। यह कहकर भगवान सारा भार हमपर

ही डाल देता है और अपनेको बेलाग प्रगट करता है। अगर हम अपने भाग्यको आप न बनाते होते और भगवान बनाता होता तो वह ऐसा कहता कि अगर तुम बुरा वर्ताव करोगे तो मैं तुम्हारा शत्रु हूं और अच्छा वर्ताव करनेपर तुम्हारा मित्र हूं। लेकिन ऐसा कहनेके बदले प्रभु यह कहता है कि तुम्हारी आत्मा ही तुम्हारा मित्र है और तुम्हारी आत्मा ही तुम्हारा शत्रु है, क्योंकि तुम्हारा भाग्य कुछ मैं नहीं बनाता बल्कि तुम अपना भाग्य आप ही बनाते हो। इससे तुम्हारी आत्मा तुम्हारा मित्र भी हो सकती है और शत्रु भी हो सकती है। इसलिये हमलोगोंको अपने भाग्यका दोष भगवानपर नहीं डालना चाहिये बल्कि अपना भाग्य सुधारनेका उपाय आप करना चाहिये।

मनुष्यको ईश्वरकी दीहुई स्वतंत्रता।

यह सब समझानेके बाद जब सारी गीता पूरी हुई तब अर्जुनसे प्रभुने कहा है कि–

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनंक्ष्यसि॥

अ० १८ श्लो० ५८

अहंकारके कारण अगर तू मेरा कहना नहीं मानेगा तो तेरी खराबी होगी। अगर मुझमें मन रखेगा और मेरा कहना मानेगा तो मेरी कृपासे तू बड़ीसे बड़ी कठिनाइयोंसे पार पा जायगा।

यहां ख़याल करना चाहिये कि प्रभु चेताता है कि मेरा कहना नहीं मानोगे तो तुम्हारा नाश होगा परन्तु यह कहकर लाचार नहीं करता कि–"तुमको मेरा कहना मानना पड़ेगा।" इसका कारण यह है कि मनुष्यका भाग्य भगवान नहीं बनाता।

वह अगर इस तरह लाचार करे तब तो उसीके सिर जीवोंके पाप पुण्यकी जिम्मेवारी जा पड़े । इससे प्रभु सूचना देता है, चेताता है और उपदेश देता है पर लाचार नहीं करता। यही प्रभुकी प्रभुता है और यही जीवकी जिम्मेवारी तथा स्वतंत्रता है। इसके आगे कहता है–

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥

अ० १८ श्लो० ६३

मैंने तुझसे गुप्तसे गुप्त ज्ञान कहा । इसको शुरूसे अन्ततक विचार कर जैसी तेरी इच्छा हो वैसा कर ।

इस श्लोकसे समझमें आ जाता है कि मनुष्यकी स्वतंत्रताके बारेमें प्रभुकी क्या इच्छा है और हमारे धर्मका क्या सिद्धान्त है । प्रभु क्या कहता है समझा ? वह कहता है कि खूब सोच विचार कर जीमें जो आवे वह करो । हमारी इच्छापर और हमारी समझपर वह लगाम छोड़ देता है ; अपनी मरजीके मुताबिक अपने जोरसे नहीं खींचता । इसीका नाम जीवकी स्वतंत्र इच्छा है और इसीको अंगरेजीमें "फ्रीविल" कहते हैं । इसी स्वतंत्र इच्छाके अनुसार हमारे ऊपर कर्म्मोंकी जिम्मेवारी है और इसीसे हम अपने भाग्यको आप बनाते हैं ।

हमारा भाग्य किससे बनता है ?

इन सब बातोंसे हम समझ सकते हैं कि अपना भाग्य बनानेवाले हम आप ही हैं । इसलिये अब हमको यह जानना चाहिये कि हमारा भाग्य किससे बनता है? इसका मूल "काम" अर्थात् हमारी इच्छाएं, हमारे विचार, हमारी वासनाएं और

हममें पुराने समयके पड़े हुए संस्कार हैं; इन संस्कारों तथा वासनाओंके अनुसार मनमें इच्छा उत्पन्न होती है; इच्छाके अनुसार विचार होते हैं और विचारके अनुसार काम होते हैं। इसलिये अगर हम हमेशा अच्छी इच्छा रखें और अच्छे विचार करें तो हमारे भीतर अच्छे संस्कार बैठते जाते हैं और अच्छी वासनाएं जमती जाती हैं इससे हमारा भाग्य अच्छा बनता है। और अगर हम अपने मनमें खराब इच्छाएं रखें, खराब विचार करें और खराब काम करें तो हमारा भाग्य खराब बनता है। क्योंकि धर्मका यह सिद्धान्त है कि "जैसी भावना वैसा फल" और प्रभुने भी कहा है कि-

ये यथा मां प्रपद्यंते तांस्तथैव भजाम्यहम्।

अ० ४ श्लो० ११

जो मुझको जिस रीतिसे भजता है मैं उसको उसीके अनुसार भजता हूं। अर्थात् मुझको जो जैसा भजता है उसको मैं वैसाही फल देता हूं।

अर्थात् प्रभु यह कहता है कि जो मुझको उत्तम भावसे भजता है उसको मैं उत्तम फल देता हूं, जो मध्यम भावसे भजता है उसको मध्यम फल देता हूं और जो अधम भावसे भजता है उसको अधम फल देता हूं।

प्रभु कहता है कि तुमको अच्छा या बुरा फल देना मेरी मरजीपर नहीं है बल्कि तुम्हारी भावनापर है।

यह कहकर प्रभु हमको यों समझाता है कि कैसा लेना तुम्हारे हाथमें है। अगर अच्छा फल चाहो तो वह भी ले सकते हो और खराब फल चाहो तो वह भी ले सकते हो। तुमको अच्छा

फल देना कुछ मेरी मरजीपर नहीं है, मैं तो सिर्फ तुम्हारी भावनाके अनुसार अर्थात् तुम्हारी इच्छाके अनुसार, तुम्हारे विचारके अनुसार और तुम्हारे कामके अनुसार तुमको फल देता हूं। अगर तुम्हारी इच्छा तुम्हारे विचार और तुम्हारे काम अच्छे हों तुम्हें अच्छा फल मिलेगा और तुम्हारी इच्छा, तुम्हारे विचार और तुम्हारे काम खराब हों तो तुम्हें खराब फल मिलेगा। क्योंकि अच्छा या बुरा फल प्रभु कुछ अपनी इच्छासे हमको नहीं देता वल्कि हमारी भावनाके अनुसार देता है। इसलिये हमको अपनी भावना सुधारनी चाहिये। और याद रखना कि अपनी भावना सुधारना ही अपना **भाग्य फेरनेकी कुंजी** है। इसीसे महात्मा वशिष्ठ मुनिने भगवान रामचन्द्रजीको उपदेश देते समय समझाया है कि ज्ञानकी सात कोटियां हैं, उनमें सबसे पहली कोटि शुभेच्छा है। याद रखना कि पहले शुभेच्छा आनेके बाद ही ज्ञानकी दूसरी सीढ़ी पर चढ़ सकते हैं। क्योंकि शुभेच्छा ही मोक्षका मार्ग है और शुभेच्छा ही अपना **भाग्य फेरनेकी कुंजी** है। इसलिये पहलेके पवित्र पुरुष हमेशा सवेरे उठकर ईश्वरसे यही प्रार्थना करते कि

सर्वत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥

सब जीव सुखी रहें, किसी जीवको किसी तरहका जरा भी दुःख न हो सबका कल्याण हो और कोई भी दुःख न हो।

हिन्दू धर्मका सबसे बड़ा मन्त्र।

इस प्रकार महात्मा लोग हमेशा सबका कल्याण चाहते थे और ईश्वरसे यही प्रार्थना करते थे कि हे प्रभु! हमको सद्बुद्धि दो। ऋषियोंका बड़ेसे बड़ा मन्त्र गायत्री है। गायत्री हिन्दू

धर्मका बड़ेसे बड़ा मन्त्र है और सवेरे, दोपहर और शामको दिनमें तीन वार उसका जप करनेकी शास्त्रमें विधि है । इस मन्त्रका अर्थ क्या है यह आपको मालूम है ? इसका संक्षेपसे संक्षेप, सहजसे सहज और सार अर्थ इतना ही है कि हे प्रभु ! हमको सद्बुद्धि दो ।

भाइयो ! त्रिकलाज्ञानी, पवित्र से पवित्र और चतुरसे चतुर महायोगेश्वर हमारे पूर्वजोंने प्रभुसे और कुछ नहीं मांगा, इतना ही मांगा कि हे प्रभु ! हमको सद्बुद्धि दो । क्योंकि सद्बुद्धि **भाग्य फेरनेकी कुंजी** है । सद्बुद्धिमें सब तरहकी उन्नति है, सद्बुद्धिमें स्वर्ग है, सद्बुद्धिमें देवत्व है, सद्बुद्धि में सब तरहकी हुनर कला है और सद्बुद्धिमें आप ईश्वर है । क्योंकि ईश्वर ज्ञानस्वरूप है, इसलिये सद्बुद्धि सबसे बड़ी बात है और याद रखना कि सबका भला हो ऐसी शुभेच्छा रखनेसे ही सद्बुद्धि खिल सकती है, इसलिये शुभेच्छा हमारे धर्मकी पहली सीढ़ी है, शुभेच्छा ज्ञानका दरवाजा है और शुभेच्छा हमारा **भाग्य फेरनेकी चाभी** है । अगर अपने भाग्यको अच्छा बनाना हो तो पहले शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये ।

हमारी नन्हीं नन्हीं इच्छाओंसे भारी भाग्य किस तरह बनता है इसका खुलासा ।

अब हमको जरा और खुलासा तौरसे समझना चाहिये कि शुभेच्छासे क्योंकर हमारा नसीब बनता है । इसके लिये महात्मा लोग कहते हैं कि शुभेच्छासे पहले हमारे दिलमें कितनी ही तरहकी अच्छी चीज़ोंके लिये कुदरती इच्छा होती है । यह इच्छा जब बढ़ती है तब वह जिज्ञासाके रूपमें आती है इससे उन वस्तुओंको जाननेकी तथा पानेकी और उनकी खूबी सम-

झनेकी चाह होती है, उसको जिज्ञासा कहते हैं। इसके बाद जब जिज्ञासा बहुत बढ़ जाती है तब वह वस्तु शौकके रूपमें आ जाती है अर्थात् उन चीज़ोंका शौक हो जाता है। इससे उसमें एक तरहका स्वाभाविक आनन्द होता है और बारबार उन चीज़ोंमें मन जाया करता है। इसके बाद शौक बढ़कर टेवके रूपमें आ जाता है और टेवका बल ऐसा है कि जिस चीजकी टेव पड़ जाती है उसके बिना रहा नहीं जाता। इसके बाद जब टेव अधिक मज़बूत हो जाती है तब वह स्वभावके स्वरूपमें आ जाती है स्वभावका बल तो इतना बड़ा होता है कि मालूम होता है कि वह वस्तु अपने अन्दर ओतप्रोत हो गयी है और खास अपनी बन गयी है। उसे छोड़ नहीं सकते। जब स्वभाव दृढ़ हो जाता है तब वह जीवात्मा पर असर करता है और संस्कार तथा वासनाके रूपमें वह चित्तमें, बुद्धिमें, मनमें तथा अहंकारमें भर जाता है। इतना बड़ा बल एक नन्ही सी इच्छासे धीरे धीरे हो जाता है और उसीसे हमारा भाग्य बनता है। इसलिये हर एक आदमीको इस बातका बहुत ध्यान रखना चाहिये कि कोई भी निकम्मा विचार या पापी इच्छा मनमें रहने न पावे। क्योंकि इस समय वह इच्छा भले ही नन्हीसी हो मगर उसका परिणाम छोटा नहीं है। वह नन्हीसी इच्छा इस ढंगसे जिज्ञासाके रूपमें आजाती है कि हमें मालूम नहीं होता। पीछे वह जिज्ञासा शौक बनजाती है; फिर टेवके रूपमें आती है; पीछे स्वभाव बनजाती है और उसके बाद वही पहलेका नन्हासा विचार भाग्यके रूपमें बदल जाता है। इसलिये अपना भाग्य सुधारना या बिगाड़ना अपने ही हाथ में है। भाइयो और बहनो! जैसे बने वैसे भली इच्छाएं रखिये और शुभ विचार कीजिये।

भिन्न भिन्न विचारोंके भिन्न भिन्न रंग और भिन्न भिन्न आकार होते हैं।

इससे हम समझ सकते हैं कि हमारी इच्छाके कारण उपजे हुए विचारोंसे हमारा भाग्य बनता है। इसलिये यह जानना चाहिये कि विचार क्या वस्तु है। इसके लिये गुप्तज्ञानकी खोज करनेवाले अनुभवी विद्वान कहते हैं कि जैसे इस जगतकी हर एक जड़ वस्तुका रंग और आकार है वैसे विचारका भी रंग और आकार है। परन्तु विचार सूक्ष्म है इससे उसका रंग और आकार हमारी बाहरी आंखोंसे नहीं दिखाई देता। जिनकी अन्तरदृष्टि खिली हुई है वे महात्मा विचारका रंग तथा आकार देखते हैं। जैसे भक्तिके विचारका रंग आकाशके रंगके ऐसा आसमानी होता है। उसका आकार तरह तरहके फूल या सुन्दर वेलिके ऐसा होता है (जिस किस्मकी भक्ति हो उस किस्मके फूलका सा आकार होता है) जैसे कमल फूल, धतूरेका फूल, मोगरेका फूल होता है वैसे ही भक्तिके विचारोंका आकार होता है। इसी तरह क्रोधके विचारका रंग कालापन लिये लाल होता है और उसका आकार भाले जैसा, तलवार जैसा और मनको भयंकर लगनेवाले आकारका डरावना होता है। इसी प्रकार लोभके विचार, अभिमानके विचार, डाहके विचार, स्वार्थके विचार, परमार्थके विचार, प्रकृतिके गुप्तभेद समझनेके विचार, देशकी भलाई करनेके विचार और अपनी आत्माका कल्याण करनेके विचार आदि सब तरहके विचारोंके जुदे जुदे रंग और जुदे जुदे आकार होते हैं। ये सब बातें कोरी कल्पना नहीं हैं और न कमजोर दिलके वहम हैं वरंच सिद्ध हुई बातें हैं—साबित हो चुकी हैं और आजकलके आगे बढ़े हुए युरोपिन विद्वान कितने

ही दृष्टान्त दलीलों तथा यंत्रोंसे साबित कर देते हैं। विचारोंके आकारका फोटो लिया गया है और विचारोंके रंगकी खूबियां समझनेके लिये अंगरेजीमें कितनी ही पुस्तकें हैं।

विचारोंकी मजबूती या ढिलाईके अनुसार उनके रंग और आकार पक्के या कच्चे और अधूरे होते हैं।

विचारोंके रंग और आकार होते हैं इतना ही नहीं, बल्कि वे रंग और आकार विचारोंकी मजबूती और ढिलाईके अनुसार अधिक या कम समय तक टिकते हैं। अर्थात् कोई विचार अगर बारंबार किया गया हो और खूब गौर करके मजबूतीके साथ किया गया हो तो उस विचारका आकार बहुत अच्छा और पूरा होता है और उसका रंग भी पक्का होता है तथा वह विचार भी बहुत समय तक टिकता है। पर जो विचार ऊपर ही ऊपरसे किया गया है, थोड़ी ही देर सोचा गया है और मनमें उसका दाग न पड़ने दिया गया है उसका रंग कच्चा होता है और उसका आकार अधूरा होता है। इससे वह थोड़े समयमें मिट सकता है, तथा कुछ समय बीतने पर वह आपसे आप भी मिट जाता है।

बहुत थोड़े समयमें विचार बहुत दूर जासकते हैं।

विचारके स्वरूपके विषयमें तीसरी बात यह ध्यानमें रखनेकी है कि विचार जड़ नहीं हैं बल्कि बहुत सूक्ष्म हैं। इससे वे जड़ वस्तुओंकी तरह एक जगह नहीं पड़े रहते, बल्कि बहुत ही थोड़े समयमें भी दूरसे दूर चले जाते हैं और फिर जहांसे निकलते हैं वहां वापस आते हैं।

अच्छे विचार अपने पास अपनी जातिके अच्छे विचारोंको खींचते हैं और खराब विचार अपने पास अपनी जातिके खराब विचारोंको खींचते हैं।

इसके सिवा यह बात भी ध्यानमें रखने लायक है कि जातिवाले पदार्थोंको अपनी जातिवाले पदार्थ खींचते हैं और एक जातिवाले आपसमें जल्द मिलजाते हैं। जैसे—चाहे जिस देशका तेल हो वह तेलमें आसानीसे मिल जाता है और पानीमें पानी आसानीसे मिल जाता है। इसी प्रकार अच्छे विचार अपनी जातिके अच्छे विचारोंको अपने पास खींचते हैं और उनमें आप मिल जाते हैं तथा उनको अपनेमें मिला लेते हैं। इससे छोटासा विचार भी आगे जाकर बहुत बलवान हो जाता है। इसी प्रकार खराब विचार अपनी जातिके खराब विचारोंको अपने पास खींचते हैं और उनमें मिल जाते हैं। इससे धीरे धीरे इन विचारोंका बल भी बहुत बढ़ जाता है। इस विषयमें यह बात खयाल रखने योग्य है कि अपनी ही जातिके विचारोंको हमारे विचार खींच सकते हैं। बुरे विचार अच्छे विचारोंको नहीं खींच सकते और न अच्छे विचार बुरे विचारोंको खींच सकते हैं। बल्कि अपनी अपनी जातिके विचारोंको ही खींच सकते हैं। जैसे पतिव्रताको वेश्याकी दोस्ती नहीं भाती, वैसे ही अच्छे विचारोंको बुरे विचारोंकी संगत नहीं रुचती। इसी तरह जैसे वेश्याको पतिव्रता नहीं सुहाती वैसे ही खराब विचारोंको अच्छे विचार नहीं पसन्द आते। पतिव्रताको पतिव्रताकी संगत रुचती है। वैसे ही अच्छे विचारोंको अच्छे विचारोंकी संगत अच्छी

लगती है और वेश्याको वेश्याकी सोहबत अच्छी लगती है। वैसे ही खराब विचारोंको खराब विचारोंकी संगत पसन्द होती है। विचारोंके इस स्वभावसे हमको यह समझना चाहिये कि अगर हम खराब विचार करेंगे तो हमारे पास खराब इच्छा न होनेपर भी खराब विचार ही आया करेंगे और अगर हम अच्छे विचार करेंगे तो बिना हमारे मिहनत किये ही हमारे पास अच्छे विचार आया करेंगे। इसलिये अपना भाग्य सुधारनेके लिये हमें अच्छे विचार करनेकी और शुभेच्छा रखनेकी टेव डालनी चाहिये।

अच्छे विचार देवताके समान सदा साथ रहकर सुख देते हैं और खराब विचार राक्षसकी तरह हमेशा दुःख दिया करते हैं।

इसके सिवा विचारके विषयमें दूसरी यह बात भी विशेष ध्यानमें रखने योग्य है कि जो विचार हम करते हैं वे नष्ट नहीं होते या हमारे पाससे चले नहीं जाते; याद रखना कि जितने जोरसे, जितनी गहराईसे, जितनी मजबूतीसे और जितनी चाहसे हम थोड़ी देर या अधिक देर विचार किये रहते हैं उसीके अन्दाजसे वे विचार मजबूत होते हैं और हमारे साथही साथ रहते हैं। इससे अगर हम अच्छे विचार किये रहते हैं तो वे देवताके रूपमें हमेशा हमारी सहायतामें रहते हैं। और जहां तक बनता है हमको सुख दिया करते हैं। इसके विरुद्ध अगर हम खराब विचार किये रहते हैं तो वे विचार राक्षसके रूपमें हमेशा हमारे साथ रहते हैं और जब मौका पाते हैं तब हमें दुःख ही दिया करते हैं। और वह भी कहीं कहीं पर ही नहीं और

थोड़े दिनके लिये नहीं, बलिक विचारोंका जैसा बल होता है उसीके अनुसार उनका असर अधिक या कम होता है और ये देवता तथा राक्षस हमारे घरमें ही हमारे साथ नहीं रहते बलिक हम जहां रहते हैं वहां साथ ही साथ रहते हैं । अगर हम मसानमें हों तो वहां भी अच्छे विचार हमें दिलासा देते हैं। और कैदखानेमें हों तो वहां भी अच्छे विचार हमें शान्ति देते हैं। हमारे रोजगार धंधेमें घाटा लग गया हो और उससे बहुत अफसोस हो रहा हो उस समय भी अच्छे विचार हमको धीरज देते हैं। हम भयानक रोगका कष्ट भोग रहे हों और सामने मौत देखते हों तो उस समय भी अच्छे विचार हमको एक प्रकारका मानसिक ढारस देते हैं । और हम अनेक प्रकारके सुख या वैभवमें हों तो उस समय अच्छे विचार उस सुखको बढ़ाते हैं। इसके विरुद्ध अगर हमें खराब विचार करनेकी टेव पड़ गयी हो जैसे, दुःखके विचार, भयके विचार, बीमारीके विचार, सगेसम्बन्धियोंके मरनेके अफसोसके विचार, भविष्यकी वाहीयात फिकर और ऐसे ही दूसरे हलके विचार तथा विषय-वासना, लोभ, क्रोध, मारपीट तथा डाहके और ऐसे ही दूसरे दूसरे पापी विचार किये हों तो वे विचार राक्षसके रूपमें हमेशा हमारे साथ रहते हैं और हम एकान्तमें भक्ति करने बैठें तो वहां भी ये राक्षस आकर हमें शान्ति लेने नहीं देते । हम निरालेमें खाटपर सोजायं तो वहां भी ये राक्षस आकर हमें सुखसे सोने नहीं देते। हम कोई अच्छी पुस्तक पढ़ते हों तो उस समय भी ये राक्षस आकर हमें उस पुस्तकका रहस्य समझने नहीं देते । हम परिवारमें आनन्द मनाने बैठे हों तो वहां भी ये राक्षस आकर हमें मौज करने नहीं देते, हम रोजगार धंधेमें लगे हों तो वहां भी ये राक्षस आकर हमको धंधेमें चित्त लगाने नहीं देते और हम

किसी प्रकारके दुःखमें हों तब तो ये राक्षस हमारे दुःखको बहुत ही बढ़ा देते हैं और छोटे दुःखको भी हमें भयंकर रूपमें दिखाते हैं। याद रखना कि यह सब दुःख दूसरा कोई हमें नहीं देता और दूसरे किसी कारणसे नहीं होता, बल्कि हमारे बुरे विचार ही हमको इस तरह हैरान किया करते हैं। इसलिये अपनी संगतमें अगर देवताको हमेशा, हर जगह हाजिर रखना हो तो सदा अच्छे विचार कीजिये और शुभेच्छा रखना सीखिये क्योंकि अच्छा विचार भाग्य पलटनेकी कुंजी है।

जितनी ही अधिक सूक्ष्म वस्तु होती है उसका उतना ही अधिक बल होता है और विचार सबसे सूक्ष्म है, इससे बिजली आदि सब तत्त्वोंसे उसका बल बहुत ही अधिक होता है।

विचारके विषयमें यह बात भी समझने योग्य है कि जगतकी कितनी ही जड़ वस्तुओंसे विचार बहुत सूक्ष्म है। और याद रखना कि जड़ वस्तुओंसे सूक्ष्म वस्तुओंमें हमेशा बहुत ही अधिक बल होता है। जैसे–पत्थरसे मिट्टी अधिक उपयोगी होती है और उसमें अधिक बल होता है क्योंकि पत्थरकी जड़तासे मिट्टीकी जड़ता कम है, इससे पत्थरकी अपेक्षा मिट्टीमें अधिक जीवनशक्ति है। मिट्टीसे पानी अधिक पतला और सूक्ष्म है, इससे मिट्टीसे पानी अधिक उपयोगी और अधिक बलवान है। पानीसे भाफ अधिक सूक्ष्म है, इससे पानीसे भाफ अधिक बल-वान है। भाफसे पवन अधिक सूक्ष्म है, इसलिये भाफसे पवन अधिक बलवान है। साधारण पवनसे हाइड्रोजन आदि

सूक्ष्म पवन अधिक सूक्ष्म हैं, इससे साधारण पवनसे हाइड्रोजन आदि सूक्ष्म पवन अधिक बलवान हैं। हाइड्रोजन आदि सूक्ष्म पवनसे शब्दके परमाणु अधिक सूक्ष्म हैं, इसलिये ऐसे पवनोंसे शब्दका असर अधिक बलवान है। शब्दकी गतिसे प्रकाश अधिक सूक्ष्म है, इसलिये शब्दसे प्रकाशका बल अधिक है। प्रकाशसे बिजली अधिक सूक्ष्म है, इससे प्रकाशसे बिजलीका बल अधिक है और बिजलीसे भी विचारका बल बहुत अधिक है। इसके सिवा और भी कितनी ही एकसे एक बढ़कर सूक्ष्म वस्तुएं इस जगतमें हैं, परन्तु उनका ज्ञान अभीतक हमलोगोंको नहीं हुआ है, इससे हम कितने ही सूक्ष्म तत्वोंका, जितना चाहिये उतना, लाभ नहीं ले सकते। ऐसे महाउपयोगी अनेक तत्व व्यर्थ पड़े हुए हैं! क्योंकि उन तक हमारा ज्ञान अभी नहीं पहुंचा है। इससे उन सूक्ष्म वस्तुओंका उपयोग करना हमें नहीं आता। परन्तु इन सब बातोंसे हमें इतना समझलेना चाहिये कि जो वस्तु जितनी ही अधिक सूक्ष्म और अधिक गतिमान है उसका बल उतना ही अधिक होता है और आज-तक दुनियामें जाने हुए सब प्रकारके स्थूल तथा सूक्ष्म बलसे भी विचार और बुद्धिका बल कहीं अधिक सूक्ष्म है। इसलिये दूसरी सब वस्तुओंसे विचारका बल बहुत ही बड़ा है, इसीसे जगतकी सब वस्तुओंपर बुद्धिबल अपनी हुकूमत चलाता है। ऐसा अलौकिक बुद्धिबल ईश्वरकृपासे हमको मिला है। जग-तके दूसरे सब बलसे बुद्धिबल श्रेष्ठ है, इसीसे पहलेके पवित्र ऋषिलोग गायत्रीमंत्र द्वारा इतना ही मांगते थे कि हे प्रभु! हमें सद्बुद्धि दे। क्योंकि सद्बुद्धि भाग्य फेरनेकी कुंजी है। इसलिये इस बातकी खबरदारी रखना कि यह महाबल आपके हाथसे आपकी आत्माको नुकसान पहुंचानेके काममें न लगे।

अच्छे विचार सूक्ष्म परमाणुओंसे बने होनेसे ऊपर रहते हैं। इसलिये उनको खींचनेमें मिहनत पड़ती है। खराब विचार जड़तावाले होनेसे नीचे रहते हैं इससे सहजमें मिलजाते हैं।

विचारोंके विषयमें यह बात भी ध्यानमें रखने योग्य है कि उनके रूप और आकार हैं और आकारवाली तथा रूपवाली वस्तु चाहे जितनी सूक्ष्म हो उसमें कुछ वजन होता है। वजनमें यह नियम है कि जो वस्तु भारी होती है वह नीचे रहती है और हलकी वस्तु ऊपर रहती है। जैसे रोगाह मोटी हवा नीचे जमीन पर रहती है और तन्दुरुस्ती देने वाली पतली हवा उससे ऊंचे आकाशमें रहती है। पानीके विषयमें भी अनुभवी लोग कहते हैं कि अच्छा निर्मल जल समुद्रके ऊपर रहता है और किस्म किस्मके घटिया परमाणुवाला पानी नीचे समुद्रके तलमें रहता है। इसी प्रकार हर एक वस्तुमें यह नियम है कि पतली तथा सूक्ष्म वस्तु हमेशा ऊपर रहती है और मोटी जड़ वस्तु नीचे रहती है। विचारोंके विषयमें भी यही नियम चलता है। उत्तम विचार सूक्ष्म होते हैं इसलिये ऊपर रहते हैं। हलके विचार जड़ होते हैं इससे वे नीचे रहते हैं। इसलिये जो आदमी खराब विचार करते हैं उनको उसमें तुरत ही सहारा मिलजाता है। क्योंकि खराब विचार जड़तावाले हैं तथा वे नीचेकी तहमें जहां तहां भटकते फिरते हैं और हमारे आसपास घूमते रहते हैं इससे वे बिना मिहनतके बहुत जल्द मिल जाते हैं। पर अच्छे विचार सूक्ष्म हैं

इससे वे बहुत दूर ऊपर रहते हैं। इसलिये वे आसानीसे नहीं मिलते। जब उनके लिये मिहनत करें और लगे रहें तभी वे मिलते हैं। इससे यह समझना चाहिये कि अगर हम खराब विचार करेंगे तो उस किस्मके दूसरे खराब विचार हमारे बिना बुलाये भी आपसे आप दौड़े आवेंगे। इसलिये हमारे कियेहुए जितने खराब विचार होंगे उनसे कहीं अधिक हमारी खराबी होगी। इस बातकी खबरदारी रखना चाहिये कि एक भी बुरा विचार मनमें न आवे। विचार कुछ मामूली नहीं हैं बल्कि उन्हींसे भाग्य बनता है। इसलिये इस विषयमें जरा भी लापरवाही न रखना चाहिये, बल्कि जैसे बने वैसे अपना भाग्य सुधारनेके लिये अच्छी इच्छाएं, उत्तम विचार और परमार्थके काम करने चाहियें। ऐसा ही करना भाग्य पलटनेकी कुंजी है।

आकाशतत्वमें पड़े हुए दूसरोंके भले विचारोंको अपने पास खींचनेकी युक्ति।

ये सब विषय जाननेके बाद समझदार पाठकोंको इतना तो विश्वास हो गया होगा कि हम आप ही अपना भाग्य बना सकते हैं और उसको अच्छा या बुरा बनाना हमारे ही हाथमें है। इसके सिवा वे यह भी समझ गये होंगे कि हमारे अच्छे या बुरे विचारोंसे ही हमारा भाग्य बनता है। इसलिये जैसे बने वैसे हमें आप अच्छे विचार करना चाहिये और दूसरोंके अच्छे विचारोंको अपने पास खींचना चाहिये। अच्छे विचार कैसे कर सकते हैं और दूसरोंके अच्छे विचारोंको अपने पास कैसे खींच सकते हैं, इसकी आपको खबर है? जबतक भली भांति यह न समझ लें तबतक हम जैसे चाहिये वैसे अच्छे विचार नहीं कर सकते और जबतक बहुत

मजबूतीसे हम अच्छे विचार न करें तबतक बहुत दूर ऊंचे पड़े हुए दूसरोंके सूक्ष्म अच्छे विचारोंको अपने पास खींच नहीं सकते। और जब तक ऐसे विचारोंको न खींच सकें तब तक हम अपना भाग्य पलट नहीं सकते। इस प्रकार दूसरे विचारोंकी मदद पाये विना हमारे अकेले विचार पूर्णताको नहीं पहुंच सकते। इसलिये हमें आकाशतत्वमें पड़े हुए अनन्तकालके तथा अनेक महात्माओंके भले विचारोंको अपने पास खींचना चाहिये। और उनको खींचनेकी युक्ति समझनी चाहिये। वह युक्ति सुनिये। प्रकृतिका नियम है कि सूक्ष्म वस्तुओंकी ओर सूक्ष्म वस्तुएं खिचती हैं और जड़ वस्तुओंकी ओर जड़ वस्तुएं खिचती हैं तथा पवित्र वस्तुओंकी ओर पवित्र वस्तुएं खिचती हैं और पापी वस्तुओंकी ओर पापी वस्तुएं खिचती हैं। अगर उच्च श्रेणी के सूक्ष्म विचारों को अपने पास खींचना हो तो अपने हृदयको पहले सूक्ष्म बनाना चाहिये। क्योंकि जब वह सूक्ष्म असर ग्रहण करने लायक होता है तभी सूक्ष्म विचारोंको पकड़ सकता है। जैसे वेतारका तार भेजनेकी युक्तिकी जो कल है वह एक जगह रखी हो और दूसरी जगहसे अगर वैसी ही कल चलती हो और उन दोनों कलोंमें किसी प्रकारका दोष न हो तो वे एक दूसरेका असर बहुत आसानीसे ग्रहण कर सकती हैं और जल्द जल्द तार पहुँच सकता है। अगर एक तरफकी कल खराब हो तो वह दूसरी जगहसे आया हुआ संदेशा नहीं ले सकती। इसी प्रकार याद रखना कि आकाशतत्वमें गुप्त रीतिसे जो असंख्य भले विचार भरे हुए हैं उनकी कल तो हमेशा साफ ही है। उसमें किसी दिन कोई रुकावट नहीं। पर हमारे हृदयकी कल जैसी चाहिये वैसी साफ नहीं होती इससे वह सामनेकी कलसे आया हुआ तार अपने

अन्दर नहीं ले सकती । अगर दूसरेका भेजा हुआ तार लेना हो यानी जगतमें भरे हुए अनेक प्रकारके उत्तम नये विचार लेना हो तो अपने अन्तःकरणकी कलको साफ रखना चाहिये ।

अन्तःकरणकी कलको साफ रखनेका उपाय ।

और इस कलको साफ रखनेके लिये अपना आहार विहार सुधारना चाहिये। क्योंकि खुराकसे शरीरका गठन होता है और शरीरका गठन मनपर वहुत वड़ा असर करता है । इसलिये अगर हमें अपना नसीव सुधारना हो तो अपनी खुराक सुधारनी चाहिये । अर्थात् तमोगुणी तथा वहुत रजोगुणी मलिन वस्तुएं न खाना; वहुत ठांस ठांसकर वेहद् न खाना ; अधर्मसे मिले हुए पैसेका अन्न न खाना; खाने पीनेकी धुनमें ही सदा न पड़े रहना वलिक यह समझना कि खाने पीनेके लिये ही हमारा जन्म नहीं है सिर्फ जिन्दगी टिकानेके लिये खाना पीना है; यह समझकर मिताहारी होना और सत्वगुणी पदार्थोंका सेवन करना चाहिये। इतना ही नहीं वलिक पोशाकमें, रीति भांतिमें, हाव भावमें, आचार विचारमें तथा चालचलन आदि हर विषयमें नियमितपन, सत्यता, पवित्रता तथा उत्तमता रखनी चाहिये । तभी अन्तःकरण पवित्र होता है और तभी वह गहरे विचार ग्रहण कर सकता है तथा दूरके विचारोंको खींच सकता है । अगर अपना भाग्य सुधारना हो तो अपने अन्तःकरणको सुधारना चाहिये और अन्तःकरणको सुधारनेके लिये पहले अपना आहार विहार तथा चालचलन सुधारना चाहिये । इसके विना सिर्फ वातें वनानेसे भाग्य नहीं सुधरनेका ।

साधारण आदमियोंसे भी कभी कभी बड़े काम होजाते हैं, इसका कारण ।

विचारकी फिलासफीमें यह बात भी जानने लायक है कि कभी कभी मामूली आदमियोंसे भी बहुत बड़े बड़े काम हो जाते हैं और कितनी ही बार खराब आदमियोंके हाथसे उनके न चाहे हुए पाप भी हो जाते हैं और पीछे वे आप ही अश्चर्य मानते हैं तथा अफसोस करते हैं; परन्तु इसका कारण नहीं जानते। विचारकी फिलासफीमें आगे बढ़े हुए महात्मा लोग कहते हैं कि हम जिस किस्मके विचार किये रहते हैं उस किस्मके विचार कुदरती तौर पर हमारे पास खिंच आते हैं। इसलिये अपना मूल विचार छोटासा हो तोभी उसी किस्मके दूसरे बाहरी विचार आकर उसे ज़बरदस्त सहारा देते हैं, इससे अपने बूतेसे बाहरके काम मनुष्यसे हो जाते हैं। जैसे–किसी भक्तके यहां सदाव्रत चलता है। वह भक्त बहुत गरीब आदमी है और देशमें अकाल पड़नेसे अच्छे अच्छे आदमियोंको भी अपने कुटुम्बके निबाहनेमें मुश्किल पड़ रही है तो भी, इस आफतके वक्तमें भी, उस गरीब भले भक्तका सदाव्रत निबहता जाता है। यह देखकर कितने ही लोगोंको आश्चर्य होता है कि ऐसा क्यों होता है ! बड़ी बड़ी मूछोंका पानी उतर गया और इस भिखारीके घर सदाव्रत चलता ही जाता है इसके क्या माने ? ऐसा होनेका कारण यह है कि उस भक्तकी वृत्ति अच्छी है और वह शुद्ध अन्तःकरणसे अपना सदाव्रत चलानेका शुभ विचार करता रहता है। इससे उसकी भली भावनाको आकाशतत्वमें मौजूद दूसरोंके भले विचारोंकी बड़ी मदद मिलती है। ये सब विचार जमा होकर अच्छे विचारके धनवानों

पर उसके अन्तःकरणकी शुद्धताके अनुसार असर डालते हैं और वे लोग उस असरके अनुसार उस भक्तकी मदद किया करते हैं। इससे जब कितने ही भूखे आदमी आते हैं और अन्नका भाव बहुत महंगा होता है उस अकालके समय भी उस भक्तका सदाव्रत चला करता है। और यह देखकर स्वयं भक्त भी आश्चर्य करता है कि यह क्या है! प्रभुकी कितनी बड़ी दया है कि सबे समयमें भी मेरा पानी रखता है। यह सोच कर वह भक्त ईश्वरका उपकार माना करता है। इसी प्रकार दूसरे कितने ही परमार्थके काम एकबार शुरू होजाने पर निबहा करते हैं। उनके चलानेवालोंमें कुछ बहुत दम न हो पर उनका अन्तःकरण अच्छा हो और अपने आरम्भ किये हुए काममें दृढ़ता रखने और उसे अन्ततक जारी रखनेका धीरज उनमें हो तो समय आने पर वे अपने काममें बहुत बड़ी सफलता देखते हैं और वह सफलता इतनी बड़ी होती है कि उसे देखकर वे स्वयं आश्चर्य करते हैं। इसका कारण यही है कि उनको दूसरेके विचारोंकी अनसोची कुदरती मदद मिलती है। इससे उनको सफलता प्राप्त हो जाती है।

हम जो वचन नहीं कहना चाहते और जो काम नहीं करना चाहते वह वचन हमारे मुंहसे निकल जाता है और वह काम हमसे हो जाता है। इसका कारण।

इसी प्रकार जिन मनुष्योंके मनमें बुरे विचार आते हैं वे अगर किसीको उलहना देने जाते हैं तो उसके बदले उसे थप्पड़ मार देते हैं या थप्पड़ मारने जाते हों तो उसके बदले खून कर डालते हैं और कितने ही आदमी मनमें यह सोचे हुए हों कि

फलाने आदमीसे या फलाने विषयमें हम कुछ न बोलेंगे तौ भी मौका आने पर अपने मनको रोक नहीं सकते और अंडका बंड कह डालते हैं और पीछेसे पछताते हैं कि यह काम हम नहीं करना चाहते थे मगर न जाने कैसे हो गया। इसका भेद यह है कि पहले इस विषयमें बहुत खराब विचार किये रहते हैं इससे उस किस्मके दूसरे हज़ारों खराब विचार उनमें आ मिलते हैं क्योंकि नीच विचार नीचे ही रहते हैं और अपने आसपास ही घूमते रहते हैं इससे मौका पाते ही वे हममें घुस जाते हैं और हमारे न रुचने योग्य काम हमसे हमारी इच्छाके विरुद्ध करा डालते हैं। ऐसा न होने देनेके लिये जैसे बने वैसे हलके दरजेके विचारोंके पंजेसे छूटना चाहिये और ऊंचे दरजेके अच्छे विचार करना चाहिये। यही जिन्दगी सुधारनेकी कुंजी है और यही मोक्ष पानेका उपाय है।

शरीरके नाशके साथ विचारोंका नाश नहीं होता इससे मर जाने पर जब फिरसे जन्म होता है तब भी हमारे किये हुए अच्छे विचार हमको सुख और खराब विचार दुःख देते हैं।

विचारके विषयमें यह बात भी ध्यानमें रखने योग्य है कि जो विचार वारंवार किया हो, मजबूतीसे किया हो, गहरे उतर-कर किया हो और हृदय पर असर पहुंचानेवाली रीतिसे किया हो उस विचारको पूरा करनेके लिये अगर उस वक्त सुबीता न हुआ हो तो पीछेसे जब मौका मिलता है तब वह विचार हमारे मन पर हमला करता है और अपनी मरजीके मुताबिक काम हमसे कराता है और वह काम करनेकी उस वक्त हमारी इच्छा

न हो तौ भी लाचार होकर करना पड़ता है। जैसे किसी आदमीने पहले चोरी करनेके विचार बहुत किये हैं पर उस समय चोरी करनेका सुवीता न होनेसे वह चोरी नहीं कर सका; पीछे किसी अच्छी संगतमें आगया, अपनी चाल सुधारनेके लिये बहुत सावधानी करता है और अपने पहले किये हुए चोरीके विचारोंके लिये पछताता है और अबसे निश्चय करता है कि मैं कभी चोरी नहीं करूंगा। तौभी जब मौका मिलता है तब चोरी करनेके लिये उसका मन लुबलुबाता है और इच्छा न होने पर भी तथा चोरी न करनेका पक्का मनसूबा बांध लेने पर भी उससे चोरी हो जाती है। क्योंकि चोरीके लिये पहले समयमें उसके किये हुए विचार मर नहीं गये, इससे उनको जब मौका मिलता है तब वे अचानक हमला करते हैं और जो काम नहीं करना है वह काम भी उन विचारोंके हमलेके जोशमें उससे जबरन हो जाता है। विचार हमारी जिन्दगी पर इतना बड़ा असर करते हैं। यह असर जब बहुत बढ़ जाता है और वह वासनाके रूपमें आजाता है तब मरनेके बाद दूसरे, नये जन्ममें भी वे विचार हम पर अपना असर डालते हैं। इससे पहले जन्ममें जो विचार किये रहते हैं उनके अनुसार दूसरे जन्ममें लाचार होकर काम करना पड़ता है। इतना बड़ा बल विचारोंमें है। क्योंकि हमारा यह स्थूल शरीर मर जाय और नष्ट हो जाय तो उससे विचार नहीं मरते, बल्कि विचार जीवके साथ जुड़े हुए रहते हैं और जीव मरता नहीं। इसके सिवा विचार गुप्त रीतिसे आकाशतत्वमें बड़ी सूक्ष्मता से रहते हैं और हम उनका आसानीसे नाश नहीं कर सकते। इसलिये जिन्दगी बदल जाय और नया जन्म हो जाय तौभी हमारे किये हुए अच्छे विचार हमें सुख देते हैं और खराब विचार दुःख देते हैं।

क्योंकि हमारे किये हुए विचारोंसे ही हमारा भाग्य बनता है। इसलिये अगर अपना भाग्य सुधारना हो तो हमेशा शुभेच्छा रखना चाहिये; अच्छे विचार करना चाहिये और अच्छे काम करना चाहिये।

अपना भाग्य फेरनेके लिये विचार सम्बन्धी मुख्य विषयोंके जाननेकी विशेष ज़रूरत है।

जब हम अपना भाग्य फेरनेकी कुंजियां ढूंढ़ते हैं तब विचार सम्बन्धी सब विषयों पर हमें खास ध्यान देना चाहिये। क्योंकि हमारे विचारोंसे ही हमारा भाग्य बनता है। इसलिये विचारका बल, विचारका स्वभाव, विचारका स्वरूप, विचारका असर, विचारकी उत्पत्ति, विचारका विकास और विचारका नाश इत्यादि सब विषय हमें ठीक ठीक जानना चाहिये। अगर हम इन सब विषयोंको खूब अच्छी तरह, खुलासा तौर पर और खूब दृढ़ताके साथ समझें तो उसका हमपर बहुत अच्छा असर हो सकता है और बहुत अच्छा असर होनेसे हम अपना भविष्य बहुत आसानीसे और जल्द पलट सकते हैं। इसलिये हमें विचार सम्बन्धी मुख्य विषय तो जरूर जानना चाहिये। इन जरूरी विषयोंको बताते हुये लेख कुछ लम्बा हो जाय तो उसे पढ़नेसे ऊबना नहीं चाहिये। बल्कि इसको बड़े कामकी बात समझकर इसमें ध्यान देना चाहिये। सुज्ञ पाठकोंसे इतना निवेदन करके यह बताया गया कि विचारकी उत्पत्ति कामसे होती है।

विचारोंको विकसित करनेकी युक्ति।

अब हमें यह जानना चाहिये कि विचारका विकास

कैसे होता है। इसके लिये विचार करनेवाले और विचारकी खूबी समझनेवाले अनुभवी विद्वान कहते हैं कि एक ही रास्ते पर बारबार गाड़ियां दौड़ा करें तो उसपर गाड़ियोंके पहियोंका दाग पड़ जाता है; किसी कुएंसे हमेशा पानी खींचा जाता हो तो पानी खींचनेके स्थान पर रोज रोज रस्सीकी रगड़ होनेसे मजबूत पत्थर पर भी गहरा निशान हो जाता है। इसी प्रकार अगर एक ही विचार बारंबार मज-बूतीसे किया गया हो तो मगजके अन्दर उस किस्मके परमाणु मजबूत बन जाते हैं और कितनी ही तरहकी वृत्तियों तथा ज्ञानतन्तुओंको उस विचारके अनुसार चलनेकी टेव पड़ जाती है। इससे मन या शरीरके कुछ भी मिहनत किये बिना वह विचार हुआ करता है। और एक बार एक किस्मके विचारको जिसे पकड़ रखना आजाता है तथा उसपर दृढ़तासे अड़े रहना जिसको आजाता है और जो एक ही किस्मके विचारपर एकाग्र हो सकता है उस आदमीका वह विचार बहुत खिल जाता है और मजबूत हो जाता है। पीछे दूसरे विचार करना भी उसे आसान हो जाता है। मतलब यह कि जैसे रोज रोज कस-रत करनेसे शरीर खिल सकता है वैसे ही रोज रोज अच्छे और स्वतंत्र नये विचार करनेसे विचार करनेकी शक्ति खिल सकती है। इसलिये अपनी विचारशक्तिको विकसित करना हो तो पहले एक ही किस्मके विचारको मजबूतीसे पकड़ रखना चाहिये; पीछे उस विचारमें मनको एकाग्र करना चाहिये और बारंबार बहुत समय तक वह विचार करना चाहिये। इससे समय आने पर वह विचार विकसित हो सकता है—खिल सकता है। वह अपना निजका हो जाता है। इसके बाद वह हमारी बड़ी मदद कर सकता है। ऐसी ऐसी युक्तियोंसे हमें अपने अच्छे विचा-

रोंको विकसित करनेकी कोशिश करना चाहिये। क्योंकि हमारे अच्छे विचारोंके खिलनेसे ही हमारा अच्छा भाग्य बनता है। इस विषयको खास कर ध्यानमें रखना चाहिये।

पहले जो खराब विचार हो गये हों उनका नाश करनेका उपाय।

विचारका विकास कैसे होता है यह जाननेके बाद यह जानना चाहिये कि हमसे जो खराब विचार हो चुके हैं उनका नाश कैसे कर सकते हैं। अगर यह भेद हम समझें और खराब विचारोंका नाश करना हमें आजाय तो बहुत आसानीसे और बहुत जल्द हम अपनी उन्नति कर सकते हैं। क्योंकि खराब विचार ही हमको छोटी छोटी बातोंमें फंसा रखते हैं और इसीसे हम आगे नहीं बढ़ने पाते। इतना ही नहीं, खराब विचारोंसे ही हमारा खराब भाग्य बनता है और खराब भाग्यके कारण ही हम दुखी हुआ करते हैं। इसलिये खराब विचारका नाश करनेका उपाय जरूर ही जानना चाहिये। विचारके विषयमें आगे बढ़े हुए विद्वान कहते हैं कि जहां पर बदबू हो वहांकी बदबू मिटानेकेलिये खुशबू छिड़की जाती है। खुशबूके जोरसे बदबू भाग जाती है। पानीका नाश करना हो तो उस पर, उसे सोख लेनेवाली अग्निका उपयोग करना चाहिये। अग्निके जोरसे पानी उड़ जाता है। शरीरसे सरदीका रोग हटाना हो तो बीमारको गरम दवा देनी चाहिये और गरमीकी प्रधानतावाला रोग हटाना हो तो ठंढ़ी दवा देनी चाहिये। क्योंकि जब विरुद्ध पक्षकी जोरावर वस्तु आती है तभी सामनेकी वस्तुका जोर टूटता है और उसका नाश होता है। इसी प्रकार अगर अपने खराब विचारोंका नाश करना हो तो उनके विरुद्ध अच्छे अच्छे विचार बहुत मजबूतीसे

करना चाहिये। ऐसा करनेसे खराब विचारोंका जोर टूटता है और उनकी खुराक न मिलनेसे थोड़े समयमें उनका नाश हो जाता है। जैसे-अगर हममें क्रोध बहुत हो और क्रोधके विचार हमने किये हों पर अब उन विचारोंका नाश करना चाहते हों तो क्रोधके बदले शान्तिके विचार करना चाहिये। लोभके विचार किये हों और उनका नाश करना हो तो सन्तोष और उदारताके विचार करना चाहिये। द्वेषके विचारोंका नाश करना हो तो प्रेमके विचार करना। अभिमानके विचारोंका नाश करना हो तो नम्रताके विचार करना। भयके विचारोंका नाश करना हो तो निर्भयताके विचार करना। दुःखके विचारोंका नाश करना हो तो सुखके विचार करना और मौतके विचारोंका नाश करना हो तो अमरत्वके विचार करना। इस प्रकार खराब विचारोंके मुकाबले उनके विरुद्धके अच्छेसे अच्छे विचार मजबूतीके साथ करनेसे खराब विचारोंका नाश होता है। पर इसमें शर्त इतनी है कि खराब-विचार जिस कदर किये हों उससे बहुत अधिक अच्छे विचार करना चाहिये। नहीं तो जरा मरा, ऊपर ऊपर विचार करनेसे पहलेके पुराने जमे हुए विचारोंका नाश नहीं होता। बहुत मजबूतीसे किये हुए, मुकाबलेके विचारोंका जोर जब बहुत बढ़ जाता है तभी उन विचारोंका नाश होता है।

पहले किये हुए खराब विचारोंका नाश करनेका दूसरा उपाय।

दूसरे, जब कोई खेतिहर अपने खेतमें बोयी हुई फसलको सुखा डालना चाहता है तब उसको पानी पहुंचाना बन्द कर देता है, इससे उस फसलका बढ़ना आपसे आप बन्द हो जाता है और पीछे वह सूख जाती है। अपने मनमें उगे हुए खराब विचा-

रूपी फसलको अगर सुखा डालना हो तो उसे सींचना न चाहिये, अर्थात् उस किस्मके विचारोंको फिर अपने मनमें न आने देना चाहिये और आजायं तो तुरत ही निकाल देना चाहिये। ऐसी तजवीज रखें तो पानी बिना पौधे जैसे थोड़े समयमें सूख जाते हैं वैसे ही जिन विचारोंको खुराक नहीं मिलती वे आपसे आप नष्ट हो जाते हैं। इसलिये पहले के किये हुए खराब विचारोंका नाश करना हो तो उनको अपने मनमें जगह मत दीजिये और खुराक मत दीजिये तथा उनके विरुद्धके शुभ विचार कीजिये। इससे बहुत आसानीसे और थोड़े समयमें खराब विचार नष्ट हो जायंगे और वे नष्ट हो जायंगे तो आपका भाग्य सुधर सकेगा। अपना भाग्य सुधारनेके लिये अच्छे विचारोंकी मदद से खराब विचारोंका नाश करना सीखिये।

देहका नाश होनेके बाद भी जीव अपने विचारोंको देखता है, उस वक्त अच्छे विचार देखकर उसको आनन्द होता है और बुरे विचार देखकर बहुत दुःख होता है।

विचारके विषयमें यह बात भी विशेष ध्यानमें रखने लायक है कि हम जो विचार करते हैं उसका हमारे मनमें एक चित्र खड़ा होता है। उस चित्रका रंग तथा आकार होता है। अच्छे विचारका चित्र बहुत सुन्दर आकारका और बढ़िया रंगका होता है। खराब विचारका चित्र बदरंग और भयानक आकारका होता है। और हमारे विचारकी जितनी मजबूती होती है उतना ही वह चित्र मजबूत होता है। अगर हमारा विचार कच्चा हो और एक ही वारका किया हुआ हो तो उसका चित्र

हलका और अधूरा होता है। हमारे मनके अन्दर तथा हमारे शरीरके आसपास जो एक प्रकारका कुदरती तेज है और जिसे अंगरेज़ीमें 'ओरा' कहते हैं उस तेज़में विचारोंके रंग दिखाई देते हैं और विचारोंके चित्र आकाश भुवनमें बहुत गुप्त रीतिसे-सूक्ष्म रीतिसे पड़ जाते हैं। वहांसे उन चित्रोंका आसानीसे नाश नहीं हो सकता। यहां तक कि हमारे छोटेसे छोटे विचारका चित्र भी वहां बन जाता है। हमारी मृत्युके बाद जब स्थूल शरीरसे हमारा जीव जुदा हो जाता है तब उन सब आकाश तत्त्वमें पड़े हुए, अपने विचारोंके सूक्ष्म चित्रोंको बहुत आसानीसे उनके असली रूपमें हमारा जीव देखता है। उस समय अपने किये हुए अच्छे विचारोंके अच्छे चित्र देखकर उसको बहुत आनन्द होता है और एक प्रकारका कुदरती ढारस मिलता है। परन्तु इसके साथ ही उस समय अपने किये हुए खराब विचारोंके भयंकर चित्र भी दिखाई देते हैं जिन्हें देखकर बहुत अफसोस होता है, बहुत डर लगता है और बहुत पछतावा होता है। क्योंकि उस समय उससे कुछ छिपा नहीं रहता, बल्कि अपनी जिन्दगीमें किये हुए हर एक अच्छे और बुरे विचारके चित्र एकके बाद एक दिखाई देने लगते हैं और सो भी अंधेरेमें या अस्पष्ट रूपमें नहीं, बल्कि जैसे हम बायस्कोपमें चलते फिरते हिलते डोलते सखमख चित्र देखते हैं वैसे ही अपने किये हुए अच्छे बुरे विचारोंके हूबहू चित्र मरने पर आकाशतत्त्वमें जीवको दिखाई देते हैं। अच्छे विचारोंके चित्र देखकर जीवको बहुत आनन्द होता है और खराब विचारोंके चित्र देखकर बड़ा डर लगता है। इस प्रकार अच्छे विचार मरनेके बाद भी ढारस दे सकते हैं और खराब विचार मरनेके बाद भी दुःख देते हैं। इसलिये जिन भाई बहनोंको मरनेके बाद आनन्द लेना हो और वर्तमान जिन्दगीमें

तथा भविष्यकी जिन्दगीमें अपना भाग्य सुधारना हो उन्हें सदा शुभ इच्छा रखना चाहिये और अच्छे विचार करना चाहिये। तभी मरनेपर दिलासा मिल सकता है और तभी भाग्य सुधर सकता है। इसलिये याद रखना कि हमेशा शुभेच्छा रखना और अच्छे विचार करना ही भाग्य सुधारनेकी कुंजी है।

जन्म बदलनेसे यानी शरीर बदलनेसे स्वभाव नहीं बदल जाता।

अपने विचारोंसे ही अपना भाग्य बनता है, यह बात ठीक ठीक समझनेके लिये यह विषय भी जानना चाहिये कि जन्म बदलनेसे यानी शरीर बदलनेसे कुछ स्वभाव नहीं बदल जाता। जैसे-कोई आदमी काला कोट पहने चाहे सफेद, चाहे लम्बा कोट पहने चाहे छोटा इससे पहननेवालेका स्वभाव नहीं बदलता। प्रभुने कहा है कि शरीर बदलना तो सिर्फ पोशाक बदलनेके समान है और पोशाक बदलनेसे जीवका स्वभाव नहीं बदलता। इससे याद रखना कि जो आदमी इस समय इस दुनियामें और अपनी इस जिन्दगीमें चोरीके विचार करता है वह मरने पर प्रेतलोकमें जाकर वहां भी चोरीके ही विचार करता है। जो आदमी यहां क्रोधके विचार करता है वह मरने पर भी क्रोधके विचार ही करता है। जो आदमी यहां प्रेमके विचार करता है वह मरनेपर प्रेतलोकमें भी प्रेमके विचार करता है और जो आदमी यहां ईश्वरी आनन्दके, आत्मिक बलके और जगतके कल्याणके विचार करता है वह मरने पर पितृलोक या देवलोकमें जाकर वहां भी ऐसे ही विचार करता है। क्योंकि आदमीके मरने पर उसके शरीरका नाश होता है पर उसके जीवमें

विचार करनेकी जो शक्ति है वह नष्ट नहीं होती, इससे मरनेके बाद भी मनुष्यका जीव विचार कर सकता है और मरजानेसे उसी वक्त एकदम उसको अच्छे विचार नहीं सूझते बल्कि उसका जैसा स्वभाव पड़ा रहता है उसीके अनुसार वह विचार कर सकता है। इससे पापी विचारके आदमी प्रेतलोकमें जाकर वहां भी पापके ही विचार किया करते हैं और अच्छे विचार के आदमी देवलोकमें जाकर वहां भी अच्छे विचार ही किया करते हैं। चाहे कोई कहीं जाय, अपनी प्रकृतिके अनुसार ही करनेकी उसे सूझती है। इससे ऐसी जगहोंमें जाकर भी जीव अपने स्वभावके अनुसार ही वर्तता है। और याद रखना कि जीवका यह स्वभाव यहीं पर—अपनी जिन्दगीमें ही, अपने विचारोंसे ही बनता है, पीछे इसी स्वभावसे भविष्य बनता है और इस भविष्यके कारण नये नये भिन्न भिन्न शरीर धारण करना पड़ता है। जन्मके समय अपना स्वभाव ज्योंका त्यों रहता है। इतना बड़ा बल विचारोंमें है। इसलिये महात्मालोग कहते हैं कि जैसे बने वैसे अभी—इसी जिन्दगीमें शुभ विचार करो। क्योंकि जन्म बदलनेसे स्वभाव नहीं बदलता। अगर भविष्य सुधारना हो और भाग्यको फेरना हो तो हमेशा शुभ विचार करो, शुभ विचार करो।

हम हमेशा निकम्मे विचार अधिक करते हैं और अच्छे विचार बहुत कम करते हैं, इसीसे हमारी जिन्दगीमें शोक, संताप, भय, निराशा, रोग और अनेक प्रकारकी उपाधियां अधिक दिखाई देती हैं। क्योंकि ये सब दुःख खराब विचारोंसे ही पैदा होते हैं। इसलिये अब हमें यह जानना चाहिये कि अच्छे विचार करनेमें तकलीफ क्या है और खराब विचार करनेमें आराम क्या है। अगर अच्छे विचार करनेमें अधिक मिहनत

पड़ती हो, अधिक खर्च पड़ता हो तथा अधिक समय लगता हो और खराब विचार करनेमें समय न लगता हो, मिहनत न पड़ती हो तथा खर्च न लगता हो तो यह भी समझें कि अच्छे विचार करनेमें बहुत तरद्दुद है और खराब विचार करनेमें कुछ तरद्दुद नहीं है इसीसे खराब विचार करते हैं। परन्तु ऐसी कोई बात नहीं है। विचारका रहस्य समझनेवाले अनुभवी विद्वान कहते हैं कि एक अच्छा विचार करनेमें जितनी मिहनत और जितना वक्त लगता है उतना ही वक्त और उतनी ही मिहनत एक खराब विचार करनेमें भी लगती है। इतना ही नहीं बल्कि जो मनुष्य सत्वगुणी हैं; जिनका जीव अन्दरसे जगा हुआ है और जो सज्जन आत्माका बल समझे हुए हैं उनको अच्छे विचार करनेमें अधिक आसानी पड़ती है। और पाप के विचार करनेमें उल्टे अधिक कठिनाई पड़ती है। क्योंकि जो सच है, जो प्रकृतिकी पसन्दका है और आत्माको प्रिय लगता है वह करना सहज है। और याद रखना कि जो शुभ विचार हैं वे सच हैं, और प्रकृतिके पसन्द लायक हैं और वे आत्माके असली स्वभाव हैं। आत्मा सत् चित् और आनन्द स्वरूप है, इसलिये इसको आनन्दके विचार करना रुचता है और ऐसे काम करना रुचता है जिससे उसको और सबको आनन्द हो। ये सब गुण अच्छे विचारमें हैं, इसलिये अच्छे विचार करना आत्माका असली स्वभाव है। इससे अच्छे विचार करनेमें जीवको कुछ विशेष मिहनत नहीं पड़ती परन्तु पापके विचार करनेमें मिहनत पड़ती है। जैसे सच बोलने और जैसा देखा हो वैसा कह देनेमें कुछ मिहनत नहीं है। परन्तु झूठ बोलने और जो न देखा हो वह कहने में अधिक मिहनत पड़ती है; क्योंकि ऐसा करनेमें नयी नयी कल्पनाएं करनी पड़ती हैं

और कितने ही प्रकारके तर्क वितर्क करने पड़ते हैं। परन्तु जो देखा है उसे सच सच कह देनेमें झूठ बोलनेकी तरह विशेष मिहनत नहीं पड़ती। इसी तरह चोरी न करनेमें कुछ मिहनत नहीं है; क्योंकि यह जीवकी, प्राकृतिक स्थिति है। परन्तु चोरी करनेमें बड़ी मिहनत है। वैसे ही व्यभिचार न करनेमें कुछ मिहनत नहीं है परन्तु व्यभिचार करनेमें बड़ी कठिनाई है। इसी प्रकार अच्छे विचार करनेमें कुछ कठिनाई नहीं है पर बुरे विचार करनेमें कठिनाई है। तिसपर भी अफसोस! हम इतने बड़े मूर्ख बन गये हैं कि जिनमें अधिक मिहनत है उन बुरे विचारोंको अधिक करते हैं और जिनमें कुछ मिहनत नहीं है बल्कि जो एकदम कुदरती हैं उन अच्छे विचारोंको बहुत कम करते हैं। इसीसे हमारा भाग्य बिगड़ता है और इसीसे हम इस जिन्दगीमें अनेक प्रकारके दुःख भोगते हैं। अगर हमें सब प्रकारके दुःखोंसे छूटना हो और अपने भाग्यको सुधारना हो तो जैसे बने वैसे अच्छेसे अच्छे आत्मिक बलके कुदरती विचार करना चाहिये। क्योंकि आत्मिक बलके कुदरती विचार करना ही भाग्य फेरनेकी कुंजी है।

अच्छे विचारोंके सामने निकम्मे विचारोंका जोर कुछ नहीं चल सकता।

अच्छे विचार करना बड़ा सहज काम है तौभी हम आसानीसे अच्छे विचार नहीं कर सकते। इसका एक कारण यह भी है कि निकम्मे विचार करनेकी हमारी टेव पड़ गयी है; अच्छे विचार करनेमें यह टेव बाधा देती है; इस कारण हम अच्छे विचार नहीं कर सकते। जैसे-जिस खेतमें बहुत निकम्मी घास फूस उगी हो उसमें कीमती फसल जोर नहीं पकड़ सकती। हमारे मनरूपी

खेतमें निकम्मे बुरे विचाररूपी घास फूस गहरी जड़ पकड़ गयी है, इससे हम आसानीसे अच्छे विचार नहीं कर सकते। अगर हमें अपना भाग्य सुधारना हो और अच्छे विचार करना हो तो पहले खराब विचारोंकी जड़ोंको अपने मनसे उखाड़ डालना चाहिये। याद रखना कि उनको उखाड़ डालना कोई भारी बात नहीं है। इन छोटे छोटे जंगली घास फूसोंकी जड़ बहुत छोटी और ऊपर ही होती है। जैसे फलदार मीठे आमकी जड़ बहुत गहरे तक गयी हुई होती है उसी तरह खेतमें उगी हुई जंगली घासकी जड़ बहुत गहराई तक नहीं होती। याद रखना कि जो पापी विचार हैं वे जंगली घासके समान हैं और सुन्दर विचार आमके समान हैं। इसीसे श्रीमद्भगवद्गीतामें श्रीकृष्ण भगवानने भी कहा है कि पाप लकड़ीके समान है और ज्ञान अग्निके समान है। अगर लकड़ी ज्यादा और आग थोड़ी हो तौभी आग लकड़ीको जला देती है। इतना ही नहीं प्रभु कहता है कि—अगर पाप समुद्र बराबर हो और ज्ञान उसके हिसाबसे अदनासा जान पड़ता हो तौभी जैसे छोटासा जहाज भी समुद्र पार हो जाता है, वैसे ही, ज्ञानरूपी जहाजसे पापरूपी समुद्रको सहजमें पार कर जायंगे। ज्ञानकी यानी उच्चश्रेणीके विचारोंकी ऐसी महिमा है। इसलिये मनमें जमेहुए निकम्मे तथा दुर्बल विचारोंको उखाड़ डालनेमें किसी जिज्ञासुको बहुत मिहनत नहीं है; क्योंकि अच्छे विचारोंके सामने बुरे विचारोंका कुछ जोर नहीं चलता। इसलिये विचारकी फिलासफी समझने-वाले विद्वान इसको और खुलासा करके समझाते हैं कि।

मनके दो प्रकार हैं—ऊर्ध्वमन और अधोमन।

ऊर्ध्वमन अर्थात् ऊंचामन और अधोमन याने हलका मन।

अथवा स्थूल मन और सूक्ष्ममन नामक दो प्रकार के मन हमारे शरीरमें हैं। उनमें जो ऊंचामन है उसका सम्बन्ध जीवात्मासे है और जो हलकामन है उसका सम्बन्ध दुनियाके जंजाल तथा मायासे है। इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि जो ऊंचामन है वह सूक्ष्म तत्वोंसे बना है इससे वह सूक्ष्म तत्वोंको ही ग्रहण कर सकता है। और जो हलका मन है वह स्थूल तत्वोंसे बना है इससे वह स्थूल असर ही ग्रहण कर सकता है। इस कारण स्वार्थ क्रोध, लोभ, अहङ्कार और हलकी श्रेणीके छोटे छोटे जड़ता भरे दूसरे विचार हैं इस नीच मनमें ही रहते हैं और जो उच्चश्रेणीके अच्छे अच्छे विचार हैं, जो जगतकी भलाईके विचार हैं, अपने भाइयोंकी मदद करनेके जो विचार हैं, अपनी आत्माकी उन्नति करनेके जो विचार हैं और देशकी सेवा करनेके जो विचार हैं वे सब उच्चश्रेणीके विचार ऊर्ध्वमनमें रहते हैं। क्योंकि जो परमार्थके विचार हैं, जो ईश्वर सम्बन्धी विचार हैं और जो हर किसीकी मदद करनेके विचार हैं वे सब विचार जड़तावाले नहीं बल्कि बहुत सूक्ष्म हैं, ईश्वरकी इच्छाके अनुकूल वे विचार हैं, इससे वे सूक्ष्म हैं और ऐसे सूक्ष्म विचार उच्चश्रेणीके मनमें रह सकते हैं। उच्चश्रेणीके मनका आत्मासे सम्बन्ध है और आत्माका परमात्मासे सम्बन्ध है। इससे ऊंचीश्रेणीके विचार ऊर्ध्वमनकी मार्फत परमात्मा तक पहुंच सकते हैं। तब यह सिद्ध है कि ऊंची श्रेणीके विचारोंका असर बड़ा जबरदस्त है। इसवास्ते हर आदमीको अपना भाग्य सुधारनेके लिये हमेशा उच्चश्रेणीके परमार्थके विचार करना चाहिये। इससे यह भी समझमें आसकता है कि जैसे ऊर्ध्वमन ऊंचीश्रेणीके विचार पकड़ता है वैसे ही नीचमन हलके विचारोंको पकड़ लेता है। हम जो जो

मलिन विचार करते हैं वे सब जड़ विचार हलके मनमें निचली तहपर ही रहते हैं। इन सब हलके विचारोंमें कुछ बहुत जोर नहीं होता, क्योंकि अनेक दृष्टान्तोंसे हम बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि स्थूलसे सूक्ष्मका असर बहुत बलवान होता है। इसी तरह विचारोंके विषयमें भी समझना चाहिये।

स्वार्थके विचारोंमें परमार्थके विचारोंका असर बहुत गहरा, बहुत मजबूत और बड़ा बलवान होता है।

इससे हलके विचार बहुत ज्यादा हों और उत्तम विचार बहुत थोड़े हों तौभी उत्तम विचारोंका जोर बढ़ जाता है और बढ़े हुए जोरके कारण थोड़ेसे उत्तम विचार हजारों निकम्मे विचारोंको तोड़ डालते हैं। याद रखना कि इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है बल्कि यह एकदम स्वाभाविक है। इसीसे कितनेही भक्त ॐ नमः शिवाय, श्रीकृष्णः शरणं मम, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अथवा राम राम ही उच्चारण करने और उनकी भावना रखनेसे बड़े बड़े पापोंसे तर गये हैं। इसी प्रकार सारी जिन्दगी खराब काम और खराब विचार किये हों पर जब सच्चे दिलसे जीवका गुरु जीवको बनाकर परमार्थके विचार करें और ये विचार ऊंचेमनसे होकर आत्मातक और पीछे परमात्मातक पहुंचे तब इन थोड़े विचारोंसे भी सब खराब विचार नष्ट हो जाते हैं और हृदयसे किये हुए थोड़ेसे अच्छे विचारोंसे भी उनका कल्याण हो जाता है। इसलिये कोई भी भाई या बहन इससे निराश न हों कि—मैंने तो जिन्दगी भर हाय हाय की है और कितने ही तरहके पापी विचार किये हैं, अब थोड़से अच्छे विचार करनेसे क्या होता है। यह सोचकर किसीको निराश

नहीं होना चाहिये क्योंकि हलके विचारोंकी अपेक्षा ऊंचे पवित्र विचारोंमें बहुत अधिक बल है, इससे मजबूतीसे किये हुए थोड़ेसे अच्छे विचारोंसे भी हजारों पापी विचारोंका नाश किया जा सकता है और इस तरह हजारों भक्त तर गये हैं। इसलिये जरा भी हिम्मत न हारकर जबसे खयाल हो तभीसे जागना चाहिये और अपना भाग्य सुधारनेके लिये शुभ विचार करनेकी आदत डालना चाहिये। ऐसा करनेसे थोड़े ही समयमें पापी विचारोंका बल टूट जायगा और ऊंचे विचार चमक उठेंगे। क्योंकि पापी विचार नीच मनमें हैं और उस मनका बहुत जोर नहीं है पर ऊँचे विचार सूक्ष्म मनमें हैं और उसका असर बहुत जबरदस्त है, इससे निकम्मे हलके विचारोंको दबाते उन्हें बहुत देर नहीं लगती। इसलिये भाइयो और बहनो! हमेशा उत्तम विचार करना, उत्तम विचार करना।

ऊंची श्रेणीके अच्छे विचार करनेवालोंपर पापी मनुष्योंका बुरा असर नहीं पड़ सकता।

विचारोंकी खूबीमें यह बात भी जानने योग्य है कि पवित्र विचारोंके पास खराब विचार आ ही नहीं सकते; क्योंकि पवित्र विचार ऊंची मंजिलमें रहते हैं और मलिन विचार निचले खंडमें रहते हैं। इन दोनोंके बीच बहुत बड़ा अन्तर है, इससे ये दोनों किसी दिन साथ मिल ही नहीं सकते। इस कारण, भले मानससे डाह करके पापी आदमी उसे बुरी निगाहसे देखे या उसकी बुराई करनेके लिये पापी विचार करे तौभी वे विचार उस भले विचारवाले आदमीके पास नहीं पहुंच सकते क्योंकि भले विचारवाला आदमी विचारकी जिस ऊंची सतहमें रहता है वहां तक

पापी विचार पहुंच ही नहीं सकता । इससे पवित्र आदमीपर किसी तरहके पापी विचारका या जादू टोनेका कुछ भी असर नहीं पहुंच सकता। पर जो आदमी स्वयं रातदिन मलिन विचारोंमें रहते हैं उनपर मलिन विचार असर कर बैठते हैं । इससे यह भी समझलेना चाहिये कि पवित्र विचार करनेवाले आदमी दूसरोंके पापी विचारोंके असरसे कुदरती तौर पर बच सकते हैं, पर मलिन विचार करनेवाले दिन पर दिन अधिक खराब होते जाते हैं। ऐसा न होने देनेके लिये सब आदमियोंको हमेशा पवित्र विचार करना चाहिये। क्योंकि दूसरोंकी तरफसे, बाहरसे आये हुए खराब असरसे बचना भी बहुत जरूरी बात है। याद रखना कि पापी विचार करनेवाले ऐसे असरसे नहीं बच सकते, अच्छे विचार करनेवाले ही ऐसे असरसे बच सकते हैं। और ऐसे असरमें न फंसनेसे भाग्य जल्द सुधर सकता है। दूसरोंके खराब असरसे बचनेके लिये और अपना भाग्य सुधारनेके लिये हमें जैसे बने वैसे हमेशा अच्छे विचार करना चाहिये ।

हम अच्छा या बुरा जो विचार करते हैं उसका तुरत ही—उसी वक्त असर हो जाता है परंतु हम उस समय उसको नहीं समझते, इसका कारण ।

विचारोंके विषयमें यह बात भी समझने लायक है कि हमें अपने किये हुए कामोंके परिणामकी तरफ नहीं देखना है बल्कि अपने अच्छे या बुरे विचारोंकी तरफ ही देखना है। कितनी ही वार ऐसा भी होता है कि हम अच्छे विचार करते हैं और शुभ उद्देश्यसे प्रभुके प्रीत्यर्थ अच्छे काम करते हैं तौभी उनका कुछ

बुरा परिणाम होता है और कोई कोई खराब आदमी खराब विचार करते हैं और खराब चाल चलन रखते हैं तौभी, कभी कभी उनके खराब कामोंसे भी उनको दुनियादारी लायक कुछ अच्छा लाभ होजाता है। ऐसा होना आसपासके संयोगोंके ऊपर है। इससे किसी वक्त " कसाईके घर कुशल और धर्मीके घर डाका " भी होजाता है। पर ऐसे होनेसे अच्छे विचारोंका अच्छा असर व्यर्थ नहीं जाता। इसलिये हमने जो अपना कर्त्तव्य पाला और अच्छी निष्ठासे जो अच्छे काम किये हों उनके परिणामका खयाल करनेकी हमें ज़रूरत नहीं है; क्योंकि हम एक ही तरफसे देखते हैं। जैसे-भले विचार किये हों तौभी इर्दगिर्दके खराब संयोगोंके कारण कुछ खराब परिणाम आता है तब हम इस व्यवहार दृष्टिमें खराब जान पड़ते हुए परिणामको देखते हैं पर अच्छे विचार करनेसे हमारे हृदयपर जो अच्छी छाप पड़जाती है, अच्छे विचार करनेसे हमारी आत्माको ढकनेवाले जो परदे घट जाते हैं, अच्छे विचार करनेसे जो मानसिक वल वढ़ता है, अच्छे विचार करनेसे बुद्धिकी जो ग्रहणशक्ति वढ़ती है, अच्छे विचार करनेसे जगतपर जो अच्छा प्रभाव डाला जा सकता है, अच्छे विचार करनेसे जो उच्चश्रेणीके शुभ बीज पड़ते हैं, अच्छे विचार करनेसे उन्नतिके मार्गमें जो वढ़ती होती है और अच्छे विचार करनेसे सर्वशक्तिमान कृपालु महान परमात्माकी हमपर जो कृपा उतरती है तथा अच्छे विचार करनेसे हमारे भविष्यका जो भाग्य सुधरता जाता है उसके सामने हम नहीं देखते; सिर्फ खराब संयोगोंके कारण बाहरसे जो कुछ व्यावहारिक अड़चलें आ पड़ती हैं उन्हींको देखते हैं। इस तरह अधूरी दृष्टिसे और एकतरफी निगाहसे हम अपने कामोंके परिणामकी ओर देखते हैं, इससे हम निराश

होते हैं और कभी कभी ऐसा खयाल कर बैठते हैं कि अच्छे विचारोंका फल तुरत नहीं मिलता, मरनेके बाद मिलता है, या दूसरे जन्ममें मिलता है। ऐसा खयाल होनेसे हम शुभ विचार करनेमें बहुत ढिलाई रखते हैं। परन्तु विचारका अभ्यास करनेवाले विद्वान तथा महात्मा कहते हैं कि कोई भी अच्छा या बुरा विचार कभी व्यर्थ नहीं जाता और अच्छे विचारका अच्छा असर तथा बुरे विचारका बुरा असर तुरत ही, जिस समय विचार किया हो उसी समयसे होने लगता है। जैसे-हमने एक क्यारीमें तुलसीका या किसी चीजका बीज बोया, उसमें खाद डाला और उसे सींचा। यह सब जिस समय किया उसी समय उसमेंसे अंकुर नहीं निकल आता, बल्कि उस बीजका अंकुर निकलनेमें कई घंटे या कई दिन लगते हैं। इसके बाद जब समय आता है तभी उसमेंसे ढेंपी निकलती है। फिर धीरे धीरे पौधा बढ़ता है और जब वह परिपक्व होता है तब समय आने पर उससे फल मिलता है। परन्तु याद रखना कि जबसे जमीनके अन्दर बीज बोया तभीसे उसमें कुछ कुछ रासायनिक सूक्ष्म फेरबदल होने लगता है, किन्तु हमारे पास वह फेरबदल देखनेका उपाय नहीं है और न ऐसी दृष्टि ही खिली है कि हम उसे देख सकें इसीसे बीजमें होनेवाला फेरबदल हम आसानीसे नहीं देख सकते। पर जब उसमेंसे अंकुर निकलता है तब हम उसमे फेरबदल होना समझते हैं। हम जो विचार करते हैं वह भी बीज बोनेके समान है, इससे तुरत ही उसका असर हम नहीं समझ सकते। तौभी अफसोसकी बात है कि अपनी अज्ञानताके कारण जो बात हम नहीं समझते उसका दोष दूसरोंपर ढालते हैं और सूक्ष्म रीतिसे कुछ अच्छा परिणाम होरहा हो तौभी अपने

मनमें समझते हैं कि कुछ हुआ ही नहीं। क्योंकि हम विचारोंके असर, विचारोंके बल, विचारोंकी महत्ता और विचारोंकी खूबियोंके सामने नहीं देख सकते, सिर्फ इर्दगिर्दके संयोगोंके कारण आये हुए व्यावहारिक परिणामोंके सामने ही देखा करते हैं इससे हम एक तरफ दौड़ जाते हैं और उससे कभी कभी हमारे जीमें ऐसा प्रश्न उठता है कि अगर अच्छे विचारोंका अच्छा ही परिणाम है और बुरे विचारोंका बुरा ही परिणाम है तो फिर "धर्मीके घर डाका और कसाईके घर कुशल" का दृश्य कभी कभी क्यों देखनेमें आता है। भाइयो! हमारे जीमें ऐसा प्रश्न उठनेका कारण यह है कि हम विचारोंकी खूबियां और विचारोंका असर ठीक ठीक नहीं समझते। इसीसे अज्ञानी आदमी ऐसा समझते हैं कि विचारोंका असर तुरत नहीं होता और उनका फल उसी वक्त नहीं मिलता। पर महात्मा लोग कहते हैं कि यह समझ खोटी है। हर एक विचारके साथ उसी वक्त कुछ कुछ क्रिया होती है क्योंकि विचार क्रियाका ही स्वरूप है इसलिये याद रखना कि विचार और क्रिया दो अलग अलग चीजें नहीं हैं, बल्कि विचार एक प्रकारकी सूक्ष्म क्रिया ही है। इससे कोई भी अच्छा विचार अच्छा असर उपजाये विना रहता ही नहीं। इसलिये आसपासके खराव संयोगोंके कारण कभी अच्छे विचारका खराव परिणाम हो और खराव विचारका वाहरी निगाहसे देखनेमें अच्छा लगनेवाला परिणाम हो तौभी दुखी मत होना वल्कि हिम्मत रख कर तथा वस्तु समझ कर शुभेच्छा रखना और शुभ कर्म करना।

प्रभु हमारी इच्छाओंके सामने देखता है, इससे छोटा काम भी भली इच्छासे किया हो तो उसका बड़ा फल मिलता है और बड़ा काम भी खराब इच्छासे किया हो तो उसका कुछ अच्छा फल नहीं मिलता।

विचारका असर समझनेके प्रकरणमें यह बात भी ध्यानमें रखने लायक है कि अच्छे या बुरे, हलके या भारी और छोटे या बड़े कामकी ओर नहीं देखना है बल्कि किस उद्देश्यसे हमने वह काम किया है उसको देखना है। कितनी ही बार ऐसा होता है कि काम बड़ा होता है पर उसका परिणाम बहुत छोटा होता है। और कितनी ही बार ऐसा भी होता है कि काम बहुत छोटा होता है पर उसका परिणाम बहुत बड़ा होता है। यह कुछ नियम नहीं है कि छोटे कामका फल छोटा हो और बड़े कामका फल बड़ा हो। विचारकी सृष्टिमें तो ऐसा नियम है कि किस उद्देश्यसे काम किया गया है इसीको देखते हैं। इससे एक छोटासा काम भी शुभ उद्देश्यसे किया हो तो उसका बहुत बड़ा फल मिलता है और बहुत बड़ा काम भी अगर खराब निष्ठासे किया हो तो उसका कुछ बहुत अच्छा फल नहीं मिलता। कितनी ही बार मन्दिर बनवानेवाले अभिमानियोंके कामकी ईश्वरके दरबारमें जितनी कीमत होती है उससे अधिक ऊंची दशा उसी मन्दिरमें भली निष्ठासे झाड़ू देनेवाली अज्ञान स्त्रियोंकी होती है। हरामके पैसे जोड़ कर पीछे उससे सदाव्रत चलानेवाले सेठ साहूकारोंको जो फल

मिलता है उससे अच्छा फल उन लोगोंको मिलता है जो उस सदाव्रतमें खिचड़ी खाकर परमात्माका पूर्ण उपकार मानते हैं तथा इसका बदला चुकानेके लिए अच्छे कामोंमें लगे रहते हैं। इसी प्रकार हर एक विषयमें समझना चाहिये। क्योंकि हमारे कामोंसे ईश्वरके दरबारमें हमारी परीक्षा नहीं होती बल्कि किस इच्छासे हमने काम किया है यही वहां देखा जाता है और यही प्रभुकी प्रभुता है। अगर प्रभुके घर यह कानून हो कि जो बड़ा काम करे उसीको बड़ा फल मिले और उसीका उद्धार हो तब फिर गरीबोंका क्या हाल हो? वे बेचारे कैसे तरें? संसारमें सभी आदमियोंको तालाब खुदवाने, धर्मशाला बनवाने, दवाखाने खुलवाने, सदाव्रत चलाने, मन्दिर स्थापने, पुस्तक लिखने, व्याख्यान देने और ऐसे ही ऐसे बड़े काम करनेका सुबीता थोड़े है? नहीं है। और ऐसे बड़े काम करनेवालोंको अगर बड़ा फल न मिले तो जीव कैसे तर सकता है? अगर ऐसा ही होता तो फिर प्रभुकी प्रभुता क्या होती? परन्तु प्रभुकी दया है कि भली इच्छासे किये हुए छोटेसे छोटे कामसे भी मनुष्य आगे बढ़ सकता है और भली इच्छासे किये हुए छोटे कामका भी बड़ा बदला मिल सकता है। इसलिये हमें छोटे बड़े कामका खयाल करनेकी जरूरत नहीं है, क्योंकि छोटा या बड़ा काम करना तो संयोगके आधारपर है। जिसके पास जिस किस्मका साधन है और जिसके मनमें जितना बल है तथा जिसकी आत्मा जितनी खिली हुई है उसीके हिसाबसे वह छोटा या बड़ा काम कर सकता है। इतना ही नहीं बल्कि कितनी ही बार खराब निष्ठासे भी यानी अभिमानके कारण, मान पानेके लिये, खिताब लेनेके लिये, परिवारके किसी आदमीको खुश रखनेके लिये या ऐसे ही किसी दूसरे कारणसे कभी कभी कोई बड़ा या अच्छा काम

किया जाता है पर जो काम भली इच्छासे अपना कर्त्तव्य समझ कर किया जाता है उसकी बात ही कुछ और है। इसलिये अगर आपसे कभी बड़ा काम न हो सके तो कुछ परवा नहीं, पर भली इच्छासे छोटे छोटे शुभ कामोंको सदा किया करें। भली इच्छासे किये हुए छोटे कामोंका भी परिणाम बहुत बड़ा है और प्रभु ऐसा दयालु है कि अगर हम भली इच्छासे किसीको एक लोटा पानी दें तो उससे वह तालाव बनवानेका पुण्य दे देता है। किसी लाचार दुखिया आदमीको दिलासा दें तो उससे वह शास्त्रका अभ्यास करनेका फल दे देता है। किसी मरते हुए आदमीकी शुश्रूषा करें तो उससे वह औषधालय खोलनेका फल दे देता है और किसी लावारिस गरीब लड़केका पोषण करें या उसे किसी अनाथालयमें भेज दें तो वह एक आदमीकी जिन्दगी सुधारनेका फल दे देता है। इसी प्रकार छोटेसे छोटे काम भी भली इच्छासे किये हों तो उनका बड़ा फल मिलता है। और हजारों या लाखों रुपयेकी लागतके बड़े काम भी अगर खराब विचारसे किये हों तो उनका कुछ अच्छा फल नहीं मिलता। इसलिये भाइयो! छोटे बड़े कामके सामने मत देखिये, बल्कि शुभेच्छासे अपनी हैसियतके अनुसार अच्छे अच्छे काम कीजिये।

अपने मनको अच्छे विचारोंमें न लगा रखें तो वह हलके विचारोंमें दौड़ जाता है।

विचारोंका असर समझनेके विषयमें यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि हमारे मनका गठन ऐसा है कि जिससे वह बड़ा चंचल है, उसको बशमें रखनेके लिये मिहनत करें तौभी वह मौका पाते ही छटक जाता है। उसका स्वभाव ही ऐसा है कि

वह एक क्षण भी कुछ काम किये बिना नहीं रह सकता। इसलिये उसको अच्छे विचारोंमें न लगा रखें तो वह खराब विचारोंमें दौड़ जाता है। क्योंकि हमारे अन्दर जो ओछी श्रेणीका अधोमन है उसका जोर बहुत बड़ा है। इसका कारण यह है कि मुद्दतसे वह हलके विचारों और हलके व्यवहारमें ही पला है इससे इस किस्मके संस्कार उसमें बहुत पड़ गये हैं जिससे वह अपने आप नीचताकी तरफ ढल जाता है। इतना ही नहीं, हमारे आसपासके वायुमण्डलमें हलके दरजेके जड़ विचार भटकते रहते हैं, वे मनको बिना ऊंचे आधारका देख कर उसमें घुस जाते हैं। इसलिये अगर अपना भविष्य सुधारना हो तो पहले शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये और शुभेच्छाके टिकने तथा बढ़ने लायक मन होना चाहिये। क्योंकि शुभेच्छाके रहनेकी जगह मन है; अपने मनको हमेशा अच्छे विचारोंमें रोक रखनेकी कुंजी जबतक नहीं मिल जाती तबतक मनमें खराब विचार घुसे बिना नहीं रहते। इससे मनको अच्छे विचारोंमें रोक रखनेकी कुंजी प्राप्त करना चाहिये। इसके लिये महात्मा लोग कहते हैं कि—

मनको सुधारनेके उपाय। श्रवण, मनन और निदिध्यासन।

अगर अपने मनको सुधारना हो, उसमें आजानेवाले खराब विचारोंको रोकना हो, उसको ऊंची मंजिलमें चढ़ाना हो और अपना भाग्य सुधारना हो तो हमें पहले अच्छी संगतमें रहना चाहिये, ऊंचे दरजेकी बातें सुनना चाहिये, अच्छी पुस्तकें पढ़ना चाहिये और जैसे बने वैसे ऐसा करना चाहिये कि हमारे कान अच्छे शब्द तथा अच्छे

विचार सुनें। ऐसा करनेको श्रवण कहते हैं। इस तरह जब वारंवार होता है और हमेशा होता है तब मन जागने लगता है, उसके सुने हुए विचार अन्दरसे धक्का मारते हैं और जब श्रवणका जोर बहुत बढ़ जाता है तब वह आलसमें पड़े हुए और हठी बने हुए मनको भी जगाता है। इससे यह होता है कि सुनने या बांचनेमें आये हुए ऊंचे दरजेके विचार मनको जंच जाते हैं जिससे मन उनमें रमा करता है और जहां तहां उनकी बातें दूसरे लोगोंके सामने कहा करता है, अपनी नजरके सामने उस किस्मके चित्र देखा करता है और कभी कभी उस किस्मके सपने आते हैं। मनकी ऐसी अवस्थाका नाम मनन है। याद रखना कि जब श्रवण किये हुए विचार मनको जंच जाते हैं और दूसरे विचारोंसे उन विचारोंमें उसे अधिक दिलचस्पी होती है तभी उसका मनन होता है। और जब अच्छे विचारोंका मनन करना आ जाता है तब फिर निकम्मे विचार मनमें बहुत नहीं आ सकते; इसमें धीरे धीरे मन वशमें हो जाता है और ऊंची मंजिलमें चढ़ जाता है। इसके बाद जैसे विचार वारम्बार सुने हैं और जैसे विचारोंका प्रेमपूर्वक मनन किया है उन्हींके अनु-सार चलनेका मन होता है। इससे ज्यों ज्यों अनुकूल संयोग मिलते जाते हैं त्यों त्यों अपने विचारोंके अनुसार मन क्रिया करने लगता है और श्रवण मननके अनुसार कर्म करनेका नाम निदिध्यासन है। यह निदिध्यासन जब सिद्ध होता है तभी मन, वचन और कर्मकी एकता होती है और जब मन, वचन और कर्मकी एकता होती है तभी सब प्रकारकी असली उन्नति होती है। क्योंकि पहले श्रवण करनेसे अच्छे विचार आते हैं और मन सुधरता तथा जमता जाता है। इसके बाद श्रवण किये हुए विषयोंका मनन ज्यों ज्यों बढ़ता जाता

है त्यों त्यों मनसे निकम्मे विचार दूर होते जाते हैं और मन जरा जरा गहराईमें उतरता जाता है। पीछे, मनमें अच्छे विचार ही रमा करते हैं, जिससे वाणीसे अच्छे वचन निकलते हैं। अच्छे वचन उन्हें कहते हैं जो आत्माको रुचें, जिनसे किसीका कल्याण हो, जिनसे प्रेम बढ़े, जिनसे देहका क्षणभंगुरपन समझमें आवे और जिनसे सुननेवालेको कुछ नया प्रकाश मिले। श्रवणसे जिसका मन तय्यार होजाता है तथा मननसे जिसका मन शुद्ध हो जाता है उसी भाग्यवान मनुष्यकी वाणीसे ऐसे प्रकाशित दिव्य वचन निकल सकते हैं। इसलिये जैसे श्रवणसे मन सुधरता है वैसे मननसे वाणी सुधरती है। इसके बाद निदिध्यासनसे कर्म सुधरता है जिससे अच्छे काम किये जा सकते हैं और मन वचन तथा कर्मकी एकता की जा सकती है। जब यह एकता होती है तभी अपना भाग्य पलट सकता है और तभी अपनी उन्नति होती है तथा इसीके बाद आत्माका उद्धार होता है। अतएव अपने मनको सुधारनेके लिये ऊपर लिखे अनुसार श्रवण, मनन और निदिध्यासन करना चाहिये तथा उससे मन, वचन और कर्मकी एकता करनी चाहिये। याद रखना कि यह सब अपनी हृदयकी शुभेच्छाओंसे होता है, यह सब अपनी आत्माके बलसे होता है, यह सब अपने अच्छे चाल चलनसे होता है, यह सब अच्छी संगतसे होता है और इन सबका मूल शुभेच्छा है। इसलिये भाइयो! अपना भाग्य फेरना हो तो शुभेच्छा रखना सीखिये। शुभेच्छा रखना सीखिये।

याद रखना कि हमारा विचार कोई छोटी मोटी चीज नहीं है, बल्कि बहुत बड़ा बल है।

विचार सम्बन्धी ये सब विषय समझा कर मैं आप लोगोंसे

क्या कहना चाहता हूँ यह आपने समझा ? कितने ही पाठक समझ गये होंगे पर और अधिक लोगोंको समझानेके लिये मुझे खूब खुलासा तौर पर कहना चाहिये कि हमारे विचार छोटी चीजें नहीं हैं, हमारे विचार निकम्मी चीजें नहीं हैं, हमारे विचार फेंक देने लायक चीजें नहीं हैं और हमारे विचार मामूली नहीं हैं। हमारे विचारोंमें हमारा उत्पन्न किया हुआ एक बहुत बड़ा बल है। यह इतना बड़ा बल है कि इसकी बराबरी करने योग्य जगतकी दूसरी कोई स्थूल वस्तु नहीं है। विचारोंका बल इतना बड़ा है कि वह लोगोंका मन फेर देता है, पहाड़ोंको तोड़ डालता है, समुद्रको सुखा देता है, नयी सृष्टि रच सकता है और नरसे नारायण बना देता है। इतना बड़ा बल विचारों में है। परम कृपालु महान ईश्वरकी हमारे ऊपर इतनी बड़ी कृपा है, उसने ऐसा महान बल हमें दिया है और इस बलके कारण ही मनुष्यत्व उत्तम है तथा इस बलके कारण ही हम जगतकी और सब वस्तुओंसे श्रेष्ठ हैं। इसलिये हमें अपने विचारोंके बलको चमकाना चाहिये और उस बलको अपने बशमें रखना तथा अपनी इच्छानुसार वर्तना सीखना चाहिये। अगर ऐसा करना आवे तो हम अपनी जिन्दगीसे और जगतसे कितने ही दुःख घटा सकते हैं। इसवास्ते हमें अपने विचारोंके बलको इकट्ठा करना और व्यवहारमें लाना सीखना चाहिये। यह सीखें और उससे काम लें तभी हमारी उन्नति हो सकती है और तभी हमारा भाग्य फिर सकता है। अपने भाग्यको फेर देनेके लिये, अपनी आत्माकी उन्नति करनेके लिये, अपने भाइयोंकी मदद करनेके लिये और सर्वशक्तिमान महान ईश्वरका ज्ञान तथा प्रेम पानेके लिये हमें अपने विचारोंको विकसित करना—चमकाना चाहिये।

और उनको वशमें रखना सीखना चाहिये। विचारोंका ऐसा स्वभाव है कि हम जिस किस्मके बहुत विचार किये रहते हैं उसीके अनुसार कार्य होता है। जैसे—हमने दुःखके विचार किये हों तो दुख ही आ जाते हैं। अगर हम भयके विचार किया करें तो चारों तरफ भयके कारण दिखाई देते हैं। अगर हम बीमारीके विचार करते हों तो बीमारी आ पहुंचती है और अगर मौतके विचार किया करते हों तो विचारके बलके अनुसार जल्द या देरमें मौत आ कर खड़ी हो जाती है। क्योंकि विचारोंका असर कभी व्यर्थ नहीं जाता। इतना ही नहीं, बल्कि पीछेसे हमारे विचार बदलें तो भी जब तक पहले किये हुए विचारोंका असर नष्ट न हो तब तक वह किसी न किसी रूपमें हमें नचाया करता है और हम उस असरको न चाहें तो भी वह आपसे आप आ कर हमें बारंबार हैरान किया करता है। इसी प्रकार अगर हमने अपने मित्रोंकी मदद करनेके विचार किये हों, दुखियोंका दुख घटानेके विचार किये हों, आत्माको छिपानेवाले परदे दूर करनेके विचार किये हों, तन्दुरुस्तीके विचार किये हों और ऐसे दूसरे अच्छे विचार किये हों तो समय आने पर उन्हींके अनुसार होता है। इतना ही नहीं बल्कि अपने विचारोंके बलसे मरे हुए आदमियोंको भी दिलासा दिया जा सकता है और उनकी सद्गति की जा सकती है। विचारोंमें इतना बड़ा बल है। याद रखना कि विचारोंका बल हाथमें आ जाने पर इन सब विचारोंको पाने तथा संचय करनेके लिये कुछ विशेष मिहनत नहीं करनी पड़ती; बल्कि जैसे एक दिन चाभी देनेसे घड़ी आठ दिन तक चला करती है और एक बार इंजनमें जरूरतके मुताबिक कोयला पानी भर देनेसे जैसे वह सैकड़ों मील दौड़ जाता है वैसे ही विचारोंको एकबार मजबूत चाल दे दी

हो तो वे बहुत समय तक अपना फर्ज अदा किया करते हैं। अब हमें यह समझना चाहिये कि विचारोंके इस महान बलको किस रीतिसे और कैसे कामोंमें लगाना चाहिये। इसके लिये महात्मा लोग कहते हैं कि:—

अपनी जिन्दगी सुधारनेमें अपने बिचारोंके महान बलको लगाना चाहिये।

हमें अपने विचारबलको पहले अपनी जिन्दगी सुधारनेमें लगाना चाहिये, फिर अपना सामाजिक व्यवहार सुधारनेके काममें लगाना चाहिये, पीछे देशहितके काममें लगाना चाहिये और पश्चात् ईश्वरके निमित्त ईश्वरके अर्पण हो कर यह महान बल काममें लाना चाहिये। क्योंकि यह सृष्टि ईश्वरने रची है और उसे बनाये रखनेकी उसकी इच्छा है। उसे बनाये रखनेके लिये पहले हमें अपनी जिन्दगी सुधारना चाहिये और इस प्रकार अपने बिचारबलको काममें लाना चाहिये कि जिससे वह हमारे सामाजिक व्यवहारमें उपयोगी हो सके। जब तक हम खूब अच्छी तरह सामाजिक व्यवहार न देख सुन लें और उसका अनुभव ले कर उसमें न रहें तब तक हममें सच्चा वैराग्य नहीं आ सकता और जब तक सच्चा वैराग्य न आ सके तब तक आत्माका कल्याण नहीं हो सकता। पुर्वके संस्कारसे लाखों आदमियोंमेंसे एकाधको जवानीमें कभी सच्चा वैराग्य आ जाता हो तो यह दूसरी बात है, पर साधारणतः दुनियादारीका बहुत अनुभव होने पर पक्की अवस्थामें ही और उनमें भी

भाग्यशालियोंको ही सच्चा वैराग्य आ सकता है और बाकी सब तो व्यवहारमें ही गर्क रहते हैं ईश्वरकी इच्छा सृष्टिको आगे बढ़ानेकी है, इसलिये व्यवहार चलाना भी उचित ही है। इससे पहले हमको यह समझना चाहिये कि हमारा व्यवहार कैसे सुधरे और अपनी जिन्दगी सुधारनेमें तथा अपनी घर गृहस्थी सुधारनेमें अपने विचारबलसे हम किस प्रकार लाभ उठा सकते हैं इसके नियम समझना चाहिये। इससे हमारी जिन्दगी सुधरती है, और हमारी गृहस्थी सुधरती है जिससे आगे जा कर परमार्थ भी सुधर सकता है। परमार्थके रास्तेमें आगे बढ़नेके लिये पहले हमें अपनी जिन्दगी और अपना व्यवहार सुधारना चाहिये। और इसके लिये विचारबलसे काम लेनेकी कुंजी हथियाना चाहिये। इसके लिये शास्त्रमें आगे बढ़े हुए अनुभवी महात्मा कहते हैं कि :—

इस दुनियामें पांच तरहके मुख्य दुःख हैं और वे हमारी अज्ञानतासे ही उत्पन्न होते हैं।

इस दुनियामें मुख्य पांच तरहके दुःख हैं। एक गरीबी, दूसरे रोग, तीसरे कई तरहकी अड़चलें—जैसे किसीको लड़का न हो, किसीको अपनी स्त्री नापसन्द हो, किसीको राज्यकी तरफसे अड़चल हो, किसीको धर्मके नियम न पालनेसे दुःख होता हो और किसीको अपने काम, क्रोध, लोभ इत्यादि विकारोंसे या दूसरोंके अनुचित लोभसे नुक्सान होता हो वे सब दुःख, चौथे बुढ़ापा और पांचवे मौत। ये सब दुःख इस दुनियामें हैं और सब आदमियोंको इन सब दुःखोंका थोड़ा बहुत अनुभव

बारंबार हुआ करता है। इससे वहुतेरे आदमी यह समझते हैं कि ये दुःख ईश्वरी देनी हैं--कुदरती हैं। परन्तु महात्मा लोग कहते हैं कि ये दुःख कुदरती नहीं हैं बल्कि अपनी अज्ञानतासे अपनी भूलोंसे पैदा हुए हैं। अगर हम अपनी भूल सुधारें और ज्ञान मार्ग तथा प्रेम मार्गमें आगे बढ़ें और धर्मके मार्गमें रह कर प्रभुके कदम बकदम चलें तो इन सब दुःखोंको हम बहुत कुछ घटा सकते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं है। प्रकृतिका यह नियम है कि जो आदमी जैसा विचार करता है वह वैसा ही हो जाता है। इसका कारण यह है कि विचारसे ही आचार बनता है, इसलिये विचार ही भाग्यकी कुंजी है। अगर हम गरीबीके बिचार करें तो गरीब हो जाते हैं और अमीरीके बिचार करें तो अमीर हो सकते हैं। इसी तरह दुःखके बिचार करें तो दुखी होते हैं और सुखके विचार करें तो सुखी होते हैं। बुढ़ापेके विचार करें तो बूढ़े होते हैं जवानीके विचार करें तो जवान रह सकते हैं। मूर्खताके बिचार करें तो मूर्ख बन जाते हैं और बिद्वत्ताके बिचार करें तो विद्वान बन जाते हैं। भयके बिचार करें तो सब जगह भय ही दिखाई देता है और आत्माके बलका ईश्वरके ऐश्वर्यका विचार करें तो हर जगह और हर विषयमें हमें आनन्द ही हुआ करता है। क्योंकि बिचार ही भाग्यकी कुंजी है, इसलिये आदमी जैसा बिचार करता है वैसा हो जाता है। पर जो विचार भाग्यको फेर सकते हैं वैसे बिचार किस तरह करना चाहिये यह जानते हैं? नहीं। यह बात नहीं जानते इसीसे हम अपने भाग्यको नहीं फेर सकते। इसलिये जिन विचारोंसे हमारा जीवन बदले वे विचार कैसे होने चाहियें; कहांसे ये विचार करना चाहिये और कैसे बलसे इन विचारोंको अपने अमलमें लाना चाहिये ये बातें हमें ठीक ठीक समझनी चाहियें।

जिन विचारोंसे हमारा भाग्य फिर सकता है वैसे विचार किसतरह करना चाहिये।

इसके लिये विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए महात्मा लोग कहते हैं कि—अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये हमें जो विचार करना है वे ऊंचेसे ऊचे दरजेके हों। एकदम भीतरसे हृदयकी प्रेरणासे निकले हुए हों। उन विचारोंमें मन वचन और कर्मसे तन्मय हो जाना चाहिये। वे विचार पूर्णबलसे और अतिशय प्रेमसे करना चाहिये। उन विचारोंको करते समय उनके मुकाबलेके चढ़ा उपरीके विचारोंका बिलकुल अभाव हो जाना चाहिये, वे विचार नसनसमें और हर एक इन्द्रियमें समाजाना चाहिये। वे विचार दिलसे बिना किसी प्रकारका ओछा स्वार्थ रखे प्रभुकी प्रीतिके लिये करने चाहियें। उन विचारोंको करते समय एक तरहकी सहज समाधिकी सी हालत हो जानी चाहिये। उन विचारोंको करते समय एक तरहकी नयी बिजली और नया प्रकाश अपने मनमें, अपनी बुद्धिमें तथा अपने अन्तःकरणमें आजाना चाहिये। उन विचारोंको करते समय अपने हृदयमें जितनी गहराई तक जा सकें जाना चाहिये। उन विचारोंको अपनी नजरके सामने सदा खड़ा रखना चाहिये। उन विचारोंके ध्यानमें जगतका अस्तित्व भूल जाना चाहिये। उन विचारोंके करते समय अपने हृदयका दरवाजा खोल देना चाहिये और अपनेको ऐसा मालूम हो जाना चाहिये कि हम उन विचारोंके रूप ही बन गयें हैं तथा यह अनुभव होना चाहिये कि उन विचारोंको करते समय हम ईश्वरके बहुत ही निकट पहुंच गये हैं। इस तरह जो विचार होते हैं और ऐसी दशामें जो विचार होते हैं वे ही विचार हमारे भाग्यको फेर सकते

हैं। हमको इस तरह विचार करना सीखना चाहिये। परन्तु

ऊपर लिखे अनुसार विचार करनेके बदले आजकल हम किस तरहके विचार करते हैं, यह आप जानते हैं ?

इसके लिये जन स्वभाव समझनेमें कुशल माने जानेवाले विद्वान कहते हैं कि एक तरफ हम धन पाने की इच्छा रखते हैं और दूसरी तरफ यह माना करते हैं कि धन मिलना प्रारब्धके हाथमें है, दैवके हाथमें है, संयोगके हाथमें है, समयके हाथमें है तथा कर्मके हाथमें है। इससे धन पानेकी हमारी इच्छा होने पर भी उस ढङ्गके बहुत जबरदस्त विचार हम नहीं कर सकते। इतना ही नहीं बल्कि धनकी चाह होने पर भी हम धन पानेके अधिक विचार नहीं करते, उलटे गरीबीके ही अधिक विचार करते हैं और धन जाता रहेगा, नौकरी चली जायगी, रोजगार टूट जायगा या कोई संयोग बदल जायगा तो फिर हम क्या करेंगे इत्यादि फिकरमें ही पड़े रहते हैं। इससे गरीबीके फिक-रके विचार बढ़ जाते हैं और धन पानेके विचार दब जाते हैं जिससे हमको धन नहीं मिलता। प्रकृतिका यह नियम है कि मनको दरिद्र रख कर कोई धनी नहीं होता। हाय ! हाय! फिर क्या करूंगा ? ऐसी फिकर रख कर कोई धन पानेका विचार करे तो उससे वह धनी नहीं होता और दरिद्रताका जीवनचरित्र पढ़ा करनेसे कोई धनी नहीं होता। आश्चर्य देखिये कि हमें धनवान होना है और तिस पर भी हम गरीबीके विचारोंमें ही डूबे रहते हैं! जैसे—फलाने आदमीका धन चला गया इससे वह बहुत दुखी हो गया है; ऐसे हमारा धन चला जायगा तो

हमारा क्या हाल होगा? फलाना आदमी बड़ा धनी था पर व्यापारमें घाटा लगनेसे आज वह कौड़ीका तीन हो गया है। फलाना आदमी बड़ा भारी ओहदेदार था और बड़ी नवाबी करता था पर नौकरी छूट जाने पर उसे कोई पहचानता भी नहीं। वैसा ही हमारा भी कुछ हो जाय तो हम क्या करेंगे! लड़कोंका व्याह करने पर जाति बिरादरीके रिवाजके मुताबिक खर्च करना पड़ेगा, इसके लिये कर्ज लेना पड़ेगा और मकान भी खराब हो गया है उसे भी फिरसे बनवाना होगा पर टका कहांसे लावें? स्त्री कभी कपड़े गहनेकी बात निकालती है तो उसकी बात सुननेसे पहले ही कहते हैं कि हम गरीब हैं। कोई भिखमंगा भीख मांगने आवे तो उसको कुछ देनेके डरसे कहते हैं कि बाबा! हम गरीब हैं। मित्रोंमें बारबार यही कहा करते हैं कि हम गरीब हैं। इस तरह गरीबीके विचारोंमें ही हम गोते खाते हैं तथा दरिद्रताका ही जीवनचरित्र पढ़ा करते हैं और आश्चर्य देखिये कि तिसपर भी धनी होना चाहते हैं! यह कैसे हो सकता है? बेशक हमें धन चाहिये यह बात सच है, धन पानेकी हमारी इच्छा है यह बात सच है और धन पानेके लिये हम उछलते कूदते हैं यह बात भी सच है पर तौभी, ज़रा विचार कर देखिये कि हमारे मनमें गरीबीका जोर ज्यादा है कि अमीरीका? दरिद्रताके संस्कार अधिक हैं कि धनाढ्यताके? और हम दरिद्रताका जीवन चरित्र अधिक पढ़ते हैं कि अमीरीका? इन सबका जवाब यही देना पड़ेगा कि गरीबी ही हमारे मनमें अधिक घुस गयी है और अमीरी तो बहुत दूर है। ऐसा होनेसे ही भाइयो! हम धन चाहते हैं तौभी दरिद्र रहते हैं। क्योंकि धन पानेके लिये जिस किस्मके विचारोंमें रहना चाहिये उस किस्मके विचारोंमें रहना हमें आता ही नहीं। तब कोई पूछेगा कि धन

पानेके लिये हमें किस किस्मके विचारोंमें रहना चाहिये। इसके लिये विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए विद्वान कहते हैं कि—

गरीबसे धनी होनेके सच्चे और अनुभवी उपाय।

अगर हमें धनी होना है तो हमेशा धन सम्बन्धी ऊंचेसे ऊंचे विचार करना चाहिये, धनवानोंके जीवनचरित्र पढ़ना चाहिये और धनवानोंके मगजमें जिस किस्मकी खुमारी तथा उदारता है वैसी खुमारी और उदारता अपने विचारोंमें लाना चाहिये। जैसे—धन पानेके लिये धन कमाये हुए पूर्व पुरुषोंने कितनी बड़ी मिहनत की है, उसका हाल जानना चाहिये, इसके बाद धन पानेके लिये उन्होंने कितने बड़े जोखों उठाये हैं यह जानना चाहिये और वैसे जोखों उठानेको तय्यार होना चाहिये; फिर धन पानेके लिये कैसी कैसी युक्तियां करनी पड़ती हैं और इसमें कितना बड़ा व्यावहारिक ज्ञान तथा कितनी बड़ी चतुराई होती है इसका विचार करना चाहिये। इसके पश्चात् धन कमानेवाले पुरुषोंने कितना लम्बा सफर किया है इसका विचार करना चाहिये। फिर धन कमानेवाले आदमियोंमें क्या क्या मुख्य गुण होते हैं इसका विचार करना चाहिये। इसके बाद धन पानेवाले आदमियोंको शुरूमें कितने बड़े बड़े संकट भोगने पड़ते हैं इसका विचार करना चाहिये। पीछे, धन पानेवाले आदमियोंकी जिन्दगीमें कितना बड़ा जंजाल होता है इसका विचार करना चाहिये और फिर यह विचार करना चाहिये कि अगर हम धन जमा करेंगे तो मर जानेपर वह हमारे किस काममें आवेगा? किसलिये हम धन कमाते हैं? खास अपने सुखके लिये ही या परमार्थके लिये? इन सब बातोंका पहले विचार करना चाहिये और यह सब सोच विचार लेनेके बाद पूरे बलसे सच्चे रास्ते धन

कमानेके लिये मिहनत करना चाहिये और वह मिहनत करते समय मनमें किसी तरहका भयका विचार न आने देना, जरा भी नाउमेद न होना, धन मिलनेमें बहुत देर लगे तौभी हार न जाना, खूब हिम्मत रखना और रात दिन तन मन और धनसे जहां तक हो सके वहां तक वैसा ही पुरुषार्थ करना चाहिये और दरिद्रताके विचारोंमें नहीं, बल्कि अमीरीके विचारोंमें ही जिन्दगी बिताना चाहिये । अगर ऐसा करना आवे तो हमारा विश्वास है कि बहुत थोड़े समयमें इस तरह बर्ताव करनेवाले आदमी धनी हो सकते हैं, इसमें कुछ भी शक नहीं । क्योंकि प्रकृतिका यह नियम है कि अगर हम उच्च उद्देश्य रख कर परमार्थके लिये काम करना सीखें और उसमें मस्त हो कर प्राकृतिके प्रवाहमें पड़ जायं तो बहुत थोड़े समयमें मनचाही चीज मिल सकती है पर हम अपनी मनचाही चीज नहीं पाते इसका कारण यह है कि जो चीज पानेके लिये जिस किस्मकी योग्यता हासिल करना चाहिये और जिस किस्मके संयोगोंमें रहना चाहिये वैसी योग्यता हम हासिल नहीं करते और वैसे संयोगोंमें हम नहीं रहते । इससे हमें मनचाही चीज नहीं मिलती । यद्यपि मनचाही चीज पानेका हम विचार करते हैं पर उस विचारको अपने आचरणमें नहीं उतारते—उस विचारके अनुसार काम नहीं करते इससे उस विचारका फल हम नहीं पाते । इसलिये भाइयो ! अगर आपको धनवान बनना है तो पहले आप अपने मनको धनवानोंके जीवनमें रमण करना सिखाइये और ऊंचे उद्देश्यसे धन पानेकी इच्छा रखिये । इतना ही नहीं उस समय उसके सामने दूसरे किसी कमजोर विचारको अपने हृदयमें मत आने दीजिये । और धन पानेके लिये अपने मनमें जो विचार करते हैं उसके अनुसार

काम कीजिये। तब आप दरिद्र होंगे तौभी अपने भाग्यको पलट सकेंगे और धनवान हो सकेंगे। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। इसलिये दृढ़ता रख कर मनको मजबूत बना कर, वस्तुकी स्थिति समझ कर और देश काल देख कर अपनी शक्तिके अनुसार सामनेके रास्तेमें डटे रहिये। बहुत थोड़े समयमें सर्वशक्तिमान परम कृपालु पिता महान परमात्मा आपका सहाय होगा।

विचारके बलसे रोग मिटानेकी युक्ति।

ऊपर कही हुई युक्तियोंके अनुसार विचार करनेसे जैसे दरिद्रता दूर की जा सकती है और आदमी धनवान बन सकते हैं, वैसे ही खूब जी लगा कर विचार करनेसे और उसके अनुसार चलनेसे कितने ही तरहके रोगोंको मिटा सकते हैं और तन्दुरुस्ती पा सकते हैं। इसलिये रोग दूर करनेके उपाय जानना भी बहुत जरूरी है; क्योंकि इस दुनियामें हर एक आदमीको किसी न किसी तरहका रोग होता है और उसकी तकलीफ उसको सहनी पड़ती है। इसलिये रोग दूर करनेके उपाय जानना बहुत आवश्यक है और उसमें भी हमारी बहनोंके लिये तो यह एक आशीर्वादके समान है; क्योंकि पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंमें रोग अधिक होते हैं। उन रोगोंको दूर करनेके मानसिक उपाय जानना बहुत जरूरी है।

हम जानते हैं कि कितने ही तरहके रोग बहुत आसानीसे सीधी सादी दवाओंसे आराम हो जाते हैं और कितने ही रोग बहुत जल्द छोटे छोटे कारणोंसे पैदा हो जाते हैं। इससे समझ सकते हैं कि रोगका पैदा करना हमारे हाथमें है और उसका दूर करना भी हमारे हाथमें है। इसलिये रोग मिटानेके उपाय

हमें जानना चाहिये; क्योंकि ईश्वरकी इच्छा है कि हम अच्छे खासे तन्दुरुस्त रहें। रोग आदमियोंकी भूलका फल है, इसलिये भूल सुधारना हमारा काम है। प्रभुकी ऐसी इच्छा है कि हम हमेशा तन्दुरुस्त रहें, चेहरेदार रहें, मजबूत रहें और बड़ी उमरके हों। इसके बदले आजकल देखा जाता है कि हम दिन पर दिन अधिक रोगी बनते जाते हैं, हमारे शरीरका बल घटता जाता है, हमारे मनका बल घटता जाता है, हमारी चुस्ती सुघराई घटती जाती है और हम जवानीमें ही बूढ़े बन जाते हैं तथा असली बुढ़ापा आनेसे पहले ही मर जाते हैं। ऐसा होनेका कारण क्या है? हमें इसका विचार करना चाहिये और जैसे बने वैसे अपने शरीरसे तथा जगतसे रोगोंको नेस्तनाबूद करनेका उपाय करना चाहिये। याद रखना कि यह सब उत्तम प्रकारसे किये हुए विचारोंसे हो सकता है। इसलिये पहले हमें सच्ची रीतिसे तन्दुरुस्तीके विचार करना सीखना चाहिये।

जब लड़के बीमार पड़ते हैं तब कितनी ही स्त्रियां रोग और भयके ही विचार किया करती हैं; इन भयके विचारोंसे ही कितने लड़के मर जाते हैं।

यह बात सुन कर कितने ही आदमी कहेंगे कि तो क्या हम तन्दुरुस्तीके विचार नहीं करते? क्या हम रोगके ही विचार करते हैं? नहीं। रोग किसको पसन्द है? कोई आदमी रोगका विचार नहीं करता, सब यही सोचा करते हैं कि हमारा शरीर अच्छा रहे और उनमें जो बीमार आदमी हैं वे तो विशेष कर यही चाहते हैं कि हम जल्द अच्छे हो जायं तौ भी वे सब अच्छे नहीं होते। इससे हमें तो ऐसा मालूम होता है कि विचारसे कुछ

होता जाता नहीं; मैंने खुद देखा है कि घर लड़के मर जाते हैं, इससे मेरी स्त्री उनको रोगसे बचानेके लिये तरह तरहके उपाय करती है पर वह जितना ही अधिक उपाय करती है लड़के उतनी ही जल्दी मरते हैं। उसके चार लड़के दो ही वर्षके भीतर मर गये। अब पांचवां लड़का हुआ है उसकी वह इतनी खबरदारी करती है कि कहने लायक नहीं। फिर भी वह लड़का ऐसा लटक गया है कि जीनेकी आशा नहीं है। डाक्टरने भी कहा है कि इसमें दम नहीं है। अब विचार करो कि जिसके चार लड़के मर गये वह कलेजा थाम कर रह जानेवाली स्त्री अपने पांचवे लड़केके लिये क्या कम मिहनत करती होगी? रात दिन चारों पहर बत्तीसों घड़ी वह यही सोचा करती है कि यह लड़का कैसे जिये। तिस पर भी अफसोस है कि वह लड़का पांच सात दिनमें मर जायगा। अगर विचारोंका असर पहुंचता है तो ऐसा क्यों होता है? ऐसे ऐसे तर्क करनेवाले और सवाल पूछनेवाले बहुतेरे आदमी निकलते हैं। उनको जानना चाहिये कि सब माताएं यह चाहती हैं कि हमारे लड़के जीते रहें, इसमें कुछ शक नहीं, पर इस बिचारका जितना ज़ोर होता है उससे अधिक जोर बहुत स्नेहवाली पर अज्ञान माताओंमें दूसरे मलिन विचारोंका होता है। जैसे-सब माताएं अपने लड़केके लिये हमेशा अपने मनमें डरती रहती हैं कि इसे दीयेकी टेस न लग जाय, यह गिर न पड़े; इस लड़केको कोई उठा न ले जाय; वह महल्लेमें खेलता है कुत्ता न काटले; कोने अंतरेमें हाथ डालता है कहीं बिच्छू डंक न मारदे, पानीमें नहानेसे डूब न जाय; देखनेमें सुघर लगता है किसीकी नजर न लग जाय; बीमार है रोग मिटेगा कि नहीं, अगर मर जायगा तो मैं क्या करूंगी? इस प्रकारके भयवाले विचारोंमें ही हमेशा बहुत स्नेह-

वाली माताएं रहती हैं। इससे लड़कोंकी, तन्दुरुस्तीका विचार तो अलग रह जाता है और भयके विचार ही उनकी आंखोंके सामने नाचा करते हैं। इस प्रकार वे भयके वायु-मण्डलमें ही अपने लड़कोंको डाल रखती हैं। नेक माताओंकी ऐसी अधीरतासे कितने ही वालक वीमार पड़ते हैं। वीमारीके लिये वे वाहरी उपाय करती हैं पर हृदय विगड़ा हुआ होनेसे वाहरी उपाय नहीं लग सकते; क्योंकि लड़कोंको अच्छे रखनेके जितने विचार वे करती हैं उससे अधिक विचार इस विपयके करती हैं कि लड़के वीमार पड़ेंगे और मर जायंगे। और याद रखना कि जहां दो विरोधी विचारोंका आमना सामना होता है वहां दोनोंका वल टूट जाता है और उन दोनोंमें जो जोरावर होता है उसकी लह जाती है। दूसरे यह भी ध्यानमें रखने लायक है कि जैसे वहुत दूधको जरा सी खटाई विगाड़ देती है वैसे कितने ही अच्छे विचारोंके वलको भी भटकते हुए निकम्मे विचार तोड़ डालते हैं। क्योंकि जो अच्छे विचार हैं वे हृदयकी तहमेंसे निकले हुए नहीं होते पर निकम्मे विचार मनकी कमजोरीके कारण प्रकृतिकी पसन्दके हैं, इससे वे मनको, वुद्धिको और इन्द्रियोंको जच गये हैं और शरीरमें रच पच गये हैं, इससे उनका असर अधिक होता है। उत्तम विचार वेशक उत्तम हैं लेकिन वे हमारे अपने नहीं वन गये हैं। इससे हमारे मनमें मेहमानरूपसे रहे हुए शुभ विचारोंको हमारे निकम्मे विचार निकाल देते हैं जिससे अच्छे विचारोंका जैसा चाहिये वैसा असर हमारे ऊपर नहीं होता। यही कारण है कि माताओंकी भली इच्छाएं होने पर भी उनके कमजोर होनेसे तथा भयके विचारोंके मजवूत होनेसे उनके लड़के वीमार पड़ते हैं और मर जाते हैं। इसलिये अगर वच्चोंको नीरोग और सुखी रखना हो तो

शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये।

हम बीमार आदमीकी खबर पूछने जाते हैं तब उसके पास दूसरोंकी बीमारी और रोगके डरकी बात करके उलटे उसकी बीमारी बढ़ा आते हैं।

जब हमें कोई बीमारी होती है तब हम उस बीमारीके विचारोंमें ही जीवको डाल देते हैं और ऐसी बीमारीसे किसकी किसकी खराबी हुई, इसका अधिक विचार किया करते हैं। जैसे—हमारी आंख दुखती है तो हम अपने खान्दानमें, हितमित्रोंमें, अड़ोसियों पड़ोसियोंमें, तथा जान पहचानवालोंमें जिनकी आंखें दुखी हैं उन सबकी बातें करते हैं और मनमें डरा करते हैं कि जैसे हमारी काकीकी आंख अच्छी नहीं हुई, जैसे हमारी सासकी आंख बैठ गयी, जैसे हमारे मौसेकी आंख अबतक अच्छी नहीं हुई, जैसे हमारी पड़ोसिनकी आंखें चली गयीं और जैसे हमारे मित्र रामनन्दनके बापकी आंख मारी गयी वैसा ही हाल हमारी आंखका होगा तो हम क्या करेंगे? जब हमारी आंख दुखती है तब जिनकी जिनकी दुखती हुई आंख अच्छी हुई है उनका विचार हम नहीं करते, पर किनकी किनकी आंखें खराब होगयीं इसीका हिसाब लगाया करते हैं। हमारी बीमारीमें जो हित मित्र हमारी तबीयतका हाल पूछने आते हैं वे भी उलटे कुछ कुछ भयके बुरे विचार ही हमारे मनमें घुसेड़ जाते हैं। उनमें भी हमारी आजकलकी स्त्रियां तो खास करके रोगके विचार फैलानेका ही काम करती हैं। जैसे—जो आदमी बीमार है उसके पास जा कर, उसके पास बैठ कर बड़ा स्नेह दिखाकर कहती

है—ओ हो ! तुम्हें इतने जोरका ज्वर है ? मेरे बापको भी ऐसा ही ज्वर आया था जिससे वह तीन ही दिनमें जाते रहे। हमारे पड़ोसमें एक बनिया है, उस बेचारेका हाल ही में ब्याह हुआ है उसे भी ऐसा बुखार आता है और डाक्टर कह गया है कि अब उमेद नहीं है । आजकलका बुखार बड़ा जहरीला है, इसलिये भैया जरा सम्हलना। इस तरह बीमार आदमीकी तबीयतकी खबर पूछनेके लिये जितने हित मित्र आते हैं वे सब कुछ न कुछ नया वहम, नई शंका, नया डर और नयी बीमारीका बीज लेते आते हैं । जैसे—कोई कहता है कि इस ज्वरमें खांसी न हो तो अच्छा है, क्योंकि खांसी होगी तो बड़ी मुश्किल हो जायगी । इतनेमें दूसरा कहता है कि ऐसे बुखारमें खांसी हुए बिना नहीं रहती, मेरे बड़े भाईको ऐसा बुखार आया और पीछे तुरत ही खांसी होगयी । इतनेमें तीसरा आदमी कह उठता है कि खांसी तो ठीक है पर छातीकी सम्हाल रखनी चाहिये, क्योंकि डाक्टर कहते हैं कि ऐसे जाड़े के बुखारमें फेफड़ा सूज जाता है, इसलिये उसको सम्हालना चाहिये। इतनेमें मिलनेके लिये आये हुये चौथे भाईबन्द कहने लगते हैं कि तुम जिस डाक्टरकी दवा करते हो वह डाक्टर किसी कामका नहीं है, ऐसी बीमारीको वह नहीं अच्छा कर सकता, इसके हाथसे तो कितने ही बीमारोंको धोखा हुआ है। इसलिये तुम्हें बड़ी फीसवाला अच्छा डाक्टर बुलाना चाहिये । इतनेमें कोई बहुत नजदीकी बुढ़िया आ कर कहती है अरे भैया! इसमें डाक्टर क्या करे ? हमारा भाग्य फूटा, नहीं तो ऐसी बीमारी ही क्यों होती ? ऐसी ऐसी बातें और इससे भी ख़राब ख़राब बातें हम अपने प्यारे बीमारोंके पलंगके पास बैठे बैठे करते हैं पर इसका कुछ भी विचार नहीं करते कि इन बातोंसे बीमार पर कैसा

जहरीला असर होता है। बीमार का दोष न होने पर भी उसको सहानुभूति दिखाने जाकर उलटे हम उसके मनमें जरा जरा जहर डाल आते हैं। इससे जल्द अच्छा होनेके बदले उसकी बीमारी और बढ़ती जाती है। क्योंकि रोगके कारण बीमार आदमीका जी बेचैन रहता है जिससे उसका मगज कमजोर हो जाता है। इससे वह सब तरहके विचारोंकी तुलना नहीं कर सकता। इस कारण उसके सामने जो विचार प्रकट किये जाते हैं उनको वह जल्द पकड़ लेता है जिसका बुरा परिणाम होता है। इसलिये अगर अपना और अपने स्नेहियोंका रोग घटाना हो तो हमें हमेशा अच्छे विचार करना चाहिये।

हमारे शरीरका गठन ही ऐसा है कि उसमें किसी तरहका रोग अपने मनसे नहीं आ सकता; जब हम चाह कर रोगोंको बुलाते हैं तभी वे डरते डरते हमारे पास आते हैं।

अब विचार कीजिये कि हम रोगके विचार अधिक करते हैं या तन्दुरुस्तीके विचार अधिक करते हैं? अगर हम तन्दुरुस्तीके विचार अधिक करते तो हमारे पास किसी किस्मका रोग आ ही नहीं सकता। पर हम बीमारीके ही अधिक विचार करते हैं और इस प्रकार चाह कर बीमारीको बुलाते हैं तभी वह आती है। इसके लिये प्राचीन ऋषियों का यह सिद्धान्त था कि परम कृपालु महान् परमात्माने हमारे शरीरकी रचना ऐसी उत्तम की है कि उसमें किसी तरह का कोई

रोग हमारी इच्छा विना या हमारी भूल विना आपसे आप आ ही नहीं सकता। हमारे शरीरके हर एक परमाणुमें रोगसे लड़नेका बल है। इससे हमारे शरीरमें जब कोई रोग आता है तब उसको निकाल वाहर करनेके लिये शरीरके अनेक परमाणु वहुत मिहनत करते हैं जिससे रोग और शरीरके परमाणुओंमें लड़ाई होती है। इस लड़ाईके कारण ही बीमारीमें हमें तकलीफ होती है, पर यह लड़ाई हमारे शरीरको बचानेके लिये होती है। भाई! आप जानते हैं? हमारे शरीरमें जो रोग आता है उसको पहले हमारी सांस निकाल देती है। हमारे शरीरमें जो रोग आते हैं उनमें से कितने ही को पिघला कर पसीना निकाल वाहर कर देता है, कितने ही रोगों को मलमूत्र गटरमें फेंक देते हैं, कितने ही रोगोंको जठराग्नि जला डालती है, कितने ही रोगोंको इन्द्रियां खाजाती हैं, कितने ही रोगोंको मन मार डालता है, कितने ही रोग बुद्धिके जोरसे उड़जाते हैं, कितने ही रोग शरीरमें दौड़ते हुए लहूकी रगड़से मर जाते हैं, और कितने ही रोग शरीरकी कुदरती गरमीसे मर जाते हैं। इस प्रकार हमारे शरीरमें घुसे हुए कितने ही तरहके रोग अन्दरके अन्दर हो नष्ट हो जाते हैं। ईश्वरकी ऐसी इच्छा है कि आदमी हमेशा आरोग्य और सुन्दर रहे तथा जवतक पूर्णताको न पहुँचे तबतक प्रतिदिन उसकी उन्नति हो। इस इच्छासे उसने हमारे शरीरकी प्रकृतिका गठन ही इस किस्मका किया है कि उसमें किसी तरहका रोग अपनी खुशीसे कभी आ ही नहीं सकता। परन्तु जब हम रोगको वारवार बुलाते हैं, इतना ही नहीं बल्कि जब हम रोगको आनेके लिये लाचार करते हैं तभी वह डरते डरते धीरे धीरे हमारे पास आता है। हमारे शरीरमें आने पर उसकी कुछ खातिर वात तो होती नहीं, उलटे उसे लड़ाई करनी

पड़ती है और न रुचने लायक कड़वी कड़वी दवाएं पीनी पड़ती हैं। इससे किसी तरहका रोग अपनी खुशीसे कभी हमारे शरीरमें आता ही नहीं, पर जब हम उसको वारंबार न्योता देते हैं और लाचार करते हैं तभी वह डरते डरते धीरे धीरे जबरन आता है और ऐसी इच्छा रखता है कि कब भाग जाऊं। इसलिये हम चाहें तो बहुत आसानीसे सब तरहके रोगोंको दूर कर सकते हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। क्योंकि रोग दूर करना शरीरका स्वाभाविक धर्म है, इसमें प्रकृतिका कुछ विरोध नहीं होता बल्कि उसकी मदद होती है। इससे हम चाहें तो अपने विचारोंके बलसे, अपने ज्ञानके बलसे और अपनी प्रकृतिके बलसे तथा अपनी आत्माके बलसे भारीसे भारी रोगको बहुत आसानीसे दूर कर सकते हैं इसमें कुछ भी शक नहीं। प्रकृतिके अपने पक्षमें होने पर भी, रोगोंके हमसे डरते रहने पर भी और किसी रोगको अपनेमें न घुसने देने योग्य शरीरका गठन होने पर भी अगर हम बीमार रहें तो इसमें किसका दोष है? हमारा ही दोष है। याद रखना कि दुनियामें जितने तरहके रोग हैं वे सब मनुष्य-ज्ञातिकी भूलोंके फल हैं। अगर इन भूलोंको सुधारें तो हम दुनियासे कितने ही तरहके रोगोंको मिटा सकते हैं और यह कुछ बहुत मुश्किल नहीं है। बल्कि ऐसा है कि बड़ी आसानीसे स्वाभाविक तौर पर ही हो सकता है। इसीसे महात्मा लोग कहते हैं कि तुम्हारा भाग्य सुधारना तुम्हारे हाथमें है। अगर तुम चाहो तो गरीबी, रोग, दुःख, बुढ़ापा और मृत्यु इत्यादि सभी आफतोंको, बहुत आसानीसे दूर कर सकते हो और इन सबको दूर करनेका उपाय तथा सबकी जड़ शुभेच्छा है। इसलिये अच्छे विचार करना सीखो। अच्छे विचार करना सीखो।

बुढ़ापा आपसे आप नहीं आता, बल्कि जब हम उसको आग्रह करके बुलाते हैं तभी वह हमारे शरीर में आता है।

भाइयो! जैसे हम अपने विचारके बलसे गरीबी दूर कर सकते हैं, जैसे हम अपने विचार के बलसे कितने ही तरहके दुःख दूर कर सकते हैं और जैसे हम अपने विचारके बलसे रोग दूर कर सकते हैं वैसे ही अगर हम चाहें तो अपने विचारके बलसे बुढ़ापेको भी दूर कर सकते हैं, इसमें जरा भी शक नहीं है। क्योंकि जैसे हम गरीबीके विचार करके गरीबीको, दुःखके विचार करके दुःखको, भयके विचार करके भयको और रोगके विचार करके रोगको बुलाते हैं, वैसे ही बुढ़ापेके विचार करके, खास चाह कर बुढ़ापेको बुलाते हैं, इसीसे वह हमारे पास समयसे पहले आ जाता है। अगर हम उसको जबरदस्ती न बुलावें तो वह कभी आपसे आप इतनी जल्दी हमारे पास आ ही नहीं सकता। क्योंकि हमारी प्रकृतिके अन्दर और हमारी आत्माके अन्दर इतना बड़ा स्वाभाविक बल मौजूद है कि उसमें बुढ़ापा आपसे आप जल्द आही नहीं सकता। प्रकृतिका ऐसा स्वभाव है कि वह हमेशा नयी रहना चाहती है, उसको बुढ़ापा सोहाता ही नहीं, इससे वह कुदरती तौर पर बुढ़ापेका विरोध करती है। आत्माका स्वभाव ऐसा है कि वह हमेशा हर तरहकी अवस्थासे अलग ही रहती है। हमारी बुद्धिको सौन्दर्य रुचता है, हमारे मनको सदा बालक रहना पसन्द है, हमारी इन्द्रियोंको सदा जवानी भाती है और हमारे शरीरको भी हमेशा बढ़ती पसन्द है। यों हमारे शरीरका, मनका, बुद्धिका तथा सदा अमर रहनेवाली जीवात्माका गठन इस ढङ्गका है कि उनके पास बुढ़ापा आ

नहीं सकता। तिस पर भी हम देखते हैं कि हम भरी जवानीमें होते हैं तभी हमारे शरीरमें बुढ़ापा आने लगता है। याद रखना कि इस तरह जो बेसमय, वक्त से पहले बुढ़ापा आता है वह हमारी ही भूलोंका नतीजा है और हमारे ही विचारोंका नतीजा है। हम विशेष चाहकर उसको बुलाते हैं उसीका यह नतीजा है। यह सुन कर कितने ही भाई कहेंगे—क्या हम पागल हैं कि बुढ़ापेको बुलाते हैं? बुढ़ापेको चाह कर कौन बुलाता है? कोई नहीं बुलाता। इसलिये हमको समझाओ कि हम बुढ़ापेको कैसे बुलाते हैं।

हालके जमानेमें हम लोगोंमें पहले बुढ़ापा आनेके कारण।

इसके जवाबमें विचार-शास्त्रमें आगे बढ़े हुए पण्डित कहते हैं कि आजकलके जमानेमें हमलोगोंके मनमें यह बात बैठ गयी है कि फलानी उमरमें बुढ़ापेका आना जरूरी है इससे हमें भी उस उमरमें बुढ़पा आवेगा ही, ऐसा मान लेते हैं और इस किस्मके संस्कारोंको अपने मनमें बड़ी मजबूती से बैठने देते हैं। दूसरे, चारों तरफसे हम ऐसा ही सुनते हैं कि आजके जमानेमें पहले जमानेसे बहुत पहले बुढ़ापा आता है। ऐसी समझ हमारे मनमें बचपनसे ही जम कर बैठ गयी है, इससे आइनेमें मुंह देखते देखते जब एकाध बाल मूछोंमें या सिर में सफेद दिखाई देता है तब मनमें यह मान लेते हैं कि बस अब चालीसा लगा, अब शरीरका क्या ठिकाना? कोई बहुत छोटी उमरमें ब्याहा हो और छोटी उमरमें ही लड़के बाले होगये हों और उन लड़कोंको भी छोटी उमरमें ब्याह दिया हो जिससे

उनके भी लड़के होगये हों और वे लड़के बाबा बाबा कहते हों तो वह बेचारा पैंतीस छत्तीस वर्षका जवान आदमी अपने मनमें समझता है कि अब तो मेरे घर लड़कोंके लड़के होगये अब जवानोंका सा आमोद प्रमोद मुझे थोड़े शोभा देगा । यह सब तो जवानोंके लिये है । यह सोच कर बाबापनके विचारमें वह बुढ़ापेके आचार पसन्द करता है और शरीर बूढ़ा हुआ न हो, इन्द्रियोंमें बुढ़ापा न आया हो, मनको वैराग्य न आया हो और बुद्धि सठिया न गयी हो तो भी वह आदमी अपने वंशमें बाल बच्चोंके सामने बाबा समझे जानेके लिये अपनी रहन सहनमें वृद्धावस्थाके चिन्ह दाखिल करता है, इससे धीरे धीरे उसमें बुढ़ापा आता जाता है ।

जातिके बुरे बंधन तथा रिवाजकी गुलामीके कारण भी जल्दी बुढ़ापा आजाता है ।

जल्दी बुढ़ापा आनेका, इसके सिवा दूसरा कारण यह है कि हम बालविवाह करते हैं इससे हमारे बालकोंका शरीर जैसा चाहिये वैसा खिलने नहीं पाता तथा जैसा चाहिये वैसा मजबूत नहीं होने पाता। इससे जल्दी बुढ़ापा आता है। इसके सिवा यह बात भी ध्यानमें रखने योग्य है कि हमारी घर गृहस्थीके बहुतसे रिवाज बड़े कुढंगे होते हैं इससे हमें बहुत तरहके दुःख भोगने पड़ते हैं । इन दुःखोंके कारण भी हममें जल्द बुढ़ापा आजाता है। जैसे—अपने लड़कोंका छोटी उमरमें ब्याह कर दिया हो और फिर छोटी उमरमें लड़की विधवा होजाय या लड़का मरजानेसे उसकी छोटी बहू रांड़ होजाय तो जातिके रिवाजसे फिर उसका ब्याह नहीं कर सकते । पीछे उस जवान लड़की या जवान बहूका

दुःख देखकर उसके माँ बाप तथा सास ससुरको जानबूझ कर अपनी जवानीमें ही बुढ़ापेको बुलाना पड़ता है। बालविधवा जवान बहू या लड़की किसी हंसी खुशी या शुभ काममें शामिल नहीं होसकती इससे उसके मा बाप भी उसमें शामिल नहीं होते। जब उनसे बहुत कहा जाता है तो कहते हैं कि हमारे सामने हमारे घरमें चिता धधकती है तब हम किस शौकसे हँसी खुशी या शुभ काममें शामिल हों? इस प्रकार जातिके कुछ अनुचित बंधनोंके कारण हमें जान बूझ जल्द बूढ़ा होना पड़ता है।

हमारे देशमें ब्राह्मण साधुओंका बड़ा जोर है और वे पुराने विचारके हैं इससे वे लोगोंको झूठे बाहरी वैराग्यकी ओर फेरते हैं; इस कारणसे हम-लोगोंमें जल्दी बुढ़ापा आता है।

जल्दी बुढ़ापा आनेका एक मुख्य कारण यह भी है कि हमारे देशमें साधु फकीर बहुत अधिक हैं तथा ब्राह्मणोंका अधिक भाग बहुत पुराने विचारका है और पहले जमानेके लिखे हुए हमारे धर्मके पुराने ग्रंथोंमें इस किस्मके मुख्य विचार हैं जो लोगोंको निवृत्तिकी ओर झुकाते हैं। उस समय ऐसा अच्छा संयोग था कि लोग निवृत्तिमें रह सकते थे। उस समय परदेशी और परधर्मी लोगोंका राज्य न था; उस समय आजकलकी तरह बार बार अकाल नहीं पड़ता था; उस समय आजकलकी तरह हमारे देशका अन्न परदेशमें नहीं चला जाता था इससे देशमें महंगी नहीं थी; उस समय राज्यका कर बहुत थोड़ा था उस समय हैजा प्लेग जैसे दुष्ट रोग न थे; उस समय जाति

बंधन न था; उस समय धर्मके जुदेजुदे पंथ और घेरे नहीं थे और उस समय आजकलकी तरह मोटर तथा बाइसिकल जैसे खर्चीले मौज शौकके साधन न थे, इससे लोग बहुत निवृत्तिमें रह सकते थे और अपनी आत्माका तथा परमात्माका विचार करनेमें बहुत समय लगा सकते थे। ऐसी निवृत्तिके समयमें जो पुस्तकें बनी हों उनमें निवृत्तिकी बातोंका अधिक होना और वैराग्यकी तरफ लोगोंका रुख होना कुछ आश्चर्य नहीं है। परन्तु अब जमाना बदल गया है, धर्म बदल गया है, हमारे रस्मरिवाज बदल गये हैं, हमारे आस पासके संयोग बदल गये हैं; हमारे शरीरका गठन ढीला पड़ गया है, हमारा मानसिक बल नष्ट होगया है और अनेक प्रकारका अनुकूल सुबीता होनेसे हम बहुतेरे उत्तम विषयोंसे भ्रष्ट होगये हैं। इसलिये पहले जमानेके बहुत निवृत्ति और वैराग्यके विचार आजकल हमारे लिये उतने उपयोगी नहीं होसकते। तिसपर भी ब्राह्मणों तथा साधुओंकी ओरसे घुमा फिरा कर वे ही विचार बार बार हमारे मनमें घुसेड़े जाते हैं। इससे हम अपना कर्त्तव्य पालनेमें ढीले पड़ जाते हैं और मनमें अनेक प्रकारकी उपाधियोंके रहते हुए भी ऊपरी वैराग्यमें लुढ़क जाते हैं इससे हममें जल्द बुढ़ापा आजाता है। जवानीकी मस्तीके, कर्त्तव्य पालनेके, परमार्थमें आनन्द भोगनेके और संसारमें स्वर्ग भोगनेके विचार हमें नहीं मिलते उलटे इसी किस्मके विचार चारों ओरसे सुननेमें आते हैं कि जगत दुःखरूप है और जल्द मरजाना है इसलिये सब व्याधि छोड़ देना अच्छा है। ऐसे ऐसे विचारोंसे हम एक तरहके झूठ वैराग्यकी ओर ढल जाते हैं और नया उत्साह, नया जीवन तथा नया आनन्द आदि विचारों को भूल जाते हैं। इससे हमलोगोंमें जल्द बुढ़ापा आता है।

गरीबीके मारे हमलोगोंमें जल्द बुढ़ापा आता है ।

इसके सिवा जल्द बुढ़ापा आनेका यह भी एक कारण है कि आजकलके जमानेमें हमलोगोंकी तबीयत बहुत नाजुक होगयी है, हमारा शरीर नाजुक बन गया है, हम बिना जरूरतके खर्चीले मौज शौकमें अपनी जिन्दगी गंवाते हैं; अपने शरीरको नीरोग बनानेके लिये जितनी सावधानी रखनी चाहिये और जैसा नियम पालना चाहिये उसका सवां भाग भी हम नहीं पालते; यहां तक कि हालके जमानेमें रोजगार धंधा मंदा पड़ गया है; गरीबी बढ़ गयी है; हर चीजमें और हर विचारमें जबरदस्त चढ़ा ऊपरी चलती है; बहुत निकम्मी चीजोंमें लोग अपना मानसिक बल लगा डालते हैं और कई तरहके वहममें, कई तरहके रिवाजकी गुलामीमें, तरह तरहकी छूआछूतके बंधनमें, कई तरहके धर्मके संकीर्ण विचारोंमें और ओछे स्वार्थके विचारोंमें ही हमारी जिन्दगी चली जाती है। इसके सिवा हम अधिकतर परदेशी चीजें काममें लाते हैं इससे हमारा धन परदेशमें चला जाता है और हमारे लाखों भाई वन्द जीविका विना भूखों मरते हैं, इन सब कारणोंसे, इन सब दुःखोंसे तथा इन सब जंजालोंसे अनेक प्रकारके दुःख उत्पन्न होते हैं और उन दुःखोंके कारण हममें जल्द बुढ़ापा आजाता है।

पोख्ता उमरके जो आदमी जवानसे लगते हैं उनकी और हम नजर नहीं रखते; बुढ़ापेके सामने ही देखा करते हैं । इसीसे हममें बुढ़ापा जल्द आता है ।

इस प्रकार अपनी भूलोंसे ही हममें जल्द बुढ़ापा आता है ।

अगर हम इन भूलोंको सुधारें और जिन्दगीका उच्च उद्देश्य समझ कर उसके अनुसार वर्ताव करें तो हम बुढ़ापेको बहुत दूर धकेल दे सकते हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। मगर अफसोस है कि हम अपने विचारोंका बल नहीं समझते इससे बुढ़ापा हममें जल्द आता है। जैसे हम हमेशा यही देखा करते हैं कि हमारा दांत पहले टूट गया इससे अब हम जल्द बूढ़े होजायंगे। मुझे अभी चश्मा लगाना पड़ा अब मेरी आंखें बहुत दिन नहीं ठहरेंगी और मैं जल्द बूढ़ा हो जाऊंगा। मेरे बदनका चमड़ा सिकुड़ने लगा इससे ज्ञान पड़ता है कि मैं जल्द बूढ़ा होजाऊंगा, मेरे बाल पकने लगे अब बुढ़ापा शुरू होचला। इस तरह बूढापा बतानेवाले इन सब चिन्होंको हम नजरके सामने हर घड़ी रखते हैं मगर यह नहीं देखते कि, आदमी अस्सी वर्षका बुढ़ा होनेपर भी साठासा जान पड़ता है, चालीस वर्षकी उमर होनेपर भी तीस वर्षका जवान लगता है और कोई कोई सौ वर्षके बूढ़े किसान या साधु हमें सत्तर वर्षकेसे लगते हैं। परन्तु इन दृष्टान्तोंको हम अपनी नजरके सामने नहीं रखते, सिर्फ दांत टूटने और बाल पकनेके दृष्टान्त देखा करते हैं।

इसी तरह कितनी ही पचीस वर्षकी जवान स्त्रियां अठारह वर्षकी छोकरीसी लगती हैं। तीस वर्षकी कितनी ही स्त्रियां बीस वर्षकी लगती हैं। पैंतीस वर्षकी कितनी ही स्त्रियां बाइस वर्षकी लगती हैं। चालीस वर्षकी कोई कोई स्त्रियां पचीस वर्षकी लगती हैं। पचास वर्षकी कोई कोई अधेड़ स्त्रियां पैंतीस वर्षकी लगती हैं और कोई कोई साठ वर्षकी बूढ़ी स्त्रियां पैंतालीस वर्षकी लगती हैं। ऐसी कितनी ही स्त्रियोंको हमलोग जानते पहचानते हैं तथापि इस बात पर ध्यान नहीं देते कि ये लोग किस तरह अपनी जवानी को बनाये रखते हैं; सिर्फ बुढ़ापेकी ओर अधिक

ध्यान रखते हैं इसीसे हम जल्द बूढ़े हो जाते हैं।

बुढ़ापेको जल्द या देरसे लाना अपने हाथमें है।

अब विचार कीजिये कि अगर हम बुढ़ापेको हटा न सकते तो अपनी असली उमरसे दस, पन्द्रह, बीस, पचीस या तीस वर्ष कमके कैसे जान पड़ते? हम साफ साफ देखते हैं कि ऐसा होता है। इससे और दूसरे कारणोंसे खूब अच्छी तरह समझ सकते हैं कि अगर हम चाहें तो अवश्य बुढ़ापेको कुछ वर्ष दूर धकेल सकते हैं। क्योंकि बुढ़ापा कुदरती है तौभी उसे जल्द या देरसे लाना अपने हाथमें है। इसलिये अगर हम सोच विचार कर जिन्दगी बितावें, प्रकृतिके नियमोंके अधीन रह कर जिन्दगी बितावें, जिस किस्मकी भूलोंमें हम आजकल पड़े रहते हैं उन भूलोंसे बचनेका उपाय करें और शरीरका गठन तथा आत्माका बल समझें तो हम आसानीसे बुढ़ापेको बहुत दिन तक दूर कर सकते हैं इसमें तनिक सन्देह नहीं है। यह सब अपनी शुभेच्छासे ही हो सकता है और अपने विचारबलसे ही हो सकता है। अतएव अपनी इच्छाशक्तिका बल समझ कर प्रभुके नादमें नाद मिला कर उसकी इच्छानुसार उसके कदम ब कदम चलना चाहिये। अगर ऐसा करना आवे सनकादिकोंकी तरह सदा बालक रहना और देवताओंकी तरह सदा जवान रहना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। अगर अपने भाग्यको फेरना हो और पचास साठ वर्षकी जवानीमें ही बुढ़ापेको न आने देना हो तो शुभेच्छा रखना सीखिये, शुभेच्छा रखना सीखिये।

जातिका बन्धन तोड़ने तथा समाजसुधार करनेसे अनेक प्रकारके दुःखोंसे बच सकते हैं ।

विचारोंके बल और शुभेच्छासे जैसे गरीबी, रोग तथा बुढ़ापेको दूर करते हैं वैसे ही अनेक प्रकारके दुखोंको भी दूर कर सकते हैं । जैसे-किसीको शत्रु का दुःख होता है । किसीको अपनी जातिके रिवाजके कारण छोटीसी विरादरीमें से ही कन्या लेनी पड़ती हैं और वह भी देख सुन कर नहीं वरंच जो मिलजाय उसे ही स्वीकार करना पड़ता है । इतना ही नहीं बहुत छोटी उमरमें ही अपने स्वार्थके लिये सगे सम्बन्धी ईंट पत्थरका जोड़ा लगा देते हैं वह स्त्री लायक न हो तोभी उसके साथ सारा जीवन विताना पड़ता है । यह दुःख ऐसा वैसा नहीं है इसीतरह कितनी ही सद्गुणी स्त्रियोंको योग्य वर नहीं मिलता वरंच उनके स्वभावके विरुद्ध ही वर मिलते हैं इस वेजोड़के व्याहमें वहुत दुःख होता है । यह सब दुःख भी विना किसी खास कारणके, सिर्फ रिवाजोंके मारे भोगना पड़ता है । तिस पर भी हम रिवाजके इतने बड़े गुलाम हो गये हैं कि उनमें कुछ भी फेर बदल नहीं कर सकते । इससे, अपने सामाजिक रिवाजोंके कारण ही तथा जाति बिरादरीके बंधनके कारण ही हमें अनेक प्रकारके दुःख भोगने पड़ते हैं ।

अपनी इच्छानुसार बालक पैदा करनेका उपाय ।

जैसे वेजोड़ व्याह होनेसे किसीको अपनी स्त्रीसे दुःख होता है और किसीको अपने पतिसे दुःख होता है । वैसे ही बालक उत्पन्न करनेके विषयमें जो नियम जानने और पालने चाहियें उन नियमोंको हम नहीं जानते और

नहीं पालते इससे मन मुताबिक बालक नहीं होते और इस कारण बहुत आदमियोंको अपने ही लड़कोंसे भारी दुःख भोगना पड़ता है। जैसे पासमें धन हो, शरीर नीरोग हो, जवानी हो, सत्ता हो और दूसरे कई तरहके अच्छे साधन हों तिसपर भी लड़के खराब निकल जाते हैं या लड़के होते ही नहीं। इससे इन सब सुखों के बीच भी उनको बहुत दुःख होता है। अब विचार करना चाहिये कि अच्छे लड़के पैदा करना क्या अपने हाथ में नहीं है? बेशक इसका उपाय अपने ही हाथ में है। क्योंकि परम कृपालु महान ईश्वरने हमसे कुछ भी छिपाया नहीं है, उसने अपना सब भेद हमारे सामने खोल कर धर दिया है सिर्फ हमारी त्रुटि है कि हम उससे लाभ लेने नहीं आता। हम बीजू आमसे कलमी आम बना सकते हैं, गदहोंसे उससे ऊँची नस्लके खच्चर पैदा कर सकते हैं और जो चीजें लोगोंके खयालमें भी नहीं आसकतीं वैसी चीजोंको भी ईजाद कर सकते हैं। हममें ऐसी सामर्थ्य है। तब क्या यह सामर्थ्य नहीं है कि अच्छे लड़के उत्पन्न कर सकें?

बेशक यह सामर्थ्य हममें है और ये बातें हमारे शास्त्रोंमें लिखी हैं।

जैसे–कश्यपसे अदितिने घर गृहस्थीका सुख भोगनेकी इच्छा प्रगट की। कश्यप ऋषिने कहा कि यह योग्य समय नहीं है। परन्तु अदितिने कामातुर होकर बहुत हठ किया। ऋषि उसकी इच्छाके अधीन हुए परन्तु इससे जो फल उत्पन्न हुआ वह हिरण्यकश्यप नामक राक्षस हुआ। वसुदेव और देवकीने अपने अगले जन्ममें प्रार्थना की थी और मनमें दृढ़ इच्छा रखी थी हमारे प्रभु जैसा पुत्र हो और प्रभुसे उन्होंने यही मांगा था इससे प्रभुने उनके यहां पुत्ररूपसे अवतार लिया था। भाइयो!

पुराणकी ये सब बातें हमें क्या सिखाती हैं ? यही कि आप जैसे लड़केकी इच्छा रखते हों वैसे लड़के उत्पन्न कर सकते हैं। परन्तु अच्छे लड़के उत्पन्न करनेके नियम नहीं जानते और जानने की परवा भी नहीं रखते; भेड़ियाधसानकी तरह रिवाजके पीछे, विना कुछ भी आगापीछा सोचे केवल पशुवृत्तिसे अपना व्यवहार चलाया करते हैं इसीसे कमजोर लड़के पैदा होते हैं। इसमें ईश्वरका कुछ दोष नहीं है क्योंकि ईश्वरने तो अपने सारे भेदोंकी चाभियां इस जगतमें फेक दी हैं परन्तु हम उससे लाभ नहीं उठाते यह हमारी ही कसर है। अगर प्रकृतिके नियमपर चलें और यह दोष सुधारें तो जैसे अनेक प्रकारके रोगोंको दूर कर सकते हैं, गरीबीको दूर कर सकते हैं, बूढ़ापेको वर्षों पीछे हटा सकते हैं वैसे ही चाहें तो हम मन चाही संतान उत्पन्न कर सकते हैं और यह चाभी भी विचार शास्त्रके हाथमें ही है। इसके लिये कहीं दूर ढूंढ़ने जाना नहीं है। अगर शुभेच्छा रखना सीखिये और अपनी इच्छाशक्तिका बल बढ़ाना सीखिये तो इस किस्मके बहुतेरे दुःखोंसे बहुत आसानीसे छूट सकते हैं। अतएव सब तरहके दुःखसे छूटनेके लिये इच्छाशक्तिका बल बढ़ाइये, इच्छाशक्तिका बल बढ़ाइये।

मौतको जीत लेनेका उपाय।

बन्धुओ! हमारे ऊपर जो पांच प्राकरके मुख्य दुःख हैं उनमेंसे गरीबी, क्लेश, रोग और बुढ़ापा नामक चार विषय अगर सुधर जायं तो फिर मौतको सुधारना और उसे दूर धकेलना कोई बड़ी बात नहीं है। ये चारों विषय जब खराब होते हैं या इनमें से कोई एक विषय जब बहुत खराब होता है तभी मौत

आती है। जब तक ये चारों विषय अच्छे हों तब तक कुदरती तौर मृत्यु आ ही नहीं सकती। क्योंकि गरीबी हाथी है, दुःख ऊंट है, रोग घोड़ा है और बुढ़ापा मौतका वजीर है। मौतरूपी बादशाहकी इस सेनाको पहलेसे जीत लें तो फिर मौतको जीत लेनेमें कुछ देर नहीं लगती। यह विषय अच्छी तरह समझनेके लिये शतरंजके खेलका उदाहरण लेने योग्य है। इस खेलमें जब जीतना और बादशाहको मात करना होता है तब पहले उसका बचाव करनेवाली फौज मार डाली जाती है और जब जब मौका मिलता है तब तब युक्ति लड़ा कर उसके हाथी, घोड़े, ऊंट तथा वजीर मार डाले जाते हैं या बांध रखे जाते हैं; इससे, अन्तको बादशाह अकेला रह जाता है। उस समय उसका कुछ जोर नहीं चलता। तब, अपनी फौजके मारे जानेपर थोड़ी ही देरमें वह बंध जाता है और हार जाता है। वैसे ही, अगर हम मौतकी फौजमें से गरीबीरूपी हाथीको, दुःखरूपी ऊंटको, रोगरूपी घोड़ेको और बुढ़ापारूपी मौतके वजीरको जीतलें तो फिर मौतको जीत लेनेमें कुछ देर नहीं लगती। क्योंकि मौत कुछ अपने जोरसे हमें नहीं मार सकती अपनी इस सेनाके जोरसे ही मार सकती है। इसलिये पहले, इस सेनाको कब्जेमें रखना सीखें या जीत ले तो फिर मौतको जीतनेमें कुछ देर नहीं लगती! शतरंजके बादशाहमें कुछ बल नहीं है वह तो सीधे सीधे एक ही घर चल सकता है परन्तु उसका घोड़ा अढ़ाई घर कूद जाता है, उसका ऊंट टेढ़ी चालसे मौका मिले तो बहुत घर कूद जाता है, उसका हाथी मौका पाने पर एक ओरसे दूसरे ओर तक जा कर दुश्मनके लश्करको मार सकता है और उसका वजीर आठों दिशाओंमें जिधर मौका मिले उधर जा सकता है। सेनामें ऐसा बल है इसीसे बादशाह जीत सकता है अकेला राजा केवल अपने जोरसे नहीं

जीत सकता है। इसी तरह सब दुःखोंका राजा मृत्यु है परन्तु वह केवल अपनी सत्तासे हमपर विजय नहीं पा सकती। जब गरीबी, रोग, दुःख और बुढ़ापा रूपी उसका लशकर जबरदस्त हो तभी वह जीत सकती है। इसलिये अगर मौतरूपी राजाको जीतना हो अर्थात् बहुत वर्ष तक मौतको दूर रखना हो और लम्बी आयु भोगना हो तो पहले गरीबी, दुःख, रोग और बुढ़ापा जो उसके मुख्य सरदार हैं उनको जीत लेना चाहिये। इन महापराक्रमी सरदारोंको वशमें रखना आवे तो फिर मौतको आनेसे रोकनेमें कुछ देर नहीं लगती। यह सब शुभेच्छासे ही तथा विचारके बलसे ही हो सकता है। इसलिये सब तरहके दुःखोंसे बचना होतो शुभेच्छा रखना सीखिये और इच्छाशक्तिका बल बढ़ाइये।

मौत कुदरती है यह बात सच है मगर यह कुछ नियम नहीं है कि फलाने वक्त उसको आना ही चाहिये। इससे पहलेके ऋषि मुनि मौतको हटा सकते थे और अपनी इच्छा-नुसार बुला सकते थे।

ऊपर कहे विषयोंसे बहुत आदमी समझ सकेंगे कि अगर हम प्रकृतिके नियम पर चलें तो मौतको जीत सकते हैं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। तौभी जो मनुष्य भाग्यके ऊपर ही जोर देनेवाले हैं और जन्म, मरण तथा सुख दुःख आदि सब विषयोंको दैवके हाथमें ही माननेवाले हैं उन लोगोंके चित्तमें मौतको जीत लेनेकी बात ठीक ठीक नहीं जमेगी क्योंकि वे बिना दूसरा पहलू देखे ही एक तरफ अपना विचार दृढ़ कर लिये रहते हैं।

ऐसे लोगोंको जानना चाहिये कि यह कुछ हमारे घरकी बात नहीं है वरंच हमारे धर्मशास्त्रकी और प्राचीन ऋषियोंके महान सिद्धान्तकी बात है । हम पुराणोंसे जानते हैं कि बहुतसे ऋषि-मुनि जब तक चाहते थे तब तक जी सकते थे और कालको पीछे हटा सकते थे । महाभारतमें भीष्मपितामहकी बात बहुत प्रसिद्ध है कि उन्होंने ६ महीने तक मृत्युको टाल दिया था ; सती सावित्रीने अपने पतिकी गयी हुई आयु लौटा ली थी और उसका पति मर कर फिर जी उठा था, महात्मा श्रीकृष्णने अपने गुरुके मरे हुए पुत्रको वापस ला दिया था और गोपीचन्द, भर्तृहरि, विभीषण तथा अश्वत्थामा आदि बहुतेरे महात्माओंके अभी तक जीते रहनेकी बहुत लोग बड़े हठसे मानते हैं । श्रद्धावाले मनुष्य यह भी मानते हैं कि कितने ही साधू महात्माओंके आशीर्वादसे भी जिन्दगी बढ़ायी जा सकती है । इसके सिवा श्रीरामचन्द्र ने दसहजार वर्ष राज्य किया था ; ध्रुवने छत्तीस हजार वर्ष राज्य किया था और लोमस ऋषि चौदह रामावतार तक जीते थे । इसी तरह दूसरे बहुतसे महात्माओंने बड़ी लम्बी जिन्दगी भोगी थी । इन सब बातोंमें कितनी माननी चाहिये और कितनी नहीं यह अपनी अपनी मरजी पर है । मैं आपलोगोंसे यह नहीं कहता कि इन सब बातोंको अक्षर अक्षर मान लीजिये । मैं यह सब बता कर सिर्फ इतना समझाना चाहता हूं कि हमलोगोंमें ऐसी सामर्थ्य है कि चाहें तो मौतको कुछ दिन तक दूर रख सकते हैं । इस सामर्थ्यसे लाभ उठाना चाहिये । अगर लाभ उठाना आवे तो हम अपनी शक्तिके अनुसार तथा देशकालके अनुसार अवश्य मृत्युको कुछ समयतक दूर कर सकते हैं । इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है । महात्मालोग कहते हैं कि मृत्यु कुदरती है यह बात सच है यह कुछ नियम नहीं है कि अमुक

समय पर मृत्युको आना ही चाहिये। मौत संयोगके आधार पर है। अगर संयोग बदला जाय तो मौतको दूर टाल सकते हैं तथा जल्द ला सकते हैं। संयोग बदलना मनुष्यके हाथमें है। इसलिये मनुष्य चाहे तो मौतको जल्द ला सकता है और चाहे तो वर्षों दूर रख सकता है। यह सब अपनी विचारशक्तिके अधीन है; यह सब अपनी संकल्पशक्तिके अधीन है; यह सब अपनी इच्छाशक्तिके अधीन है; यहसब अपनी भावनाके अधीन है; यह सब अपनी बुद्धिके अधीन है और यह सब अपने आत्मिक बलके अधीन है। अगर अपनी मौतको जीतना हो पहले शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये और अपनी इच्छाशक्तिको, संकल्पशक्तिको, भावनाशक्तिको, बुद्धिबलको तथा आत्मिक बलको विकसित करना आवे तो मौतको जीत लेना कोई बड़ी बात नहीं है।

गरीबी, दुःख, रोग, बुढ़ापा और मृत्युको कुछ घड़ी भरमें नहीं जीत सकते वरंच इसके लिये भगीरथप्रयत्न करना चाहिये।

बन्धुओ! याद रखना कि गरीबी, दुःख, रोग, बुढ़ापा और मौतको जीतने तथा भाग्यको पलट डालनेकी मैं जो बातें कहता हूं वे सब कुछ घंटे, कुछ दिन या कुछ महीनेमें नहीं हो सकतीं, वरंच ज्यों ज्यों समय जाय, ज्यों ज्यों अभ्यास बढ़ता जाय, ज्यों ज्यों शुभेच्छा तथा इच्छाशक्ति बलवती होती जाय और ज्यों ज्यों पवित्रता तथा आत्मिक बल बढ़ता जाय त्यों त्यों देशकालके अनुसार तथा इर्द गिर्दके संयोगके अनुसार ये सब विषय थोड़े या बहुत हो सकते हैं कुछ एक व एक सब नहीं

हो सकते। इसलिये ऐसी भावना रखिये कि सबका कल्याण हो। ऐसी श्रद्धा रखिये कि ईश्वर अच्छेसे अच्छा है और वह सदा सबकी भलाई ही कर रहा है। ऐसा उपाय कीजिये कि मानसिक बल बढ़े। ऐसी चेष्टा कीजिये कि सत्यज्ञान मिले। ऐसा अलौकिक बल प्राप्त कीजिये कि सब तरहके भयसे छूटें और अपने हृदयमें जरा गहरे उतरिये तब परम कृपालु पिता परमात्मा आपका सहाय होगा, और आप गरीबी, रोग, दुःख बुढ़ापा और मौतसे बच सकेंगे। इन सबका जो मूल है उस शुभेच्छाको पकड़िये, शुभेच्छाको पकड़िये।

अगर हम अपना ही भाग्य सुधारें तो इसमें क्या बड़ाई है ? जब दूसरोंका भी भाग्य सुधारसकें तभी सच्ची बहादुरी है।

अपना भाग्य सुधारनेके उपाय समझनेके बाद उससे भी एक बहुत जरूरी बात जानना चाहिये। महात्मालोग कहते हैं कि मनुष्य अगर अपना ही पेट भरें तो इसमें क्या बड़ाई है ? ऐसा तो जानवर भी करते हैं। वैसे अगर मनुष्य अपना ही भाग्य सुधारें तो इसमें क्या बड़ाई है ? वे बड़े आदमी नहीं कहलाते। जो सचमुच बड़े आदमी हैं और जो ईश्वरके कृपापात्र हैं वे इतने पर ही नहीं अटकते बल्कि अपना भाग्य सुधारनेके बाद वे दूसरोंका भाग्य सुधारते हैं। और याद रखना कि दूसरोंका भाग्य सुधारनेका नाम ही परमार्थ है उसीका नाम सच्चा पुरुषार्थ है और ऐसा करनेवाले ही ईश्वरके सच्चे सच्चे भक्त हैं। इसलिये अब हमें अपने भाई बन्दोंका भाग्य सुधारनेकी कुंजी जानना चाहिये।

हम जितना अपना तथा दूसरोंका भाग्य सुधारते हैं उतना ही हमारा कल्याण होता है।

यह बात सुन कर कितने ही आदमी पूछेंगे क्या हम दूसरोंका भाग्य सुधार सकते हैं ? यह कैसे हो सकता है ? ऐसे प्रश्नके उत्तरमें महात्मालोग कहते हैं कि हां यह काम होसकता है। हम दूसरोंका भाग्य सुधारनेमें हाथ बढ़ा सकते हैं। इसीसे शास्त्रोंमें कहा है कि जीवोंको आगे बढ़नेके लिये ज्ञानियोंकी संगतकी आवश्यकता है, गुरुओंकी आवश्यकता है और जिनका अन्तःकरण खिला हुआ है उन उदार सहृदय भाई बहनोंकी सहायताकी आवश्यकता है। इन सबकी सहायतासे ही बहुतेरे आदमी अपना भाग्य शीघ्र सुधार सकते हैं। क्योंकि परम कृपालु सर्वशक्तिमान महान ईश्वरकी जो इच्छाएं हैं वे बिलकुल प्रत्यक्ष हैं वह कुछ भी नहीं छिपाता। पर जिस अन्दाजसे हमारी पवित्रता, हमारे मनका विकास, हमारे हृदयकी उदारता, हमारी सारग्राही दृष्टि और हमारी ग्रहणशक्ति है उसी अन्दाजसे हम उसका प्रेम, उसका ज्ञान, उसका ऐश्वर्य, उसका सत्य और उसके किये भेदोंकी चाबियां पासकते हैं। यह सब ज्यों ज्यों अधिक मिलता जाता है त्यों त्यों हमारा भाग्य भी सुधरता जाता है। और ज्यों ज्यों हमारा भाग्य सुधरता जाता है त्यों त्यों हम दूसरे भाई बन्दोंका भाग्य सुधार सकते हैं। और जिस अन्दाजसे हम अपना तथा दूसरोंका भाग्य सुधारते हैं उसी अन्दाजसे हमारा कल्याण होता है। इसलिये अपना भाग्य सुधारने पर हमें दूसरोंका भाग्य सुधारनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

हम दूसरोंके विचार जान सकते हैं तथा दूसरोंके मनमें अपने विचार डाल सकते हैं।

अब यह जानना चाहिये कि-दूसरोंका भाग्य हम कैसे सुधार सकते हैं। इसके लिये विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए महात्मा कहते हैं कि अगर हमें किसी आदमीकी सच्ची मदद करना हो और उसका भाग्य फेरना हो तो पहले हमें उसका आचार विचार जानना चाहिये, उसकी रहनसहन जानना चाहिये, उसका अभ्यास जानना चाहिये, उसके इर्दगिर्दका संयोग समझना चाहिये और उसके हृदयकी गुप्त इच्छाएं तथा दिलकी गहरी वासनाएं जानना चाहिये; यह सब मालूम होनेसे ही हम सोच सकते हैं कि उसका भाग्य फेरनेके लिये कौनसा उपाय काम करेगा। जैसे चतुर वैद्य बीमारका चेहरा देख कर, आंखें देख कर, जीभ देख कर, नाड़ी देख कर तथा उसकी बात सुन कर उसका रोग परख लेता है वैसे ही विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए ज्ञानी जन हर किसीको देख कर उसके भीतरके विचार जान लेते हैं। इस तरह दूसरोंके विचार जानलेनेमें कोई खास चमत्कार नहीं है, न किसी तरहका यंत्र मंत्र है और न जादू टोना है। यह तो एक प्रकारकी खुली विद्या है, यह एक प्रकारका, आत्माका बल है और मनुष्यकी प्रकृतिमें मौजूद एक तरहकी प्राकृतिक महान शक्ति है। इसलिये हम अगर दूसरोंके विचार जानना चाहें तथा दूसरोंके मनमें अपने विचार डालना चाहें तो ये दोनों काम बहुत आसानीसे हो सकते हैं। इसमें शर्त सिर्फ इतनी है कि हमें पवित्र जीवन बिताना चाहिये, उच्च-भावनाएं रखना चाहिये, जैसे दूसरी चीजोंका अभ्यास करते हैं वैसे ही विचारशास्त्रका अभ्यास करना चाहिये और अपने

हृदयमें गहरे उतरना तथा शान्तिसे रहना सीखना चाहिये। अगर यह सब आजाय तो फिर दूसरोंके विचार जानलेना कोई बड़ी बात नहीं है और न अपने विचार दूसरोंके मनमें पैठा देना कोई बड़ी बात है। क्योंकि ये बातें प्रकृतिके विरुद्ध नहीं हैं बल्कि इनसे प्रकृतिकी मदद होती है। इससे अगर इनकी कुंजियां मिलजायं तो ये महान काम बड़ी आसानीसे बन सकते हैं। इसलिये अगर सच्चा परमार्थ करना हो और प्रभुके प्यारे बनना हो तो पहले अपना भाग्य फेरना चाहिये और पीछे अपने भाई बन्दोंका भाग्य फेरना चाहिये।

इन सब बातोंसे विवेकी पाठकोंको विश्वास होगया होगा कि दूसरोंके विचार जान लेना तथा दूसरोंके मनमें अपने विचार डाल देना और इस रास्ते उनकी मदद करना हो सकता है, इसमें कुछ भी शक नहीं है। परन्तु इतना ही समझ लेना बस नहीं है। अगर ठीक तौरसे काम करना हो तो और अधिक उत्तमतासे यह सब विषय समझना चाहिये। इसके लिये हमें यह जानना चाहिये कि किस नियमसे हम दूसरोंके मनमें विचार पहुंचा सकते हैं, कैसे संयोगमें यह काम हो सकता है, कितनी दूर रह कर विचार जाने जासकते हैं तथा पहुंचाये जासकते हैं और कैसी प्रकृतिके आदमी यह महान काम कर सकते हैं। इसके लिये विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए महात्मा कहते हैं—

विचारोंका स्वभाव।

१ जैसे ईथर नामक तत्त्वमें बिजली रहती है और वह इसमें बिना किसीकी मददके या बिना किसी अड़चलके चाहे जहां घूम फिर सकती है, वैसे ही आकाशतत्त्वमें विचार रहते हैं और

वे बिना किसीकी मददके उसमें चाहे जैसे घूम फिर सकते हैं। इससे विचारोंको एक जगहसे दूसरी जगह भेजनेमें हमें कुछ खास मिहनत नहीं पड़ती। बल्कि वे तो अपने आप कुदरती तौरपर आकाशतत्त्वमें घूमा करते हैं, इससे उनको अपने पास खींचनेमें कुछ खास मिहनत नहीं पड़ती। सिर्फ उसकी कुंजी जानना चाहिये।

विचार बिजलीसे भी अधिक वेगवाले हैं।

२ बिजली जैसे एक सेकेण्डमें सातवार इस पृथिवीके इर्द गिर्द घूम सकती है। विचारोंमें उससे कहीं अधिक तेजी है। क्योंकि बिजलीसे भी विचारोंके परमाणु अधिक सूक्ष्म हैं, अधिक बलवान हैं और अधिक चैतन्यतावाले हैं। बिजलीमें जो द्रव्य है वह कुदरती है और विचारोंमें जो द्रव्य है वह आत्माकी सत्तासे पैदा हुआ है और उसे आत्मिक बलका धक्का मिला है। इससे बिजली आदि दूसरे जड़ तत्त्वोंसे विचारशक्ति अधिक चैतन्यवाली है, और दूसरे कितने ही तत्त्वोंसे अधिक गतिवाली है। इसलिये उसको अपने पास खींचनेमें कुछ देर नहीं लगती, बल्कि उसमें ऐसी गति है कि सेकेण्डभरमें आ सकती है। इससे विचारोंको बहुत दूर भेजने या बहुत दूरीसे अपने पास खींचनमें जरा भी देर नहीं लगती। अगर विचारोंकी गति मन्द होती तो उनको खींचनेमें बहुत देर लगती और बड़ी मुश्किल पड़ती परन्तु कृपालु ईश्वरने विचारोंको ऐसा गतिशील बनाया है कि जगतकी और सब चीजोंसे वे कहीं अधिक तेजीसे दौड़ सकते हैं। इसलिये हम चाहें तो बहुत दूर रह कर भी दूसरोंके विचार जान सकते हैं, दूसरोंके विचार हासिल कर सकते हैं और अपने विचार दूसरोंको देसकते हैं, इसमें कुछ भी

कठिनाई नहीं है । अपना भाग्य सुधारनेके लिये तथा अपने भाइयोंका भाग्य सुधारनेके लिये हमें विचारशास्त्रका अभ्यास करना चाहिये और सदा शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये ।

विचार जगतकी सब चीजोंके आर पार जा सकते हैं ।

३ रोण्टजनकी एक्सरेज किरणें जैसे सब चीजोंके आर पार जा सकती हैं वैसे ही विचार भी सब चीजोंके आरपार चले जाते हैं । ऐसी महान शक्ति विचारोंमें है, इससे इनको चाहे जितनी दूर भेजने या चाहे जितनी दूरसे खींचनेमें कुछ भारी अड़चल नहीं पड़ती । क्योंकि जगतकी सब चीजोंके आरपार चले जाना इनका स्वभाव ही है । विचारोंके इस अनमोल स्वभावसे हमें खूब अच्छी तरह लाभ उठाना चाहिये ।

अच्छे विचार बहुत सुन्दर रंगके और प्रकाशमान होते हैं ।

४ रेडियमका हर एक परमाणु जैसे हमेशा प्रकाशमान रहता है और उसमेंसे सदा तेज निकला करता है वैसे ही विचारके हर एक परमाणुके इर्दगिर्द एक तरहका कुदरती तेज तथा रंग होता है, इससे बहुतसे परमाणु मिलने पर बहुत प्रकाशमान और सुन्दर रंगवाले मालूम होते हैं । वे अपने प्रकाशके अनुसार हम पर असर करते हैं । इससे जब कोई भी उत्तम नया विचार हमें मिलता है तब हमारे हृदयमें एक तरहका उजियाला हो जाता है, उसके प्रकाशकी गरमी हमारे मगजमें पहुंच जाती है और जैसे बिजलीसे हमारे

शरीरमें सनसनी आ जाती है वैसे नये विचारके प्रकाशसे हममें कुछ खास नया चैतन्य आ जाता है अथवा अपना पुराना चैतन्य एक दम जाग उठता है। याद रखना कि यह सब विचारोंके असरसे ही होता है। विचारोंके परमाणु प्रकाशमान हैं, इससे पहुंचे हुए योगी तथा कितने ही मानसिक शक्ति-वाले मनुष्य विचारोंको उनके असली रूप रंग सहित देख सकते हैं और समझ सकते हैं। हम पहले कह चुके हैं कि हर किस्मके विचारोंके रूप हैं, रंग हैं और आकार हैं। इससे जिन्होंने अपनी सूक्ष्म शक्तियोंको विकसित किया है वे आदमी विचारोंके रूप देख सकते हैं।

अन्तःकरणका स्वभाव।

विचारोंका ऐसा स्वाभाव होनेसे उनको जानलेना, एक जगहसे दूसरी जगह भेजना तथा दूसरोंके मनमें डालना कुछ विशेष मुश्किल नहीं है, क्योंकि यह उनका स्वभाव ही है। इतना ही नहीं बल्कि हमारे अन्तःकरणका स्वभाव भी ऐसा है कि अपने पास जो विचार आते हैं उनको पकड़ लेता है और अपने पासके विचारोंको बाहर भेज देता है। इससे बहुत दूर रह कर भी विचारका लेन देन हो सकता है। पर इस विषयको और अच्छी तरह समझनेके लिये जैसे हमने विचारोंका स्वभाव जाना वैसे ही अब हमें अपने अन्तःकरणका स्वभाव जानना चाहिये, क्योंकि अन्तःकरणमेंसे ही विचार उत्पन्न हो सकते हैं और अन्तःकरणकी मार्फत ही विचार जान सकते हैं तथा दे सकते हैं। जबतक विचारोंका और अन्तःकरणका मिलाप नहीं होता तबतक कोई काम नहीं हो सकता। इस-

लिये अब हमें अन्तःकरणका स्वभाव जानना चाहिये। विचार-शास्त्रके विद्वान कहते हैं कि—

हमारे अन्तःकरणमें विचारोंको खींचनेकी कुदरती शक्ति है।

१ जैसे पृथिवीमें जड़ वस्तुओंको अपनी तफर खींचनेकी कुदरती आकर्षण शक्ति है वैसे ही अन्तःकरणमें विचारोंको खींचनेकी कुदरती आकर्षण शक्ति है। इससे विचारोंको खींचनेके लिये अन्तःकरणको कोई खास मिहनत नहीं करना पड़ती, बल्कि जैसे चुम्बकके पास लोहा खिचआता है वैसे ही शुद्ध अन्तःकरण की तरफ अच्छे विचार और पापी अन्तःकरणकी तरफ खराब विचार आपसे आप खिच आते हैं। ऐसा अन्तः करणका स्वभाव है, इसलिये दूसरेके विचारोंको अपने पास खींचना और अपने विचारोंको दूसरेके अन्तःकरणमें डालना कुछ विशेष मिहनतका काम नहीं है बलिक यह तो बिलकुल स्वाभाविक है। क्योंकि अंतःकरण खुद अपनी कुदरती आकर्षण शक्तिसे ही विचारोंको अपनी तरफ खींच लेता है इससे हमको उसमें कुछ खास मिहनत नहीं करना पड़ती; सिर्फ उसके थोड़े से नियम जानना चाहियें और अपना चरित्र शुद्ध रखना चाहिये, इतना ही हमें करना है। अगर इतना कर सकें तो सारी दुनियाके और स्वर्गके विचार भी हमारे पास आ सकते हैं। तब अपने विचारोंको अपने भाई बन्दोंके मनमें डाल देना कौन बड़ी बात है? हम तो स्वर्गमें रहनेवाले देवताओंके मनमें और परमात्माके मनमें भी पहुंचा सकते हैं। इसलिये विचारोंको अपने पास खींचनेकी जो अनमोल शक्ति हमारे अन्तःकरणमें है उससे हमें लाभ उठाना चाहिये।

हमारे अन्तःकरणमें बहुत दूरके विचार देख लेनेकी सामर्थ्य है।

२ हमारे अन्तःकरणमें सिर्फ बाहरके विचारोंको खींचने ही का बल नहीं है बल्कि जैसे दूरबीनमें बहुत दूरकी चीजको भी दिखादेनेकी शक्ति है वैसे पवित्र अन्तःकरण में बहुत दूरके विचारोंको भी समझजानेकी सामर्थ्य है। इस शक्तिके कारण कितने ही महात्मा अपनी पर्णकुटीमें बैठे बैठे ब्रह्माण्डकी जानने योग्य सब बातें जान सकते हैं अन्तःकरण केवल दूरबीन समान ही नहीं है बल्कि वह स्वच्छ रहे तो उसमें जगतकी सब चीजोंसे अधिक सामर्थ्य है। क्योंकि उसमें आत्माका प्रतिबिम्ब पड़ सकता है और वह आत्माकी सबसे निकटकी वस्तु है। इसलिये जिनका अन्तःकरण पवित्र है वे महात्मा अलौकिक शक्तिवाले होते हैं। सारे ब्रह्माण्डमें जो जानने योग्य है उसे आपसे आप जान सकते हैं और जो स्थान उनके विचार ग्रहण करने लायक है वहां अपने विचार भेज सकते हैं। चाहे जितनी दूर रह कर यह काम हो सकता है। और यह शक्ति हम सबके अन्दर कुदरती तौर पर मौजूद है। इसलिये जैसे बने वैसे अपना अन्तःकरण शुद्ध करना चाहिये और उसके अन्दर अपना तथा जगतका कल्याण करनेवाली जो महान शक्तियां हैं उनको विकसित करना चाहिये।

हमारे अन्तःकरणमें विचारोंको पकड़ रखनेकी तथा उनको बाहर लौटा देनेकी शक्ति है।

३ जैसे फोनोग्राफ दूसरोंकी आवाज अपने अन्दर पकड़ सकता है और वह आवाज फिर बाहर निकाल सकता है, वैसे

अन्तःकरणमें भी दूसरोंके विचार पकड़ लेनेकी तथा उनको बाहर निकालनेकी कुदरती शक्ति है । इससे जैसे फोनोग्राफकी चूड़ी या प्लेट पर दूसरोंकी आवाज पकड़ सकते हैं वैसे ही हमारा अन्तःकरण कुदरती तौरसे जगतमें फैले हुए सब विचारोंको पकड़ सकता है और जैसे फोनोग्राफकी चूड़ी या प्लेट कही हुई बातको फिर कह सकता है वैसे ही हमारा अन्तःकरण अपने भीतरके सब विचारोंको ज्यों के त्यों दूसरोंके अन्तःकरणमें डाल सकता है । इसमें सिर्फ थोड़ीसी बात चाहिये । बेतारका तार भेजनेकी युक्तिमें जुदे जुदे स्थानोंमें आमने सामने ऊंची जगह पर दो यंत्र लगाने पड़ते हैं; एक यंत्र जहांसे तार भेजना है वहां होता है और दूसरा यंत्र जहां तार लेना है वहां रहता है । ये दो यंत्र एक ही किस्मके होते हैं उनमें कुछ भी फ़र्क या त्रुटि नहीं होती । इससे एक यंत्रमें जो क्रिया होती है या जो असर होता है वही क्रिया या वही असर दूर और सामने रहे हुए दूसरे यंत्रमें भी होता है, इससे संकेतके चिन्हों द्वारा संदेशा समझ सकते हैं । इसी तरह जिसके विचार जानना है या जिसके पास विचार भेजना है उसका और विचार जाननेवाले या भेजनेवालेका दोनोंका अन्तःकरण अगर स्वच्छ हो और शुभेच्छावाली प्रबल इच्छा-शक्ति हो तो बहुत ही आसानीसे एक दूसरेके विचार जान सकते हैं तथा बाहरकी कुछ भी मदद बिना बहुत दूर तक विचार भेज सकते हैं ऐसा करनेमें अन्तःकरणको कुछ खास मिहनत नहीं पड़ती, बल्कि यह तो उसका कुदरती स्वभाव ही है । इसलिये स्वाभाविक रीतिसे ही दूसरोंके विचार जान लेनेकी तथा अपने विचार सारे ब्रह्माण्डमें फैलानेकी और खास परमात्मातक पहुंचानेकी हमारे अन्तःकरणमें कुदरती शक्ति है ।

पर अफसोस है कि अपनी अज्ञानताके कारण, तुच्छ स्वार्थके कारण, कुदरतके नियम न समझनेके कारण और आत्माका बल न समझनेके कारण इन सब महान शक्तियोंको हमने खो दिया है अब इन सब चीजोंको समझ कर अपने जीवको जगाना चाहिये और अन्तःकरणको पवित्र रखना चाहिये। याद रखना कि यह सब करनेकी कुंजी शुभेच्छा है। इसलिये अगर दूसरोंके विचार जानना हो और अपने विचारों द्वारा दूसरोंकी मदद करना हो तो पहले शुभेच्छा रखना सीखिये। शुभेच्छा रखना सीखिये।

हमारे अन्तःकरणमें जैसा चाहे वैसा चित्र खिंच सकता है।

४ फोटोग्राफीका साफ किया हुआ और सब तरहसे लैस केमेरा हो तो उसमें चाहे जिस चीजका हूबहू चित्र उतर सकता है। महात्मा लोग कहते हैं कि हमारा अन्तःकरण फोटो उतारनेके केमेरा समान है। इसमें जो चित्र खींचना चाहें वह बहुत आसानीसे आपसे आप खिंच सकता है। शर्त इतनी ही है कि—इर्द-गिर्दके संयोग अच्छे होने चाहियें। जैसे—फोटो खींचनेके लिये कुछ दवाएं, उजियाला और उस कामके करनेकी समझ आदि होना चाहिये। यह सब जानते हों तो साफ प्लेट पर फोटो उतारनेमें कुछ समय नहीं लगता, दो चार सेकेण्डमें कितने ही फोटो उतार सकते हैं। यही बात अन्तःकरणके विषयमें भी है। अगर वह बढ़िया हो तो ईश्वरके ब्रह्माण्डके हरएक विचारका फोटो उसमें बड़ी आसानीसे उतर सकता है। स्वाभाविक रीतिसे हमारे अन्तःकरणमें जो यह कुदरती महान शक्ति है उसे विकसित करना चाहिये। यह कुछ चमत्कार दिखानेके लिये नहीं, छोटे छोटे स्वार्थ साधनेके लिये नहीं, धन पानेके लिये

नहीं और किसी तरहकी मलिन वासनाके लिये नहीं, बल्कि सिर्फ अपनी आत्माके कल्याणके लिये, अपने भाइयोंकी मदद करनेके लिये, ईश्वरके नियमपर चल कर उसकी दी हुई महान शक्तियोंका लाभ उठानेके लिये और यों ईश्वरकी सेवा करके उसे प्रसन्न रखनेके लिये हमें अपनी मानसिक शक्तियोंको चमकाना चाहिये । इसके लिये अपना अन्तःकरण शुद्ध रखना चाहिये और अन्तःकरण शुद्ध रखनेके लिये पहले शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये । मानसिक शक्तियोंको विकसित करनेका मूल शुभेच्छा है ।

दूसरोंके मनके विचार जानने तथा अपने विचार दूसरोंके मनमें भेजनेके नियम ।

विचारोंका स्वभाव तथा अपने अन्तःकरणका स्वभाव ये दोनों आवश्यक विषय जाननेके बाद हमें यह जानना चाहिये कि दूसरोंके विचार जाननेके लिये तथा दूसरोंके पास अपने विचार भेजनेके लिये किस नियम से काम लेना चाहिये । इसके लिये विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए अनुभवी विद्वान कहते हैं कि-

१ बायस्कोपमें जो चित्र हमें चलते फिरते, नाचते कूदते, खेलते हिलते और कितनी ही कारवाई करते हुए बहुत बड़ी शकलमें दिखाई देते हैं वे असल में बहुत छोटे होते हैं और जिस परदेपर दिखाई देते हैं उससे भी बहुत दूर होते हैं परन्तु उन चित्रोंका अक्स एक बड़ी रोशनीके द्वारा सामनेके परदेपर पड़ता है, तभी वे बहुत बड़े और हूबहू तथा चलते फिरते दिखाई देते हैं । इसी तरह दूरके दूसरे लोगोंके छोटे छोटे विचार भी जब शुभेच्छाकी रोशनीसे शुद्ध अन्तःकरणके परदेपर पड़ते हैं

तब हूबहू दिखाई देते हैं। उस समय उसमें किसी किसी तरहकी मैल या रुकावट नहीं डालती, इससे वे चित्र बहुत साफ दिखाई देते हैं। आजकल हमें वे चित्र नहीं दिखाई देते, इसका कारण यह है कि हमारे अन्तःकरणमें मल, विक्षेप तथा राग-द्वेष आदि दोष भर गये हैं; इन दोषोंके कारण अन्तःकरण पर कितनी ही प्रकारकी मलीनताकी तह जम गयी है। इतना ही नहीं, इन चित्रोंका अक्स फेकनेवाली जो शुभेच्छाकी रोशनी है वह रोशनी भी हममें, जितनी चाहिये उतनी शुभेच्छा न होने से, फीकी फीकी होती है। इस फीकी रोशनीके कारण अन्तःकरणमें खिंचनेवाले वे अधूरे चित्र हमारी समझमें नहीं आते और हमपर जितना चाहिये उतना असर नहीं करते अगर हम दूर रह कर भी दूसरेके विचार जानना चाहते हैं और अपने विचार दूसरोंके हृदयमें पहुंचाना चाहते हैं तो हमें अपना अन्तःकरण शुद्ध रखना चाहिये और शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये।

हमारी इच्छाशक्तिमें विचारोंको खींचनेका बल है।

२ इस दुनियामें बहुतसी ऐसी चीजें हैं जो एक दूसरेको खींच सकती हैं। जैसे—पृथिवीमें आकर्षणशक्ति है, इससे वह सब चीजोंको अपनी ओर खींचती है, हर एक चीज़में उसकी हैसियतके मुताबिक़ छोटी बड़ी आकर्षण शक्ति है। इसी तरह विचारोंको इच्छाशक्तिके बलसे खींच सकते हैं तथा दूसरी जगह भेज सकते हैं। क्योंकि विचारोंसे इच्छाशक्ति अधिक गहराईमें है और अधिक बलवती है। इससे अपने

विचारोंको दूर भेजने तथा दूसरेके विचारोंको खींचलानेकी तो यह एक खास कुंजी है। अगर हमें दूर रह कर दूसरेके विचार जानना हो और दूसरेके मनमें अपने विचार भेजना हो तो पहले अपनी इच्छाशक्तिको मजबूत करना चाहिये; क्योंकि इच्छाशक्ति विचारोंको वशमें रखनेवाली महान शक्ति है, इसके सिवा ऐसी कुदरती शक्ति है कि विचारोंको खींच सकती है। इसलिये अपनी इच्छाशक्तिके बलको बढ़ाना चाहिये। याद रखना कि हम जो सिर्फ लल्लो पत्तो करनेवाले बने हुए हैं, हिजड़े जैसे बने हुए हैं, मुर्दा समान बने हुए हैं और कर्तव्यभ्रष्ट तथा दरिद्री हैं इसका कारण कुछ यह नहीं है कि ईश्वरने हमें कम सामान दिया है; बल्कि हमने अपनी इच्छा-शक्तिको विकसित नहीं किया और उसका बल नहीं समझा इसीसे हमारी अधोगति हुई है और होती है। अगर अपनी, अपने देशकी, अपने राज्यकी और अपनी भविष्य पीढ़ीकी उन्नति करना है तो पहले अपनी इच्छाशक्तिको मजबूत करना चाहिये। क्योंकि सबकी उन्नति इच्छाशक्तिके बलसे ही हो सकती है। जगतमें ऐसी कोई चीज नहीं है जो इच्छाशक्तिके बलसे न मिलसके। दृढ़ इच्छाशक्तिके बलसे कितने ही आदमी अपनी अपनी जिन्दगी बढ़ा लेते हैं; कितने ही आदमी अपने प्यारे मनुष्योंसे मिल जाते हैं; कितने ही आदमी जगतमें बहुत बड़ा फेर बदल कर देते हैं; देवताओंको वशमें कर सकते हैं और अपना भाग्य फेर सकते हैं इतना ही नहीं बल्कि मजबूत इच्छा-शक्तिसे नरसे नारायण होसकते हैं। इसलिये अपनी इच्छा-शक्तिको दृढ़ करना सीखना चाहिये। विचारबलका पाया इच्छाशक्तिकी मजबूतीपर है। इसलिये इच्छाशक्तिको मजबूत बनाना सीखना चाहिये।

मानसिक शरीरको अपना स्थूल शरीर बहुत मदद देसकता है इसलिये इस तरह रहना चाहिये जिससे अपना शरीर अच्छा रहे।

अब यह प्रश्न खड़ा होता है कि यह सब किसको आता है? इच्छाशक्ति बलवती करनेका महान काम किसको आता है? अपने उत्तम विचार दूसरोंके मनमें दाखिल करके उनकी उन्नति करनेका शुभ काम किसको आता है? दूर रह कर दूसरोंके विचार जानलेनेका जादूसा काम किसको आता है और अपना भाग्य फेरना या दूसरोंका भाग्य फेरनेका महान काम कौन कर सकता है? यह जाननेकी जरूरत है। इसके लिये विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए विद्वान कहते हैं कि जगतमें जितने आदमी हैं उन सबमें इस किस्मकी शक्ति मौजूद है। क्योंकि सब आदमियोंमें अन्तःकरण है; सब आदमियोंमें विचारशक्ति है और सब आदमियोंमें इच्छाशक्ति है। इसलिये जो आदमी चाहे वह इन शक्तियोंको विकसित कर सकता है। परन्तु यह बात ध्यान रखने योग्य है कि जिसका मानसिक शरीर सूक्ष्म परमाणुका बना है उसके ऊपर विचारोंका असर जल्द होता है और जिसका मानसिक शरीर स्थूल है उसके ऊपर विचारोंका असर होनेमें देर लगती है। अगर हमें दूसरोंके विचार जानना है, दूसरोंके हृदयमें अपने विचार पहुंचाना है और अपना भाग्य फेरना है तथा मनुष्यसे देवता बनना है तो पहले अपनी इच्छाशक्तिको चमकाना चाहिये और इच्छाशक्तिको चमकानेके लिये ऐसा उपाय करना चाहिये कि अपना मानसिक शरीर सूक्ष्म परमाणुओंका बने। क्योंकि इसमेंसे जितनी जड़ता घटती है उतना ही उसका बल बढ़ता

है और उतना ही दूसरोंका विचार ले सकते हैं तथा दूसरोंको विचार दे सकते हैं। इसलिये पहले हमें अपने मानसिक शरीरको सूक्ष्म परमाणुओंका, जल्द असर ग्रहण करने योग्य बनाना चाहिये। यादरखना कि मानसिक शरीर स्थूल शरीरके आधार पर है स्थूल शरीर तन्दुरुस्त रहे तो मानशिक शरीर भी अच्छा रह सकता है। स्थूलशरीरमें किसी तरहका रोग न हो, वह बहुत मोटा न होजाय और न बहुत दुबला होजाय, इस बातकी सम्हाल रखना चाहिये और इसके लिये खाने पीनेमें, सोने बैठनेमें, पहनने ओढ़नेमें और दूसरोंकी संगत करनेमें बहुत सोच विचार कर काम करना चाहिये। यह सब सुधरे तो स्थूल शरीर अच्छा रह सकता है; स्थूल शरीर अच्छा रहे तो मानसिक शरीर अच्छा रह सकता है और मानसिक शरीर अच्छा रहे तभी वह दूसरोंका असर जल्द ग्रहण कर सकता है तथा दूसरों पर अपना असर जल्द पहुंचा सकता है। इसलिये अपने मानसिक शरीरको अच्छी हालतमें रखना चाहिये और इसके लिये रजोगुणी तथा तमोगुणी खानपानसे बचना चाहिये। काम, क्रोध, लोभ आदि विकारोंसे बचना चाहिये; मनमें तुच्छ निकम्मे संकल्प विकल्प हुआ करते हैं उनसे बचना चाहिये और आजकल हम मायाके प्रदेशमें रमा करते हैं उसके बदले ईश्वरी ज्ञानके तथा ईश्वरी स्नेहके प्रदेशमें विचरण करना चाहिये। ऐसा करें तो फिर इच्छाशक्तिको मजबूत करने में कुछ देर न लगे। जिसकी इच्छाशक्ति मजबूत है वह तो सारे ब्रह्माण्डकी हर एक चीजपर मनमानी हुकूमत चला सकता है। अगर हमें अपना भाग्य सुधारना है तो पहले अपनी इच्छाशक्तिको मजबूत करना चाहिये। इच्छाशक्तिको मजबूत करनेके लिये मानसिक शरीरको सूक्ष्म परमाणुवाला बनाना चाहिये और

मानसिक शरीर सुधारनेके लिये अपनी स्थूल देहको सुधारना चाहिये। क्योंकि स्थूल देहका असर धीरे धीरे अपनी आत्मातक पहुंचता है। याद रखना कि अपना भाग्य फेरनेमें अपनी स्थूल देह भी बहुत मददगार है। उसको निकम्मी समझ कर उससे लापरवाही मत दिखाना बल्कि उसे ऐसी बनानेकी कोशिश करना कि वह अपने मानसिक शरीरको मजबूती देसके। तब आप धीरे धीरे बड़ी आसानीसे आगे बढ़ सकेंगे।

मनमें उठनेवाले संकल्प विकल्पको रोकें और मनको स्थिर करें तभी उसमें बाहरके उत्तम विचार आसकते हैं।

३. भाइयो! हम जब जगतमें फैले हुए दूसरोंके विचार लेना चाहते हैं और दूसरोंके हृदयमें अपने शुभ विचार बिठाना चाहते हैं तब इस विषयकी हरएक बात हमें जानना चाहिये और इसके मुख्य मुख्य नियमोंको अपने हृदयमें जमा लेना चाहिये। उनमेंसे एक नियम यह है कि जैसे स्थिर पानी हो तो उसमें प्रतिबिम्ब पड़ता है और वह साफ साफ दिखाई देता है परन्तु पानी हिलता हो तो उसमें प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता और अधूरा तथा हलका प्रतिबिम्ब पड़ता भी है तो ठीक ठीक दिखाई नहीं देता। वैसे ही हमारा वृत्ति स्थिर हो, बुद्धि परमात्माकी तरफ खिंचनेवाली हो और मनमें एकाग्रता हो तभी दूसरोंके विचार हम लेसकते हैं। और सामनेके आदमीका अन्तःकरण एकाग्रतावाला हो तभी उसमें अपने विचार पहुंचा सकते हैं। इसलिये अगर ब्रह्माण्डके शुभ विचारोंको अपने पास खींचना हो और अपने शुभ विचार

अपने भाईबन्दोंके अन्तःकरणमें पहुंचाना हो तो पहले अपने मनको एकाग्र करना सीखना चाहिये। क्योंकि जैसे हिलते पानीमें अच्छा प्रतिबिम्ब नहीं पड़ सकता वैसे ही चंचल मनमें बाहरके ऊंचे विचार नहीं आ सकते। ऊंचे विचार खींचनेके लिये जैसे अन्तःकरणको पवित्र रखनेकी जरूरत है वैसे ही मनको एकाग्र करनेकी जरूरत है। क्योंकि जैसे समुद्रमें लहरें उठती हैं और जैसे तालावमें हिलकोरा मारता है वैसे ही मनके अन्दर जो संकल्प विकल्प होते हैं वे उसकी लहरें हैं। वे लहरें मनको हिलाती हैं और उसमें बाहरके विचारोंका बढ़िया चित्र उतरने नहीं देतीं। इसलिये इन लहरोंको रोकना चाहिये। संकल्प विकल्पकी लहरोंको रोकनेका नाम ही मनकी एकाग्रता है। जिन जिन विषयोंमें मन जाय उधरसे उसको लौटा कर एक महान उद्देश्यकी तरफ उसको लगाना चाहिये। ऐसा करनेसे धीरे धीरे मन एकाग्र हो सकता है।

मनको वश करनेके श्रीकृष्ण भगवानके बताये हुए उपाय।

मनको एकाग्र करनेके विषयमें यह बात भी ध्यानमें रखने योग्य है कि मन बहुत चंचल है, वह आसानीसे, एकदम वशमें नहीं आ सकता। जब इसके पीछे लगें और खास ख्याल रखें तभी वह धीरे धीरे वशमें आता जाता है। इसके लिये श्रीमद्-भगवद्गीतामें अर्जुनने भी कहा है कि हे प्रभु! मन बहुत चंचल और हठी है, इससे इसको वशमें करना बड़ा कठिन है। आकाशमें फैली हुई जबरदस्त हवाको एक वर्तनमें रोक रखना जितना कठिन है उससे भी कठिन मनको एक जगह रोक रखना है। इसके उत्तरमें योगेश्वर श्रीकृष्ण भगवानको भी कहना पड़ा है

कि हे अर्जुन! मन चंचल है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। सचमुच, जैसे कि तू कहता है, मनको रोकना कठिन है, तौभी अभ्याससे और वैराग्यसे मन वशमें हो सकता है, इसलिये हमें भी अगर अपने मनको रोकना सीखना हो तो अभ्यास और वैराग्यकी मदद लेनी चाहिये। और यह मदद लेनेके लिये पहले यह जानना चाहिये कि अभ्यास क्या है और वैराग्य क्या है। इसके बारेमें ज्ञानी भक्त कहते हैं कि जिन जिन विषयोंमें, जिन जिन चीजोंमें या जिन जिन जगहोंमें मन जाय वहांसे जरा हठ करके, जरा समझा कर तथा जरा हिकमत लगाकर उसको पीछे खींचने और इस तरह हर बातमें वारंवार करते रहनेका नाम अभ्यास है। जैसे लोभमें मन जाय तब उसको समझाना कि नहीं, ऐसा लोभ मुझे नहीं करना चाहिये; ऐसा लोभ करनेसे मेरी इज्जत नहीं रहेगी; ऐसा अनुचित लोभ करनेसे मैं शरीरसे सुखी नहीं रह सकूंगा। ऐसे लोभमें पडनेसे अन्तमें मुझे बहुत नुकसान उठाना पड़ेगा। इस तरह सोच विचार कर मनको लोभमेंसे उलटा खींचनेका नाम अभ्यास है। मन जब नाटकमें जाना चाहे, ऐशो आराम करना चाहे और ऐसी ऐसी अपने मतलबकी दूसरी छोटी छोटी चीजोंको चाहे तब उनमेंसे मनको पीछे खींचनेका नाम अभ्यास है। ऐसा करनेसे मन धीरे धीरे वश हो सकता है।

मनको वश करनेका दूसरा उपाय।

मनको रोकनेका दूसरा उपाय वैराग्य है। इसका अर्थ यह कि जब मन बुरी वासनाओंमें जाय तब यह सोचना कि य जिन्दगी कितने दिनके लिये है? कल चितापर जल जाना है य मिट्टीमें मिल जाना है; तौभी मैं न चेतूं और ऐसे विकारोंक

गुलाम बनूं यह क्या उचित है? मैं किसलिये विकारके वशमें होऊं? ये विकार मेरे किस काम आवेंगे? अजी मेरी भूल तो देखो! आज मुझे जो रूप दिखाई देता है और जिस रूपपर मोहता हूं वह क्या हमेशा रहनेवाला है? नहीं नहीं, वह तो पतंगका रंग है। थोड़े दिनमें यह रूप बदरूप हो जायगा। जिस धनके लिये मैं उछलता हूं और अधर्म करने पर तय्यार होता हूं वह धन क्या मरने पर मेरे साथ जायगा? वह धन क्या मुझे मरने पर दिलासा दे सकेगा? वह धन क्या मुझे तार सकेगा? नहीं, वह धन तो मुझे उलटे डुबोवेगा; तिस पर भी मैं उसके लालचमें पड़ जाऊं तो कितनी खराब बात है! प्रभु! प्रभु! मेरा मोह तो देखो! जिन्दगी कितनी है? जगतके सुख कितनी देरके हैं? इस जगतके आगे मैं किस गिनतीमें हूं? अनन्तकालके अन्दर थोड़े वर्षोंकी मेरी जिन्दगीकी क्या विसात है? जिसने मुझे जगत सुख और जिन्दगी दी उसके लिये मुझे क्या करना चाहिये? और अनन्तकालका जीवन पानेके लिये कितना खबरदार रहना चाहिये? उसके बदले मैं कैसे मोहमें फंस गया हूं। प्रभु! प्रभु! बचाओ, बचाओ, बचाओ। इस प्रकार हृदयसे प्रार्थना करना और देहका क्षणभंगुरपन, मायाका मिथ्या-पन तथा जगतमें चलते हुए पोलमपोलको समझ कर हृदयसे वैराग्य रखना सीखना चाहिये और जगतकी किसी वस्तुकी कीमत जितनी है उससे अधिक नहीं समझना चाहिये। इसका नाम वैराग्य है और यह मनको रोकने तथा एकाग्र करनेका उपाय है। इसलिये अगर भाग्य सुधारना हो, जगतसे ऊंचे विचार लेना हो, अपने अच्छे विचार अपने भाइयोंको देना हो और परमात्माके साथ तार लगा कर उसके अलौकिक सुखोंका भागीदार होना हो तो, अपने मनको एकाग्र करना

सीखना चाहिये। याद रखना कि यह महान काम शुभेच्छासे ही हो सकता है। इसलिये पहले शुभेच्छा रखना सीखिये। शुभेच्छा रखना सीखिये।

जुदी जुदी वृत्तियों द्वारा मनका बल व्यर्थ चला जाता है इससे हम कुछ नहीं कर सकते। अगर इस बलको रोकें तो जो चाहें वह कर सकते हैं।

चाहे जितनी दूर रह कर दूसरोंके विचार जानलेने और दूसरोंतक अपने विचार पहुंचानेमें यह बात भी ध्यानमें रखने योग्य है कि जब हमारे मनकी सभी वृत्तियां स्थिर हों तभी हम दूसरोंके मनमें अपने विचार डाल सकते हैं और जब हमारी सब वृत्तियां शान्त हों तथा कहीं जाती आती न हों, बल्कि अपने अपने स्थानोंमें रुकी हों तभी हम प्रकृतिमेंसे नये विचार खींच सकते हैं। इसलिये अगर हमें दूसरोंके विचार जानना है और अपने विचार दूसरोंको देना है तो अपने मनकी वृत्तियोंको रोकना सीखना चाहिये। मनकी वृत्तियोंको मनमाने तौर पर जहां तहां भटकनेसे रोकना ही इस विद्याका पाया है। यह पाया हममें न हो तो नतो हम दूर रह कर दूसरोंके विचार जान सकते हैं और न दूसरों तक अपने विचार पहुँचा सकते हैं। इसको इस उदाहरणसे समझिये कि अगर एक बड़ी नदी और उसका पानी जुदी जुदी नहरोंमें बंट जाता हो और नीची जमीनमें जिधर तिधर चला जाता हो तो उस नदीसे कुछ विशेष लाभ नहीं हो सकता। परन्तु उस पानीको एक ही जगह जमा कर उसकी धारा गिरायी जाय तो उस धाराके

बलसे वहां खड़ा किया हुआ एक बहुत बड़ा चक्कर घूम सकता है और उससे कितनी ही कलें चल सकती हैं। अगर वह पानी अलग अलग धाराओंसे जिधर तिधर वह जाय तो कोई बड़ा काम नहीं हो सकता। इसी प्रकार अपने मनको एक बड़ी नदी समझिये उसमें जो जुदी जुदी वृत्तियां हैं वे सब उसकी धाराएं हैं। इन वृत्तियों रूपी धाराओंको अगर खुला रखें तो मनका बल उनमें चला जाता है इससे वह कोई बड़ा काम नहीं कर सकता। अगर वृत्तिरूपी धारा रुकी हो और पीछे मनका सारा बल जमा करके एक ही जगह उसकी चादर गिरायी जाय तो आजकलका हमारे लिये कठिनसे कठिन काम भी बड़ी आसानीसे हो सकता है। क्योंकि उस समय मनका सारा बल एक ही जगह इकट्ठा हो जाता है और मनका बल इतना बड़ा है कि उसके सामने जगतका कोई भी स्थूल बल किसी गिनतीमें नहीं। ऐसा बड़ा बल अपने हाथमें आजानेपर हम जो चाहें वह करें तो आश्चर्य ही क्या है? यह बल जिसके हाथ लग जाय वह मनुष्य अपना भाग्य फेर सके और दूसरोंका भाग्य फेर सके तो कौन बड़ी बात है? और जो इतनी दूरतक पहुंच जाय उसके लिये दूर रह कर दूसरोंके विचार जान लेना या दूसरोंके मनमें अपने विचार पहुंचा देना कौन बड़ी बात है? बन्धुओ! हमारे मनका बल जुदी जुदी इच्छाओंमें, जुदी जुदी वासनाओंमें, जुदी जुदी वृत्तियोंमें, जुदे जुदे विकारोंमें, जुदे जुदे मौज शौकमें और तरह तरहकी हाय हायमें फंसा हुआ है, इसीसे हम कुछ नहीं कर सकते। इन सब चीजोंको घटा कर मनका बल बढ़ाइये तब धीरे धीरे आप जो चाहेंगे कर सकेंगे। क्योंकि जो कुछ करना है वह प्रकृतिके विरुद्ध तो करना नहीं है बल्कि उसके नियमानुसार ही करना है और परमकृपालु परमात्माने हमें इतनी बड़ी शक्ति दे कर इस

जगतमें भेजा है कि हम जो चाहें वह प्राप्त कर सकते हैं; मनुष्यसे देवता बन सकते हैं तथा जीवसे शिव हो सकते हैं। अतएव सब प्रकारकी उन्नति करनेके लिये मनका बल बढ़ाइये। मनका बल बढ़ाइये।

अपने मनको परखनेकी रीति।

दूर रह कर दूसरोंके विचार जानने तथा अपने विचार दूसरोंके मनतक पहुंचानेके नियम समझनेके बाद हमारे पास यह जाननेका कोई पैमाना होना चाहिये कि इस किस्मकी शक्ति हममें कहां तक खिलचुकी है। अगर ऐसा यंत्र हमारे पास हो तो हम इस विषयमें कुछ अधिक अच्छे रास्ते पर आ सकते हैं। इसलिये मनकी स्थिति समझानेवाले यंत्रकी जरूरत है। इसके लिये विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए ज्ञानी भक्त कहते हैं कि जब गरमी बढ़ती है तब थरमामेटरमें पारा ऊपर चढ़ता है और जब सरदी बढ़ती है तब पारा नीचे उतरता है। इसी तरह जब हमारा अन्तःकरण ईश्वरकी तरफ ढलता जाता है तब उसमें शुभ विचार ग्रहण करनेकी शक्ति बढ़ती जाती है और जब वह मायामें आगे बढ़ता है तब वह शक्ति घटती जाती है। हमें अपने मनके सामने देख कर विचारना चाहिये कि वह जगतके मायिक पदार्थोंको अधिक चाहता है कि ईश्वरको अधिक चाहता है। अगर जगतके मोहकी तरफ उसका अधिक ढलाव हो तो समझ लेना कि वह उच्चश्रेणीके कुदरती विचार ग्रहण करनेके योग्य नहीं है। और जबतक अपने विचारमें ऐसा ऊंचे दरजेका माल नहो तबतक वह दूसरोंको अच्छा माल नहीं दे सकता। दूसरोंके मनमें अपने

विचार भेजनेकी शक्ति भी उसमें नहीं होती। अगर मानसिक बल प्राप्त करना है और अपना भाग्य फेर कर अपना तथा अपने बन्धुओंका कल्याण करना है तो हमें ईश्वरी रास्तेमें आगे बढ़ना चाहिये और मायाके रास्तेसे पीछे हटना चाहिये। ईश्वरी रास्तेमें आगे बढ़नेसे हमारे हृदयमें ईश्वरके शुभ गुण आते जाते हैं और ईश्वरी रास्तेमें ऐसा आनन्द है कि कुदरी तौर पर उसमें मन एकाग्र हो सकता है। मायाके रास्तेमें ऐसी बिछली है और ऐसा जाल बिछा हुआ है कि उसमें मनकी चंचलता ही बढ़ती जाती है। इस प्रकार माया सरदी है और ईश्वरी रास्ता गरमी है। जब गरमी बढ़े, जब ईश्वरी ज्ञान बढ़े तब पारा ऊपर चढ़े और जब सरदी बढ़े, जब माया मोह बढ़े तब पारा नीचे उतरे। जब ईश्वरी ज्ञान बढ़ता है तब अपनेमें एक प्रकारका कुदरती तेज आजाता है, जीवनमें एक नयी बिजली आजाती है, मनमें उत्साह आजाता है, हृदय में द्रावकता आजाती है और मन विशाल हो जाता है, बुद्धिका दरवाजा खुल जाता है और अन्तःकरणमें एक तरहका स्वाभाविक प्रकाश पड़ा करता है। जब ऐसी दशा होती है तब मन आपसे आप एक प्रकारके आनन्दमें रह कर धीरे धीरे एकाग्र होता जाता है। पर जब मन मायाके प्रदेशमें आगे बढ़ता है तब नया नया मोह, नयी नयी फिकर, नया नया भय, नयी नयी दौड़धूप, नयी नयी अड़चल और नयी नयी गड़बड़ बढ़ती जाती है और ज्यों ज्यों आगे बढ़िये त्यों त्यों झमेला और कठिनाइयां इतनी बढ़ती जाती हैं कि मनको वशमें रखनेके चाहे जितने उपाय कीजिये वह वशमें नहीं रहता। किन्तु जब ईश्वरी रास्तेमें आइये तो मन आपसे आप वशमें होता जाता है। ऐसा होनेसे कितने ही भक्त भूत भविष्यकी बातें जानलेते हैं, कितनेही भक्त

दूसरेके मनकी बात जानलेते हैं, बहुतेरे भक्त अपने विचार दूसरेके मनमें डालदेते हैं और कितने ही हरिजन अपना तथा दूसरोंका भाग्य सुधार देते हैं। किसी मायावादीसे इतना तो क्या इसका हजारवां भाग भी नहीं होसकता। इसका कारण यही है कि माया सरदी है, इससे उसमें पारा नीचे उतर जाता है और ईश्वरी ज्ञान गरमी है, इससे उसमें पारा ऊपर चढ़ता है। इसलिये अगर ऊपर चढ़ना हो तो ईश्वरी रास्तेमें आइये और नीचे उतरना हो तो मायाके रास्ते चलिये। इन दोके सिवा तीसरा रास्ता नहीं है। अगर सच्चा कल्याण करना हो और दूर रह कर दूसरोंके विचार जानना हो तथा दूसरोंके मनमें अपने विचार पहुंचाना हो तो ईश्वरी रास्तेमें आइये ईश्वरी रास्तेमें आइये।

भूत और भविष्यकी बातें जाननेकी युक्ति।

भाइयो! इस तरह जब दूसरोंके विचार जानना आवे और अपने विचार दूसरोंके मनमें डालना आवे तब उससे कितने ही चमत्कार किये जा सकते हैं। क्योंकि इन सबका आधार मनकी एकाग्रता और मनका बल है। जिन महात्माओंने अपनी शुभेच्छाओंको विकसित किया है और अपने मनका बल एकाग्रतासे बढ़ाया है वे महात्मा भूत भविष्यकी बातें जान सकते हैं। क्योंकि जो बातें बीत गयी हैं उनके गुप्त चित्र आकाशतत्त्वमें पड़े हुए हैं और उन्हीं बातोंसे भविष्य बनता है। इसलिये जो महात्मा अपने मनकी एकाग्रताके बलसे बीती हुई घटनाओंके प्रकृतिमें पड़े हुए चित्र देख सकते हैं, वे महात्मा अपनी खिली हुई ज्ञानदृष्टिसे इन चित्रोंसे भविष्यमें होनेवालेका परिणाम भी जान सकते हैं। जैसे वनस्पतिशास्त्र जाननेवाला

विद्वान आमकी गुठली देख कर उससे आमकी उत्पत्ति किस तरह होती है यह सिलसिलेवार अज्ञान विद्यार्थियोंको समझा सकता है वैसे ही वीती हुई घटनाओंके चित्ररूपी वीजसे उनसे होनेवाले परिणामोंके विषयमें महात्मा लोग पहलेसे वहुत बातें कह सकते हैं । क्योंकि भविष्यमें जो कुछ होनेवाला है वह कुछ एकवएक आपसे आप नहीं होजाता, बल्कि उसके लिये पहलेसे तय्यारी हुई रहती है। यह तय्यारी जब पूर्णताको पहुंचती है तभी समय आनेपर उसका परिणाम प्रगट होता है । परिणाम प्रगट होनेसे पहले उसका हाल कह देनेका नाम भविष्य है। परन्तु हमारा ज्ञान अधूरा है इससे छोटा बालक जैसे वटका वीज देख कर उसमें वट नहीं देख सकता और जब कोई कहता है कि इस वीजसे वटवृक्ष होगा तब आश्चर्य मानता है, वैसे ही भूतकालकी घटनाओंसे जो भविष्य होना है उसे हम नहीं देख सकते परन्तु महात्मा लोग देख सकते हैं। इसका कारण यही है कि उन्होंने अपनी मनशक्तिको विकसित किया है, अपनी बुद्धिको विशाल बनाया है, अपने अन्तःकरणको सूक्ष्म असर ग्रहण करने योग्य वनाया है और वे हमेशा शुभेच्छा रखते हैं, इससे वे भूत भविष्य जान सकते हैं । अगर हमें भी भूत भविष्य जानना हो और महात्मा वन कर परमार्थ करनेकी तथा अपनी आत्माका कल्याण करनेकी इच्छा हो तो अपने मनको वशमें रखना सीखना चाहिये । मन ही वन्धनका कारण है और मन ही मोक्ष दिलानेवाला है । इसलिये लाख वातकी एक वात यह है कि पहले मनको रोकना सीखना चाहिये और मनको रोकनेके लिये पहले शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये ।

दूसरोंके विचार जाननेसे तथा दूसरोंके मनमें अपने विचार पहुंचानेसे लाभ।

शुभेच्छासे, मनको वशमें रखनेसे, दूसरोंके विचार जान लेनेसे और दूसरोंके मनमें अपने विचार पहुंचानेसे ऊपर जितना बता आये हैं उतना ही लाभ नहीं है, बल्कि और भी कितने ही बड़े बड़े फायदे हैं। मेसमेरिज़म करनेवाला आदमी जिस तरह अपनी इच्छाशक्तिके बलसे अपने सामनेके आदमीकी सब शक्तियोंको दबा कर उसके ऊपर अपना अधिकार चला सकता है उसी तरह इच्छाशक्तिके बलवाले महात्मा स्वभावतः अपनेसे काम पड़नेवाले आदमियोंकी मलिन वृत्तियोंको दबा कर उनकी उत्तम भावनाओंको विकसित कर सकते हैं, ऐसा करनेमें उनको कुछ मिहनत नहीं पड़ती और न सामनेके आदमियोंको किसी तरहकी तकलीफ होती, बल्कि उन्हें और फायदा होता है। और यह सब ऐसी आसानीसे तथा स्वाभाविक तौरपर हुआ करता है कि ऐसा नहीं जान पड़ता कि इसमें कुछ खास बात करना पड़ी। क्योंकि शुभेच्छा और मनके बलसे महात्माओंमें इतनी बड़ी पवित्रता आ जाती है कि स्वाभाविक रीतिसे उससे आपसे आप बहुत कुछ कल्याण हुआ करता है। इसलिये इस किसमकी शक्तियोंको शिक्षित और विकसित करना चाहिये। दूसरे यह भी ख्याल करने लायक है कि मेसमेरिज़म या हिपनोटिज़म करनेवाला आदमी तो किसी एक या दो चार आदमियोंपर ही अपना असर डाल सकता है और असर डालते समय उसे अपना प्राण-तत्त्व खर्चना पड़ता है तथा जिसके ऊपर वह प्रयोग करता है उस आदमीकी शक्ति तथा वृत्तियोंको भी कुछ धक्का लगता है और कभी कभी हानि भी होती है। परन्तु महात्माओंके सत्संगमें

आनेवाले मनुष्यों पर माहात्माओंका जो कुदरती असर पहुंचता है उसमें महात्माओंको कुछ मिहनत नहीं पड़ती और न सत्संगमें आनेवालोंको कुछ नुकसान पहुंचता है। इसके सिवा मेसमेरिजम या हिपनोटिजम करनेवाला सिर्फ दस पांच आदमियों पर असर कर सकता है परन्तु ऐसे आगे बढ़े हुए एकाग्रतावाले और शुभेच्छावाले महात्मा हजारों और लाखों आदमियोंपर तुरत ही चमत्कारिक असर डाल सकते हैं। याद रखना कि दूसरोंके विचार जाननेसे, ब्रह्माण्डमेंसे दूसरोंके विचार लेनेसे तथा अपने विचार दूसरोंके मनमें पहुंचानेकी शक्तिसे ही ये सब महान काम हो सकते हैं। अतएव आगे बढ़नेके लिये तथा जिन्दगीकी सार्थकता करनेके लिये अपने मनको एकाग्र करना सीखना चाहिये और शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये। क्योंकि शुभेच्छा और एकाग्रता ही मानसिक बलकी नीव है। ऐसा कीजिये कि यह नीव मजबूत हो। नीव मजबूत हो।

जड़ वस्तुओंके बीज अलग अलग संयोगोंसे दूर देशमें पहुंच जाते हैं; तब विचारके बीज बाहर जानेसे क्यों रुकेंगे?

अच्छे विचारोंसे और इच्छाशक्तिके बलसे अनजानमें भी कितने बड़े बड़े काम होजाते हैं यह अगर हम जानें तो हमें आश्चर्य हुए बिना न रहे। क्योंकि विचार बीज हैं और वे अपने स्वभावसे ही सारे ब्रह्माण्डमें फैलते हैं और जहां अनुकूलता मिलती है उस अन्तःकरणमें जम जाते हैं और उग सकते हैं और अगर उनको पूरी खुराक मिले तो उनसे बड़ा फल निकल सकता है। इससे इतना ही न समझना कि

हमारे विचार हमारे ही ऊपर असर करते हैं, बल्कि हमारे विचार बहुत दूर जा कर अनजान देशमें और अनजान लोगोंपर भी असर कर सकते हैं। यह असर इतना बड़ा होता है कि अगर हम उसकी गम्भीरता समझें तो अपनी जिम्मेवारीके लिये हमें बड़ी फिकर हुए विना न रहे। क्योंकि इस जगतकी स्थूल वस्तुओंके बीज और जड़ वस्तुओंके बीज भी जुदे जुदे संयोगोंके कारण जुदे जुदे देशोंमें जा कर अपने स्वभावके अनुसार फल उत्पन्न करते हैं। जैसे—बहुतेरे बीज हिमालयपर पैदा होते हैं। वहांसे बरसातमें बहते बहते गंगा यमुना आदि नदियोंमें जा गिरते हैं, उनसे समुद्रमें जाते हैं और समुद्रकी लहरोंमें धक्के खाते खाते कभी वे बीज आस्ट्रेलियाके किनारे, कभी चीनके किनारे, कभी अमेरिकाके किनारे और कभी अफरीकाके किनारे पहुंच जाते हैं। उनमेंसे कितने ही बीज सड़ जाते हैं, कितने ही बीजोंको जानवर खाजाते हैं, कितने ही बीजोंकी फिरनेसे उगनेकी शक्ति जाती रहती है और कितने ही बीज अनुकूलता न मिलनेसे उगते ही सूख जाते हैं तौभी कोई कोई बीज उगजाते हैं और हिमालयमें पैदा हुए बीजोंका फल अफरीका या अमेरिकामें होता है। इसी तरह धूलमें मिले हुए कितनी तरहकी घास तथा साग भाजी और फूलोंके बहुत ही छोटे और हलके बीज आंधी तूफानमें उड़ कर दूर देशमें पहुंच जाते हैं और जहां अनुकूलता मिलजाती है वहां अपना फल उपजाते हैं। इसके सिवा कितने ही जानवर तथा पक्षी साबित बीज निगल जाते हैं और वे बीज उनकी अंतड़ीमें बहुत दिनोंतक साबित और उगने योग्य बने रहते हैं। इसके बाद जब वे जानवर या पक्षी दूसरे देशमें जाते हैं तब उनकी लीद, गोबर बीट आदिके जरिये कितने ही बीज दूसरे देशोंमें पहुंचते हैं और वहां मौका पाने पर

वे उगजाते हैं। इस प्रकार कितनेही तरहके संयोगोंसे जड़ बीज भी दूर दूरके भिन्न भिन्न देशोंमें पहुंच जाते हैं और वहां उग जाते हैं। तब हमें विचारना चाहिये कि जो विचार कुदरती तौर पर सारे ब्रह्माण्डमें फिर सकते हैं और जिन विचारोंको स्वाभाविक तौर पर ही योग्य अन्तःकरण ग्रहण कर सकते हैं वे विचाररूपी बीज व्यर्थ कैसे जायंगे? और वे दूसरी जगह जानेसे कैसे रुक सकेंगे? नहीं रुक सकते और रोकनेकी जरूरत भी नहीं है। क्योंकि इस प्रकार भी शुभ विचारोंसे जगतका बहुत कुछ कल्याण हो सकता है। इसीसे परम कृपालु परमात्माने विचारोंमें महान बल दिया है। अब यह जानना चाहिये कि हमारे विचाररूपी बीज बाहर जा कर चुपके चुपके क्या असर पैदा करते हैं। इससे हम समझ सकते हैं कि अच्छे विचार करनेकी कितनी बड़ी ज़रूरत है और खराब विचार करनेसे हम अपनीही नहीं दूसरोंकी भी कितनी बड़ी खराबी करते हैं। इसके लिये विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए विद्वान तथा दैवी चक्षुवाले महात्मा कहते हैं।

एक छोटेसे विचारका असर दूर देशमें पहुंच कर क्या परिणाम दिखाता है?

किसी आदमीने यह विचार किया कि किसी गरीब लड़केको पढ़नेकी पुस्तकें दीजायं तो अच्छा, यह विचार उसने बड़ी मज-बूतीसे किया पर उस समय उसकी हालत अच्छी नहीं थी, इससे वह स्वयं इस विषयमें जल्द कुछ नहीं कर सका। पर एकाग्रतासे बार बार किया हुआ उसका यह विचार बहुत मजबूत हो गया और वह वायुमण्डलके साथ आकाशतत्त्वमें स्वाभाविक गतिसे फिरने लगा। घूमते फिरते थोड़े दिनमें यह विचार किसी दूसरे शहरमें

पहुंचा। वहां कुछ नवयुवक पुस्तकालय खोलनेके लाभ पर व्याख्यान देते थे; उस विचारके साथ यह विचार मिलगया, इससे यह विचार बहुत पुष्ट हुआ। इसके बाद यह विचार आगे बढ़ते बढ़ते बङ्गालमें पहुंचा। वहां एक भलामानस इसी किस्मका विचार करता था, इससे उसके हृदयमें यह विचार घुस गया जिससे उस गृहस्थके मनमें पुस्तकालय खोलनेके लिये प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई। इतनेमें उसका एक मालदार मित्र मरने पर हुआ। उसने अपने इस मित्रको बुलाया और पूछा कि मैं अपने धनको किस काममें लगाऊं जिससे अधिक पुण्य हो। उस गृहस्थने कहा कि हमारे देशमें लोगोंको पढ़नेके लिये वेदाम अच्छी अच्छी पुस्तकें देनेकी बड़ी जरूरत है, इसलिये अगर तुम लाइब्रेरी खोलो, तो तुम्हें बड़ा पुण्य होगा उस मालदारको यह बात जंचगयी और उसने बड़ी रकम खर्च कर एक बहुत अच्छी लाइब्रेरी खोली। देखिये कि पहला विचार करनेवाला आदमी एक गरीब लड़केको बहुत थोड़े दामकी पुस्तकें भी नहीं देसका था पर उसका विचार मजबूत होते होते एक लाइब्रेरी खुलवानेमें समर्थ हुआ। उस असमर्थ मनुष्यको पहले अच्छा विचार करनेके कारण इस लाइब्रेरीके पुण्यमें हिस्सा मिला। इसी तरह हर एक किस्मके विचार जब मौका पाते हैं तब बहुत दूर जाकर भी कुछ न कुछ फल उपजाते हैं; परन्तु अपनी अज्ञानताके कारण, यह सब हाल ठीक ठीक हम नहीं जानते, इससे हम अच्छे विचार नहीं करते और इसीसे आगे नहीं बढ़ सकते। अगर ऐसा समझें कि मजबूतीसे किया हुआ कोई विचार व्यर्थ नहीं जाता और वह अभी नहीं तो पीछेसे, इस देशमें नहीं तो परदेशमें और इस जिन्दगीमें नहीं तो अगली जिन्दगीमें अपना फल दिये बिना नहीं रहता ऐसा हमें विश्वास हो जाय और उसके साथ यह भी समझमें

आजाय कि अपना किया हुआ विचार कुछ अपने ही पास नहीं रुका रहता और उसके असरका परिणाम कुछ अपने ही ऊपर तक नहीं रह जाता, वल्कि बहुत दूर तक पहुंच सकता है और बहुत समय तक रह सकता है और सैकड़ों तथा हजारों आदमियों पर हो सकता है—तो अपनी जिन्दगीकी महत्ता हमारी समझमें आये विना न रहे। और अपनी जिन्दगीकी कीमत समझ जायं तो फिर हम निकम्मे विचारोंमें और लल्लोपत्तोमें अपनी जिन्दगी न गंवावें। इसलिये अभी इस विषयको और अच्छी तरह समझना चाहिये। इसके लिये उदाहरणके तौर पर कितने ही दृष्टान्त दिये जा सकते हैं। यथा—

एक गरीब विद्वानके बहुत मजबूतीसे किये हुए राजनीतिक विचारोंका परिणाम।

किसी गरीब विद्वान मनुष्यने बड़ी मजबूती और एकाग्रतासे वारंवार यह विचार किया कि हमारे देशके लोगोंको राजनीतिक स्वाधीनता मिलना ही चाहिये और प्रजाको अधिक तथा अच्छा अधिकार मिलना ही चाहिये। इस विषय पर कई वर्ष तक खूब डूब कर उसने मजबूतीसे विचार किया, परन्तु उस समय देशमें राजनीतिक विचार जैसा चाहिये वैसा चमका नहीं था, इससे उस समय उसके विचारोंका कुछ बहुत बड़ा असर नहीं दीख पड़ा। परन्तु कुछ ही वर्ष बाद दूसरा एक समर्थ विद्वान हुआ। उसके मनमें उस अच्छी रुचिवाले आदमीके विचार बड़ी मजबूतीसे बैठ गये। क्योंकि इस विद्वानका अन्तःकरण बहुत साफ था और नये विचार ग्रहण करनेको तत्पर था। उधर पहले भलेमानसके विचार आकाशतत्वमें फिरते और अपने रहने लायक कोई योग्य स्थान ढूंढ़ते

थे । उन विचारोंको जब इस विद्वानका अन्तःकरण मिल-गया तब वे उसमें जम गये। इससे उस विद्वानकी वाणीमें नया जोश और लेखनीमें नयी फुर्ती आगयी । इसके बाद उस विद्वानने राजनीतिक विषयपर स्वतंत्र विचार प्रगट करने-वाली एक बड़ी ही रोचक पुस्तक लिखी जिससे हजारों आद-मियों पर उत्तम प्रभाव पड़ा। वे सब लोग दृढ़तासे यह अभि-लाषा प्रगट करने लगे कि हमें अधिक राजनीतिक हक मिलना ही चाहिये। हजारों आदमियोंके इस विचारका जबरदस्त धक्का राजा और राजकर्मचारियोंको लगा। उन्होंने अपनी प्रजाको जमानेके अनुकूल राजनीतिक हक दिया । इस प्रकार एक आदमीके भले विचारसे समय आनेपर इतना बड़ा फेर बदल हो सकता है और ऐसा गहरा परिणाम हो सकता है। इस-लिये अगर हमें आगे बढ़ना है और अपने भाई बन्दोंकी मदद करना है तो हमेशा शुभेच्छा रखना चाहिये और एकाग्रतासे ऊंचे दरजेके विचार करना चाहिये । ऐसा करना ही सब प्रकारकी उन्नतिका पाया है।

विचारशक्तिका मूल्य—मनुष्यमें जो मनुष्यत्व है और सच्चिदानन्दमें जो सच्चिदानन्दपन है वह विचारशक्ति ही है।

भाइयो ! याद रखना कि मजबूतीसे किया हुआ कोई भी विचार व्यर्थ नहीं जाता, इतना ही नहीं, बल्कि वह सूद सहित आगे बढ़ता जाता है। इससे कर्जकी मूल रकमसे थोड़े दिनमें जैसे ब्याज बढ़ जाता है वैसे ही असल विचार अगर छोटा हो तौभी वह इर्द गिर्दके अच्छे संयोग मिलनेसे तथा उसी

किस्मके दूसरे विचारोंकी पुष्टि मिलनेसे थोड़े समयमें बहुत पुष्ट हो जाता है और आगे जाकर उससे कितने ही बड़े बड़े काम हो सकते हैं। इसलिये अच्छे मनसे किये हुए किसी भी विचारको तुच्छ या निकम्मा न समझना, वलिक ऐसा करना चाहिये कि जिससे इस किस्मके विचार अधिक दृढ़ता और अधिक एकाग्रतासे तथा अधिक अधिक डूब कर होसकें। क्योंकि विचारशक्ति बहुत बड़ा बल है। यह बल इतना बड़ा है कि हम आजकल उसकी कल्पना करनेके योग्य भी नहीं हैं। क्योंकि विचारशास्त्रकी फिलासफी जाननेके लिये जो सामग्री चाहिये वह हमारे पास नहीं है, उसका मंथन करनेके लिये जैसा स्वच्छ अन्तःकरण चाहिये वैसा अन्तःकरण हमारे पास नहीं है और उसे समझनेके लिये जैसी निवृत्ति चाहिये वैसी निवृत्ति हमारे हालके जीवनमें नहीं है। इससे हम विचारोंका महान बल नहीं समझ सकते। हर एक नया विचार एक नयी सृष्टि है और जो विचार कर सकता है वही मनुष्य है। इसके विना मनुष्य मनुष्य गिना ही नहीं जाता, यह बात आजकल हम नहीं समझ सकते। इससे हम अपने विचारोंका मूल्य नहीं समझते। और चाहे जैसे अट्टसट्ट, तथा निकम्मे विचार किया करते हैं। परन्तु हमारे बापदादा-प्राचीन ऋषि मुनि यह समझते थे कि जगतके हर एक स्थूल बलसे विचारशक्तिका सूक्ष्म बल बहुत ही बड़ा है। इससे वे और सब बल छोड़ कर पहाड़ोंकी गुफाओंमें, एकान्तमें, निवृत्तिमें रह कर अपनी विचारशक्तिके बलको बढ़ाते थे और इसके लिये वे हमेशा परम कृपालु पिता परमात्मासे यही प्रार्थना करते थे कि हे प्रभु! हमें सद्बुद्धि दे, क्योंकि सद्बुद्धिसे ही अच्छे विचार किये जा सकते हैं। इसलिये पवित्र गायत्री मंत्रके द्वारा ईश्वरसे

सद्बुद्धि मांगना उनका पहला सिद्धान्त था और यही उनकी जिन्दगीका मुख्य कर्तव्य था। इसके बाद उनका दूसरा सिद्धान्त यह था—

सर्वत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥

सब जीव सुखी हों, कहीं पर जरा भी दुःख न रहे, सबका कल्याण हो और किसी जीवको कुछ भी दुःख न हो, सारांश यह कि "सबका कल्याण हो" इसी भावनाको वे मजबूत करते थे; इससे वे सुखी रह सकते थे और दूसरोंको सुखी कर सकते थे। इस प्रकार सद्बुद्धि पानेकी और सबका कल्याण करनेकी इच्छा रखते थे इसीसे उनकी प्रार्थनाएं बहुत शीघ्र और सहजमें मंजूर होती थीं। सर्वशक्तिमान महान ईश्वरके दरबारमें जिनकी भावनाएं पहुंचें और जिनकी प्रार्थनाएं मंजूर हों उनकी इच्छाशक्ति तथा उनके गहरे विचार जगतकी कितनी बड़ी भलाई कर सकते हैं यह समझना कुछ मुश्किल नहीं है। इस तरह विना और किसी सामग्रीके, सिर्फ अपने विचारोंके बलसे वे जगतका भला कर सकते थे तथा अपनी आत्माका कल्याण कर सकते थे। इससे वे विचार बलको श्रेष्ठ समझते थे और उसीकी सेवा करते थे। और सब तरहके यज्ञोंमें बाहरी सामग्रीकी मदद लेनी पड़ती है परन्तु इस विचार बलके ज्ञानयज्ञमें बाहरकी किसी सामग्रीकी मदद नहीं लेनी पड़ती। इससे श्रीमद् भगवद्गीतामें श्रीकृष्ण भगवानने भी कहा है कि सब यज्ञोंसे ज्ञानयज्ञ उत्तम है। यह ज्ञानयज्ञ विचारोंके बलसे ही किया जा सकता है। इसलिये विचारशास्त्र जाननेवाले कहते हैं कि मनुष्यमें जो मनुष्यत्व है और सच्चिदानन्दमें जो सच्चिदानन्दपन है वह विचारशक्ति ही है। अगर आगे बढ़ना हो; सब प्रकारके सम्पूर्ण सुख

प्राप्त करना हो और मोक्ष पाना हो तो हमें अपनी विचारशक्तिको विकसित करना चाहिये और विचारशक्तिको विकसित करनेके लिये पहले शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये। क्योंकि शुभेच्छा धर्मका पाया है, शुभेच्छा उन्नतिकी जड़ है और शुभेच्छा सच्चिदानन्दका स्वरूप है। ईश्वर आप सदा शुभेच्छावाला ही है; इसलिये जो शुभेच्छा है वही ईश्वरकी इच्छा है। इसलिये हमें हमेशा शुभेच्छा रखना चाहिये, हमेशा शुभेच्छा रखना चाहिये।

खराब विचार करनेसे सिर्फ अपनीही खराबी नहीं होती, बल्कि दूसरोंकी भी बड़ी खराबी होती है। इसके उदाहरण

इस प्रकार शुभ विचार करनेसे अन्दाजसे अधिक अपना तथा दूसरोंका भला हो सकता है और बहुत दूरतक उसका असर पहुंच सकता है। वैसे ही खराब विचार करनेसे अपनी ही खराबी नहीं होती बल्कि दूसरोंकी भी बड़ी खराबी होती है और उसका असर भी बहुत दूरतक पहुंचता है। जैसे एक आदमीने किसी मामूली दोषके कारण अपने लड़केपर क्रोध किया। उसके क्रोधका विचार वहांसे निकल कर आगे बढ़ा। रास्तेमें उसे दूसरे आदमियोंके किये हुए क्रोधके विचार मिल गये, इससे उस गुस्सेका विचार अधिक मजबूत हुआ। पीछे यह विचार फिरते फिरते किसी दूर देशमें एक ऐसे आदमीके मगजमें जाघुसा जो अपनी स्त्रीसे लड़ रहा था। उस आदमीका मगज और भिन्ना उठा और उसने उस क्रोधकी सनकमें अपनी स्त्रीको बड़ी मार मारी। इसके बाद जब उसका क्रोध ठंढा हुआ तब स्वयं उसीको आश्चर्य हुआ कि ऐसी मामूली बातके

लिये इतनी बड़ी लड़ाई मैंने क्यों की। स्त्रीसे जरा कढ़ी बिगड़ गयी या खास कारणसे वह जरा देर करके बाहरसे आयी तो उसके लिये मैंने उसे इतनी मार क्यों मारी ? इस प्रकार उसे पछतावा हुआ। क्योंकि जब उसके मनमें पहले पहल क्रोधका विचार आया तब उसकी इच्छा यही थी कि स्त्रीको जरा डांट देना चाहिये कि वह फिर ऐसी भूल न करे, न कि इतना पीटनेकी उसकी इच्छा थी। पर डांटनेके बदले इतनी मार मारी जिससे उसको भी आश्चर्य हुआ था और वह भी इसका कारण नहीं समझ सकता था कि क्यों ऐसा हुआ। परन्तु इसका कारण यही है कि दूसरे आदमियोंके किये हुए गुस्सेके विचार उसके गुस्सेके विचारसे मिल गये थे जिससे उसके गुस्सेका जोर बढ़ गया और उसका मन वशमें नहीं रहसका, इससे उसने मामूली दोषके लिये डांटनेके बदले बड़ी भारी सजा कर दी। ऐसा होनेका कारण यह है कि हर एक विचार अपने ढङ्गके विचारोंको अपनी तरफ खींचता है। इससे जहां क्रोधके विचार होते हों वहां दूसरोंके किये हुए क्रोधके विचार आ मिलते हैं; जहां लोभके विचार होते हों वहां दूसरोंके किये हुए लोभके विचार आ मिलते हैं; जहां विषय वासनाके विचार होते हों वहां दूसरोंके किये हुए इस किस्मके विचार आ मिलते हैं और जहां पापके विचार होते हों वहां ऐसेही दूसरे पापके विचार आ मिलते हैं। इसी प्रकार जहां परमार्थके, दयाके, सत्यके, अहिंसाके, प्रेमके, ज्ञानके और ईश्वरके विचार होते हों वहां उस किस्मके अच्छे विचार आ मिलते हैं। इससे पहलेके छोटे विचारोंको पुष्टि मिलजाती है और वे बड़े हो जाते हैं। क्योंकि हरएक विचार अपनी जातिके दूसरे विचारोंको कुदरती तौरसे अपनी ओर खींचता है इससे—

छोटासा खराब विचार किया हो तो उससे भी परिणाममें बहुत बड़ी खराबी हो जाती है ।

जैसे लड़केको स्कूल जानेमें देर हुई इससे एक आदमीने उसपर क्रोध किया । यह उसके लिये बहुत मामूली और छोटी बात थी पर क्रोधके विचारने आगे बढ़ कर एक स्त्रीको बिना कारण बड़ी मार खिलायी यह कोई छोटी बात नहीं थी । इसके बाद वह विचार बहुत मजबूत होकर आगे बढ़ा और एक जगह दो मित्र लड़ते थे उनके मगजमें घुस गया, इससे वे दोनों एक दूसरेके जानी दुश्मन बन गये और क्रोध बढ़ते बढ़ते अन्तको उनमें पिस्तौलबाजी हो गयी । उससे एक आदमी बहुत घायल हुआ और दूसरा मर गया । यद्यपि यह घटना दूसरे देशमें हुई और मुद्दतबाद हुई; इसके सिवा जिस आदमीने पहले क्रोधका विचार किया उसे खबर भी न थी कि मेरे जरासे गुस्सेका इतना गहरा नतीजा होगा ; तौभी ऐसा हुआ और इस पापका प्रथम विचार करनेवालेको भी कुछ भागी होना पड़ा । क्योंकि वह भी घुमा फिरा कर इन अपराधोंमें सहायक हुआ था । यद्यपि हमारे बाहरी कानूनोंसे वह आदमी अपराधी नहीं ठहरता और हमारी अपूर्ण नीति भी उसको दोषी नहीं मानती परन्तु प्रकृतिके नियमानुसार, कर्मके कानूनसे और ईश्वरके न्यायके अनुसार तथा मनुष्यको मिली हुई स्वतंत्रता और आत्माके बलके ख़यालसे विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए महात्मा ऐसे आदमीको ऊपरके अपराधोंमें हिस्सेदार मानते हैं । इसी तरह अच्छा विचार करनेवाला अच्छे कामोंमें हिस्सेदार होता है । इन सबसे यही समझाना है कि हमें किसी तरहका बुरा विचार करनेसे बहुत सम्हलना चाहिये और इस बातका खयाल करना सीखना चाहिये

कि हम जो कुछ विचार करते हैं उसमें हमारे ऊपर कितनी बड़ी जवाबदेही है। हमसे अनजानमें ऐसे महापाप हो जाते हैं और अपनी तथा दूसरोंकी बुराई हो जाती है। ऐसा न होने देनेके लिये हमें शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये। क्योंकि "शुभेच्छा" ही भाग्य फेरनेकी कुञ्जी है।

एक स्वार्थी कर्मचारीके लोभके कारण राज्यकी बर्बादी।

बुरे विचारसे अन्तमें कितनी बड़ी खराबी होती है इसे ठीक ठीक समझनेके लिये और भी कुछ दृष्टान्त जानना चाहिये। इसके लिये विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए अनुभवी विद्वान तथा ज्ञान-रूपी दिव्य चक्षुवाले महात्मालोग कहते हैं कि एक आदमी राजाका नौकर था। वह बड़ा लोभी और स्वार्थी था, इससे दूसरोंके नुकसानका कुछ खयाल नहीं करता था, सिर्फ इसी बातका खयाल रखता कि मेरी तनखाह कैसे बढ़े। उस आदमीके ऊपर जो अफसर था वह भी बड़ा लोभी था, इससे उसने सोचा कि मैं किसी तरह आमदनी बढ़ाऊं तो मेरी तनखाह बढ़े। यह विचार कर उसने अज्ञान गरीब किसानों पर नये नये कर लगाये जिससे उस प्रान्तकी आमदनी बढ़ी और उसकी तलब भी बढ़ी। इस प्रकार अपनी थोड़ीसी तलब बढ़ानेके लिये उसने रात दिन कर बढ़ानेका विचार किया। इसके बाद कर बढ़ानेका विचार जगतमें फिरने लगा। ज्यों ज्यों ऐसे विचारके हाकिम मिलते गये त्यों त्यों यह विचार मजबूत होता गया, होते होते यह विचार एक लोभी राजाके मनमें पहुंचा, वह राजा प्रजापर कर बढ़ाने लगा; परन्तु उस समय प्रजा सुधरी और जगी हुई थी, इससे लोगोंने बहुत अधिक अनुचित कर देनेसे

साफ इनकार किया। राजाको बहुत क्रोध हुआ। वह कर देनेसे इनकार करनेवालों पर बहुत सख्ती करने लगा। ऐसा करते करते राजा प्रजामें भयंकर लड़ाई हुई और बहुत खूनखराबी हुई। अन्तमें राजा मारा गया और उसका राज्य नष्ट हो गया। इतना बड़ा परिणाम पहले कर्मचारीके किये हुए कर बढ़ानेके विचारसे हुआ था। परन्तु यह बात ऐसी नहीं है कि सीधे तौर पर सब आदमियोंके ध्यानमें आसके। इससे जो आदमी विचारकी शक्ति, विचारकी खूबी, विचारका असर, विचारका रहस्य, विचारका स्वभाव और विचारशक्तिकी महिमा नहीं जानते उनकी समझमें यह सच्ची बात नहीं आसकेगी, यह मैं जानता हूं। पर मुझे जो सत्य मालूम पड़ता है उसे बताना मेरा कर्तव्य है, इससे मैं ये बातें बताता हूं; सिर्फ उसी उद्देश्यसे कि जो आदमी बिलकुल जड़तामें रहते हैं, केवल ऊपरी बातोंमें रहते हैं, खाली प्रत्यक्ष प्रमाणोंमें रहते हैं और इर्द गिर्दका सम्बन्ध नहीं देखते या देखनेका कष्ट नहीं उठाते वे जरा अधिक विशाल दृष्टि करसकें और विचारोंका बल समझ कर अपनी जिन्दगी सुधार सकें। इसी उद्देश्यसे मैं महात्माओंके ये उपदेश बहुत सहज रूपमें समझानेकी चेष्टा करता हूं।

छूआछूतके विचारोंसे खराबी।

खराब विचार बाहर जा कर बड़ी खराबी करते हैं तथा अच्छे विचार बाहर जा कर बहुत लाभ पहुंचाते हैं, यह बात जिस खूबीसे जानना चाहिये उस खूबीसे अभी तक हमारे भाई बहनें नहीं जानतीं, इससे इसको और खुलासा करनेके लिये कुछ और दृष्टान्त देना चाहिये। जैसे —

एक ब्राह्मण था वह बड़े ही संकीर्ण विचारका आदमी था

और छूआछूतके नियम पालने तथा सबसे हट कर रहने और छू न जानेके ख्यालमें ही सारा धर्म घुसा हुआ समझता था। इससे वह अपने महल्लेके दूसरी जातिके ब्राह्मणोंसे बहुत घृणा किया करता और इसी विचारमें अपनी जिन्दगी बिताता था कि दुनियामें मैं ही सबसे ऊंचा हूं और सब नीच हैं। इससे मैं किसीका छूआ नहीं खा पी सकता पर मेरा छूआ सब खा पी सकते हैं। इस ख्यालसे जब वह कूए पर पानी भरने जाता तो वहां भी छींटा पड़ जानेकी शंकासे सबसे कजिया करता। बिरादरीमें जीमने जाता तो वहां भी, यह आदमी नहाया नहीं, यह खड़ाऊं पहन कर नहीं आया, यह दूसरी जातिवालोंसे छू गया, यहां स्त्रियोंको नहीं आना चाहिये, यहां शूद्रकी परछाहीं पड़ती है—इत्यादि टिचु आन लगा कर जिसके तिसके साथ लड़ा करता और मैं ऊंच हूं और सब नीच हैं इस विचारमें चूर रहता था। कई वर्ष ऐसे ही विचारोंमें रहनेसे उसकी यह भावना बहुत मजबूत हो गयी और उसका इस किस्मका विचार बहुत दृढ़ हुआ। इसके बाद वह विचार जगतमें फिरने लगे। और हमारे देशके वैष्णव-धर्मके लोगोंकी तरफसे उस विचारकी बड़ी पुष्टि हुई। क्योंकि हमारे देशमें छूआछूत पर बहुत जोर देनेवाले और इस किस्मके विचार करनेवाले लाखों आदमी हैं। उन सबके विचार एक किस्मके होनेसे उस ब्राह्मणके विचारको बहुत कुछ खुराक मिल गयी। इसके बाद वह पुष्ट विचार बङ्गालके एक कुलीन जमींदारके मनमें जा घुसा। वह कुलीन गृहस्थ अपने कुलका बड़ा अभिमान रखता था और दूसरे लोगोंको नीच समझता था, इससे उसके अन्तःकरणमें ऊपर लिखा विचार मजबूतीसे जम गया। वह गृहस्थ अपनी जातिमें अकुलीन गिने जाने वाले आदमियोंको नीचा दिखाने लगा। उन लोगोंके साथ बेटी

व्याहनेकी जो चाल थी उसे बन्द किया इससे जातिमें दो तड़ हो गये। एक ओर कुलीन कहलाने वाले होगये और दूसरी ओर अकुलीन माने जाने वाले। इन दोनोंमें बड़ी भारी तकरार हुई। वह जाति बहुत बड़ी थी इससे सैकड़ों गांवोंमें हजारों आदमियों पर उसका बुरा असर पड़ा। क्योंकि दो तड़ हो जानेसे कितनी ही जगह बाप बेटे अलग अलग हो गये, ससुर दामाद अलग अलग हो गये, कितने ही भाई भाईसे अलग हो गये, मित्र मित्रसे लड़पड़े; इस विषयका मामला अदालतमें चला। उसमें लाखों रुपयेकी खराबी हुई और कितने ही आदमियोंको जेल जाना पड़ा तथा कितनेही आदमियोंमें भीतर मार पीट हुई और वंशपरम्पराकी शत्रुता हो गयी।

हिन्दुओंके छूआछूतके पुराने विचारका सभ्य देशोंमें नया रूप और उससे होनेवाली दुनियाकी खराबी।

इसके बाद यह विचार बढ़ते बढ़ते विलायतमें गया और वहांके धनवान तथा अमीर आदमियोंके मनमें ठंस गया। क्योंकि वे लोग अपने मनमें सोचते थे कि हम बड़े इज्जतदार, बड़े आदमी, खान्दानी, बड़ी पदवी वाले और भारी जेण्टलमेन हैं, इसलिये छोटे गरीब आदमियोंसे क्यों सम्बन्ध रखें। उनके साथ सम्बन्ध रखनेसे हमारी हैसियत बिगड़ जाती है; इससे कोचवान, नौकर, मास्टर या ऐसे ही दूसरे छोटे छोटे रोजगारियोंके साथ बैठ कर हम एक टेबुल पर नहीं खा सकेत। ऐसे विचारोंको हिन्दुस्थानसे गये हुए विचारसे मजबूत सहारा मिल गया जिससे युरोपके अमीर दरजेके लोग गरीब दरजेके

लोगोंसे नफरतका बर्ताव करने लगे। इससे धीरे धीरे गरीबोंकी अमीरोंपर नाराजी बढ़ती गयी और उनमेंसे अमीरोंको हैरान करनेके लिये अनारकिस्टदल खड़ा हुआ। उससे कितने ही निर्दोष लोगोंको बहुत बहुत कष्ट भोगना पड़ता है। इसके बाद यह विचार बहुत मजबूत होकर अमेरिकामें गया। क्योंकि अमेरिकाके गोर लोग वहांके असली वाशिन्दे इण्डियनों तथा सीदी लोगोंसे बड़ी घृणा करते थे और उनको बेअकल, गुलामीके लिये पैदा हुए तथा काले चमड़ेवाले समझ कर कोसते भकोसते थे। इस युरोपसे आये हुए विचारने उनको और भड़का कर आग बबूला कर दिया। सारे अमेरिकामें इसपर हवंडल मचा और धीरे धीरे इस विषय पर दो दल हो गये। एक दल कहता था कि सब आदमी बराबर हैं, गोरे काले चमड़ेका भेद नहीं रखना चाहिये और दूसरा दल कहता था कि ऐसा कभी हो ही नहीं सकता; हबशी हबशी ही हैं, उनके साथ बैठ कर हम कभी नहीं खायंगे और हम अपनी पंक्तिमें उनको कभी आने नहीं देंगे और न अपने बराबर उनको हक देंगे। इस तरह दो पक्ष हो गये और उनमें बड़ा विरोध चलने लगा जिससे बहुत लोगोंको बहुत नुकसान पहुंचा और भविष्यमें जो खराबी होगी वह अलग, इसके बाद वहांसे रमता घूमता वह विचार ट्रांसवालमें दाखिल हुआ। वहां हिन्दुस्थानी, चीनी और अफरीकन लोग रोजगार धंधे और नौकरी चाकरीमें बहुत फायदा उठाते थे; क्योंकि वे बड़ी सादगीसे जिन्दगी वितानेवाले हैं इससे थोड़े खर्चमें रह सकते हैं। और युरोपिन बड़े खर्चीले होते हैं तथा ठंढे देशके निवासी होनेसे अफरीकाकी गरमीमें बहुत कड़ी मिहनत नहीं कर सकते। इससे वे देशियोंके सामने व्यापार धंधे तथा नौकरी चाकरीकी चढ़ा

ऊपरीमें टिक नहीं सकते। इस कारण वे एशियाई लोगोंको उस देशसे निकाल बाहर करनेके लिये बात बातमें उनकी बेइज्जती करने लगे और अच्छे अच्छे आदमियोंको भी कुली समझने लगे तथा उनको अपने समान हक देनेसे इनकार करने लगे। अपने स्वार्थके लिये वे जो ऐसा बर्ताव करते थे उसको अमेरिकासे आये हुए ऊपरके विचारका मजबूत सहारा मिल गया। इससे वे लोग बेधड़क होकर देशियोंको नीचा दिखाने लगे और चीनियों तथा हिन्दुस्थानियोंको ट्रांसवालसे निकालदेनेके कानून बनाने लगे। इससे सारे देशमें तथा सारी दुनियामें हाहाकार मचगया और हजारों आदमियोंका बहुत कुछ नुकसान हुआ। इसके सिवा उस देशकी शिल्पकला खिलने, खेती वारीकी पैदावार बढ़ने तथा नयी खानोंका काम चमकनेमें बहुत समय लगेगा जिससे करोड़ों और अरबों रुपयेका नुकसान उसदेशके लोगोंको सहना पड़ेगा। और दूसरे देशोंके लोगोंसे पीढ़ीदर-पीढ़ीका जो वैर बंधेगा वह अलग। याद रखना कि यह सब उस मतलबी, संकीर्ण विचारके सबसे घृणा दिखानेवाले मूर्ख ब्राह्मणके विचारका फल है। परन्तु अफसोस है कि विचारोंका असर अभी तक हमारे देशके लोग नहीं समझते। इससे बहुत निकम्मे और बुरे विचारोंमें ही अपनी जिन्दगी बिताते हैं। इसके बाद वह विचार अधिक मजबूत होकर आस्ट्रेलियामें गया। वहांके गोरे गोरे चमड़ेवालोंके सिवा और किसी आदमीको अपने शामिल रहने देनेको राजी न थे। इससे उस विचारको वहां जगह मिल गयी। क्योंकि हर एक विचार अपनी जातिके विचारोंको ढूंढ़ा करता है और जहां उसकेसे विचार मिल जाते हैं उस अन्तःकरणमें जमजाता है। इस नियमसे ट्रांसवालसे आया हुआ विचार आस्ट्रेलियाके गोरोंके मनमें जम गया।

इससे वे एशिया तथा अफरीकाके सब लोगोंसे कुढ़ने तथा नफरतका बर्ताव करने लगे। यहां तक कि उन्होंने हिन्दुस्थान, जापान, चीन तथा अफरीकाके सीदियों और रूमके तुर्कोंका बायकाट किया । इससे ऐसा हो गया कि इन देशोंका कोई आदमी अब आस्ट्रेलियामें रोजगार धंधा या नौकरी चाकरी नहीं कर सकता, ऐसे जुलम, ऐसी मगरूरी, ऐसी जिद, ऐसी अकड़बाजी और ऐसे मतलबीपनका फल क्या होगा यह परमात्मा जाने ; पर एक छोटेसे विचारसे बढ़ते बढ़ते इतनी बड़ी खराबी होती है और सब लोग ऐसे अन्धे हो जाते हैं। यह सब निकम्मे विचारोंसे, बुरे विचारोंसे, खराब विचारोंसे, स्वार्थके विचारोंसे और ईश्वरको भूल कर बर्ताव करनेसे होता है । इसलिये ऐसी सम्हाल रखना कि आपसे ऐसी भयंकर खराबियोंका बीज न उगे। क्योंकि एक छोटासा विचार करना कोई बड़ी बात नहीं है पर उसका परिणाम बहुत बड़ा है। इसलिये वार वार कहता हूं कि कोई बुरा विचार करनेसे बहुत सम्हलना, बहुत सम्हलना ।

एक स्त्रीके द्वेषके विचारसे भयंकर खराबी।

बुरा विचार करनेसे कितनी बड़ी खराबी होती है इसको समझनेके लिये इस विषयके जितने ही असरदार दृष्टान्त दें थोड़े हैं । क्योंकि विचारोंका असर दूर जा कर भी बहुत बड़ा काम करता है यह बात हमारे देशके बहुत आदमी नहीं जानते, इससे यहां पर इस विषयको जरा ज्यादा बढ़ा कर कहना पड़ता है। इस विषयको जितनी ही खूबीसे जो लगा कर समझेंगे उतने ही लोग अपना कर्तव्य अच्छी तरह पालन करना सीखेंगे। इसलिये खराब विचारसे कितनी भयानक खराबी

होती है यह समझनेके लिये कुछ और दृष्टान्त जानना चाहिये। विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए पण्डित कहते हैं कि—

एक स्त्री थी। वह बड़े तंगदिलकी और स्वार्थी स्वभावकी थी। वह अच्छी हैसियतकी थी और उसकी ननद बालविधवा थी। उस बेचारीके गुजारेका ठिकाना नहीं था, इससे वह अपने भाईके घर रहती थी। परन्तु उसकी यह भाभी बहुत डाह रखती और बातचीतमें उसको बहुत हैरान किया करती तथा उसका जी दुखाया करती थी। अपने पतिसे भी वार वार कहा करती कि तुम्हारी बहन अच्छी नहीं है, इसको अपने घरमें रखनेसे हमारी इज्जतमें बट्टा लगता है। इस प्रकार वह द्वेष बुद्धिसे अपने पतिके कान भरा करती। यह बिना किसी कारणके सिर्फ डाहसे करती थी पर उसके पतिको अपनी बहन पर बड़ा स्नेह था और वह सोचता कि बहन बेचारी बहुत दुखिया है इससे उसे आश्रय देना मेरा कर्त्तव्य है। यह सोच कर वह अपनी पत्नीकी बात नहीं सुनाता था इससे वह और चिढ़ती जिससे घरमें बारंबार छोटे मोटे झगड़े हुआ करते। इस तरह उसने वर्षों तक अपनी भली ननदके लिये द्वेषका विचार किया। पीछे यह विचार फिरते फिरते उसी गांवके एक पण्डितके मनमें घुसगया। क्योंकि वह पण्डित अपने एक समौरिया (सम-उमिरिया) पण्डितसे बहुत द्वेष रखता था और चाहता था कि यह पण्डित इस गांवमें न रहे तो मैं ही सबसे बड़ा पण्डित कहलाऊं और सारी आमदनी अकेले मुझेही मिले, किन्तु यह दुष्ट बीचमें आपड़ा है इससे मेरे मान और आयमें वखरा लग जाता है। यह सोच कर वह उससे बहुत जलता था और बात बातमें दोनों लड़ पड़ते थे। एक लड़ाईका मौका आया था इतनेमें उस स्त्रीका विचार इस पण्डितके दिमागमें आ पैठा

जिससे उसका द्वेष बहुत बढ़ गया। इस द्वेषकी आगसे वह जलने लगा। उसे कुछ होश न रहा। शास्त्रार्थके बहाने दोनोंमें पहले वार्तिक विवाद हुआ "तू दुष्ट" "तू दुष्ट" से होते होते खड़ाऊं उठौअल हुई और फिर तो ऐसी सिर फुटौअल हुई कि अदालत तक मामला गया। द्वेष करने वालेको दण्ड हुआ। इसके बाद यह मजबूत बना हुआ द्वेषका विचार फिरते फिरते एक दूरके देशमें जा पहुंचा। वहां एक पुरुषके दो स्त्रियां थीं; वे दोनों सौतें एक दूसरेसे बहुत जलती थीं। उन दोनोंके मनमें यह विचार समा गया। क्योंकि विचारोंका स्वभाव ही ऐसा है कि जहां अपनेसे विचार होते हों वहां दौड़ जाते हैं। इससे उन दोनों सौतोंके मनमें द्वेषके विचारको रहनेकी जगह और खुराक मिल गयी जिससे उसका जोर बहुत बढ़ गया। इसके बाद दोनों सौतोंमें लड़ाई हुई और एक सौतने दूसरीको जहर देदिया जिससे वह मर गयी और इसकी खबर सबको लग गयी। जांच हुई और उस स्त्रीपर जहर देनेका कसूर साबित हुआ। इससे उसको जन्मभर कालापानीकी सजा हुई। इसके बाद वह विचार फिरते फिरते एक बड़े अफसरके मनमें घुसा। क्योंकि वह अफसर अपने ही समान ऊंचे दरजेके एक दूसरे अफसरसे बहुत द्वेष रखता था और सोचा करता था कि मौका मिले तो उसकी धूल उड़ाऊं और उसे बेइज्जत करूं। इससे उसके मनमें ऊपर लिखे विचारको बहुत पक्की जगह मिल गयी और उस आदमीका द्वेष बहुत बढ़ गया। उसका द्वेष बढ़नेसे उसके मुकाबलेवालेका भी द्वेष बढ़ा। अब दोनों खुल्लमखुल्ला एक दूसरेके विरुद्ध चलने लगे। एकने अपने ऊपरके अफसरको लिखा कि इस साल वर्षा कम है इससे मालगुजारी पूरी पूरी वसूल नहीं होगी; बहुत लोग लाचार हो रहे हैं इसलिये कुछ कृपा होनी चाहिये। दूसरे

अफसरने उसके विरुद्ध लिखा कि—यह सच है कि इस साल वर्षा कम है पर पैदावार कम नहीं है। क्योंकि वर्षा समयपर होती गयी है। इससे वर्षा थोड़ी होने पर भी फसल पूरी हुई है। इसलिये पूरी पूरी मालगुजारी अदा हो सकेगी और पिछले सालका बकाया भी किसानोंसे वसूल हो सकेगा। इस प्रकार दोनोंने एक दूसरेके विरुद्ध बात कही पर ऊपरका अफसर लोभी स्वभावका था इससे उसे पहलेकी बात पसन्द नहीं आयी, दूसरेकी बात जंच गयी। उसने पहले अफसरको छोटे ओहदेपर तनज्जुल कर दिया और दूसरे अफसरको शाबाशी देकर कहा कि तुम राज्यके योग्य कर्मचारी हो, इससे सरकार तुम्हारी कदर करेगी। उस कर्मचारीने अपनी बात रखनेके लिये और वाला अफसरसे वाहवाही लूटनेके लिये तथा उस कर्मचारीको झूठा बनानेके लिये लोगोंपर बड़ी सख्ती करके मालगुजारी वसूल की। क्योंकि उस समय फसल अच्छी नहीं हुई थी और लोग कंगालीकी हालतमें थे इससे कर वसूल करना सहज न था। परन्तु जब किसीका घरद्वार कुर्क किया जाय, किसीका बैल छीन लिया जाय, किसीकी घर बखरी बेंच दी जाय और कोई हिरासतमें रखा जाय तथा किसीके बेत लगवाये जायं तभी मुश्किलसे कर वसूल हो सकता था। ये सब कड़े उपाय उस कर्मचारीने किये, इससे हजारों आदमियोंकी दुर्गति हुई और दूसरे किसी कारणसे नहीं; सिर्फ पहले कर्मचारीके दूसरे कर्मचारीसे द्वेष रखनेके कारण ऐसा हुआ। वह कर्मचारी कुछ अपने स्वभावसे ही इतना बड़ा नीच नहीं था और अगर पहले कर्मचारीके साथ उसका द्वेष न होता तो वह इतना बड़ा पाप न करता। परन्तु पहले कर्मचारीको नीचा दिखानेके लिये उसने निर्दोष लोगोंका खून चूसा था और यह सब उस ननद भौजाईके

मूल विचारसे हुआ था। इसके बाद इन कर्मचारियोंके मनमें परिपक्व बना हुआ द्वेषका विचार एक बड़े राजाके मनमें दाखिल हुआ। क्योंकि यह राजा अपने ही समान एक दूसरे राजासे बहुत द्वेष रखता था। उसके इस विचारसे कर्मचारियोंके द्वेषका मजबूत विचार मिल गया जिससे राजाका द्वेष बहुत बढ़ गया। अन्तमें दोनों राजाओंमें बहुत बड़ी लड़ाई हुई जिसमें हजारों आदमी मारे गये और करोड़ों रुपयोंकी हानि हुई तथा वर्षों प्रजाको बहुत बड़ा कर देना पड़ा। ऐसा भयंकर परिणाम द्वेषके एक छोटेसे विचारसे आगे चल कर हुआ था। जैसे कोई नदी जिस जगहसे निकलती है वहां एक छोटेसे झरने या नाले समान होती है पर ज्यों ज्यों आगे बढ़ती जाती है त्यों त्यों उसमें पानीके दूसरे झरने तथा नदी नाले मिलते जाते हैं इससे वह नदी बहुत बड़ी होती जाती है। यही बात विचारके विषयमें समझना। विचार भी जब पहले पैदा होता है तब बहुत छोटा होता है पर ज्यों ज्यों आगे बढ़ता है त्यों त्यों उस किस्मके विचार उसमें मिलते जाते हैं, इससे कुछ दिनमें वह बहुत बढ़ जाता है और ऐसा भयंकर परिणाम होता है जो पहले ध्यानमें भी नहीं आ सकता था। इसलिये इस बातका खास खयाल रखना चाहिये कि हमसे किसी भी बुरे विचारका बीज न पड़े। क्योंकि ऐसा खयाल रखना ही जिन्दगी सुधारनेकी कुञ्जी है और यही भाग्य फेरनेका उपाय है। अगर खराब विचारको रोकना हो तो शुभेच्छा रखना सीखिये। शुभेच्छा रखना सीखिये।

हमारा अच्छा या बुरा कोई भी विचार कभी व्यर्थ नहीं जाता बल्कि सूद दर सूद सहित बढ़ता जाता है।

अगर हम अपने विचारोंका असर, विचारोंका परिणाम,

विचारोंकी दूसरों पर असर करनेकी शक्ति और अपने हृदयमें दूसरोंके विचार उगनेकी सामर्थ्य आदि सब दशाओंको असली रूपमें जानें तो कभी दुःख, पाप, रोग या मौतका विचार ही न करें। दुःख तथा निराशाके विचार करनेसे कितना बड़ा नुकसान होता है और हमारे इन विचारोंके असरसे दुनियामें दूसरे कितने आदमियोंकी कितनी भयानक खराबी होती है यह अगर हम ठीक ठीक जान सकें तो हमें त्रास हुए बिना न रहे। क्योंकि विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए महात्मा कहते हैं कि कोई अच्छा या बुरा विचार अपना अच्छा या बुरा परिणाम दिखाये बिना नष्ट नहीं होता। इतना ही नहीं बल्कि जैसे वटके छोटेसे बीजसे विशाल वृक्ष होजाता है वैसे ही हमारे छोटे विचारसे बढ़ते बढ़ते बहुत बड़ा फल हो सकता है। अगर ऐसा न होता तो हम कभी अपना जीवन सुधार नहीं सकते या न मोक्ष पासकते। परन्तु परम कृपालु पिता परमात्माकी यह दया है कि वह हमारे किसी विचारको व्यर्थ नहीं जाने देता, बल्कि उसे सूद दर सूद सहित बढ़ा देता है। इससे जैसे पानीकी एक छोटीसी धारासे आगे जा कर बड़ी नदी बन जाती है वैसे ही एक छोटे विचारसे आगे जा कर बड़ी भावनाएं बन जाती हैं और उन भावनाओंके बलसे नरसे नारायण हो सकते हैं तथा जीवसे शिव हो सकते हैं। इसलिये हमें हमेशा शुभेच्छा रखना सीखना चाहिये और किसी तरहके दुःख, निराशा, भय या रोगका विचार न करना चाहिये। निराशा तथा दुःखके विचार करनेसे कितनी बड़ी खराबी होती है इसके लिये एक महात्मा कहते हैं—

निराशाके विचारसे खराबी।

एक आदमी हमेशा निराशाके ही विचार किया करता था।

जैसे-कोई काम होने लायक होनेपर भी यह मान लेता कि यह होना बड़ा मुश्किल है। कहीं बाहर जानेको हो तो आप जाने लायक होनेपर भी मनमें कहता कि मुझसे नहीं जाया जा सकता। उसके हित मित्र बहुत अच्छे आदमी थे तौभी कभी प्रसंग वश कुछ मामूली कहासुनी हो गयी हो तो उससे वह मनमें सोचा करता कि ये सब बड़े खराब हैं और मेरे लिये कभी कुछ नहीं करेंगे। पैसा मिलने लायक धंधा होता तौभी पहले ही से अपने मनमें यह ठहरा लेता कि इसमें कुछ नहीं मिलनेका, यह धंधा अच्छा मालूम होता है पर घाटा हुए बिना नहीं रहेगा। इस तरह हर विषयमें वह हमेशा निराशाके ही विचार किया करता। इससे कितने ही तरहका सुबीता होनेपर भी वह हमेशा दुखी रहता था। वही नहीं उसके घरके लोग भी दुखी थे। उसकी धर्मकी भावना अधूरी थी; उसके अच्छे मित्र न थे और रोजगार धंधेमें भी वह कामयाब न होता। क्योंकि वह हमेशा निराशाके ही विचारोंमें रहता। और किसी काममें कामयाबी होगी या किसी चीजमें लाभ होगा इसपर उसे विश्वास नहीं होता था। इससे उसका हर एक काम ऊपरसे, नीरस, बेमनका और बिना रौनकका होता था। वह मुर्दासा लगता और हर जगह तथा हर विषयमें उसकी भूलके कारण ऐसा ही होता इससे वह बहुत दुखी रहता और निराशाके ही विचारोंमें जिन्दगी गंवाता था। इस कारण उसके मनमें निराशाका विचार बहुत दृढ़ हो गया। इसके बाद उसका विचार फिरते फिरते एक विद्यार्थीके मगजमें दाखिल हुआ। क्योंकि उस विद्यार्थीकी परीक्षा होनेवाली थी और उस समय वह बीमार पड़ गया था, इससे उसे ऐसा लगता था कि मैंने ठीक ठीक नहीं पढ़ा है इससे पास नहीं हो सकूंगा.

इसलिये मुझे इस साल परीक्षामें न बैठना चाहिये। ऐसी निराशाका विचार वह करता था इतनेमें उसके मनमें ऊपर लिखे दुखी आदमीकी निराशाका विचार आघुसा। इससे वह हिम्मत हार गया और ऐसे ही विचार करने लगा कि अब मैं पास नहीं हो सकूंगा। इससे वह जेहनदार विद्यार्थी विना कारण अपने मनकी कमजोरीसे ही फेल हो गया और फेल होनेसे उसे पढ़ना छोड़ना पड़ा जिससे आगे बढ़नेका मौका उसके हाथसे जाता रहा। जो लड़का ऐसा था कि भविष्यमें एक चमकता हीरा हो सकता वह निराशासे कोयला हो गया। इसके बाद वह निराशाका विचार फिरते घूमते एक सेठके अन्तःकरणमें समागया। क्योंकि उस समय वह सेठ जरा तंग हालतमें था, इससे हिम्मत हार गया था और यह विचार करता था-अब मेरा क्या हाल होगा? मेरा रोजगार कैसे चलेगा? मेरी इज्जत कैसे रहेगी? इतना बड़ा घाटा दिखाई देता है वह कैसे पूरा होगा? और ऐसी आफतसे कैसे बचूंगा? इत्यादि। यह सोचता और मनही मन निराश हो कर अफसोस करता था। इससे उसके मनमें ऊपरके निराशाके विचारको सहारा मिल गया। जिससे वह हिम्मत हार गया और थोड़े दिनमें बाजारकी हालत सुधरने लायक थी तथा उसके पास भी अच्छी मिलकियत थी, तौभी निराशाके विचारसे हिम्मत हार जानेके कारण उसको दिवाला निकालना पड़ा और वह बहुत वेइज्जत हो गया। वहांसे निराशाका विचार पुष्ट हो कर एक अच्छी स्त्रीके मनमें घुसा। वह स्त्री भी उस समय निराशाका विचार करती थी। उसकी निराशाका कारण यह था कि उसका पति बहुत बीमार था और वह स्त्री गरीब थी तथा बेहद प्रेमिली, शर्मीली और टेकवाली थी। इससे वह सोचती थी-मेरा पति

मर जायगा तो मैं क्या खाऊंगी ? और उसके वियोगसे कैसे जीऊंगी ? ऐसा विचार करती थी इतनेमें ऊपर लिखित निराशाका मजबूत विचार उसके हृदयमें समागया जिससे उसकी निराशा बहुत बढ़ गयी और उसकी हिम्मत बिलकुल टूट गयी। इसके बाद कुछ दिनमें उसका पति मर गया, इससे वह बेहिम्मत तथा निराश बनी हुई स्त्री अपनी आत्माका बल नहीं समझ सकी, अपना धर्म नहीं समझ सकी; प्रभुकी इच्छा नहीं समझ सकी, जगतकी वस्तुओंकी कीमत नहीं समझ सकी और यह बात नहीं समझ सकी कि जो जन्मा है वह मरेगा ही। बस उसको बड़ी ही निराशा हुई और बड़ा अफसोस हुआ। इससे उसने आत्महत्या करली।

भाइयो! छोटे विचारसे भी अन्तमें ऐसा बुरा परिणाम निकलता है और ऐसी भयंकर खराबी होती है जिसका अनुमान हम नहीं कर सकते। इसलिये इस बातको खूब सम्हाल रखना कि कभी किसी तरहका बुरा विचार न होजाय।

हमेशा बीमारीका विचार करनेवाली एक स्त्रीकी खराबी।

इस विषयपर जितने चाहे इतने उदाहरण दे सकते हैं। यह विषय बहुत बढ़ता जाता है तौभी यह बात अच्छी तरह समझानेके लिये एक और उदाहरण दिया जाता है कि हम अपनी ही भूलसे, अपने मनकी कमजोरीसे ही, अपनी अज्ञानतासे ही और अपने बुरे विचारोंसे ही स्वयं कितने हैरान होते हैं और दूसरोंको कितना हैरान करते हैं। एक स्त्री थी जो हमेशा बीमारीकी शिकायत किया करती थी। वारंवार कहती कि

मुझे मतली आती है ; कभी कहती मेरा पेट गड़ता है। दो चार दिन बीतनेपर कहती कि मेरा सिर दूखता है। महीनेमें पांच सात बार पैरमें झिनझिनी होनेकी शिकायत करती। इस तरह कितने ही रोग उसे हुआ करते और रोग बहुत मामूली होता तौभी बहुत बढ़ा चढ़ा कर दूसरोंसे कहनेमें उसे एक तरहका आनन्द होता। मैं बीमार हूं यह दिखानेके लिये वह बारंबार कोशिश किया करती ; क्योंकि उसकी यह आदत पड़ गयी थी, इससे जब उसके मुहल्लेमें कोई वैद्य या डाक्टर आता तो उसे नाडी दिखाती, बड़े बूढ़ोंके सामने रोया करती और वे बेचारे भोलेभाले आदमी उसके दुःखमें बड़ी सहानुभूति प्रगट करते। इससे उसको सन्तोष होता और अपने कल्पित दुःखकी बातें करनेमें उसको कुछ मजासा मिलता था। अपनी सहेलियोंके सामने बीमारीकी बातें बतियाने और उनकी सहानुभूति हासिल करनेका उसे चसका पड़ गया था। ऐसा करते करते उसे ऐसी आदत पड़ गयी कि उसे जरासी बीमारी होती तौभी उसे बहुत बढ़ा कर बताना उसे आगया। रास्ते चलते चलते बहुत थकावटका भाव दिखाना, भीतर बहुत दर्द प्रगट करने योग्य चेहरा बिगाड़ना, रास्तेमें बीमार आदमीकी तरह धीरे धीरे चलना, किसीसे बात करते समय बीमारकी सी आवाज निकालना और रोज रोज दवाकी शीशी साथमें रख कर जरा लटते पटते बाहर निकलना उसे मश्क होगया था। यह सब किसी भारी रोगके लिये हो तो वह दूसरी बात है, पर ऐसी कोई बात नहीं थी, सिर्फ मनकी कमजोरीके कारण, मैं बीमार हूं इस ख्यालके कारण और इसके बाद बीमारी बतानेकी आदत पड़ जानेके कारण ऐसा होता था। इसका फल क्या होगा इसकी उसे खबर या परवा न थी। इसके बाद उसकी देखादेखी

उसके लड़के बाले भी ऐसे ही स्वभावके हुए इससे बुढ़ापेमें उसे बहुत तकलीफ होने लगी । क्योंकि उसके दो लड़के और तीन लड़कियां थीं । तीनों लड़कियां हूबहू माकी प्रकृतिकी हुई । वे तीनों अपनी माकी तरह हमेशा बीमारीकी शिकायत किया करतीं और छोटी छोटी बीमारियोंको बढ़ा कर बताती थीं । उनकी देखादेखी दोनों लड़कोंकी बहुएं भी वैसी ही बन गयी थीं। वे पांचों स्त्रियां उसके सामने जा कर रोज रोज बीमारीकी शिकायत किया करती थीं । इससे उसका जी नकिया जाता परन्तु वह यह नहीं समझती कि यह मेरी ही आदतका फल है । सिर्फ उसीके घरमें ऐसा असर नहीं हुआ बल्कि उसकी पड़ोसिनोंपर भी उसके इस स्वभावका बड़ा असर पड़ा । इससे कितनी ही पड़ोसिनें और सहेलियां बिना बीमारीके बीमार पड़ने लगीं । क्योंकि स्त्रियोंके स्वभावमें नकल करनेकी वृत्ति बड़ी जबरदस्त होती है । इससे वे जो बात अपनी नजरके सामने बारंबार होती देखती हैं उसके अनुसार आप भी करने लगती हैं । ऐसा करते समय यह नहीं सोचतीं कि यह बात अच्छी है या बुरी और यह हम क्यों करती हैं । अधिकतर स्त्रियोंका ऐसा ही स्वभाव होता है इससे दुर्बल मनकी कितनी ही स्त्रियोंपर उस स्त्रीके स्वभावका तथा रहन सहनका असर हुआ । उसकी देखादेखी कितनी ही पड़ोसिनें तथा सहेलियां बिना बीमारीके बीमार पड़ने लगीं ।

लड़कोंको बचाने जा कर डरपोक माताएं उल्टे कैसे मार डालती हैं ।

इसके बाद उस स्त्रीका विचार फिरते फिरते एक दूसरी स्त्रीके मनमें जा घुसा । क्योंकि इस स्त्रीका लड़का बीमार था

और यह स्त्री डरपोकनी थी तथा वहुत इन्तजारीके वाद ढली उमरमें उसके लड़का हुआ था और उसका पति वूढ़ा था इससे वह लड़केके लिये वहुत अधीर थी । लड़का जरा भी वीमार पड़ता तो उसे वहुत वीमार समझ लेती और छटपटाने लगती। ऐसी दशामें वह स्त्री थी इतनेमें पहली स्त्रीका विचार आ कर उसके मनमें घुस गया जिससे वह और कमहिम्मत होगयी । उस समय उसके लड़केके दांत निकलते थे इससे लड़का जरा अनमना होगया पर स्त्री वहुत डरपोकनी और अधीर होगयी थी इससे उसने उसको वड़ा तूल देदिया और वहुत घवरा कर सवसे पूछने लगी कि हाय ! हाय ! मेरे लड़केको क्या होगया। किसीने कुछ करदिया, अव मैं क्या करूँ? कहां जाऊं ? इस तरह वह अफसोस करने लगी। वड़े वूढ़े और सगे सम्वन्धियोंके पास, पड़ोसिनोंके पास तथा वैद्यके पास रोने गिड़गिड़ाने लगी। उन सवने समझा कि लड़का जरूर कुछ ज्यादा वीमार होगया होगा। यह सोच कर वैद्यने कुछ कड़ी दवा दी । कई घंटे वीत गये पर उस स्त्रीको उससे कुछ फायदा नहीं दीख पड़ा क्योंकि वह तो ऐसी दवा चाहती थी जो देनेके साथ फायदा करे। परन्तु उस वैद्यके पास ऐसी कोई दवा नहीं थी। उसकी दवा तो धीरे धीरे प्रकृतिके नियमसे काम करनेवाली थी । इससे कुछ घंटोंमें जितना फायदा होना चाहिये उतना हुआ था पर उस उतावली और डरपोकनी स्त्रीको कुछ फायदा नहीं सूझा। इससे उसने उस वैद्यकी दवा दे देनेपर भी एक पड़ोसिनकी वतलायी हुई दूसरी दवा खिलादी । उस दवासे भी तुरत कुछ फायदा नहीं हुआ। तीन घंटे वाद एक वुढ़ियाकी वतायी तीसरी दवा पिलायी, इसके वाद रातको एक डाक्टरको वुलालायी ! उसने एक अजीव ही दवा पिलादी । इस तरह

बारह घंटेमें चार आदमियोंकी बतायी हुई जुदी जुदी चार दवाएं आठ महीनेके बालकको उसकी मूर्ख माताने दीं। इसके बाद बालकके न चाहनेपर भी जबरदस्ती उसे दूध पिलाया। हालां कि यह सब करनेकी कुछ जरूरत नहीं थी, क्योंकि इस उमरमें लड़कोंके दांत निकलते हैं और जब पहलेपहल दांत निकलता है तब दो चार दिन लड़के सहजही कुछ बीमारसे हो जाते हैं। यह बीमारी पीछे आपसे आप या नजर बेकार आदमीकी सीधी सादी दवासे ही मिटजाती है। इसमें इतनी बड़ी दौड़ धूप करनेकी कुछ जरूरत न थी। तौभी उस स्त्रीने बहुत अधीर हो कर अपने प्यारे बच्चेको आराम करनेके लिये अन्दाजसे अधिक उपाय कर डाले, जिससे, उस मूर्खता भरे उपायोंके कारण वह बेचारा बच्चा मरगया और बीमारीके लिये बहुत डर दिखानेवाली उसकी डरपोकनी मा रोती रहगयी।

बीमारीके डरसे एक धनी जवानका नाश।

इसके बाद उस डरपोकनी माताका बीमारी सम्बन्धी विचार घूमते घूमते एक धनी आदमीके खान्दानमें दाखिल हुआ। वह खान्दान बहुत पुराना और मालदार था। उसके पास लाखोंकी दौलत थी। पांच पीढ़ियोंसे उसका हरएक वारिस भरी जवानीमें मर जाता था, उसका आखिरी छठा वारिस एक जवान लड़का था, वह जरा बीमार पड़ गया था। खान्दान भरमें वही एक लड़का था। इससे सबकी आंखका वह पुतला था और वही बीमार पड़ा, इससे सबको बहुत फिकर होने लगी। कितने आदमी यह कहने लगे कि यह धन ही ऐसा है कि उसे कोई भोग नहीं सकता। पांच पीढ़ियोंसे सब जवान मरजाते हैं,

इसी तरह यह भी मर जायगा । कोई कहने लगा यह जीयेगा तो बहुतोंको जीविका देगा, इसलिये भगवान इसे जिलादे तो अच्छा । पर जो ऐसा कहता था उसके मनमें भी यह फिकर थी कि जैसे पिछले वारिस मरगये वैसेही यह भी न मरजाय । इस प्रकार खान्दान भरके आदमी, दूरके रिश्तेदार, मित्र और जानपहचानके आदमी सबके मनमें यही फिकर थी । हालां कि ऐसी फिकर करनेका कोई कारण नहीं था; सिर्फ अनपचके कारण उसे जरा ज्वर आगया था पर आसपासके लोगोंने दौड़धूप मचा कर कागको बाघ बनाडाला था और उसकी खुशामदके लिये रजका गज करदिया था और बड़े बड़े डाक्टर बुलालाये थे । कुछ नासमझ डाक्टरोंने सोचा कि यह बीमारी बड़ी गहरी है इससे वे गम्भीर बन कर अलग अलग राय देने लगे । एक बदनीयत डाक्टरने सोचा कि यह गांठका पूरा हाथमें आया है इसकी घबराहट बढ़ादूंगा तो इससे मनमानी फ़ीस ऐंठ सकूंगा । यह सोच कर उसने कुछ अलग ही राय दी । इस तरह जुदे जुदे डाक्टरोंकी रायके फेरमें पड़ कर उसके घरवाले बहुत घबराये और वे बेजरूरत अलग अलग किसमकी दवाएं एक पर एक देने लगे । इससे तीसरे दिन उस बेचारे जवान सेठको दवाओंकी गरमी चढ़ गयी और वह बहुत परेशान होने लगा । उस समय भी उसके हित मित्र तथा नौकर चाकर यही विचारते थे कि सेठ अब नहीं बचेगा । क्योंकि उसके पहलेके सब वारिस इसी तरह दो चार दिनकी बीमारीमें ऐन जवानीमें मरगये थे इससे वे सब विश्वास कर लेते थे कि यह भी मर जायगा । इस विश्वासके कारण वे निराश हो गये थे । उनमें पहली स्त्रीकी निराशाका विचार आ मिला । इससे सब लोग और भी निराश होनेलगे । सबकी निराशाका धक्का

उस बीमार आदमीको बड़े जोरसे लगा। वह बेचारा, असानीसे आराम हो सकने लायक वह जवान आदमी अपनी तथा दूसरोंकी निराशाके विचारोंसे ही मर गया और उसके खान्दानका हमेशाके लिये इस दुनियासे नाश होगया।

हमलोगोंमें शिक्षा थोड़ी है और ये विचार नये हैं इससे जरा बढ़ा कर लिखने और समझानेकी जरूरत पड़ती है ।

इस तरहकी कितनीही गहरी घटनाएं खास अपनी भूलोंसे, अपने खराब विचारोंसे, अपने मनकी कमजोरीसे और रोग तथा भयके विचारोंसे ही हुआ करती हैं । और उनका नाशकारक परिणाम हमें तथा हमारे कुटुम्बको और हमारे पड़ोसियोंको भोगना पड़ता है । इतना ही नहीं बल्कि इस किस्मके विचारोंमें पड़े हुए दूर देशके दूसरे अनजान आदमियोंको भी हमारे बुरे विचारोंका बुरा असर भोगना पड़ता है । इसलिये कभी किसी बुरे विचारमें मनको मत फंसने देना। क्योंकि मनमें कुछ बुरा खयाल करने और उस खयालसे खुश होनेको हम आजकल कोई बड़ी बात नहीं समझते इससे तरह तरहके पापके विचार किया करते हैं। पर हमारे ये घड़ीभरके छोटे छोटे विचार आगे जा कर कितने बड़े हो जाते हैं और ये बढ़े हुए विचार इसी तरहके विचार करनेवाले दूसरे निर्दोष आदमियोंका भी कैसा सत्यानाश कर देते हैं यह हम अच्छी तरह नहीं जानते इसीसे चाहे जैसे तुच्छ, निकम्मे, हलके और बुरे विचार किया करते हैं। अगर अपने किये हुए विचारोंकी गम्भीरता और जोखों हम समझें तो कभी ऐसे खराब विचार न करें।

इससे इसको खूब अच्छी तरह समझानेके लिये इस किस्मके उदाहरण मैं जरा अधिक देता हूं। यह बड़े कामकी बात है और हम लोगोंमें आजकलके जमानेमें विचारका शास्त्र बिलकुल नया नया है इसलिये उसका हाल कुछ विस्तारसे कहना चाहिये। ऐसे आदमी हमारे देशमें अभी बहुत थोड़े हैं जो दृष्टान्त और उदाहरण दिये बिना सिर्फ थोड़ेमें सूत्ररूपसे कह देनेसे समझ जायं। इसका कारण यह है कि जितनी चाहिये उतनी शिक्षा हमारे भाइयोंमें नहीं फैली है इससे यह विषय विस्तार सहित कहना पड़ता है।

महामारीके रोगसे जितने आदमी मरते हैं उससे अधिक आदमी महामारीके भयसे मरते हैं।

इसके बाद वह बीमारी और निराशाका मजबूत बना हुआ विचार फिरते फिरते गुजरातमें पहुंचा। वहां उस समय कितने ही गांवोंमें महामारीका नया नया उपद्रव शुरू हुआ था। वहां बहुत आदमी डरपोक स्वभावके थे। अखबारोंमें महामारीका भयानक हाल निकलता था इससे बहुतेरे आदमियोंमें बहुत अधिक डर समा गया। इस भय तथा निराशाके असरके कारण कितने ही कमजोर विचारके भोलेभाले आदमी दुष्ट प्लेगके जबरदस्त पंजेमें फंस गये। कितने ही गांवोंमें सैकड़ों परिवारोंका सत्यानाश हो गया। किसी खास रोगके कारण नहीं बल्कि चिन्ताग्रस्त मनके कमजोर विचारोंके कारण ही ऐसा हुआ। इसके लिये विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए अनुभवी महात्मा कहते हैं कि जब हमारे देशमें पहलेपहल महामारी आयी उस समय अगर लोगोंके मनमें हिम्मत होती और रोगका भय तथा

निराशा और चिन्ताके विचार न होते तो खाली रोगके जोरसे कभी इतने अधिक आदमी न मरते। क्योंकि इस रोगमें जितना जोर है और रोगके बलसे लोगोंकी जितनी खराबी हुई है उससे दसगुनी खराबी निराशा और डरसे हुई है। जैसे—जिस आदमीको प्लेग होता है वह आदमी और उसके सगे सम्बन्धी यही विश्वास करलेते हैं कि अब मौत आगयी, यह बचनेका नहीं। इस विचारके कारणही विशेष कर उनका नाश होता था। इस प्रकार जब मनुष्य खराब हवाके कारण तथा भयके कारण पटापट मरने लगे तो यह देख कर भोलेभोले तन्दुरुस्त आदमियोंको भी यह फिकर होने लगी कि अब हमारी वारी आवेगी, इस झपट्टेसे बचना असम्भव है, आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, परसों नहीं तो तरसों हम भी इस झपट्टेमें आ ही जायंगे। वह विश्वास कर निराशासे उसकी बाट देखने लगते और जरा सिर दुखता कि समझने लगते प्लेग हुआ। घरमें या मुहल्लेमें चूहे मरते देखते तो डरजाते कि अब प्लेग आया। हित मित्रोंमें किसीके प्लेग होनेकी बात सुनते या बीमारको अपनी आंखसे देखते तो मनमें डरने लगते कि जल्द या कुछ देरसे हमारा भी यही हाल होनेवाला है, इस तरह हर जगह निराशा, डर और "इसमें कुछ उपाय ही नहीं है" ऐसे पस्तहिम्मतीके विचार जम गये और सबके इर्दगिर्द ऐसे बुरे विचारोंका वातावरण छागया। इसमें लाखों आदमी फंस गये और सिर्फ रोगसे नहीं बल्कि सैकड़े पचहत्तर आदमी अपने मनकी कमजोरीसे मारे गये। हिन्दुस्थानके दूसरे प्रान्तोंका भी यही हाल है, अब भी उनमें लाखों आदमी हरसाल इसी कारण कालके गालमें जाते हैं। भाइयो और बहनो! बुरे विचारोंसे इतनी बड़ी खराबी होती है, इसलिये कभी किसी किस्मका बुरा विचार मनमें मत आने

देना । इस बातका पूरा सम्हाल रखना ।

विचारशक्तिकी जो बातें हैं वे कुछ तंत्र मंत्रके ढोंग ढकोसले या "अगले जन्ममें फल देनेवाली" उधारी मामलेकी नहीं हैं; बल्कि तुरत फल देनेवाली आत्मिक बलकी बातें हैं ।

यह सब जाननेके बाद अब हमें विचारना चाहिये कि हम अपनी इच्छाशक्तिके बलसे, अपने मनके बलसे तथा अपनी शुभेच्छासे अपना तथा दूसरे कितने ही आदमियोंका कल्याण कर सकते हैं, इतनाही नहीं बल्कि अपने विचारोंका बहुत दूर-देशोंमें बसे हुए दूसरे आदमियोंके मनमें पहुंचा सकते हैं और हजारों वर्ष पीछे इस जगतमें जो विचार होंगे उनको भी अपनी इच्छाशक्तिके बलसे, अपनी दृढ़ताके बलसे, अपनी एकाग्रताके बलसे तथा अपनी बुद्धिके बलसे पकड़ सकते हैं । हमारी आत्मामें ऐसी अलौकिक सामर्थ्य है । अगर इस महाबलवान सामर्थ्यका गहरा उपयोग करना हमें आवे तो अपने भाग्यको फेर देना कोई बड़ी बात नहीं है । भाइयो और बहनो । याद रखना कि ये सब कुछ मनगढन्त बातें नहीं हैं, ये हवाई किलेकी बातें नहीं हैं, ये भूत प्रेतकी उपासनाकी बातें नहीं हैं, ये तंत्र मंत्रके ढोंगकी बातें नहीं हैं और ये " अगले जन्ममें फल देंगी " कह देनेवाले उधारी मामलेकी बातें नहीं हैं; बल्कि ये सबके हृदयमें मौजूद आत्माके स्वाभाविक बलकी बातें हैं, इसलिये जो आदमी चाहे वह इनसे लाभ उठा सकता है और अपना भाग्य फेर सकता है । अगर किसीको जैसी चाहिये वैसी अनुकूलता न हो, किसीको अच्छी संगत न हो, किसीके पहलेके संस्कार अच्छे न हों, किसीकी

बुद्धि बहुत खिली हुई न हो तो कुछ परवा नहीं। ऐसे आदमी अफसोस न करें; बल्कि अपना कुतुबनुमा शुभेच्छाका ही रखें इससे वह दिशाओंको बतायाही करेगा।

हमें शुभेच्छाका कुतुबनुमा रखना चाहिये।

जैसे बीच समुद्रमें जहाज हो, समुद्रमें तूफान उठते हों, आकाशमें अन्धकार हो जिससे दिशा न सूझती हो और जहाज निर्दिष्ट दिशाको न जा सकता हो तौभी चतुर कप्तान नहीं डरता, बल्कि अपने पास कुतुबनुमा रखता है और उसीके सामने दृष्टि रखता है। और कुछ नुकसान हो तो होने देता है पर कुतुबनुमेको नहीं बिगड़ने देता। इससे कुछ देर बाद जब तूफान बन्द हो जाता है तब उसका जहाज तेजीसे सीधे रास्ते आगे बढ़ता है। इसी तरह शुभेच्छा हमारा कुतुबनुमा है; इसलिये बिलफेल अगर खराब संयोगोंके कारण आपमें दूसरोंके विचार जानने, दूसरोंके हृदयमें विचार भेजने और मामूली मनुष्यसे महात्मा बन जाने तथा महात्मासे देवता बनजानेकी सामर्थ्य न हो तो फिकर नहीं; मगर शुभेच्छाके कुतुबनुमेको पकड़ रखना। इससे धीरे धीरे आगे बढ़ते जायंगे। क्या आप जानते हैं कि शुभ विचारोंमें क्या खूबी है? नहीं जानते। अगर जानते होते तो ऐसी हालत न होती। इसके लिये महात्मा कहते हैं—

चमत्कारिक जड़ी बूटी।

हमारे मनमें काम क्रोधका रोग भरा हुआ है, इन्द्रियोंमें विकारोंका रोग है, हृदयमें आशा तृष्णाका रोग है, बुद्धिमें

संकीर्णताका रोग है, अहंकारमें जुदाईका रोग है और हमारे चित्तमें चंचलताका रोग है। इन सब रोगोंको मिटानेके लिये कुछ चमत्कारिक जड़ी बूटी चाहिये। चमत्कारिक जड़ी बूटीके विना ये सब रोग नहीं मिट सकते। इसलिये महात्मा कहते हैं कि ऐसे महा असाध्य रोगोंको मिटानेवाली सहजसे सहज, सस्तीसे सस्ती और सबसे होने लायक जड़ी बूटी शुभेच्छा है। अगर इन सब असाध्य रोगोंको दूर करना हो और भाग्यको फेरना हो तो शुभेच्छाकी जड़ी बूटी काममें लाना सीखिये। शुभेच्छाकी जड़ी बूटी काममें लाना सीखिये।

नया जीवन देनेवाली, नयी रौनक लाने-वाली उत्तमसे उत्तम विजली।

मनुष्यको, जानवरको, वनस्पतिको और दूसरी चीजोंको विजली नया जोश देती है, नयी रौनक देती है, नया सौंदर्य देती है, नया उत्साह देती है और नयी गति देती है ऐसेही गुण शुभेच्छाके विचारोंमें भी हैं; उनसे भी नया जोश, नयी रौनक, नया सौंदर्य, नया उत्साह, नयी गति और नया नया आनन्द मिलता है। क्योंकि जैसे विजलीमें स्वाभाविक प्रकाश है वैसेही नये विचारोंमें तथा शुभेच्छामें स्वाभाविक प्रकाश है। इसके लिये विचारशास्त्रमें आगे बढ़े हुए दिव्यदृष्टिवाले महात्मा कहते हैं कि हरएक विचारके आसपास उसकी जाति और मजबूतीके अनुसार जुदी जुदी किस्मके तेज होते हैं, अगर ऊंचेदरजेका आनन्द लेना हो और उन्नतिके रास्तेमें आगे बढ़नेके लिये महानगति पाना हो तो शुभेच्छारूपी विजलीको वशमें रखना सीखिये। शुभेच्छारूपी विजलीको वशमें रखना सीखिये।

मीठी खुमारी लानेवाला सोमरस।

एक तरहकी मीठी खुमारीमें रहनेके लिये पहलेके महान ऋषि मुनि पवित्र सोमरस पीते थे। महात्मा कहते हैं कि अगर ऐसी ऊंचे दरजेकी मीठी खुमारीमें रहना हो तो शुभेच्छा रखना चाहिये। क्योंकि सोमरसमें मीठी खुमारी लानेका जितना गुण है उससे अधिक गुण शुभेच्छामें ऊंचेदरजेकी मीठी खुमारी लानेका है। सोमरस सबको नहीं मिल सकता और जिनको मिलता है उन सबसे पच नहीं सकता कितनोंको उसके पीनेसे कै होजाती पर शुभेच्छारूपी सोमरस तो सबको स्वभावतः मिल सकता है और कुदरती तौर पर पच सकता है। इसलिये भाइयो! अगर आगे बढ़नेकी इच्छा हो, कल्याणकी इच्छा हो, भाग्य फेरनेकी इच्छा हो और हमेशा एक प्रकारकी मीठी खुमारीमें रहनेकी इच्छा हो तो शुभेच्छारूपी सोमरस पीना सीखिये। शुभेच्छारूपी सोमरस पीना सीखिये।

प्रभुके मार्गमें उड़नेका विमान।

पालकी, छकड़ा, घोड़ागाड़ी, बाइसिकल और मोटर इत्यादि जड़ सवारियां पृथिवी पर चल सकती हैं, पतली हवामें, अधरमें नहीं चल सकतीं। इसी तरह बाहरके कर्मकाण्ड, लोकाचारके रसम रिवाज, कुलपरिवारके विधिनिषेध, देशकालकी प्रथा और व्यवहारी मनुष्योंकी पोलमपोल इस दुनियामें चल सकती है परन्तु आकाशमें उड़नेके लिये और प्रभुके पास पहुंचनेके लिये तो कोई औरही चीज चाहिये और वह चीज विमान है। उन्नतिके रास्तेमें उड़नेके लिये विमान चाहिये। वह विमान क्या है यह आपको मालूम है? महात्मा लोग कहते हैं कि वह विमान शुभेच्छा है। उसकी मददसे आकाशमें अधरमें उड़ सकते हैं।

इसलिये अगर पृथ्वीपर ही पड़े न रहना हो, जड़तामें ही न रहना हो और पोलमपोल तथा दाम्भिकपनमें ही न रहना हो तो शुभेच्छारूपी विमानमें उड़नासीखिये। शुभेच्छारूपी विमानमें उड़ना सीखिये।

इस लोक और परलोकमें काम आनेवाला सच्चा रसायन।

पुरानी पुस्तकोंमें वहुधा इस आशयकी वातें मिलती हैं कि किसी किसी महात्माके पास ऐसा रसायन होता था जिससे वह बूढ़ेको जवान बना देते थे। ऐसा रसायन आपको चाहिये? अगर चाहते हों, अगर बूढ़ेसे जवान बनना हो, अगर गरीवीसे अमीरी देखना हो, दुःखके वदले सुख लेना हो, रोगके वदले आरोग्यता दरकार हो और मौतके वदले अमरत्व दरकार हो तो शुभेच्छारूपी रसायन काममें लाना सीखिये। क्योंकि यह रसायन ऐसा सहज है; ऐसा चमत्कारिक है और ऐसा सस्ता है कि सवसे वन सकता है। वह और कुछ नहीं शुभेच्छा है। अगर आपको अपना गरीव भाग्य पलटना हो, दुःखसे सुखमें आना हो, गरीवीसे अमीरीमें आना हो और मौतके वदले अमरता दरकार हो तो शुभेच्छारूपी रसायनका उपयोग कीजिये। शुभेच्छारूपी रसायनका उपयोग कीजिये।

नरसे नारायण वननेकी कीमिया।

इस दुनियामें कई किसमकी कीमिया है, कोई जसतेसे चांदी वनाता है; कोई तांवेसे सोना वनाता है; कोई सीपसे मोती

निकालता है; कोई अपनी कीमियाके जोरसे बीजमें से तुरत पेड़ पैदा कर देता है; कोई अपनी कीमियासे बड़े बड़े रोगोंको बात करते करते मिटा देता है और कोई आदमी कीमियाके जोरसे सेठ साहूकारोंको, स्त्रियोंको और राजाओंको वशमें करलेता है। ऐसी ऐसी कीमिया इस दुनियामें है पर सबसे बड़ी कीमिया क्या है इसकी आपको खबर है? इसके लिये महात्मा कहते हैं कि सबसे बड़ी कीमिया वह है जिससे मनुष्य जीवसे शिव बनता है और नरसे नारायण बनता है। यह कीमिया शुभेच्छा है। क्योंकि शुभेच्छासे ही आदमी आगे जा कर भलामानस फिर भक्त, फिर ज्ञानी, फिर महात्मा और फिर ब्रह्मरूप हो सकता है। इसलिये शुभेच्छा सबसे बड़ी कीमिया है। अगर आपको अपना गरीब भाग्य फेरना हो और नरसे नारायण होना हो तो शुभेच्छा रखना सीखिये। शुभेच्छा रखना सीखिये। यही महात्माओंका उपदेश है, यही शास्त्रकी आज्ञा है और यही ईश्वरकी इच्छा है। इसलिये शुभेच्छा रखना सीखिये। शुभेच्छा रखना सीखिये।

ॐ शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः।

समाप्त।

ईश्वरका स्वरूप ।

(प्राचीन ऋषियों का वर्णन किया हुआ ।)

१–इस जगतकी उत्पत्तिसे पहले केवल एक ईश्वर था और कुछ भी नहीं था। वह एक ही है, उसके ऐसा और कोई नहीं है। वह सत स्वरूप है।

२–उसने जब ब्रह्माण्ड रचनेका विचार किया तब उसकी इच्छासे यह सारा जगत उत्पन्न हुआ।

३–उसीसे सबके आधार यह पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु तथा आकाश उत्पन्न हुए हैं और उसीसे सब जीवोंके प्राण, मन, इन्द्रियां तथा शरीर उत्पन्न हुए हैं।

४–उसके भयसे आग जलती है, उसके भयसे सूर्य तपता है, उसके भयसे मेघ बरसता है और उसके भयसे वायु बहती है।

५–इसलिये जिससे सब जीव पैदा हुए हैं, पैदा होकर जिससे जीते हैं और प्रलयकालमें जिसके अन्दर सब समा जाते हैं उसका भलीभांति उत्तम ज्ञान प्राप्त करनेकी इच्छा रखिये। वह सर्वशक्तिमान महान परमात्मा है।

६–भगवान महा आनन्द स्वरूप है।

७–आनन्दस्वरूप परमात्मासे ही सब प्राणी उत्पन्न होते हैं। उत्पन्न होकर आनन्द स्वरूप ईश्वरसे ही जीते हैं और प्रलय-कालमें आनन्द स्वरुप ब्रह्ममें ही सब मिल जाते हैं।

८–जो किसीका सहारा नहीं रखता उस भगवानके सहारे जो हरिजन रहते हैं उन हरिजनोंका सब तरहका डर छूट जाता है।

९-वह ऐसा है कि देखा नहीं जा सकता, पकड़ा नहीं जा सकता; वह बिना गोत्रके है और बिना वर्णके है। वह सबमें व्याप रहा है। वह बहुत सूक्ष्म है। वह न घटता है न बढ़ता है वह सब वस्तुओं तथा सब जीवोंका मूल है। उसको ज्ञानी लोग सब जगह देखते हैं। उसका जितना बखान करें और जितना गुण गावें वह सब उसकी योग्यताके आगे थोड़ा ही है।

१०-हे हरिजनो! ईश्वरको पहचाननेवाले महात्मा कहते हैं कि उसका नाश नहीं होता। वह मोटा नहीं है, वह छोटा नहीं है, वह लम्बा नहीं है वह चौड़ा नहीं है। वह बेरंगका है। उसमें कुछ लिपट नहीं सकता; उस पर किसीकी छाया नहीं पड़ सकती, वह अलग है, वह बिना संग साथके है। कोई प्रमाण उस तक नहीं पहुँच सकता; इसलिये किसीके साथ भगवानका पटतर नहीं दिया जा सकता।

११-भगवानके सहारे उसके हुक्मसे सूर्य चन्द्र नियमसे चलते हैं।

१२-भगवानके आधार पर उसके हुक्मसे यह पृथ्वी और स्वर्ग टिके हुए हैं।

१३-भगवानके आधार पर उसके हुक्मसे पल, मुहूर्त्त, रात, दिन, पखवाड़े, महीने, ऋतु तथा वर्ष आते हैं और जाते हैं।

१४-जिसका नाश नहीं उस ईश्वरको कोई आदमी नहीं देख सकता परन्तु वह सबको देखता है। कोई उसकी आवाज नहीं सुन सकता परन्तु वह सबकी आवाज सुनता है। कोई आदमी भगवानके मनकी गति नहीं जान सकता परन्तु भगवान सबके मनकी बात जान लेता है और जैसा जानना चाहिये वैसा

उसे कोई नहीं जान सकता परन्तु वह सबको अच्छी तरह जानता है।

१५-ईश्वर प्राणस्वरूप है, उससे यह सारा ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ है और उसके नियम पर चलता है।

१६-कानमें सुननेकी शक्ति उसीने दी है और उसीकी सत्तासे कानसे सुनाई देता है, इसलिये वह कानका भी कान है।

१७-आंखमें देखनेकी शक्ति उसीने दी है और उसीकी सत्तासे आंखसे दिखाई देता है; इसलिये वह आंखकी भी आंख है।

१८-मनमें संकल्प विकल्प करनेकी तथा विचार करनेकी शक्ति उसीने दी है और उसीकी सत्तासे मन अपना काम कर सकता है; इसलिये वह मनका भी मन है।

१९-वाणीमें बोलनेकी शक्ति तथा उसका अर्थ और भाव समझनेकी शक्ति उसीने दी है और उसीकी सत्तासे वाणी बोलती है तथा बात समझी जा सकती है; इसलिये वह वाणीकी भी वाणी है। उसीके हुक्मसे प्राण चलता है, उसकी शक्ति बिना प्राणसे कुछ नहीं हो सकता; इसलिये वह प्राणका भी प्राण है।

२०-पहलेके ऋषियोंका कथन है कि हमने अपने पहलेके महात्माओंसे भगवानके विषयमें ऐसा सुना है कि वह आंखोंसे नहीं दिखाई देता, उसके पास वाणी नहीं पहुँच सकती और वहां मन भी नहीं जा सकता। इसके सिवा हम उसके विषयमें कुछ भी नहीं जानते और किस तरह उसका उपदेश देना चाहिये यह भी हम नहीं जानते; क्योंकि वह जानी हुई वस्तुओंसे परे है और अजानी वस्तुओंसे भी परे है।

२१-जिसका वाणीसे वर्णन नहीं हो सकता या जो वाणीसे

पकड़ा नहीं जा सकता परन्तु जिसकी शक्तिसे वाणी बोलती है उसीको आप भगवान जानिये ।

२२-बहुत बहुत तर्क वितर्क करने पर भी जहां मनुष्यका मन नहीं पहुंच सकता परन्तु जो मनुष्यके मनकी हर एक बात जानता है उसीको आप भगवान जानिये ।

२३-जो आंखसे दिखाई नहीं देता परन्तु जिसकी शक्तिसे आंख देख सकती है उसीको आप भगवान जानिये ।

२४-जो कानसे सुना नहीं जाता परन्तु जिसके कारण कानमें सुननेकी शक्ति आयी है उसीको भगवान जानिये ।

२५-प्राणसे भी जिसका स्वरूप नहीं जाना जा सकता, परन्तु जिसकी शक्तिसे प्राण अपना काम कर सकता है उसीको भगवान जानिये ।

२६-अगर आप अपने मनमें यह समझते हों कि मैंने ईश्वरका स्वरूप बहुत अच्छी तरह जान लिया है तो निश्चय जानिये कि आपने ईश्वरके स्वरूपको बहुत ही थोड़ा जाना है ।

२७-"ईश्वर स्वरूपको अच्छी तरह जानता हूं" ऐसा मैं अपने मनमें नहीं समझता और यह भी नहीं है कि मैं ईश्वरकी महिमाके विषयमें कुछ नहीं जानता । "यह नहीं कि मैं ईश्वर-स्वरूपको नहीं जानता और यह भी नहीं कि जानता हूं" इस वचनका भेद जो समझता है वही उसे जानता है ।

२८-अच्छी तरह ईश्वरकी महिमा जानने वाले ज्ञानी भक्तोंको ऐसा लगता है कि हम ईश्वरके स्वरूपको नहीं जानते, पर अज्ञानी मनुष्योंको ऐसा लगता है कि हम भगवानका स्वरूप जानते हैं । इसलिये जो हरिजन यह समझते हैं कि हम ईश्वरका स्वरूप नहीं जानते उन्होंने ईश्वरको जाना है और जो यह समझते हैं कि हमने ईश्वरको जाना है उन्होंने ईश्वरको

नहीं पहचाना।

२९-अगर इस भवमें ईश्वर पहचान लिया जाय तो जन्म सफल हो जाता है। अगर न पहचाना जाय तो बड़ा अनर्थ होता है। इसलिये ज्ञानी मनुष्य जगतकी सब वस्तुओंमें एक मात्र भगवानको देख कर इस लोकमें शान्ति पाते हैं और फिर अमर हो जाते हैं।

३०—ईश्वर एक ही है। वह अचल है तौ भी मनके वेगसे भी उसका वेग कहीं अधिक है। सबके आगे आगे चलनेवाले ईश्वरको इन्द्रियां नहीं पहुंच सकतीं। वह स्थिर रह कर भी इन्द्रियों तथा मनके पार जा सकता है और उसीकी शक्तिसे प्राणियोंमें वायु बहती रहती है।

३१-वह चलता है और चलता भी नहीं। वह दूरसे दूर है और पाससे भी पास है, वह सबके भीतर है और सबके बाहर भी है।

३२-जगतके सब जीव तथा सब वस्तुएं भगवानके अन्दर हैं ऐसा जिसे दिखाई देता है और जगतके सब जीवों तथा सब वस्तुओंमें परमात्मा आप रूप है ऐसा जिसे दिखाई देता है वह किसीको दुःख नहीं देता और किसीका निरादर नहीं करता।

३३-भगवान सर्वव्यापक है। वह पवित्र है, वह शुद्ध है वह बिना पापके है, वह सबसे श्रेष्ठ है, वह किसीकी मददसे नहीं बल्कि अपनी ही शक्तिसे प्रकाशमान है और वह सदा सबकी ज़रूरतकी चीजें जुटा देता है।

३४-ईश्वर सत्यस्वरूप है, ज्ञानस्वरूप है और अनेक प्रकारके रूप धारण कर सकता है। जो ईश्वरको अपने अन्तःकरणमें मौजूद समझता है और अनन्य भावसे उससे एकता अनुभव करता है वह मनुष्य ईश्वरका अलौकिक आनन्द भोग सकता है।

३५-भगवान पवित्र है वह बिना अवयवके है और वह ज्योतिको भी ज्योति देनेवाला है। उस कल्याणकारी भगवानको भगवद् ज्ञानवाले ज्ञानी हरिजन अपने अन्तःकरणके भीतर देख सकते हैं।

३६-भगवानका बनाया हुआ सूर्य भगवानको तेज नहीं दे सकता, चन्द्रमा या तारे उसे तेज नहीं दे सकते और बिजली भी उसे प्रकाश नहीं कर सकती। सारा जगत उसीके प्रकाशसे प्रकाशित होता है; इतना ही नहीं, अनन्त ब्रह्माण्ड उसीके तेजसे तेजस्वी होता है।

३७-जो ज्ञानी भक्त यह समझते हैं कि ईश्वर प्राणका भी प्राण है और जगतकी हर एक वस्तुमें जुदेजुदे रूपसे भी वही मौजूद है वे भक्त भगवानका ही गुण गाया करते हैं और भगवानकी बातके सिवा और कोई बात नहीं करते। इसके सिवा वे भगवानमें रमते हैं, भगवान पर प्रेम रखते हैं और भगवानके लिये अच्छे अच्छे काम किया करते हैं। ऐसे भक्त हरिजनोंमें सबसे श्रेष्ठ हैं।

३८-वह बड़ेसे बड़ा है. वह अपने प्रकाशसे ही प्रकाशमान है और उसका स्वरूप ध्यानमें नहीं आ सकता; क्योंकि वह सूक्ष्मसे सूक्ष्म है, वह जुदे जुदे रूपोंमें रहनेवाला है, वह दूरसे भी दूर है वह पाससे भी बहुत पास है, वह इसी आत्माके अन्दर मौजूद है।

३९-भगवान आँखोंसे नहीं दिखाई देता; वाणी वहां नहीं पहुंच सकती और दूसरी कोई इन्द्री भी उसको नहीं पकड़ सकती। तप करने या यज्ञ आदि कर्म करनेसे भी भगवान नहीं मिलता। परन्तु जब वृत्तियां शान्त हों, अन्तःकरण शुद्ध हो, उत्तम ज्ञान हो और सच्चा ध्यान लगाया जाय तभी विकार-

रहित भगवान मिलता है।

४०—वह महान है, वह नियममें रखनेवालोंको भी नियममें रखनेवाला है। वह देवताओंको भी देवत्व देनेवाला है, वह राजाओंका भी राजा है, वह मायासे अलग है और मायासे श्रेष्ठ है। वह अपना तेज रखता है वँहइस लोक तथा परलोकको नियममें रखनेवाला है। उस स्तुति करने योग्य भगवानको हम जानना चाहते हैं।

४१—उसको शरीर नहीं है, उसको इन्द्रियां नहीं हैं। कोई उसके ऐसा या उससे श्रेष्ठ देखने या सुननेमें नहीं आता। उसकी अद्भुत शक्ति सब जगह जुदी जुदी रीतियोंसे सुननेमें आती हैं और उसकी ज्ञान शक्ति तथा बल क्रिया स्वाभाविक है।

४२—सारे ब्रह्माण्डमें उसका कोई मालिक नहीं और उसको कोई नियममें रखनेवाला नहीं। उसका कोई आकार या चिह्न नहीं है पर वह सबका कारण है। उसे कोई उत्पन्न करनेवाला नहीं और उसे कोई पालने वाला भी नहीं।

४३—ईश्वर एक ही है। वह स्वयं प्रकाश है। वह जगतकी सब वस्तुओंमें तथा सब प्राणियोंमें गूढ़ रूपसे मौजूद है। वह सर्वव्यापक है। वह सब प्राणियोंके भीतर है। वह सबको कर्मका फल देने वाला है, वह सब जीवोंके ठहरनेका ठिकाना है वह सबका साक्षी है, वह चैतन्य रूप है, वह विना उपाधिके और वह गुणोंमें लिप्त होनेवाला नहीं।

४४—जो भगवान विना भेदके है, सबको वशमें रखनेवाला है और एक ही तत्वसे अनेक कार्य्य करने वाला है वही भगवान मेरी अंतरात्मामें मौजूद है जो ऐसा अनुभव कर सकता है उसे ऐसा सुख मिलता है जिसका कभी नाश नहीं। जो भगवानके साथ इस प्रकार तन्मय नहीं हो सकते उनको यह सुख

नहीं मिलता।

४५—जो नित्य रहनेवाली वस्तुओंको भी नित्यता देनेवाला है, जो चैतन्यका चैतन्य है, जो अकेले जगतके सब तत्वोंका जैसा चाहिये वैसा भोग देता है, जो जगतका कारण है और जो ज्ञान तथा योग जानने योग्य है उस भगवानको जो जानता है वह जन्म मरण आदि सब प्रकारके बन्धनोंसे छूट जाता है।

४६—इस विश्वका बनानेवाला परमेश्वर है, वह महात्माओंके हृदयमें सदा उत्तम रूपसे रहता है और जब भीतरसे सब प्रकारका संशय मिट जाता है तब वह प्रकाशित होता है। जो उसको जानते हैं वे मृत्युके भयसे छूट जाते हैं।

४७—वह सब वस्तुओंमें छिपे तौर पर है; वह अन्तरात्मामें है, वह नन्हेसे नन्हे परमाणुओंमें भी है और वह पुरानेसे पुराना है। उसका ज्ञान प्राप्त करना बड़ा कठिन है तो भी धीरज धर कर जो हरिजन अपने अन्तःकरणमें गहरे उतरते जाते हैं वे परमात्माको जान सकते हैं। और जो उसको जानते हैं वे हर्ष शोकसे छुट्टी पा जाते हैं।

४८—वह जगतका कर्त्ता है, वह सबको जाननेवाला है, वह सबकी आत्मा है, वह सबका कारण है, वह चैतन्य रूप है, वह कालका भी कर्त्ता है, वह अलौकिक गुणवाला है, वह सबको सब तरहसे जानने वाला है, उसमें कुछ भी फेर बदल नहीं होता, वह सब जीवोंका स्वामी है, वह सब गुणोंको नियममें रखनेवाला है और सबको कर्मके अनुसार बन्धन तथा मोक्ष देनेवाला है।

४९—जिस भगवानके हुक्मसे रात और दिनके द्वारा वर्षोंका और कालका चक्कर फिरा करता है उस महान् ईश्वरकी उपासना किया करते हैं।

५०–हर एक वस्तुमें भगवान नखसिख हो रहा है। वस्तुका नाश होने पर भी उसका नाश नहीं होता।

५१–जो परमात्मा सृष्टिकी उत्पत्तिके समय ब्रह्माको पैदा करता है और उसको ज्ञान देता है तथा जो हमारी आत्मामें साक्षी रूपसे मौजूद है उस भगवानकी, हम अपने उद्धारके लिये, शरण लेते हैं।

५२–वह वेलाग है, वह विना किसी क्रियाके है, वह सदा शान्तिमें रहने वाला है। उसका स्वरूप किसीसे पूरा पूरा नहीं जाना जा सकता। वह किसी तरहकी भूल नहीं करता और उसे किसी तरहका दोष नहीं लगता। उसका कभी नाश नहीं होता। वह जीवोंको भवसागर पार उतारनेमें बढ़ियासे बढ़िया पुलके समान है और लकड़ी जल जानेके बादकी प्रकाशमान अग्निकी तरह वह प्रकाशमान है।

५३–वह सबका ईश्वर है। वह सब जीवों तथा सब वस्तुओंका मालिक है। वह सब तरहके सब जीवोंका पालनेवाला है और लोगोंके कल्याणके लिये ही आप संसार सागर पार होनेके पुल समान बन कर सारा बोझ अपने ऊपर उठाता है।

५४–स्वर्ग, पृथ्वी, आकाश, मन और इन्द्री आदि सभी विषय जिस एकके आधार पर हैं वह भगवान ही सबको मोक्ष देनेवाला है, इसलिये और बातें छोड़कर भगवानको पहचानो।

५५–जो परमात्मा ज्योति रूप है, जो अणुसे भी छोटा है और जिसमें अनन्त ब्रह्माण्ड तथा सब जीव मौजूद हैं वही सत्य है, वही अविनाशी है और उस परमात्माको आत्मा ही पकड़ सकती है। इसलिये हे हरिजनो ! अनन्य भावसे अपनी आत्माको परमात्माके साथ तन्मय करो।

५६–जीव जब सो जाते हैं तौ भी जो जागता रहता है

और सबके लिये जरूरतकी चीजें बनाता है तथा सब लोग जिसके आसरे हैं पर जो किसीके आसरे नहीं है वही सर्वशक्तिमान ईश्वर है और वही आनन्दरूपी अविनाशी है ।

५७-ईश्वर छोटेसे छोटा है, बड़ेसे बड़ा है और वह सब जीवोंके अन्तःकरणमें मौजूद है, तौभी वह दिखाई नहीं देता। पर जब उसकी कृपासे उसकी महिमा समझमें आवे और फिर जिनके मनमें किसी प्रकारकी कामना न रहे तथा किसी तरहका अफसोस न रहे वे महात्मा परमात्माका दर्शन कर सकते हैं।

५८-ईश्वर एक ही है। वह सबको वशमें रखता है। वह सब प्राणियों तथा सब वस्तुओंके भीतरकी आत्मा है और वह एकसे अनेक प्रकारके रूप बना सकता है वह सर्वशक्तिमान ईश्वर आपरूप मेरी आत्मामें मौजूद है-जो भक्त इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता है उसे कभी नष्ट न होने योग्य सुख मिलता है। उसके सिवा और किसीको ऐसा सुख नहीं मिलता।

५९-सारे जगतमें भगवान व्याप रहा है। इसलिये समझ लीजिये कि सब जगह उसका हाथ है, सब जगह उसका पैर है, सब जगह उसका मुंह है और सब जगह उसका कान है।

६०-भगवानको किसी तरहका परदा नहीं रोकता, लाल पीला आदि कोई रंग उसमें नहीं है। वह पवित्र से पवित्र है और कभी नाश न होनेवाला है। ऐसे समर्थ परम पुरुषको जो मनुष्य जानता है वह उसको पाता है।

६१-आंखसे भगवान दिखाई नहीं देता, हाथ पैर आदि इन्द्रियोंसे वह पकड़ा नहीं जाता, वह किसी शब्दसे नहीं जाना जाता, वह किसी लक्षणसे समझा नहीं जा सकता और वह ध्यानमें नहीं आ सकता, क्योंकि वह संसारके सब तरहके सब धर्मोंसे अलग है। वह एक ही है, वह अखण्ड शान्तिवाला

है, वह महामङ्गल स्वरूप है और ऐसा है कि केवल हमारी आत्मा उसे पकड़ सकती है।

६२–हमारे हृदयके भीतर जो परमात्मा है वह लड़केसे भी बहुत प्यारा है, धनसे भी बहुत प्यारा है और जगतकी सब वस्तुओंसे भी बहुत प्यारा है।

६३–जिसका कभी नाश नहीं होता उस एक भगवानके सिवा जगतकी सब चीजें नष्ट हो जानेवाली हैं। इसलिये भगवानके सिवा जगतकी दूसरी चीजोंको जो मनुष्य प्यारा समझता है उस मनुष्यसे अगर कोई ज्ञानी भक्त यह कहे कि तुम्हारी प्यारी वस्तुओंका नाश हो जायगा तो यह बात सच है, क्योंकि अंतको ऐसा ही होता है। इसलिये नष्ट हो जानेवाली वस्तुओंको प्यार करनेके बदले अविनाशी भगवानको प्यार कीजिये। वह आपका प्यारा स्वामी कभी नष्ट नहीं होगा।

६४–सब जगह भगवानकी महिमा देखिये, भगवानके गुणकी बातें कीजिये भगवानके स्वरूपका मनन कीजिये और सदा भगवानमें ही जीवको लगाये रखिये।

६५–ईश्वर सब जीवोंका स्वामी है और वह राजाओंका राजा है।

६६–गाड़ीके पहियेमें जैसे अलग अलग लकड़ियां होती हैं और वे सब जैसे बीचके एक ही मोटी लकड़ीसे निकली हुई होती हैं और एक ही परिधिके अन्दर होती हैं वैसे ही आकाश, वायु, अग्नि, पानी तथा पृथ्वी आदि सब लोक, सब प्राण और सब जीव परमात्मासे निकले हैं और परमात्मामें ही मौजूद हैं।

६७–जिसका आदि अंत नहीं, जो सब जगह व्याप रहा है और जिससे यह सारा जगत उत्पन्न हुआ है। उस परमात्माको हम नमस्कार करते हैं और उसमें अपनी आत्माको लगाते हैं। इति।

युवाओंको उपदेश ।

लेखक—

दयाचंद गोयलीय बी. ए. ।

युवाओंको उपदेश।

इंग्लैण्डके प्रसिद्ध लेखक विलियम काबेटके
'एडवाइस् टू यंग मेन' नामक ग्रंथके
आधारसे लिखित।

लेखक—

स्व० बाबू दयाचन्द्र गोयलीय, बी. ए.।

प्रकाशक—

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव-बम्बई।

पौष, १९७५, विक्रमाब्द।

तीय संस्करण] जनवरी १९१९ ई०। [मूल्य नौ आने

प्रकाशक,
नाथूराम प्रेमी,
हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई।

मुद्रक,
रा० चिंतामण सखाराम देवळे,
बम्बईवैभव प्रेस,
सेण्डहर्स्ट रोड, गिरगाँव, बम्बई।

प्रस्तावना ।

सद्विचारों और सदुपदेशोंका जितना असर युवावस्थामें होता है उतना वृद्धावस्थामें नहीं हो सकता, इस विषयमें संसारभरके विद्वानोंका एक मत है। युवावस्थामें ही मनुष्यके चरित्रका संगठन होता है। जो आदतें युवावस्थामें पड़ जाती हैं वे फिर जन्मभर नहीं छूटतीं। जो विचार युवावस्थामें हृदयमें स्थान पा लेते हैं वे जीवनपर्यंत नहीं निकलते। युवावस्थासे प्रौढ और वृद्धावस्थाका पता लगता है। अमुक मनुष्य वृद्धावस्थामें कैसा होगा, इसका बोध उसकी युवावस्थाके देखनेसे हो सकता है। अतएव इस बातकी अत्यंत आवश्यकता है कि युवावस्थाको जितना उत्तम हो सके बनाया जाय। कितने ही मनुष्य जिनकी उमर इस समय ४० या ५० वर्षकी है अपनी अनेक वासनाओं और आदतोंपर घृणा और पश्चात्ताप करते हैं; परंतु उन्हें छोड़ नहीं सकते। कारण कि वे ऐसी दृढ़ होगई हैं कि अब छुटाये नहीं छूट सकतीं। कितने ही युवक युवावस्थामें अपने ज्ञान और कर्तव्यसे अनभिज्ञ रहते हैं और वृद्धावस्थामें भी पहुँचकर उन्हें अपने कर्तव्योंका ज्ञान नहीं होता। इस कारण अनुभवी विद्वानोंका कर्तव्य है कि वे युवाओंको युवावस्थामें विद्या प्राप्त करने, अच्छी आदतोंके डालने, सद्विचारोंके ग्रहण करने और एक दूसरेके प्रति कर्तव्य पालन करनेका उपदेश देते रहें; जिससे वे सन्मार्गके अनुगामी होकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें और संसारको लाभ पहुँचा सकें।

इंग्लैंडके प्रसिद्ध नैतिक विद्वान् विलियम कावेट (William Cobbett) ने इसी अभिप्रायसे सन् १८२९ ई० में इंग्लैंडके युवाओंको उपदेश देनेके लिए अपने ७० वर्षके अनुभवसे ' एडवाइस् टू यंग मेन ' (Advice to Young Men) नामकी एक पुस्तक अँगरेजी भाषामें लिखी थी। इस पुस्तकसे निःसंदेह हजारों अँगरेज युवाओंको अपार लाभ पहुँचा है। इसने सैकड़ों युवकोंके चरित्रका सुधार कर उनको कुमार्गसे सन्मार्गपर लगा दिया है। अँगरेजी साहित्यकी नैतिक पुस्तकोंमें इस पुस्तकका बड़ा नाम है। अँगरेजी जाननेवाले भारतवासी भी इस पुस्तकसे भलीभाँति परिचित हैं।

यद्यपि अँगरेजी साहित्यमें ऐसी सैकड़ों नैतिक पुस्तकें हैं, परंतु इस पुस्तकका महत्त्व इस कारणसे अधिक बढ़ा हुआ है कि कावेट साहबने इसे अपने निजी अनुभवसे लिखा है। ११-१२ वर्षकी अवस्थासे बिना किसी प्रकारकी सहाय-

ताके अपनी आजीविकाका भार अपने ऊपर लेकरके ६७ वर्षकी अवस्थापर्यंत जो कुछ अनुभव कावेट साहवने प्राप्त किया है उसीको उन्होंने इस पुस्तकमें लिखा है।

इस पुस्तकमें युवाओंको, युवकोंको, विवाह करनेवालोंको, पतिको, पिताको और नागरिकोंको उपदेश दिया गया है। कावेट साहव इन छहों अवस्थाओंमें रहे हैं। उनका अनुभव छहों अवस्थाओंमें सर्वमान्य है। वास्तवमें उपदेश देनेका अधिकारी वही है, जिसे उस अवस्थाका पूर्ण ज्ञान और अनुभव हो जिस अवस्थाके लोगोंको वह उपदेश देता है। ' कहनेसे कर दिखाना अच्छा है ' यह कहावत काबेट साहवपर पूर्ण रूपसे चरितार्थ होती है। कावेट साहवने स्वयं अपने विपयमें अपनी पुस्तककी भूमिकामें लिखा है कि " जव मेरी अवस्था केवल ११,१२ वर्षकी थी मुझे आजीविकाकी चिन्ता हुई। उस समय न मेरे पास रुपया था, न कोई मेरा सहायक था; न किसीने मुझे शिक्षा दी थी और न कोई मेरा सलाहगीर था। कई वर्ष तक मुझे स्वयं अपने हाथसे मजूरी करके अपनी उदरपालना करनी पड़ी। कुछ कालके वाद मैं फौजमें भरती हो गया और ८ वर्ष तक विदेशोंमें लड़ाईका काम करता रहा। इसी अवस्थामें मैंने स्वयं लिखना पढ़ना और हिसाव कितावका काम सीखा। मैं किसी स्कूलमें नहीं पढ़ा। मैंने जो कुछ सीखा वह सव स्वाध्यायसे, नौकरी करते हुए सीखा। फौजमें काम करते करते मेरा दरजा वढ़ गया और मेरे पास काफी रुपया हो गया। तव मैंने शादी कर ली और फिर मैं फ्रेंच भापा सीखनेके लिए फ्रांस चला गया। वहाँसे अमेरिका गया। वहाँ मैंने ८ वर्प तक पुस्तकें लिखने, पत्रसम्पादन करने और पुस्तक वेचनेका काम किया और सन् १७९३ ई० से १७९८ के वीचमें जो जो राजनैतिक आन्दोलन और वादविवाद हुए उन सवमें मैंने योग दिया। वहाँसे सन् १८०० ई० में इंग्लैंड लौट आया और इंग्लैंडमें २९ वर्प तक रहा। इस वीचमें मुझे कितने ही कष्ट उठाने पड़े। मैं दो वर्प तक कैदखानेमें रहा, तीन वर्प तक देशनिकाला रहा, मैंने भारी भारी जुरमाने दिये, मेरी सारी सम्पत्ति नष्ट हो गई, तथापि मैं वरावर अपना साप्ताहिक पत्र निकालता रहा। २९ वर्पमें केवल ११ सप्ताह मेरा पत्र वंद रहा। पुस्तकें भी मैंने पचासों लिखीं। आविष्कार भी अनेक किये। दूकान भी लंदनमें वरावर चलाई। नौकर भी मेरे यहाँ छापनेवालों और जिल्द वाँधनेवालोंको छोड़कर कभी १० से कम नहीं रहे। अपना और अपनी स्त्रीके सिवाय सात वच्चोंके पालन-पोपण और

शिक्षणका प्रबंध मैंने किया। यदि इतना करनेपर भी मैं ७० वर्षकी उमरमें पहुँचकर युवाओंको उपदेश देनेके योग्य नहीं हूँ तो फिर मैं कह सकता हूँ कि, कोई भी मनुष्य इस कामके योग्य नहीं है। मैंने सदा शत्रुओंका सामना किया है। मैं सत्यपर दृढ़ रहा हूँ। मैंने कभी चापलूसीसे लोगोंको अपना मित्र नहीं बनाया। मैं सदा संयमी, परिश्रमी, साहसी, स्वावलम्बी, दृढ़, मितव्ययी और नित्य प्रातः-काल उठनेवाला रहा हूँ। इसी कारण मैं अनेक आपत्तियोंको सहते हुए भी अपने कार्यमें तत्पर रहा हूँ और मुझे सफलता प्राप्त हुई है। मुझे विश्वास है कि जो युवक मेरी पुस्तकको एक बार पढ़ लेंगे वे अवश्य पहलेसे अधिक परिश्रमी और साहसी बन जायँगे। मेरे पास हजारों लोगोंके ऐसे पत्र आये हैं कि जिनमें उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें लिखा है कि हमें आपकी पुस्तकके पढ़नेसे बड़ा लाभ हुआ है। कितने ही लोगोंने यह लिखा है कि यदि आपकी पुस्तक हमें कुछ वर्ष पहले पढ़नेको मिल जाती तो अबसे ज्यादह लाभ होता; कारण कि जो आदतें हमारी इस समय पड़ गई हैं उनका छूटना कठिन है।"

'युवाओंको उपदेश' काबेट साहबकी इसी पुस्तक 'एडवाइस् टू यंग मेन' (Advice to young men) का हिन्दी भावानुवाद है। इसे मूल ग्रंथ-कर्ताने इंग्लैंडकी परिस्थितिको लक्ष्य करके लिखा है। हमने अपने अनुवादमें उन बातोंको छोड़ दिया है, जिनसे भारतवासियोंको विशेष लाभ नहीं। मूल ग्रंथ-कर्ताने तीसरे अध्यायमें रसिकों और प्रेमियोंको उपदेश दिया है। भारतमें ऐसी प्रथा नहीं और न इसकी आवश्यकता है कि पुरुष स्त्रियोंके पीछे पीछे फिरें और उन्हें रिझानेकी कोशिश करें। अतएव हमने इस अध्यायमें कुछ हेरफेर कर दिया है और वर और कन्यामें क्या क्या गुण होने चाहिए, इनको लिखते हुए हमने मूल ग्रंथकारके भावोंकी यथासाध्य रक्षा की है। अन्य स्थानोंपर भी यद्यपि हमने आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया है, परंतु मूलके भावोंको कहीं भी नष्ट नहीं होने दिया है। वास्तवमें यह पुस्तक युवाओंके बड़े कामकी है। इसके एक बार पढ़ लेनेसे कुछ न कुछ लाभ होनेकी अवश्य सम्भावना है। हमें आशा है कि भारतके युवा इसे एक बार अवश्य पढ़ेंगे और इससे यथेष्ट लाभ उठायँगे। हमारा परिश्रम भी तभी सफल होगा।

लखनऊ,
२०-४-१६.

दयाचन्द्र गोयलीय।

विषय-सूची।

युवाओंको उपदेश ।
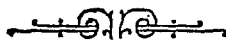
पहला अध्याय ।
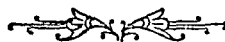
अब तुम उस अवस्थापर पहुँच गये हो जिस अवस्थामें तुम कानूनकी रूसे कचहरीमें जाकर अदालतके सामने कसम खा-सकते हो । मैं इस समय तुम्हारी अवस्था चौदह और बीस वर्षके बीचमें समझता हूँ । अपने माता पिताके प्रति तुम्हारे क्या कर्त्तव्य हैं, इसका इस अध्यायमें जिक्र न करके इस समय मैं तुम्हें उन्हीं बातोंका उपदेश दूँगा कि जिनसे तुम्हें सच्चा सुख प्राप्त हो, तुम्हारा जीवन आदर्श जीवन कहलाये, तुमसे तुम्हारे पास रहनेवालोंको लाभ पहुँचे और तुम्हारे कारण तुम्हारे मातापिताका गौरव बढ़े ।

मैं तुमसे नम्रतापूर्वक कहता हूँ कि तुम इस बातको अपने मनमें अच्छी तरह जमा कर रख लो कि जबतक तुम्हारे पास पुष्कल द्रव्य न हो, चाहे तुम नीरोग और स्थिरचित्त क्यों न हो, तबतक किसी न किसी प्रकारका काम किये बिना तुम संसारकी किसी भी अवस्थामें निवास करनेके अधिकारी नहीं हो । उस अवस्थामें भी तुम्हें इस बातका कोई अधिकार नहीं है कि तुम दूसरे आदमियोंके भरोसे पर बच्चोंको पैदा

करो, जिन्हें दैवदुर्विपाकसे दूसरोंके पास जाना पड़े। इस बातको अपने मनमें अच्छी तरह रखकर किसी कामको प्रारम्भ करो। दूसरे मनुष्योंके आश्रित रहनेका विचार करना मूर्खता ही नहीं है किन्तु धोखा देना भी है और किसी किसी दशामें तो अन्याय करना और डाका डालना है।

मैं तुमको जीवनकी मध्यम अवस्थामें समझता हूँ। आनंद प्राप्त करना तुम्हारा परम कर्त्तव्य होना चाहिए; परंतु यह भी ध्यान रहे कि वह आनन्द स्वाधीनतामें ही प्राप्त हो सकता है। महलों और राज्यगृहोंसे मुँह मोड़ लो, मादक द्रव्योंको निर्बल और नीच मनुष्योंके लिए छोड़ दो, सफलताके लिए दूसरोंकी मिहरबानी, तरफदारी और मित्रताको साधक मत समझो। इस बातको अपने हृदयमें अंकित कर लो कि तुम पूर्णरूपसे अपनी ही शक्ति और योग्यताके आश्रित रहोगे। उन अवस्थाओंमेंसे किसी एकका भी संकल्प अपने मनमें न लाओ जिनमें अच्छे अच्छे नुमायशी कपड़ों और पदवियोंकी भरमार रहती है और जो गुलामोंके दुःख-दर्दको आँखोंसे ओझल रखती हैं। ऐसी दशायें आनंदको बढ़ानेवाली नहीं होतीं। यह अनुभवसिद्ध बात है।

युक्तिसे भी यही सिद्ध होता है कि जो कुछ मनुष्यको दूसरेकी मिहरबानी और तरफदारीहीसे मिलता है, उसके चले जानेकी भी सदा सम्भावना रहती है। जो मनुष्य श्रम नहीं करता है और श्रमके अतिरिक्त अन्य वस्तुओंपर भरोसा करता है उसको समझ लेना चाहिए कि वह बराबर शत्रुओंसे घिरा हुआ है। वह सदा दूसरोंका दास बना रहता है और उसे दूसरोंकी हाँमें हाँ मिलानी पड़ती है। उसकी आजीविका दूसरोंकी इच्छा पर निर्भर होती है। उसकी दशा बड़ी अनिश्चित और दुःखमय होती है। ऐसे मनुष्यका जीवन कुत्तेके जीवनसे भी बदतर होता है, कारण कि उसमें गुलामीके साथ सुस्ती भी मिली रहती है। सुस्तीके कारण उसे गुलामीके दुःखोंको भी सहना पड़ता है। यद्यपि गुलामोंको अच्छा

खिलाया पिलाया जाता है, परन्तु उनमें यह हिम्मत नहीं कि वे अपने मालिकके सामने एक शब्द भी बोल सकें । उनके विषयमें यह विचार-तक भी नहीं किया जा सकता कि वे मालिकके विरुद्ध कुछ विचार करते हों । चाहे मालिक उनकी कितनी ही निंदा करे, चाहे मालिक शराबी हो, चाहे मूर्ख हो और चाहे उसमें सारे अवगुण हों; परंतु गुला-मोंको हमेशा चुप रहना पड़ेगा और बहुत करके उनकी हाँमें हाँ मिलानी पड़ेगी । वे चाहे बुद्धिमें मालिकसे हजार गुना बढ़े हों, परंतु उन्हें मालि-ककी बुद्धिकी ही सराहना करनी पड़ेगी । यद्यपि वे जानते हैं कि जिस कामके लिए मालिकको रुपया मिलता है, उसे हम ही करते हैं; परंतु उनका जरा भी जबान खोलना मानो अपने ऊपर मौतको बुलाना है. नवयुवको, मुझे स्वप्नमें भी ख्याल नहीं आता कि तुममेंसे कोई भी नव-युवक जो इस पृष्ठको पढ़ेगा, इस नीच दशामें रहना पसन्द करेगा । यह अवस्था लँगड़ों, अंधों, और अभागे प्राणियोंके लिए है जिनको प्रकृतिने नीचे गिरनेके लिए ही बनाया है ।

अब प्रश्न यह है कि यदि यह बात है तो फिर किस लिए हमारे हृष्टपुष्ट और चतुर नवयुवक गुलामीके लिए स्वतः सिर झुकाये हुए हैं; यही नहीं किंतु गुलामीमें बाजी लेजानेके लिए अपने सिरपर जुआँ रख रहे हैं जिसके लिए वे किसी प्रकार भी समर्थ नहीं हैं । इसका मुख्य कारण यह है कि आजकलके सत्यानाशी फेशनने आवश्यकताओंको इतना बढ़ा दिया है और हमारे नवयुवकोंके मस्तकोंको इतना ऊँचा कर दिया है कि उनको अपनी वास्तविक दशा या स्थितिका कुछ भी ख्याल नहीं रहता और वे इसी कारण अपनी छोटीसी जीविका, सामान्य भोजन और सादी पोशाकसे घृणा करने लगते हैं और उस हालतसे बचनेके लिए जिसमें वे आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकते, वे धीरेधीरे गुला-मीकी बेड़ीसे जकड़ते जाते हैं ।

फ्रेंच भाषामें एक कहावत है कि 'थोड़े पर संतोष करो।' यही गुलामीसे बचने और स्वाधीन रहनेका सबसे अच्छा साधन है। मैं इसको बहुत पसंद करता हूँ और यह सिर्फ तुम्हारे खाने-पीनेकी चीजों पर ही नहीं, किंतु सब बातों पर लागू है।

डाक्टर जानसनने अँगरेजी भाषाका एक बड़ा भारी कोश बनाया है। उसमें उन्होंने पेन्शनर शब्दका अर्थ किया है-'राज्यके गुलाम।' परंतु ऐसा लिखनेके थोड़े दिनों बाद ही वे स्वयं पेन्शनर होगये और अपनी परिभाषाके अनुसार गुलामीमें रहते हुए ही मरे। अब प्रश्न यह है कि इस बुद्धिमान् और परिश्रमी मनुष्यने पेन्शन पाते समय क्या विचार किया होगा? क्या उसके मनमें अपनी परिभाषाके अनुसार अपने जीवनको व्यतीत होते हुए देखकर दुःख न होता होगा? अवश्य होता होगा। तो अब विचारणीय यह है कि किन वस्तुओंके कारण उसे इस अवस्थामें रहना पड़ा। इसका उत्तर यह है कि उसकी आवश्यकताओं और व्यर्थकी आवश्यकताओंने, अच्छे अच्छे स्वादिष्ट पदार्थोंके खानेकी चाटने उसके मनको विचलित कर दिया। इस प्रकारके भोग-विलास ही मनुष्यको निर्धन बना देते हैं, उससे बुरे बुरे कर्म करवाते हैं, उसके शरीरको दुबला कर देते हैं और सबसे जियादा खराबी यह है कि उसके दिमागको कमजोर बना देते हैं। नवयुवको, तुम्हें इनसे बहुत सावधान रहना चाहिए।

जब उक्त प्रसिद्ध ग्रन्थकारने अपना कोश रचा था, उस समय वह भोग-विलासोंमें लिप्त नहीं था, धनिकों और बलवानोंने उसे लाड़ प्यार करके गुलाम नहीं बनाया था। उस समय उसकी लेखनी सत्य और स्वाधीनताकी घोषणा कर रही थी। परंतु भोग-विलासोंमें लिप्त होकर वही जानसन जो कभी रूखी रोटी खाकर सन्तोष किया करता था, और लोगोंके स्वत्वोंके रक्षणार्थ कटिबद्ध रहा करता था, अब लोगोंपर

कर लगानेके पक्षमें हो गया और यहाँतक कि उसने 'कर कोई निर्दयता नहीं है' इस नामकी एक पुस्तक भी लिख डाली; जिसने उस अनुचित और रक्तपरिपूर्ण युद्धको बहुत सहायता दी, जिसके कारण अमेरिकाका संयुक्त प्रदेश इंग्लैंडसे सदैवके लिए पृथक् हो गया। डाक्टर जानसनकी मूर्त्ति पहले पहल सेंटपालके गिर्जेमें रक्खी गई थी। नवयुवको, यह मूर्ति हमें चेतावनी देती है कि मृतक मनुष्योंके लिए जो स्मारकचिह्न बनाये जाते हैं उनसे हमें यह न समझ लेना चाहिए कि वे उनके गुणोंको ही दर्शाते हैं।

ऐसे ऐसे एक नहीं किंतु सैकड़ों दृष्टान्त उन योग्य पुरुषोंके मिल सकते हैं जो धीरे धीरे अपनी काल्पनिक इच्छाओंसे निर्बल और अशक्य हो गये हैं। इंग्लैंडमें चार्ल्स फाक्स (Charles Fox) नामका एक बड़ा आदमी हुआ है। बड़े बड़े कामोंके करने और प्रतिष्ठा प्राप्त करनेमें शायद ही कोई दूसरा आदमी उसकी जोड़का हुआ हो। उसकी योग्यता बहुत बढ़ी-चढ़ी थी और सफलता प्राप्त करनेके लिए वह समय भी बहुत ही अनुकूल था। जातिके अधिकतर मनुष्य उसकी प्रशंसा करते थे और उसके पक्षपाती थे। एक बड़ा प्रश्न जो उसके और उसके शत्रु पिटके बीचमें चल रहा था उसमें नीति और न्याय पर भी वही था, परन्तु इन सब गुणोंके होते हुए उसमें व्यर्थ-व्यय और भोग-विलासकी आदतें अधिक थीं। उन्होंने उसे धनाढ्योंके अधीन बना रक्खा था। उसकी सुबुद्धि कुबुद्धि और स्वार्थपरताके रूपमें परिणत हो गई थी। उसके देशको जो उसकी योग्यतासे लाभ पहुँचता वह सब जाता रहा और परिणाम यह हुआ कि उसके मरनेपर लोगोंने उसके लिए एक आह भी न भरी।

कपड़ोंकी तथा नाच-रंग-तमाशोंकी चीजोंकी फिजूलखर्चीको एकदम दूर कर देनी चाहिए। नवयुवकोंके कपड़ोंकी फिजूल-खर्चीसे तो खास-

तौरसे बचना चाहिए । यह फिजूलखर्ची और इस प्रकार रुपयोंको शारीरिक सुंदरतामें खोनेका विचार झूठ और अहंकारसे पैदा होता है। यह अहंकार प्रायः इस विचारसे होता है कि यदि हम अच्छे कपड़े पहिनकर बाजारमें निकलेंगे तो लोग हमें देखकर हमारे विषयमें अच्छा ख्याल करेंगे, परंतु यह विचार सर्वथा मिथ्या है । समझदार लोगोंको कुछ भी ख्याल नहीं होगा, हाँ जिन लोगोंके विचार तुम्हारे जैसे ही हैं, वे तुम्हें देखकर अवश्य समझेंगे कि तुम उनको धोखा देनेकी कोशिश कर रहे हो और इस कारण वे तुम्हें घृणा और ईर्ष्याकी दृष्टिसे देखेंगे। धनाढ्य लोग तो तुम्हारा ख्याल तक भी नहीं करेंगे । तुम्हारे कपड़े तुम्हारी अवस्था और स्थितिके अनुसार होने चाहिए । लोगोंका यह विचार करना कि 'बाहरी चटक-मटकसे कुछ लाभ होगा' व्यर्थ है। लोगोंकी कदर उसी समय होती है जब वे अपनी शक्ति और योग्यतानुसार दूसरोंको लाभ पहुँचा सकते हैं।

तुम्हारी पोशाक बहुत ही सस्ती होनी चाहिए । तुम्हें अपने कोटकी रंगत और बनावटकी अपेक्षा कुरतेके रंगका जियादा ख्याल रखना चाहिए। जहाँतक हो सके स्वच्छ और साफ रहो । एक क्षण भरके लिए भी यह विचार अपने मनमें न लाओ कि जिनको ईश्वरने जरा भी बुद्धि दी है वे तुम्हें बढ़िया कपड़े पहने देखकर खुश होंगे, अथवा तुम्हारा आदर करेंगे। आज कल ऐसा बुरा हाल है कि हरएक आदमी अपनी असली हालतसे बढ़कर रहना चाहता है और कामसे जी चुराता है। इसीने हमारा सत्यानाश कर रक्खा है । चाहे आमदनी १० रु० की भी न हो, चाहे घरमें दोनों समय खाना भी न पकता हो; परंतु बाबू साहबके सिरपर फेल्ट कैप, पैरमें बूट जूता और बदनमें अँगरेजी कोट होना जरूरी है । इसीमें शान है । इसीका परिणाम है कि थोड़े ही दिनोंमें बाप-दादोंकी कमाई हुई जायदाद एक,

दो, तीन हो जाती है । नवयुवको, कपड़ोंसे अथवा बाहिरी फेशनसे कभी प्रतिष्ठा नहीं होती । यदि तुम्हारे अंदर कुछ गुण है तो चाहे तुम गाढ़ेके कपड़े पहने हुए हो, लोग तुम्हारे सामने मस्तक झुकायँगे; परंतु यदि तुममें गुण नहीं हैं तो चाहे तुम ऊपरसे नीचेतक जरीमें भी अपनेको लपेट लो, कोई तुम्हें पूछेगा भी नहीं । पूछ गुणोंकी होती है न कि बाहरी सज-धजकी । तुम्हें चाहिए कि दूसरोंकी नकल न करके अपनी स्थितिके अनुसार रहो, अपने समयको व्यर्थ न खोओ, तथा उद्योगी और परिश्रमी बनो ।

खानेपीनेमें भी तुम्हें बड़ी सावधानी रखनी चाहिए । शराबको कभी भूलकर भी न चक्खो । मांस-मदिराके सेवन करनेसे नाना प्रकारके रोग उत्पन्न हो जाते हैं, स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, और धनका सर्व-नाश हो जाता है । ये बहुत बुरे व्यसन हैं । इनसे बचना चाहिए । संसार भरके धर्मग्रंथ इस बातको स्पष्ट रूपसे कह रहे हैं कि मदिरा-पानसे हानिके सिवाय लाभ कुछ भी नहीं है । बाइबलमें लिखा है कि "ईश्वरने इजरायली लोगोंको हजरत मूसा द्वारा इस बातकी आज्ञा दी कि यदि तुम्हारे पुत्र मदिरापान करें और तुम्हारा कहना न मानें तो तुम उन्हें नगरके मुखिया लोगोंके पास ले जाओ । वे उनको इतने पत्थर मारेंगे कि उनके प्राण निकल जायँगे ।" खानेके लिए सादा खाना और पीनेके लिए सादा पानी होना चाहिए । हरसमय जानवरोंकी तरह चरते रहना बुरा है । नियत समयपर खाओ । उस समय भी इतना ठोंस ठोंसकर मत खाओ कि साँस न ले सको और न इतना पानी पीयो कि तुम्हारा पेट फटने लगे । उतना ही खाओ, पीयो कि जिससे शक्ति बनी रहे, अच्छी तरह नींद आ जाय और काम करते समय थकावट मालूम न हो । खानेमें इस बातकी परवा मत करो कि बढ़िया बढ़िया चीजें हों । बढ़िया चीजोंसे अपनी जबानको चटोरी

मत बनाओ। जैसा खाना मिले वैसा ही खाओ। हाँ, इस बातका ख्याल अवश्य रक्खो कि खाना ताजा और अच्छी तरह पका हुआ हो। यदि कभी अच्छी अच्छी स्वादिष्ट चीजोंके न होनेसे तुम्हारा जी खानेको न चाहे तो उस समय तुम्हें चाहिए कि उसे उठाकर एक तरफ रख दो। थोड़ी देरमें जब भूख अच्छी तरह लग आयगी, तो वही खाना अच्छा मालूम होने लगेगा! 'भूखमें सूखी रोटी भी अच्छी लगती है'।

जो कुछ तुम्हारे सामने रक्खा हो, उसे संयमसे खाओ। जल्दी जल्दी नहीं। नहीं तो सब लोग तुमसे घृणा करने लगेंगे। यदि तुम किसी मंडलीमें बैठे हुए हो तो खानेके लिए पहले अपना हाथ मत बढ़ाओ। धीरे धीरे चबाकर खाना चाहिए। जल्दी जल्दी खानेसे भोजन अच्छी तरह नहीं पचता—अजीर्ण हो जाता है।

खाने, पीने, पहननेके सिवाय इस बातके बतलानेकी भी तुम्हें आवश्यकता है कि तुम अपना मनोरंजनका समय किस तरह और किस काममें व्यतीत करो। दिनभरकी मेहनतके बाद आराम करना और दिल बहलाना मनुष्यके लिए जरूरी है। एल्फ्रेड बादशाह २४ घंटोंमेंसे ८ घंटे काम किया करता था, ८ घंटे सोया करता था और ८ घंटे मनोरंजनमें व्यय किया करता था। तुम्हारे लिए यह जरूरी नहीं है कि तुम भी ८ घंटे मनोरंजनमें लगाओ, तो भी इसके लिए खाने, पीने, शौच, स्नानादिके समयको मिलाकर ८ घंटे कुछ अधिक नहीं हैं। अब प्रश्न यह है कि मनोरंजनमें क्या होना चाहिए? मेरी रायमें वे काम करने चाहिए जो निष्पाप हों और जिनसे स्वास्थ्यको हानि न पहुँचे। खुली हवामें क्रिकेट, फुटबाल, कबड्डी वगैरह खेल खेलना बहुत ही उत्तम है। एक तो ये दिनमें खेले जाते हैं, अतएव ये मनुष्यके सबेरे उठनेमें बाधक नहीं हैं, दूसरे स्वास्थ्यवर्धक हैं। तुममेंसे बहुतसे नवयुवक, ताश गंजफा, चौसर और शतरंज वगैरहको मनोरंजन समझते हैं, पर यह

भूल है। इनमें समय व्यर्थ नष्ट हो जाता है । बहुतसे युवकोंको जुआ खेलनेकी आदत होती है और वे उसीको मनोरंजन समझते हैं । परंतु स्मरण रहे जुआ खेलना मनोरंजन नहीं किंतु एक व्यसन है । इसमें दूसरोंका माल छीन लेने और बिना श्रम किये धनी हो जानेका भाव रहता है। लोभ इसकी जड़में काम करता है । आजतक दुनियामें कोई भी जुआरी सुखी नहीं हुआ । प्रायः सबका जीवन दुःखमें ही व्यतीत हुआ। जुआरी लोगोंका विश्वास जाता रहता है और हर जगह उनका अपमान होता है । बाप-दादाओंका वर्षोंका कमाया हुआ धन जुआरी एक दावपर रखकर क्षणमात्रमें खो देता है । बड़े बड़े लखपती, करोड़-पती भी जुएसे देखते देखते भिखारी बन गये । और तो क्या पांडवोंने जुएके कारण राज-पाट, धन-सम्पदा यहाँ तक कि अपनी प्यारी स्त्री द्रौपदीको भी हार दिया। राजा नलने सारा राज-पाट खो दिया।

बहुतसे नवयुवकोंको नाच, रंग, नाटक, तमाशोंमें जानेका व्यसन हो जाता है । नवयुवकोंके लिए इनसे बुरी जगह शायद ही कोई दूसरी हो। यद्यपि नाटकोंसे मनोरंजन हो सकता है और शिक्षा भी बहुत कुछ मिल सकती है, परंतु भारतमें जिस प्रकारके नाटक होते हैं और वे जिस रीतिसे खेले जाते हैं उन्हें देखकर कहना पड़ता है कि ये नाटक नहीं किंतु नाशक हैं। एक तो उनमें जितने खेलनेवाले होते हैं वे प्रायः नीच कुलके, चरित्रहीन, अशिक्षित और असभ्य होते हैं जिनका सबेरेसे शामतक सम्पूर्ण समय विषयवासनाकी बातोंमें व्यतीत होता है। दूसरे, यदि रंग-भूमि पर दस अच्छी बातें दिखलाई जाती हैं तो बीस बुरी बातें दिखलाई जाती हैं। कोई कोई ऐसी बेहूदा मजाक की जाती है कि सुननेवालों और विशेषकर नवयुवकोंपर तो उसका बुरा असर पड़े विना रह हीं नही सकता। तीसरे, नाटक तमाशे प्रायः रात्रिमें होते हैं, उनमें जानेसे सारी रात नष्ट हो जाती है और सबेरे दिन चढ़ेतक विस्तरेपर पड़ा

रहना पड़ता है जिसके कारण दिनभर आलस रहता है और कुछ भी काम करनेको जी नहीं चाहता। मनोरंजनके लिए थियेटरोंमें जाना उचित नहीं है। संगतिसे मनुष्य पहिचाना जाता है। जैसी संगति होती है वैसा ही मनुष्य होता है। बुरी संगतिमें बैठकर यह सम्भव नहीं कि कोई मनुष्य बुरी बातोंसे बचा रहे। शराबीके पास बैठकर यदि कोई शराब न भी पीये; तो भी शराबसे घृणा उसे बिल्कुल नहीं रहती और धीरे धीरे उसे शराब पीनेकी आदत पड़ जाती है। ऐसे ही जिन नवयुवकोंको नाचरंगमें बैठनेका अवसर मिलता है, वे धीरे धीरे वेश्याओंके यहाँ भी जाने लगते हैं और दुनिया भरके अवगुण उनमें आ जाते हैं। जबतक जवानी रहती है, धन रहता है तबतक तो उनकी चैनसे गुजरती हैं; किंतु बादमें जैसी दुर्गति होती है उसे दुनिया जानती है। याद रक्खो, जवानीमें ही आदतें बनती हैं। अभी तुम्हारे लिए समय है। चाहे अच्छी आदतें बना लो, चाहे बुरी। यदि इस समय तुम्हारी बुरी आदतें पड़ गईं तो फिर जन्मभर तुम उनसे छुटकारा नहीं पा सकते। बुरी आदतोंमें फँसकर तुम अपनी सारी धनसम्पदा नष्ट कर दोगे। तुम्हारा स्वाथ्य बिगड़ जायगा और संसारमें तुम्हारी निंदा होगी। अतएव तुम्हारा कर्तव्य है कि नीच लोगोंकी संगतिमें बैठकर अपने अमूल्य समयको नष्ट न करो। उन लोगोंकी संगतिमें बैठकर अपना मनोरंजन करो जो तुमसे बलमें, बुद्धिमें, चरित्रमें बढ़े हुए हैं। उनसे तुमको सदा अच्छी शिक्षा मिलेगी। विषय-लम्पट मनुष्योंके पास अथवा धनिकोंके पास कदापि मत बैठो। इनसे तुमको लाभके स्थानमें हानि पहुँचेगी।

"युवको, तुम्हें असभ्य या मूढ़ नहीं होना चाहिए, परंतु याद रक्खो दूसरोंकी चापलूसी करना अथवा उनकी बेजा खुशामद करना उससे भी बुरी है। तुम सभ्य बनो, किंतु दास मत बनो। जो लोग तुमसे पदमें बड़े हैं उनकी आज्ञाका पालन करो। हर्षके साथ उनके न्याययुक्त वच-

नोंको मानो । नियमानुसार कार्य करो । नियमभंग करना बुरी बात है । अपनी शिकायतोंको अपने विचारोंको स्वतंत्रतापूर्वक अधिकारियोंसे कहो; किंतु चापलूसीसे उनकी कृपा प्राप्त करनेका उद्योग न करो ।

युवको, अबतक हम तुम्हें केवल वे बातें बतलाते रहे हैं जिनको तुम्हें नहीं करना चाहिए । अब उन बातोंको बतलाते हैं जिनका करना तुम्हारे लिए जरूरी है । सबसे पहली बात यह है कि अपने समयको ठीक ठीक रीतिसे खर्च करो । तुम्हारी इज्जत तुम्हारे कामसे होगी । यद्यपि आज-कल इज्जत धनसे खरीदी जा सकती है, परंतु ऐसी इज्जत किसी कामकी नहीं । सच्ची इज्जत हासिल करनेके लिए तुम्हें साधारण आदमियोंसे अधिक काम करना चाहिए और यह उसी समय सम्भव है जब तुम अपने समयको ठीक ठीक रीतिसे व्यय करोगे । काम करनेके लिए दिनका समय अति उत्तम है । अतएव जितना हो सके उतना काम दिनमें करो और रातके लिए जितना कम काम रहे उतना अच्छा है । बहुतसे लोगोंको रात्रिमें बहुत देरतक बैठकर गप्पें मारनेकी आदत होती है । यह बुरी आदत है । इससे बचना चाहिए, कारण कि रात्रिमें बहुत देरतक जागनेसे सबेरे जल्दी उठना मुश्किल होता है और सबेरे जल्दी उठना स्वास्थ्यके लिए बड़ा लाभदायक है । देरमें उठनेवाला मनुष्य दिनभर काम करनेपर भी शामतक कामको पूरा नहीं कर पाता । जल्दी उठनेके लिए जल्दी सोना जरूरी है । कितने बजे सो जाना चाहिए, इसके विष-यमें कोई खास नियम नहीं बाँधा जा सकता । साधारण तौरपर कहावत है कि आधी रातसे पहले १ घंटेकी नींद आधी रातके बादकी २ घंटोंकी नींदके बराबर है । हम भी इसका समर्थन करते हैं । आधी रातसे पहले पहले सो जाना चाहिए । १० बजे सोकर पाँच साढ़े पाँच बजे—हद छः बजे उठ जाना चाहिए और उठकर काममें लग जाना चाहिए । यदि उठ तो जल्दी गये; परंतु काम कुछ नहीं किया, योंही इधर उधर फिरते रहे तो जल्दी उठना

न उठनेके बराबर है। देखा जाता है कि कितने ही युवक सुबह उठ तो जाते हैं; परंतु घंटों बनाव शृंगारमें नष्ट कर देते हैं। कुछ देर सिगरेट पीने अथवा हुक्का पीनेमें लग जाती है । फिर नाईकी वाट देखी जाती है अथवा खुद हजामत बनानेके लिए पानी वगैरह गर्म किया जाता है । उसके बाद कुछ देर नहाने-धोनेमें, बाल बनानेमें, दर्पण देखने और माँग निकालनेमें लग जाती है । गरज यह कि बहुतसा समय व्यर्थमें नष्ट हो जाता है । इससे हमारा यह तात्पर्य नहीं कि नहाना-धोना अथवा हजामत बनाना–बाल बनाना नहीं चाहिए । नहीं, ये सब काम करने चाहिए । स्वास्थ्यके लिए इनकी बड़ी जरूरत है । पर इन कामोंके लिए समय नियत होना चाहिए । एक घंटेका काम एक घंटेमें ही हो जाना चाहिए । एक घंटेके कामके लिए दो घंटे लगा देना मूर्खता है । प्रातःकाल उठकर शौचादिसे निवृत्त होकर तुरंत नहाना धोना चाहिए, तदनन्तर शीघ्र ही काममें लग जाना चाहिए । एक मिनिट भी फिजूल खोना बुरा है । समयकी कद्र करो । समय अमूल्य है । गया हुआ समय वापिस नहीं आता । एक एक सेकंड कीमती है । एक एक सेकंडकी देरीसे कितने ही काम अधूरे रह जाते हैं ।

जो समय जिस कामके लिए नियुक्त है उस कामको उसी समयपर करो । यदि तुम्हें ७ बजे किसी जगह जाना है तो ७ बजे वहाँ पहुँच जाओ, एक मिनिटके लिए भी किसीको इंतिजार करनेका मौका मत दो । मूल पुस्तकके लेखक कहते हैं कि सवेरे उठने और ठीक समय पर काम करनेके कारण ही मेरी २० वर्षसे भी कम उमरमें सरजेंट मेजरके उच्च पदपर नियुक्ति हो गई । मेरे अधीन ३० सरजेंट थे । इतनी थोड़ी उमरमें ऐसे उच्चपदपर नियुक्त होनेके कारण मेरे अधीन कर्मचारियोंको मुझसे ईर्ष्या या द्वेष होना चाहिए; परंतु मेरी आदतोंसे उनके मनमें इस बातका ख्याल तक भी न आता था । वे जानते थे कि

जितना काम मैं कर सकता हूँ, उतना न तो उन्होंने कभी किया औ
न वे कर सकते थे। मुझसे पहले सरजेंट मेजरके पास एक क्लर्क था ज
सबेरे फौजकी खबर उसे देता था। मैंने क्लर्ककी कोई जरूरत नह
समझी। मैं सब काम सबेरे उठकर कर लेता था। पहले लोगोंको १
बजे मैदानमें जाना होता था और धूपमें सिकना पड़ता था। न
बेचारे आराम कर पाते थे और न अपनी चीजोंको ठीक ठीक र
सकते थे। जबसे मैं सेनापति हुआ, मैं सब काम सबेरे निबटा दे
था जिससे लोगोंको दिनभर आराम करने और सैर करनेका अच्छ
मौका मिलता था। मेरे अकेलेकी सबेरे उठकर काम करनेकी आदत
सैकड़ोंको आराम मिला।

कहते है कि धनमें शक्ति है। किसी किसी अंशमें यह कथन सत
है। इसी प्रकार कहा जाता है कि ज्ञानमें शक्ति है। यह भी सत्य है
परंतु वास्तवमें शक्ति श्रम, संयम और उद्योगमें है, कारण कि इनके
बिना ज्ञान कुछ भी कार्यकारी नहीं। उच्च कोटिके श्रम, संयम औ
उद्योगके साथ यदि थोड़ासा भी ज्ञान हो तो मनुष्यका बहुत कुछ
आदर हो सकता है। इनका प्रभाव महान् और प्रत्यक्ष है। संयमी औ
उद्योगी मनुष्यके सामने शराबी और आलसी आँख उठाकर भी नह
देख सकता। अतएव यदि तुम अपनी जाति या समाजमें प्रतिष्ठा प्रा
करना चाहते हो तो तुम्हें चाहिए कि तुम साधारण मनुष्योंसे अधिक
श्रमी, संयमी और उद्योगी बनो।

आजकल शिक्षा उसे कहते हैं जो स्कूलोंमें दी जाती है अथवा जो
पुस्तकोंसे प्राप्त होती है; परंतु वास्तवमें वह शिक्षाका एक भाग है
पुस्तकोंसे ज्ञान अवश्य प्राप्त होता है; परंतु बहुत कम। यदि को
मनुष्य पुस्तक पढ़ना नहीं जानता, अथवा कागजपर एक विशेष प्रकारके
निशान नहीं बना सकता, अर्थात् लिख नहीं सकता, तो इस कारण

उसे अज्ञानी या मूर्ख नहीं कहना चाहिए। सम्भव है एक खेतमें हल चलानेवाला मनुष्य बड़ा विद्वान् हो, चाहे वह 'हल' शब्दको भी लिखना न जानता हो। लिखने-पढ़नेमें ही शिक्षा नहीं है। मनुष्यके लिए सबसे जरूरी बात यह है कि वह अपने पेशेको भलीभाँति जानता हो। नवयुवको, चाहे तुम किसी दशामें रहो तुम्हें अपने पेशेका पूरा पूरा ज्ञान रखना अत्यन्त आवश्यक है। यदि तुम बढ़ईका काम करते हो तो उसमें तुम्हें दक्ष होना चाहिए। यदि तुम व्यापार करते हो तो तुम्हें चाहिए कि व्यापारकी सब बातोंको अच्छी तरहसे जान लो।

यद्यपि पुस्तकें शिक्षाप्राप्तिके लिए अत्यंत आवश्यक नहीं हैं, तथापि पुस्तकोंसे घृणा मत करो। इनसे बड़ा लाभ होता है। लोग जो कुछ अनुभव करके जानते हैं वह पुस्तकोंमें लिखा होता है। पुस्तकोंसे जिस पेशेका हम ज्ञान करना चाहें उसमें बहुत कुछ सहायता मिल सकती है। लिखने-पढ़नेके बिना हिसाब-किताबके रखनेमें बड़ी कठिनाई पड़ती है। व्यापारियोंके लिए लिखने-पढ़नेकी बड़ी जरूरत है। चाहे कोई पेशा हो, लिखना-पढ़ना जाने बिना उसमें उन्नति करना कठिन है। परंतु देखो, लिख पढ़कर किसी पेशेको तुच्छ मत समझो। भारतवासियोंको इस बातपर विशेष ध्यान देना चाहिए। यह ख्याल कभी अपने मनमें न लाओ कि पढ़ लिखकर दूकान करना अथवा दरजी, लुहार, बढ़ई वगैरहका काम करना बुरा है। नहीं 'नौकरी करेंगे' केवल इस भावको मनमें रखकर पढ़ना बुरा है। लिख पढ़कर व्यापार करो, फिर देखो तुम्हें कैसी सफलता होती है। नौकरी बुरी चीज है। यदि १५,१६ वर्ष श्रम करके तुमने बी. ए. पास किया और फिर तुम्हें ५० या ६० रुपये महीनेकी नौकरी मिली तो क्या हुआ? यदि तुम बी. ए. पास करके आटे दालकी दूकान अथवा दरजी बढ़ईका काम करो, तो तुम्हें नौकरीसे कहीं अधिक आमदनी हो सकती है।

प्रारम्भिक शिक्षाकी प्रत्येक युवकके लिए आवश्यकता है। प्रारम्भिक शिक्षासे मेरा मतलब साधारण लिखने पढ़ने और थोड़ासा हिसाब जाननेसे है। इनका सीखना कुछ कठिन नहीं है। थोड़ा परिश्रम करनेसे ये आ सकते हैं। जब इतना ज्ञान हो जावे तब अपनी भाषाका व्याकरण भी देखना जरूरी है। व्याकरणके बिना शुद्ध लिखना ओर बोलना नहीं आ सकता। मनुष्यकी योग्यता उसके लिखने और बोलनेसे मालूम हो सकती है। व्याकरण निःसंदेह कठिन चीज है और इसके सीखनेके लिए बड़े श्रम, साहस, विचार और संतोषकी जरूरत है। परन्तु जब यह एक बार आ जाता है, तो जिंदगीभरके लिए छुट्टी हो जाती है। और फिर इससे प्रतिदिन लाभ और आनंद मिलता है। जो समय तुम्हारा व्यर्थकी गप्पाष्टकोंमें नष्ट होता है उसे व्याकरणके सीखनेमें लगाओ। मूल पुस्तकके लेखक विलियम काबेट कहते हैं कि मैंने उस समय व्याकरण सीखा था जब मुझे केवल छह आने रोज मिलते थे। न मेरे लिए कोई पाठशाला थी, न पढ़नेके लिए कोई अलग कमरा था, न मेज कुरसी थी और न तेल बत्ती खरीदनेके लिए रुपया था। मुझे रातको आगकी रोशनीमें पढ़नेका मौका मिलता था और वह भी कभी कभी। मैं अपने तख्त पर ही बैठा बैठा पढ़ा करता था। न कोई मुझ अनाथको सलाह देनेवाला था और न कोई मेरी देख-भाल करनेवाला था। तो भी मैंने एक वर्षमें स्वयं उद्योग करके व्याकरणको सीख लिया। नवयुवको, जब मैंने इतनी कठिनाइयोंके होते हुए भी इस कामको सीख लिया, तब तुम्हारे लिए चाहे तुम कितने ही गरीब और काममें लगे हुए हो, कोई बहाना नहीं हो सकता। एक कलम अथवा एक कागजके तावके खरीदनेके लिए मुझे कभी कभी भूखा रहना पड़ता था। मेरे पास एक मिनिटका भी ऐसा समय नहीं था जिसको मैं अपना कह सकता। दसों आदमियोंके बीचमें—जो हँसी मजाक ठट्टा करते रहते थे और

शोरो-गुल मचाते रहते थे—मुझे पढ़ना पढ़ता था और वह भी बहुत कम। युवको, जो पैसा मुझे कभी कभी कलम, कागज, स्याही वगैरहके लिए खर्च करना पड़ता था उसे तुम तुच्छ मत समझो। मेरे लिए वह बहुत बड़ी चीज थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि एक वार तमाम जरूरी चीजें खरीद लेनेके बाद मेरे पास दो पैसे बचे। मैंने उन्हें इस गरजसे बचा रक्खा कि सबेरे मैं इनसे कोई खानेकी चीज लूँगा; परन्तु जब रातको मैंने सोनेके लिए कपड़े उतारे तो मालूम हुआ कि वे दो पैसे खो गये ! भूख मुझे उस समय ऐसे जोरसे लग रही थी कि प्राण निकले पड़ते थे। मैं लाचार पेटपर पट्टी बाँधकर अपने बिछौनेपर पड़ गया और बच्चोंकी तरह रोने लगा। अब नवयुवको, मैं तुमसे पूछता हूँ कि मैंने जब ऐसी हालतमें भी व्याकरणको सीख लिया; तब तुम्हारे लिए क्या उजर हो सकता है ? कौन ऐसा बेशरम है जो इसे पढ़कर भी यह कहे कि मेरे पास इसके लिए समय या अवसर नहीं है। मैं इस विषयपर इतना जोर इस कारणसे देता हूँ कि व्याकरण साहित्यकी जड़ है। इसके बिना मनुष्य न शुद्ध भाषा बोल सकता है और न शुद्ध लिख सकता है। मैंने अपने व्याकरणके ज्ञानसे ही कितने झूठे अभिमानियोंका मान गलित किया है और मूर्खोंकी पोलें खोली हैं ! व्याकरणके ज्ञानसे ही मैंने लाखों मनुष्योंको अनेक आवश्यक विषयोंपर शिक्षा दी है और भविष्यतमें पैदा होनेवाले करोड़ों मनुष्योंके लिए शिक्षा और नीतिका भंडार जमा करके रक्खा है। युवको, व्याकरणका ज्ञान तुम्हारे लिए बड़ा जरूरी है। तुम्हें चाहिए कि नित्य प्रति कुछ समय इसके लिए निकालकर रक्खो। सबेरेका समय सबसे अच्छा है। उस समय तमाम शक्तियाँ चैतन्य रहती हैं और दिमाग ताजा होता है। जो कुछ उस समय याद किया जाता है वह बहुत जल्दी और बहुत अच्छी तरहसे याद हो जाता है। जहाँतक हो सके रातको मत पढ़ो।

किसी चीजके सखिनेके लिए दृढ़ताकी जरूरत है। दृढ़ताके बिना कितने ही आदमी जिनको अपनी क़ामयाबीपर पूरा पूरा भरोसा था, ना-कामयाब रहे। दृढ़ रहनेवाले मनुष्योंको चाहे शुरूमें कितने ही विघ्न आये हों, परंतु अंतमें सफलता हुई है। बहुतसे लोगोंमें किसी कामकी योग्यता होती है और रुचि भी होती है; परंतु उन्हें उस काममें सफलता नहीं होती। इसका क्या कारण है? यही कि उनमें दृढ़ रहने और निरंतर उद्योग करनेकी आदत नहीं होती। खरगोश और कछुवेकी कथा आप लोगोंने अवश्य पढ़ी होगी। दृढ़ताके बलसे ही कछुवेने खरगोशपर विजय प्राप्त कर ली। यद्यपि खरगोशमें दौड़ने और तेज चलनेकी शक्ति थी; परंतु उसमें दृढ़ता नहीं थी। वह थोड़ी दूर चलकर सो गया। कछुवा बराबर धीरे धीरे चलता रहा और अंतमें खरगोशसे पहले अभीष्ट स्थान-पर पहुँच गया। अतएव तुम्हें भी स्मरण रखना चाहिए कि पढ़ने लिख-नेमें सफलता उन्हें होती है जो एक बारगी जल्दी नहीं करते; परंतु धीरे धीरे नित्य प्रति दृढ़ताके साथ अपना काम करते रहते हैं। विद्या-र्थियोंको यह बात कभी न भूलनी चाहिए। वार्षिक परीक्षामें उत्तम श्रेणीमें पास होनेके लिए उन्हें सालके शुरूसे ही नियमबद्ध पढ़ते रहना चाहिए। यह ख्याल करना कि अभी परीक्षाके बहुत दिन है, जब दो महीने रह जायँगे तब जी तोड़कर श्रम करेंगे, भूल है। ऐसे विद्यार्थी कभी परीक्षामें पास नहीं होते; किंतु परीक्षाके दिनोंमें प्राय बीमार पड़ जाते हैं। यदि तुम्हें कोई विषय कठिन मालूम हो तो निराश होकर उसे छोड़ मत दो; किंतु उसके समझने और सीखनेके लिए निरंतर उद्योग करते रहो। कभी कभी ऐसा होता है कि उसके देखनेको जी नहीं चाहता और प्रायः १० मेंसे ९ विद्यार्थी उसकी परवा नहीं करते। परिणाम यह होता है कि परीक्षामें विद्यार्थी उसी विषयमें अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। अतएव जो चीज तुम्हें कठिन मालूम हो, जो विषय शुष्क हो, जिसमें जी न लगता हो, उसके लिए कुछ समय नियत कर दो।

उस समयमें उसे अवश्य पढ़ो । यदि पढ़नेको जी न चाहे तो उस समय यह सोचो कि परीक्षामें पास होनेके लिए इस विषयमें भी पास होना जरूरी है। यदि इसमें फेल हो गये तो अन्य विषयोंमें १०० में १०० नम्बर प्राप्त कर लेने पर भी पास नहीं हो सकेंगे। इसके बिना सब कुछ करना धरना फिजूल है। यदि दो चार बार तुम्हारे दिलमें यह ख्याल आया और तुमने उद्योगको न छोड़ा तो बहुत शीघ्र तुम्हारी उस विषयमें रुचि हो जायगी और अब वह इतना कठिन और शुष्क न मालूम होगा जितना पहले मालूम होता था; धीरे धीरे तुम उसमें और विषयोंके समान ही दक्ष हो जाओगे।

अतः यदि तुम्हें व्याकरणके सीखनेमें कठिनाई मालूम हो तो दृढ़ताको काममें लाओ। श्रम और दृढ़तासे कठिनसे कठिन काम भी सरल हो जाता है। गणित और व्याकरण इन दो चीजोंका प्रतिदिन काम पड़ता है । इनकी प्रत्येक कार्यमें जरूरत पड़ती है । परंतु सारा समय इन्हींके सीखनेमें न लगा देना चाहिए । और विषयोंको भी सीखनेकी जरूरत है । सबसे पहले जिस पेशेको तुम करते हो उसके सम्बंधमें जितनी उत्तम पुस्तकें मिल सकें, उनको पढ़ो । तुम्हारा लक्ष्य सदा यह रहना चाहिए कि तुम अपने पेशेमें निपुणता प्राप्त करो। उसके बाद और चीजोंके जाननेकी जरूरत है । उनमें सबसे पहले अपने देशका इतिहास और भूगोल है। तुम्हें यह अवश्य मालूम होना चाहिए कि तुम जिस देशमें पैदा हुए हो, उसमें कौन राज्य करता है, किस प्रकारका राज्य है, कबसे उस प्रकारका राज्य है, उससे पहले क्या अवस्था थी, देशकी क्या स्थिति है, संपत्ति, कृषि, वाणिज्यकी क्या दशा है, किन देशोंसे उसका सम्बन्ध है, कौन कौन वस्तुयें विदेशोंसे आती हैं, कौन कौन वस्तुयें विदेशोंको जाती हैं, जलवायु कैसा है, उसका यहाँकी भूमि उपज और स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ता है।

दूसरा अध्याय ।

युवको, मैं आशा करता हूँ कि अब तुम्हारी अवस्था २० वर्षसे ऊपर होगी। तुम पहले अध्यायकी शिक्षाओं पर अमल कर चुके हो, तुममें श्रम, संयम और उद्योग करनेकी आदत पड़ गई है और तुमको अपने पेशेका तथा इतिहास भूगोल आदि विषयोंका ज्ञान भी हो चुका है। अब इस अध्यायमें मैं तुम्हें यह बतलाऊँगा कि किस तरहसे तुम अपने रुपये बगैरहका प्रबंध करो।

चाहे तुम किसी जगह पर हो और कोई काम करते हो, यदि तुम अपने रुपयेका उचित प्रबंध नहीं कर सकते, अपनी आमदनीको ठीक ठीक खर्च नहीं कर सकते, तो तुम्हारे समान कोई अभागा नहीं है। कारण कि सैकड़ों और हजारों आदमी रुपयेका ठीक ठीक प्रबंध न करनेके कारण लखपतीसे भिखारी बन गये हैं। केवल इतना ही नहीं, किंतु इससे देशकी मानसिक और वैज्ञानिक उन्नतिमें भी बड़ा धक्का पहुँचता है। जो मनुष्य आर्थिक कष्टोंसे दुःखी और पीड़ित है वह यदि अपने मनको मानसिक श्रमके योग्य बनाये रक्खे तो उसे एक विलक्षण प्रकारका मनुष्य समझना चाहिए। गरीबीमें आदमीकी बुद्धि मारी जाती है, उसकी आशायें नष्ट हो जाती हैं, उद्देश्य आस्थिर हो जाते हैं, अच्छी बातें उसे बुरी लगने लगती हैं और लालच चारों तरफसे घेरने लगता है। मतलब यह कि गरीब आदमी देश और समाजके लिए कलंकरूप हो जाता है। गरीबीकी हालतमें स्वाधीन रहना, और अपने उद्देश्योंपर स्थिर रहना बिरले ही मनुष्योंका काम है।

परंतु अब विचारणीय यह है कि निर्धनता किसे कहते हैं? किस स्थितिके मनुष्यको निर्धन कहना चाहिए? क्या निर्धनताकी कोई सीमा हो सकती है? बर्कका कथन है कि जो मजदूर दो आने रोज कमाता है, परंतु दो आनेमें अच्छी तरहसे खा पी लेता है; अर्थात् जिस ही

जरूरतें दो आने रोजमें पूरी हो जाती हैं और जिसे दूसरोंके आगे हाथ पसारना नहीं पड़ता, वह गरीब नहीं कहला सकता। यद्यपि उस आदमीके मुकाबिलेमें—जिसकी आमदनी लाखों रुपयेकी है—वह गरीब है, परंतु वैसे उसे गरीब नहीं कह सकते। तात्पर्य यह है कि मनुष्यका गरीब होना न होना उसकी आमदनी और खर्चपर निर्भर है। यदि किसी आदमीकी आमदनी एक रुपया रोजकी है; परंतु उसका खर्च ५) रोजका है तो वह गरीब है; परंतु इसके विपरीत जिसकी आमदनी एक आने रोजकी है पर खर्च पौन आने रोजका ही है, वह गरीब नहीं है। खर्चका घटाना, बढ़ाना आदमीके हाथमें है। आजकलके युवक आमदनीका कुछ ख्याल न करते हुए अपने खर्चोंको अंधाधुंध बढ़ा लेते हैं और फिजूल चीजोंमें खर्च करने लगते हैं। इसीसे उन्हें गरीबी सता लेती है। ऐसी हालतमें न वे मानसिक उन्नति कर सकते हैं और न अपने ज्ञानसे संसारको कुछ लाभ पहुँचा सकते हैं।

जब मनुष्यके खर्च बढ़ जाते हैं, उसे फिजूल नुमायशी चीजोंके ग्रहण करनेकी इच्छा बढ़ जाती है, तब वह चाहे कितना ही विद्वान् हो, अपने उच्च उद्देश्योंसे गिर जाता है, रुपयेकी लालसासे धनिकोंकी चापलूसी करने लगता है और उन कामोंतकको करने लगता है कि जिनका नाम लेते हुए भी लज्जा मालूम होती है। इस अपेक्षासे मैं कहता हूँ कि रुपयेका ठीक ठीक प्रबंध न होनेसे देशकी मानसिक और वैज्ञानिक उन्नतिमें बाधा पहुँचती है, कारण कि यदि विद्वान् लोग मितव्ययी होवें और रुपयेका ठीक ठीक प्रबंध रक्खें तो उनके द्वारा बहुत कुछ ज्ञानका प्रकाश हो सकता है और उस ज्ञानसे देशको लाभ पहुँच सकता है।

वह आदमी असलमें गरीब है जिसके पास खाने-पीनेका भी सामान नहीं, जो रोटीके टुकड़ेका मुहताज है। गरीब होना कोई लज्जाकी बात

नहीं है और न अमीर होना कोई अभिमानकी बात है। यह बात हमें अमेरिकावासियोंसे सीखनी चाहिए। वे लोग अपने धनका अभिमान नहीं करते और न वे निर्धनोंकी निंदा करते हैं; किंतु निर्धन और धनवान् दोनोंको समान दृष्टिसे देखते हैं। कोई किसीको निर्धन होनेके कारण घृणाकी दृष्टिसे नहीं देखता और न किसीको धनवान् होनेके कारण उच्चता दी जाती है। वहाँ सैंकड़ों ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें निर्धन लोगोंको बड़े बड़े जिम्मेवारीके काम सौंपे गये और लोगोंने धनिकोंसे अधिक उनका सन्मान किया।

भारतमें इस बातकी कमी है। यहाँ लोगोंकी कदर रुपयोंसे होती है। जिसके पास रुपया है चाहे उसमें कितने ही अवगुण हों, और चाहे उसका चरित्र कैसा ही निंद्य क्यों न हो, लोग उसीकी कदर करेंगे और इसके विपरीत जिसके पास रुपया नहीं है, चाहे वह कितना ही सच्चरित्र क्यों न हो, कोई उसकी बात भी न पूछेगा। इसका परिणाम यह होता है कि बहुतसे साधारण स्थितिके लोग औरोंको दिखानेके लिए, अपनेको बड़ा बनानेके लिए अपनी शक्तिसे बाहर खर्च कर देते हैं और जाहिरमें खूब ठाठ-बाट रखते हैं। रुपयेकी जगह चार रुपये खर्च करते हैं, बढ़िया मकानमें रहते हैं, दो चार नौकर रखते हैं, सबेरे शामको जोड़ीमें बैठकर निकलते हैं, दूसरोंकी देखादेखी कुछ मदिरापानका भी अभ्यास कर लेते हैं। उधर ऋणका भार बढ़ जाता है और सूदपर सूद चढ़ता जाता है; परंतु यह हालत कबतक रह सकती है? एक न एक दिन भांडा फूट जाता है। बाप-दादाओंकी जमा की हुई जायदाद नीलाम हो जाती है। घरके वर्तन भांडे बिक जाते हैं। कभी कभी हवालात तककी सैर करनी पड़ती है। बहुतसे आदमी शर्मके मारे आत्महत्या कर लेते हैं, जहर खा लेते हैं। इस प्रकार सैकड़ों कुटुम्बोंका सत्यानाश हो गया और सैकड़ोंका हो रहा है। जिस गरीबीसे बचनेके

लिए ये सब सामान किये गये थे, अंतमें उस गरीबीने पीछा न छोड़ा। अतएव युवको, तुम गरीबीको बुरा मत समझो। गरीब आदमियोंको केवल गरीबीके कारण घृणाकी दृष्टिसे मत देखो और अमीर आदमीको अमीरीके कारण आदरकी दृष्टिसे मत देखो, किन्तु मनुष्यके चरित्र और ज्ञानसे उसकी कदर करो। चाहे वह अमीर हो चाहे गरीब, इसकी कुछ परवा मत करो।

सदा अपनी आमदनीसे कम खर्च करो। कुछ न कुछ हमेशा बचा रक्खो। चाहे तुम्हारी आमदनी कितनी ही थोड़ी हो, तो भी कुछ न कुछ अवश्य बचाओ। अपनी चादरके मुताबिक पैर फैलाओ। इसके लिए सबसे अच्छा उपाय यह है कि कभी कोई चीज उधार मत खरीदो। हरएक चीजको नकद दाम देकर लो। जितना तुम्हारे पास रुपया होगा तुम उतना ही खर्च कर सकोगे। न रुपया होगा और न अधिक खर्च होगा। उधार लेनेवालेको एक तो माल कम मिलता है, रुपयेकी चीजका डेढ़ रुपया देना पड़ता है। दूसरे वह उन चीजोंको भी खरीद लेता है जो जरूरी नहीं हैं और जिनके बिना काम चल सकता है। नकद रुपया देकर चीज खरीदनेवाला आदमी दस जगह देखकर जहाँ सस्ती मिलेगी वहींसे लेगा और केवल उन्हीं चीजोंको लेगा जिनके बिना काम चल ही नहीं सकता। अतएव तुम भूलकर भी एक पैसेका उधार मत करो। इससे आमदनीसे कम खर्च करनेकी तुममें स्वतः आदत पड़ जायगी।

इसपर शायद तुम यह कहोगे कि बिना उधारके व्यापार चल नहीं सकता, हरएक चीजके लिए नकद रुपया नहीं दिया जा सकता। बहुतसे सौदे कागजोंमें ही होते हैं। इसके उत्तरमें हम यही कहते हैं कि यदि बड़े बड़े कामोंमें—रियासत वगैरहके मामलोंमें उधारकी जरूरत पड़ती है तो ठीक ही है, परंतु छोटे छोटे कामोंमें नित्यप्रति खाने पीनेकी

चीजोंमें उधार लेनेकी कदापि जरूरत नहीं है। बड़े बड़े कामोंमें भी जहाँतक हो सके उधारका झगड़ा मत रक्खो। मूल पुस्तकके लेखक लिखते हैं कि थोड़े दिन हुए मुझे एक युवक मिले। मैंने उनको समझाया कि तुम अपनी आमद-खर्चका हिसाब रक्खा करो। उन्होंने कहा कि मुझे हिसाब किताब रखनेकी जरूरत नहीं, कारण कि मैं अपनी आमदनीका सब रुपया अपने बटुवेमें रखता हूँ, और कोई चीज उधार नहीं खरीदता। मेरा बटुआ मुझे बताता रहता है कि मैं कितना खर्च कर सकता हूँ। युवको, तुम्हें भी उक्त युवकका अनुकरण करना चाहिए।

इस बातमें किसीको भी संदेह नहीं हो सकता कि उधार लेनेसे चीज सबाई कीमतमें मिलती है—एक रुपयेकी चीज सबा रुपयेमें मिलती है। यदि तुम सालभरमें १०० रु० का सामान उधार खरीदते हो, तो नकदकी अपेक्षा २५ रु० ज्यादह देते हो। २० वर्षमें २०×२५=५०० रु० खोते हो। सूद बगैरह अलग रहा। दूकानदार क्यों सबाये दाम लगाता है, इसका उत्तर स्पष्ट है। एक तो उसे सूदका नुकसान होता है, दूसरे रुपया उधारमें फँसा रहनेके कारण वह नया माल ज्यादह नहीं मँगा सकता। तीसरे उधारका रुपया वसूल करनेके लिए उसे अलग आदमी रखना पड़ता है; हिसाब किताबके लिए मुनीम, बहीखाता और बिल-रसीद बगैरहका खर्च उठाना पड़ता है। चौथे उधारके रुपयोंके मारे जानेका भय रहता है। वास्तवमें कितना ही रुपया मारा भी जाता है। इन सबकी कसर वह उसी सबाये मूल्यमेंसे निकालता है। व्यापार लाभके लिए किया जाता है न कि हानिके लिए। यदि नकद और उधारके भावमें दूकानदार भेद न रक्खे तो वह क्या खाक कमायेगा?

उधार लेनेमें खरीददारको भी कितनी ही हानियाँ होती हैं। नकद दाम देनेवाला आदमी दस दूकानें देखकर जहाँ चीज अच्छी और सस्ती मिलती है वहाँसे लेता है; परंतु उधार लेनेवालेको उसी दूकानसे लेना

पड़ता है, चाहे चीज अच्छी हो चाहे बुरी और चाहे सस्ती हो चाहे महँगी। इसके अतिरिक्त दूकानदार बहुतसी उन चीजोंको भी उधार लेनेवालेके सिर मढ़ देते हैं, जो उनके यहाँ बहुत दिनोंकी पड़ी होती है और बिकती नहीं है। खरीदार भी यह समझकर कि कौन नकद दाम देते हैं, पीछे दे दिये जायँगे, खरीद लेते हैं। कभी कभी ऐसा भी होता है कि जरूरत तो है चार आने गजके कपड़ेकी, परंतु जिस दूकानसे उधार मिलता है उसपर आठ आने गजसे कमका कपड़ा नहीं। लाचार आठ आने गजका ही उस दशामें ले लेना पड़ता है। बहुत करके जरूरतसे जियादा चीज भी ले ली जाती है। गरज यह कि उधार लेनेमें हरतरहका नुकसान है। इसलिए नकद दाम देकर हरएक चीजको लो। एक पैसेका भी किसीका उधार मत करो। ऐसा करनेसे न कभी फिजूल-खर्चीकी आदत पड़ेगी और न कभी गरीबीका मुँह देखना पड़ेगा। सदा कुछ न कुछ रुपया पासमें जमा रहेगा जो अचानक आपत्तिके समय बड़ा काम देगा। इससे तुम्हारा जीवन शांतिसे व्यतीत होगा। न तुम्हें कर्जकी वजहसे अदालतमें जाना पड़ेगा और न कभी चिंता करनी होगी।

जिस तरह फिजूलखर्ची बुरी है उसी तरह कंजूसी भी बुरी है। नकद रुपया देकर चीज लेना कंजूसी नहीं है, किंतु फिजूलखर्चीसे बचना है। नकद रुपया देकर चीज खरीदनेसे तुम्हारे पास रुपया अवश्य जमा होगा; परंतु इससे यह मतलब नहीं कि रुपयेको रुपयेकी खातिर जमा करो। यह तो कंजूसीका काम है। तुम रुपयेको इस लिए जमा मत करो कि उसे केवल देखकर खुश हुआ करो; परंतु इस लिए कि जरूरतके वक्त वह तुम्हारे काम आवे और उससे दूसरोंको लाभ पहुँचे। रुपयेका या तो भोग करो या दान करो, ये ही दो मार्ग हैं। परंतु उधार लेनेसे न तो रुपयेका भोग होता है और न दान होता है, किंतु फिजूलखर्च होता है जिससे तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं होता।

यदि तुम्हारे पास अधिक रुपया है–तुम १०० रु० मासिकमें अच्छी तरह रह सकते हो; परंतु तुम्हारी आमदनी ५०० रु० मासिककी है, तो तुम अपने भोगविलासोंमें १००–५० रुपये और खर्च कर सकते हो, परंतु शेषको दानमें लगाओ। जो रुपया दानमें लगाओगे वह सदाके लिए अमर रहेगा। तुम्हारे कितने ही भाई रोटीके एक टुकड़ेको तरसते हैं। कितने ही निर्धन विद्यार्थी द्रव्यके अभावसे शिक्षासे वंचित रहते हैं। उनकी सहायता करना तुम्हारा मुख्य धर्म है। यदि तुम्हारी सहायतासे एक भी विद्यार्थी पढ़-लिखकर विद्वान् हो गया तो वह जीवनपर्यंत तुम्हारा कृतज्ञ रहेगा।

भारतवर्षमें फिजूलखर्ची बहुत बढ़ी हुई है। बधनी, घुड़दौड़, लाटरी, सट्टे वगैरहमें भी रुपया लगाना फिजूलखर्ची है। यद्यपि इनमें लोग लाभकी आशासे रुपया लगाते हैं; परंतु वास्तवमें यह उनकी भूल है। इनमें १००० में एक अवसर तो जीतका और ९९९ अवसर हारके हैं। एक आदमीको मिलता है और ९९९ आदमी हारते हैं। ऐसे कामोंमें रुपया लगाना मूर्खता है। इनमें रुपया लगाते समय तुम्हारी दृष्टि उस एक आदमी पर रहती है, जो जीतता है, चाहिए यह कि उन ९९९ आदमियों पर हो, जो हारते हैं।

दूसरी बात जिसकी मैं तुम्हें शिक्षा दूँगा यह है कि जहाँतक तुमसे हो सके मुकद्दमेबाजीको छोड़ो। अदालतमें जाना अपने समय, श्रम और धनको खोना है। सभ्य पुरुषोंका काम अदालतमें जानेका नहीं है। यदि किसीके पास तुम्हारा रुपया चाहता है, तो उचित यह है कि जिस तरह हो उस तरहसे घरपर ही आधा चौथाई जो कुछ मिले, लेकर निबटेरा कर लो; यहाँतक कि यदि वह कुछ भी न दे तो भी संतोष करो, परंतु अदालतमें मत जाओ। अदालतमें जाकर तुम्हें अपनी जेबसे और रुपया खर्च करना पड़ेगा। अदालती कागज़

खरीदना पड़ेगा, वकील करना पड़ेगा, बारबार अपने कामको छोड़कर अदालतमें जाना पड़ेगा, जराजरासे कामके लिए अदालतके चपरासी, मुंशी वगैरहका एहसान उठाना पड़ेगा और गँवारोंकी खुशामद करनी पड़ेगी । इतने पर भी इस बातका निश्चय नहीं कि रुपया मिल जावे । डिगरी भी अगर तुम्हारी होगई तो अब उसे जारी करानेका झगड़ा है । उसका माल कुरक कराओ, तब जाकर कहीं आधे, चौथाई दाम मिलेंगे । आधे चौथाई मिल जायँ, इसका भी कोई ठीक नहीं है । प्रायः ऐसा देखनेमें आता है कि लोग नालिश करके और अपनी जेबसे रुपया खर्च करके बैठ जाते हैं, मिलता जुलता कुछ भी नहीं । अतएव अदालतमें जानेका कभी विचार भी मनमें न लाओ । बहुतसे लोगोंको मुकद्दमेबा-जीकी आदत पड़ जाती है । यह लत जुए वगैरहकी लतसे कम नहीं है । इस लतमें फँसकर लोगोंने हजारों रुपये खाकमें मिला दिये हैं और गरीब हो बैठे हैं । ऐसे लोगोंकी संगतिसे तुम कोसों दूर रहो । वे तुम्हें भी लड़ाई-झगड़े करने और मुकद्दमेबाजी करनेका उपदेश देंगे । यदि कभी किसीसे लड़ाई झगड़ा हो जावे तो उन लोगोंसे कदापि सलाह मत लो । वे तुम्हें कभी घरपर सुलह करनेकी सीख न देंगे । ऐसे अवसर पर लोग उन्हें अनुभवी समझकर उनके पास जाया करते हैं, परंतु तुम उनके अनुभवसे बचे रहो, यही अच्छा है । उन्होंने तो जीवनपर्य्यंत अदालतोंकी ठोकरें खाई हैं । उसीका उन्हें चसका पड़ गया है । वे तुम्हें कब शांतिसे घरपर बैठने देंगे ?

तीसरे-यदि तुम दूकानदारी करते हो तो हरएक चीजके एक दाम माँगो । भाव ताव करना फिजूल है । चाहे तुम्हारी दूकानपर कोई बूढ़ा आवे, चाहे बच्चा, चाहे स्त्री, चाहे पुरुष, चाहे जानकार, चाहे अजान, सबसे एक दाम लो । इससे खरीददारोंको भी सुभीता होगा और तुम्हें भी फिजूलकी झकझक न करनी पड़ेगी । दोनोंका समय बच जायगा ।

भारतवासियोंको इस बातके सीखनेकी खास जरूरत है। यहाँ ऐसी दूकान १०० पीछे कहीं एक मिलेगी जिस पर एक दाम बोले जाते हैं। ९९ दूकानों पर झूठ बोला जाता है और झूठ भी हद दर्जेका। हमने देखा है कि कोई कोई दूकानदार तो तिगुना, चौगुना तक झूठ बोलनेसे नहीं हिचकिचाते। अजान खरीददारोंको तो ये कभी कभी ऐसा लूट लेते हैं कि रुपयेमें चार आने भी उसके पल्ले नहीं पड़ते। इस देशको छोड़कर किसी भी देशमें इस तरहका झूठ नहीं बोला जाता। इसका नाम बेईमानी है। तुम्हें चाहिए कि तुम इस प्रकारका झूठ कभी मत बोलो। सबसे एक दाम बोलो। ऐसा करनेसे लोग तुम्हारी दूकानपर जियादा आवेंगे और तुम्हारा माल जियादा बिकेगा। खरीददार उस दूकानपर ज्यादह जाते हैं, जहाँ वे समझते हैं कि ठगाई न होगी। जिस दूकानपर एक दाम नहीं बोले जाते हैं उसपर जाते हुए लोग हिचकते हैं। कारण उन्हें भय रहता है कि कहीं उनसे जियादा दाम न ले लिये जायँ। इसमें संदेह नहीं कि एक दाम बोलनेसे शुरू शुरूमें दूकानदारी कम चलती है; परंतु बादमें जब लोगोंको मालूम हो जाता है कि अमुक दूकानपर एक दाम बोले जाते हैं, तब उसी दूकानपर लोग जियादा जाते हैं। इसमें तुम्हें पुस्तकोंके व्यापारीका अनुकरण करना चाहिए। जिस तरह उसके यहाँ हरएक पुस्तकका मूल्य उसपर लिखा रहता है, उसी-तरहसे तुम्हारी दूकानपर भी हरएक चीजका मूल्य नियत रहना चाहिए।

समयकी भी तुम लोगोंको पूरी पूरी कदर करनी चाहिए। किस तरह समयको खर्च करना चाहिए, इसमें बड़ी सावधानीकी जरूरत है। इसमें तो कोई संदेह ही नहीं कि जिस कामको तुम करते हो, अर्थात् जो तुम्हारा पेशा है उसमें सबसे अधिक समय लगाना चाहिए। जब तक उस कामको अच्छी तरहसे न करोगे जिससे तुम्हारी आजीविका है,

तब तक तुम्हें सुख नहीं मिल सकता । उसके बाद जो समय बचे, उसमेंसे कुछ समय आराम और दिल-बहलावके लिए भी निकालना चाहिए। जो आदमी सवेरेसे शामतक काममें जुटा रहता है, उसका जीवन भी कोई जीवन नहीं । दिनभरमें थोड़ासा समय ऐसा जरूर होना चाहिए, जिसमें तुम आराम कर सको और अपने दिलको बहला सको । यदि तुम्हारे घरके पास खेत और बगीचे हैं तो उनकी सैर करनेमें अपने अवकाशके समयको लगाओ । वहाँ हरे भरे पौधे और सुंदर सुहावने पुष्पोंको देखकर तुम्हारा जी बहलेगा, तुम्हारे मनमें आनंद उत्पन्न होगा और तुम्हारी थकावट भी दूर हो जायगी।

दूसरा उपाय दिल बहलानेका यह है कि मित्रोंकी संगतिमें बैठकर मनोरंजक बातें करो, परंतु मित्र वे ही होने चाहिए जो सुशील, सदाचारी और विवेकी हों। शराबी, दुराचारी और मूर्ख मनुष्योंको कभी अपना मित्र मत बनाओ । मित्र उन्हींको बनाओ, जिनकी संगतिसे तुम्हें लाभ पहुँचे, जो तुम्हें सन्मार्गकी ओर ले जावें और जो सदैव तुम्हारे हितकी चिंता रक्खें।

तीसरा उपाय मनोरंजनका यह है कि अवकाश मिलने पर उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद पुस्तकोंको पढ़ो। किस विषयकी पुस्तकें हों, इसको तुम स्वयं पसंद करो। जिस विषयमें तुम्हारा मन लगता हो, उसी विषयकी पुस्तकें पढ़ो। परन्तु इतना ख्याल रक्खो कि जो पुस्तक पढ़ो उसके विषयमें तुम स्वयं सोच विचार कर अपनी राय कायम करो। दूसरे लोगोंने इस पुस्तककी बड़ी प्रशंसा की है, अतएव यह पुस्तक उत्तम है, ऐसा विचार कभी मत करो। इससे तुम्हारा ज्ञान कुछ न बढ़ेगा। प्रायः देखा जाता है कि जिस आदमीका एक बार नाम हो जाता है वह चाहे कितनी ही बुरी पुस्तक क्यों न लिखे, लोग उसकी प्रशंसा ही करते जाते हैं और खींचातानीसे छोटी छोटी बातके बड़े बड़े अर्थ निकालने

ते हैं जिसका स्वयं उस लेखकको भी कभी विचार न हुआ होगा।
ंडमें शेक्सपियर कविका इतना नाम हुआ कि एक बार किसी लड़केने
सकी अवस्था केवल १६ वर्षकी थी, बड़े बड़े लोगोंको बनानेके लिए
सपियरके समयका पुराना कागज किताबोंमेंसे फाड़कर और वैसी ही
ही बनाकर कुछ नाटक और पद्य लिखे, फिर उन्हें अपने समयके नामी
ी विद्वानोंको दिखलाया और कहा कि ये कागज मुझे एक जगह पड़े
मिले हैं। उन्हें देखकर सबने एक स्वरसे कहा कि शेक्सपियरके सिवा
। लिखनेकी किसीकी शक्ति नहीं है; अवश्य ही ये शेक्सपियरके ही
ये हुए हैं। लड़केने पबलिकसे चंदा करके उन्हें प्रकाशित किया और
मेंसे एक नाटकको स्टेजपर खेला भी। अंत समय तक बड़े बड़े महा-
पध्यायोंको भी यह ज्ञान नहीं हुआ कि ये इसी लड़केके बनाये हुए हैं,
सपियरके नहीं है। जब नाटक समाप्त हो गया और सब लोग उठकर
लगे तब उसी लड़केने प्रकट कर दिया कि यह नाटक शेक्सपियरका
या हुआ नहीं है, किन्तु इसे मैंने बनाया है। फिर क्या था, उसी नाटकमें
की एक घंटा पहले बड़े बड़े विद्वान् प्रशंसा कर रहे थे, लोग दूषण निका-
लगे। लोगोंकी यह दशा है। अतएव तुम्हें इस विषयमें बड़ा सावधान रहना
िए। किसी पुस्तकके विषयमें पहलेसे अपनी राय मत बनाओ। पढ़नेके
साथ तुम्हें चाहिए कि मुख्य मुख्य बातोंको अपनी नोटबुकमें भी लिखते
ो। इससे तुम्हें बातोंके याद रखनेमें बड़ी सहायता मिलेगी।
सी बातें ऐसी होती हैं जो मौखिक याद नहीं रह सकतीं। यदि
ो याद रखना भी चाहते हो तो तुम्हारी स्मरणशक्तिपर बड़ा जोर
ा है और दूसरी बातें याद करनेसे रह जाती हैं। यदि तुम कहीं
लिए जाओ, किसी नवीन व्यक्तिसे मिलो, अथवा कोई नवीन
देखो तो उसे भी नोट कर लो। इसमें समय बहुत कम लगेगा,
साल भरके बाद तुम देखोगे कि इससे बहुत लाभ हुआ है।

तीसरा अध्याय।
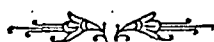
भारतवर्षमें विवाहका काम मातापिताओंने सर्वथा अपने हाथमें ले रक्खा है। वे जिस समय और जिस कन्यासे उचित समझते हैं, अपने पुत्रका विवाह कर देते हैं। कन्याका पिता तो वरको देखता भी है, उसकी बुद्धि और योग्यताका ख्याल रखता भी है; परन्तु वरका पिता कन्याको देखता तक नहीं—केवल कन्याके पिताकी हैसियतको देखकर ही सम्बंध निश्चित कर लेता है। वर कन्याको देखे और कन्या वरको देखे, यह प्रथा तो अब रही ही नहीं। इसीका परिणाम है कि आजकल घरोंमें नित्यप्रति स्त्रीपुरुषोंमें कलह देखने और सुननेमें आता है। विवाह इसलिए किया जाता है कि स्त्रीपुरुष दोनों सुखदुःखके समय एक दूसरेके काम आवें। स्त्री पुरुषको सहायता दे और पुरुष स्त्रीको सहायता दे। दोनों मिलकर उत्तम संतान पैदा करें और गृहसुखको भोगते हुए सृष्टिको चलावें। परंतु उत्तम संतानकी उत्पत्ति और गृहसुख इन दोनों बातोंका भारतवर्षमें प्रायः अभाव है और इसका कारण यही है कि जिनको जन्मपर्यंत एक दूसरेके साथ निबाहना है, सम्बंध करते समय उनकी सलाह तक नहीं ली जाती। प्राचीन समयमें भारतवर्षमें स्वयंवरकी प्रथा प्रचलित थी जिसमें कन्या जिसे उचित समझती थी अपना वर बना लेती थी। यूरोपादि देशोंमें वर्त्तमानमें भी स्त्री पुरुषको और पुरुष स्त्रीको जब देख लेता है, जब दोनोंको इस बातका निश्चय हो जाता है कि हमारा परस्परमें निबाह हो सकेगा, तब विवाह होता है। भारतमें भी इसी बातकी आवश्यकता है कि माता-पिताओंकी पसन्दगीके बाद लड़का लड़कीको और लड़की लड़केको जब दिलसे पसंद कर ले तब विवाह किया जाय। जब जरा जरासी चीजके लेते समय हम इस बातका

ध्यान रखते हैं कि चीज अच्छी भी है, तब भला जिस चीजसे जीतेजीका सम्बंध है उसके देखनेमें इतना संकोच करना मूर्खता नहीं तो और क्या है। मातापिताओंको भी उचित है कि वे इस कामको अपनी संतान पर छोड़ दें और इस विषयमें उन्हें भली भाँति सोचने-समझनेका मौका दें। संतानका विवाह कर देना ही मातापिताका कर्त्तव्य नहीं है; किन्तु उस विवाहसे सन्तान सुखी हो, इस बातकी पूरी पूरी सावधानी रखनेकी आवश्यकता है। बहुतसे माता-पिताओंकी दृष्टि केवल बाह्य पदार्थों पर जाती है। उनकी दृष्टिमें धनवान् सबसे श्रेष्ठ होता है। लड़की रूप, कुल, शील, गुण, विद्यामें कैसी हैं अथवा लड़का स्वस्थ और शिक्षित है या नहीं, उसे किसी प्रकारका रोग तो नहीं, उसका चरित्र अच्छा है या बुरा, इन बातोंपर उनकाका ध्यान नहीं जाता। गरीबोंके लड़कोंको चाहे कोई देख भी ले, पर लड़कियोंको तो चाहे गरीबकी हों चाहे अमीरकी, कोई भी नहीं देखता। इसका नतीजा यह होता है कि कभी कभी विद्वानोंको ऐसी मूर्खा और कुरूपा स्त्रियाँ मिलती हैं कि सहायक होनेकी जगह वे उनपर बोझा हो जाती हैं और रातादिन उनको दुःख देती रहती हैं। यह स्पष्ट बात है कि माता पिता और सन्तानकी प्रकृतिमें जमीन आसमानका अंतर है। माता पिताको इस बातका ज्ञान नहीं हो सकता कि लड़केको लड़की और लड़कीको लड़का पसन्द आया या नहीं और इस बातका देखना बहुत जरूरी है। जिस लड़केने लगातार १०,१२ वर्ष स्कूल और कालेजमें बिताये हैं, साहित्यका अवलोकन किया है, स्वदेश और विदेशका इतिहास पढ़ा है, गणित और विज्ञानशास्त्रमें मस्तकको लगाया है, यदि उसका विवाह किसी अनपढ़ मूर्खा स्त्रीसे कर दिया जाय, तो कभी उसके साथ प्रेम नहीं हो सकता और हो भी कैसे? सोने और लोहेमें क्या समानता? ऐसे ही यदि किसी सुशीला, शिक्षिता और सुंदर कन्याका किसी सेठके मूर्ख लड़केसे विवाह कर दिया जाय तो कदापि परस्परमें प्रेम नहीं हो

सकता। जबतक प्रेम नहीं, तबतक गृहस्थीमें सुख नहीं। गृहसुखके लिए प्रेमकी आवश्यकता है। प्रेमके लिए इस बातकी आवश्यकता है कि विवाहसे पहले एक दूसरेको अच्छी तरहसे जान लिया जाय। यदि लड़केको लड़कीसे और लड़कीको लड़केसे स्वभावतः स्नेह हो, एक दूसरेको हृदयसे प्रेम करता हो, दोनोंमें रूप, कुल, शील विद्या आदि गुणोंकी समानता हो तो विवाह कर देना चाहिए।

आजकल प्रायः योग्य लड़कोंको योग्य लड़कियाँ नहीं मिलतीं, इसलिए लड़कोंको चाहिए कि जिस कन्याके साथ वे विवाह करना चाहते हैं उसमें शील, संयम, श्रम, मितव्ययता, स्वच्छता, गृहप्रबन्धकी योग्यता, मृदु स्वभाव और रूप-लावण्य ये गुण हैं या नहीं, यह देख लें।

शीलकी तरफ ध्यान देना सबसे जरूरी है। सुशीला कन्या ही सहधर्मिणी और अर्द्धांगिनी बन सकती है। जिसमें चंचलता या वाचालपन है, जिसे लज्जा नहीं, वह पतिव्रता नहीं हो सकती। उसके साथ भूलकर भी सम्बन्ध मत करो।

संयमसे तात्पर्य्य यह है कि हरएक कामको सावधानी और गम्भीरताके साथ धीरेसे करे। अपने मन वचन कायको वशमें रक्खे। हरएक बातको सोच विचार कर करे। बच्चोंकी तरह जल्दी या छिछोरपन न करे। जिस स्त्रीमें संयम गुण है, उसमें गृह-प्रबंध, संतान-पालन और पति-सेवाकी भी योग्यता है। उसके घरमें दुःख आपत्तिका कभी प्रवेश नहीं हो सकता। चाहे उसके पतिकी आमदनी कितनी ही थोड़ी हो, तो भी वह ऐसी उत्तम रीतिसे घरका प्रबंध करती है कि गरीबीका कभी ख्याल भी नहीं हो सकता। वह घरके सब कामोंको स्वयं अपने हाथसे करती है और अपने पतिपर केवल आजीविकाका भार छोड़ती है।

श्रमकी आवश्यकता केवल गरीबोंके लिए नहीं है और न केवल धन कमानेके लिए इसकी जरूरत है। गरीब अमीर सबके लिए श्रमकी जरू-

रत है । स्वास्थ्यरक्षा और गृहप्रबंधके लिए यह मुख्य चीज है । यदि स्त्रीको श्रम करनेका अभ्यास नहीं है, आलस्यमें पलंगपर पड़े पड़े समय व्यतीत करनेकी आदत है, तो याद रक्खो उसकी संतान भी आलसी होगी। उसके घरके नौकर-चाकर आलसी बने रहेंगे। कोई काम ठीक समयपर नहीं होगा । जब घरकी स्वामिनी ही देरमें सोकर उठती है, काम करते हुए जी चुराती है, नौकरोंके कामको देखती भालती नहीं, तो फिर भला उस घरमें कैसे सुख हो सकता है । सुख तभी हो सकता है जब घरकी मालिकिनको स्वयं काम करते हुए संकोच न होता हो। इससे हमारा यह अभिप्राय नहीं कि अमीर लोग नौकर-चाकर रखना छोड़ दें, उनके घरोंकी औरतें ही सब काम करने लगें, हमारे कहनेका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक स्त्रीको चाहे वह गरीब हो चाहे अमीर, काम करनेकी आदत होनी चाहिए । नौकरोंके भरोसेपर हरएक कामको नहीं छोड़ देना चाहिए। इस बातसे किसीको भी इंकार नहीं हो सकता कि नौकरोंको मालककी चीजसे इतना प्रेम नहीं हो सकता जितना मालिकको अपनी चीजसे होता है । नौकरोंको इस बातकी चिंता रहती है कि किसी तरह काम जल्दी हो तो हमें छुट्टी मिले, हम अपने घर जायँ, आराम करें । यदि मालिककी उनपर देखभाल न हो तो बहुधा वे कामको बेगार समझकर खराब कर देते हैं । दूसरे काम न करनेके अभ्याससे घर नौकरोंके हाथमें हो जाता है। एक रोज महाराजिन रोटी बनाने न आई, अथवा किसी दिन बर्तन साफ करनेवाली बीमार पड़ गई तो उस दिन चूल्हा बंद । गृहिणीको काम करनेका अभ्यास नहीं, आग जलाते हुए उसकी आँखोंमें आँसू आते हैं, बरतन साफ करते हुए उसे शर्म मालूम होती है, बच्चोंको नहलाते-धुलाते कपड़ा पहनाते उसे संकोच होता है । परिणाम यह होता है कि उस दिन सब काम बंद रहते हैं । नौकर भी अपनी स्वामिनीकी यह दशा देखकर मानी हो

जाते हैं। वे समझ लेते हैं कि घर हमारे हाथमें है। इसके सिवाय सबसे बड़ा दोष आलसमें यह है कि आलसी मनुष्य चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष, स्वस्थ नहीं रहता। शरीररूपी मशीनको चाबी देनेकी जरूरत है। चाबी देना श्रम करना है। श्रमके विना शरीर किसी कामका नहीं रहता। नाना प्रकारके रोग उसे घेर लेते हैं। अजीर्ण और मंदाग्नि उसमें जीवनपर्यंतके लिए वास करने लगते हैं। भारतकी सैकड़ों स्त्रियां श्रम न करनेके कारण बारहों महीने बीमार रहती हैं। धनिकसमाजमें यह बात विशेष कर पाई जाती है। अतएव विवाह करनेसे पहले यह देख लेना जरूरी है कि जिस कन्याके साथ हमारा विवाह होनेवाला है उसमें आलस तो नहीं, श्रम करनेका उसे अभ्यास है या नहीं। यदि उसके माता पिताने उसे श्रम करनेका अभ्यास नहीं कराया है, तो उससे तुम्हें वह लाभ कदापि नहीं हो सकता जिसके लिए तुम विवाह करते हो। तुम्हारा घर ऐसी स्त्रीसे कदापि फलफूल नहीं सकता, चाहे तुम्हारी आमदनी कितनी ही जियादा हो; परन्तु तुम्हारी आलसी स्त्री सब नष्ट कर देगी और उससे जो सन्तान उत्पन्न होगी वह संसारमें कभी उन्नति नहीं कर सकेगी। उसी कन्यासे विवाह करो जिसे धनिककी पुत्री होकर भी घरके छोटे छोटे काम करनेमें भी तनिक भी संकोच नहीं होता।

मितव्ययता।

इसका अर्थ किफायतशारी है, अर्थात् अपने धन, समय और श्रमको योग्य रीतिसे जहाँ आवश्यकता हो वहाँ खर्च करना। इससे यह मतलब नहीं कि रुपयेको जोड जोड़कर रक्खा जाय और उसमेंसे चाहे कितनी ही जरूरत हो, एक पैसा भी खर्च न किया जाय। यह कंजूसी है। किफायतशारीसे यह भी मतलब नहीं है कि रुपयेको बिना देखे भाले जहाँ चाहे खर्च कर देना। इसका नाम फिजूल-खर्ची है। किफायतशारी इन

दोनों के बीचमें है। फिजूल खर्ची भी बुरी है और कंजूसी भी बुरी है। इन दोनोंसे सिवाय दुःखके और कुछ हासिल नहीं होता। जिस स्त्रीमें फिजूलखर्चीकी आदत है वह घरका ठीकठीक प्रबंध नहीं कर सकती। वह अपने पतिकी सारी आमदनीको महीना पूरा होनेसे पहले ही खर्च कर डालती है। उसको महीनेके अंतिम सप्ताहमें उधार लेना पड़ता है। जब रुपया उसके हाथमें आता है वह तुरंत खर्च कर डालती है। प्रायः उन चीजोंको खरीद लेती है जिनकी कोई आवश्यकता नहीं होती, अथवा बहुत कम आवश्यता होती है। परिणाम यह होता है कि बादमें जरूरी चीजोंके लिए पैसा नहीं रहता। इसके विपरीत जो स्त्री कंजूस है, वह भी सुखसे नहीं रह पाती। उसके घरमें बच्चोंको न अच्छा खाना मिलता है और न अच्छे कपड़े मिलते हैं। वे पैसे पैसेको तरसते हैं। अतएव तुम्हें उचित है कि तुम उस कन्यासे विवाह करो जिसमें न तो फिजूल खर्चीकी आदत हो और न कंजूसीकी।

भारतवर्षमें प्रायः देखनेमें आता है कि स्त्रियाँ अपने जेवर और कपड़ोंमें बहुत रुपया फिजूल खर्च करती हैं। हमने देखा है कि चाहे घरमें खानेको भी न हो, चाहे बच्चे गरीबीके कारण शिक्षासे बँचित रहते हों, परंतु गृहिणीके बदनपर जेवर जरूर होता है। जो मजदूर दिनभर श्रम करनेके बाद चार आने शामको कमाता है, वह भी सूदपर रुपया उधार लेकर अपनी स्त्रीकी फरमाइशको पूरा करता है। स्त्रियोंके जेवरके कारण भारतके लाखों मनुष्य जीतेजी ऋणके भारसे मुक्त नहीं होते। स्त्रियोंमें फिजूलखर्चीकी आदत शुरूसे होती है। छोटी छोटी लड़कियाँ जब अपनी माता बहिनोंको जेवरके लिए रातादिन चिंता करती हुई देखती हैं, तब वे भी जेवरको पसंद करने लगती हैं। यद्यपि उनके नाक, कान जेवरसे बिंधे रहते हैं, तो भी वे जेवरको नहीं छोड़ती। जिस तरह स्त्रियाँ रुपयेको फिजूल खर्च करती हैं, इसी तरह वे अपने समय और श्रमको

भी फिजूल खर्च करती रहती हैं। ऐसी स्त्रियोंसे कदापि सुख नहीं मिल सकता।

स्वच्छता।

यह एक ऐसा गुण है कि जिसके विना चाहे स्त्रीको ऊपरसे नीचे तक जेवरसे लाद दो, कितने ही सुंदर सुंदर कपड़े पहन दो, परंतु वह अपने पतिको कभी प्रसन्न नहीं कर सकती। चाहे पुरु स्वयं कितने ही मैले कुचैले रहते हों; परंतु वे इस बातको अवश्य देखन चाहते हैं कि उनकी स्त्रियाँ स्वच्छ रहें। उनके वदनपर मैल न हो उनके कपड़ोंमेंसे बू न आती हो। जो स्त्रियाँ जेवर पहने रहती हैं उन शरीरपर जेवरके नीचे मैल जमा रहता है। अनेक स्त्रियोंके कपड़े फ रहते हैं, उनपर दाग या धब्बे पड़े रहते हैं, दाँतोंपर मैल जमा रहत है, वाल बिखरे रहते है, हाथ पैर मैलके कारण फटे रहते हैं, सिर जूँ पड़ जाते हैं, नख बढ़े रहते हैं। ये सब बातें फूहड़पनको प्रक करती हैं। ऐसी फूहड़ स्त्रियोंसे कभी सुख नहीं मिल सकता। जिस घर वे रहती हैं वह भी उनके कारण मैला कुचैला रहता है। जहाँ ढेर कूड़ा करकट जमा रहता है। सब चीजें बेकायदा इधर उधर पड़ी रह हैं। बच्चे मैले कुचैले और गंदे रहते हैं। उनकी आँखोंपर ढीढ़ ज रहती है, मुँहसे लार बहती है, नाकमें सिनक भरी रहती है, वद धूलसे भरा रहता है। ये सब बातें गृहिणीके अस्वच्छ रहनेके कार होती हैं। जो स्त्री स्वच्छ रहती है, जिसको सफाईसे प्रेम होता है, खुद भी साफ रहती है और अपने घर और बच्चोंको भी साफ रख है। सफाई चित्तको आकर्षित कर लेती है। अतएव जिस कन्य तुम्हारा विवाह होता हो उसमें सफाईकी आदतका होना जरूरी है।

गृह-प्रबंध।

घरका प्रबंध किस तरह करना चाहिए, इसका थोड़ा बहुत ज्ञ प्रत्येक स्त्रीके लिए आवश्यक है। इसके विना बड़ेसे बड़े राजाकी

भी तुच्छ दृष्टिसे देखने योग्य है। स्त्री और पुरुषका जोड़ा प्राकृतिक है। पुरुष आजीविकाकी चिंता करता है और स्त्रीको घरका प्रबंध करना जरूरी है। किस प्रकार खाना बनाना चाहिए, किस तरह कपड़े सीने चाहिए, किस तरह बच्चोंका पालन करना चाहिए, नौकरोंके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, उनसे किस तरह काम लेना चाहिए, इन सब बातोंकी शिक्षा स्त्रियोंके लिए आवश्यक है। यदि स्त्री खाना बनाना नहीं जानती, सीना पिरोना नहीं जानती तो चाहे वह लिखना पढ़ना जानती हो, उससे कुछ लाभ नहीं। खाना बनाना, कपड़े सीना, बच्चोंकी रक्षा करना ये सब हुनर हैं। इनके जाने बिना पढ़ना लिखना किसी कामका नहीं। यदि तुम्हारी स्त्री हारमोनियम बाजा बजाना अच्छा जानती है, चिट्ठी पत्री लिखना जानती है, परंतु मिठाई बनाना नहीं जानती, तुम्हारे कपड़े सीना नहीं जानती तो उससे तुम्हें सुख नहीं मिल सकता।

भारतमें कुछ दिनोंसे ऐसी धारा बही है कि लड़कियोंकी शिक्षा उनके पढ़ाने लिखानेमें ही समझी जाती है। घरके कामोंकी उन्हें शिक्षा नहीं दी जाती। थोड़ा बहुत पढ़-लिखकर उनमें विलासता आ जाती है। फेशन उन्हें घरके कोई काम नहीं करने देती। वे असलमें घरके कामोंको जानती भी नहीं। परिणाम यह होता है कि वे नौकरों पर निर्भर रहती हैं। नौकर उन्हें पानी पिलावे वे पी लेती हैं और नौकर उन्हें खाना खिलावे वे खा लेती हैं। अपने हाथसे उनसे फूली नहीं टूटती। नौकर भी ऐसे घरोंमें मजे करते हैं। जो चाहे खाते और जो चाहे उड़ा ले जाते हैं, कारण कि कोई देखभाल करनेवाला नहीं होता। ऐसी शिक्षासे मेरी समझमें अशिक्षित रहना अच्छा है। शिक्षाका अर्थ असलमें किसी पुस्तकके पढ़ लेने अथवा किसी भाषामें लिख लेनेका नहीं है। शिक्षाका असलमें यह अर्थ है कि जिस कामको एक व्यक्ति

करता है उसे वह अच्छी तरह जानता है या नहीं। यदि कोई इंजीनियर है और इंजीनियरीके कामको अच्छी तरह जानता है, इंजिनके पुरजे पुरजेसे भली भाँति परिचित है तो उसे शिक्षित कहना चाहिए, चाहे वह किसी भाषाका एक अक्षर भी न जानता हो । इसी प्रकार स्त्रीका काम घरकी देख-भाल और उसका प्रबंध करना है। इसी कारण उसे गृहिणी कहते हैं, उसके लिए गृहप्रबंधकी शिक्षाकी जरूरत है। वह जानती हो कि कैसे घरका काम किया जाता है, किस तरह नौकरोंसे काम कराया जाता है । किस प्रकार बच्चोंका पालन किया जाता है, उनको क्या क्या रोग हो जाते हैं और उनकी क्या ओषधि की जाती है। ऐसी स्त्रीसे ही गृहसुख मिल सकता है। जिस स्त्रीमें यह योग्यता नहीं, वह चाहे एम. ए. पास क्यों न हो, गृहिणी बननेके योग्य नहीं। अतएव तुम्हें उचित है कि शादी करनेसे पहले इस बातको देख लो कि जिस स्त्रीसे तुम्हारा विवाह होनेवाला है उसमें गृहप्रबंधकी योग्यता है या नहीं।

उत्तम स्वभाव।

स्त्रीके साथ जन्मभरके लिए सम्बन्ध होता है । अतएव इस बातकी सबसे अधिक आवश्यकता है कि उसका स्वभाव अच्छा हो । कुछ स्त्रियोंका स्वभाव चिड़चिड़ा होता है । जरासी कोई बात उनके विरुद्ध कह दो, झट बिगड़ने लगती हैं, नाक मुँह सिकोड़ लेती हैं । कुछ स्त्रियोंमें हरएकसे लड़ने-झगड़नेकी आदत होती है । बे-बात बे-मतलब वे लड़ाई मोल लेती हैं । कुछ स्त्रियोंमें हठ बहुत जियादा होती है । तिरिया-हठ प्रसिद्ध है। जिस बातकी धुन लग जाती है, बस फिर लाख समझाओ, नहीं मानतीं। कुछमें व्यर्थकी बकवाद करनेकी आदत होती हैं और कुछको घमंड होता है । साधारण स्त्री-पुरुषोंसे बोलना उन्हें बुरा लगता है। अनेक स्त्रियोंमें क्रोध महा तीव्र होता है । ये सब अव-

गुण हैं। ऐसी स्त्रियोंसे उत्तम पुरुषोंका निर्वाह होना कठिन है। विवाहसे पहले कन्याके स्वभावकी परीक्षा करना बड़ा जरूरी है। जिस कन्याका स्वभाव सरल और मृदु हो, जिसमें क्रोध तीव्र न हो उसके साथ विवाह करो। बुरे स्वभाववाली स्त्रीको पाकर पुरुषको सुखके बदले दुःख उठाना पड़ता है और जन्मभर पछताना होता है। ऐसी स्त्रीसे बिना स्त्रीके रहना अच्छा है। विवाह इस लिए किया जाता है कि मनुष्यको सुखदुःखके समयपर काम आनेवाला एक सच्चा मित्र मिले, न कि इस लिए कि अपने सिरपर एक आपत्ति मोल ली जाय।

रूप।

रूपमें आकर्षण करनेकी बड़ी शक्ति है। लोग सुंदर चित्रोंको देखकर मोहित हो जाते हैं, फिर वास्तवमें रूपवती स्त्रीको देखकर तो कौन नहीं प्रसन्न होता। गुलाबके फूलको क्यों लोग पसंद करते हैं? लोग अपने बगीचोंमें फूलोंके वृक्ष और लतायें क्यों लगाते हैं? इसी लिए कि वे सुन्दर होते हैं। सुंदर वस्तुको देखते ही मन प्रफुल्लित हो जाता है। कैसे ही शोक और दुःखमें मनुष्य बैठा हो, एक सुंदर फुलोंका गुलदस्ता देखते ही आमोदमें भर आता है। इसी प्रकार सुंदर रूपवती स्त्री भी आनंदका कारण होती है। कुरूपा स्त्री चाहे कितना ही गहना और कपड़ा पहने हो, चाहे कितना भी बनाव शृंगार करे, परंतु उसे देखकर चित्त प्रसन्न नहीं होता। रूपवती स्त्रीको गहना पहनानेकी आवश्यकता नहीं। वह बिना गहने कपड़ेके ही सुंदर मालूम होती है। अतएव विवाह करनेसे पहले इस बातका देख लेना जरूरी है कि जिस कन्याके साथ विवाह होनेवाला है वह हमारे मनको आनंददायक है या नहीं।

सुंदरताका कोई आदर्श नियत नहीं किया जा सकता। सुंदरताके विषयमें हरएक आदमीका पृथक् पृथक् विचार होता है। मतलब यह है कि, यदि उसकी सूरत आपके मनको प्यारी लगती है तो उसके साथ

विवाह कीजिए। अन्यथा उसके साथ विवाह करना अपने जीवनको दुखी वनाना है और एक वेचारी कन्याको भी जन्मभरके लिए दुःखमें डालना है। एक वार सम्वन्ध करके फिर उससे सम्वंध त्यागना यह सभ्य पुरुषोंका काम नहीं है। जिस स्त्रीके साथ धर्मानुकूल तुम्हारा पाणिग्रहण हो गया, जन्मभर उसीके साथ निवाहना होगा। इसी लिए इस वातकी आवश्यकता है कि पहले अच्छी तरहसे सोच विचार लो, पीछे विवाह करो। आजकल देखनेमें आता है कि कितने ही शिक्षित पुरुष अपनी स्त्रियोंसे सम्वन्ध छोड़ वैठते हैं और इसका मुख्य कारण उन वेचारियोंका कुरूप होता है। यदि विवाह करनेसे पहले इस वातको देख लिया जाता, तो यह हालत न होती।

यद्यपि ये वातें आजकलके रसम-रिवाजके विरुद्ध हैं, परंतु रसम-रिवाजका वनाना हमारे हाथमें है। हमको ऐसे रसम रिवाज वनाना चाहिए जिनसे सुख मिले। पहले समयमें स्वयंवरकी प्रथा थी, जिसमें कन्या स्वयं अपनी रुचिसे अपना पति चुनती थी। व ही व्यक्ति स्वयंवरमें जाता था, जो उस कन्यासे विवाह करनेकी इच्छा रखता था। इस प्रकार दोनोंकी इच्छा और रुचिसे जो सम्वंध होता था वह जन्मभरके लिए स्थिर रहता था और एक दूसरेको सुखका कारण होता था। आजकल भी इसी वातकी आवश्यकता है कि जव वर कन्याको और कन्या वरको पसंद कर ले, दोनोंके स्वभाव मिलते हों, दोनोंकी अवस्था अनुकूल हो तव विवाह किया जाय।

चौथा अध्याय ।
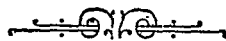
यद्यपि तुमने सब बातोंको अच्छी तरहसे देखकर किसी कन्याके साथ विवाह कर लिया, तथापि याद रक्खो अभी तुम्हारा काम पूरा नहीं हुआ । तुम्हें गृहसुख उसी समय मिल सकता है, जब तुम गृहस्थीमें प्रवेश करके अपनी स्त्रीको शिक्षा देने और उसे अपने अनुकूल बनानेमें असावधानी न करो । कितनी ही कन्यायें जो अपने माता पिताके घर सब कामोंको अच्छी तरहसे करती हैं, जिनमें सारे गुण मौजूद होते हैं, सुसरालमें आकर पतिकी बेपरवाईसे सुस्त, कमजोर और फिजूलखर्च बन जाती हैं ।

सबसे पहली बात जो तुम्हें अपनी स्त्रीको समझानी चाहिए, मितव्ययता है । उसके मनमें युक्तियोंसे और दृष्टान्तोंसे इस बातको जमा दो कि फिजूल-खर्ची बुरी है । सदा आमदनीसे कम खर्च करना चाहिए । कुछ रुपया बचाकर आगेके लिए रखना चाहिए । कौन जानता है कब खर्चकी जरूरत पड़ जाय, बीमारी हो जाय, बच्चे पैदा हो जायँ । यदि उस समय रुपये पास न हों, तो कैसे काम चलेगा । खर्चोंमें जहाँ तक हो सके कमी करनी चाहिए । उन्हीं बातोंमें खर्च करना चाहिए, जिनके बिना काम नहीं चल सकता । नौकरोंके विषयमें खास तौरसे ध्यान रखना चाहिए । प्रथम तो जिस घरमें केवल पतिपत्नी दो व्यक्ति हैं वहाँ नौकरकी जरूरत नहीं । दो आदमियोंका काम कुछ जियादा नहीं होता । स्त्री आसानीसे कर सकती है । घरका काम करनेमें कोई मानहानि नहीं है । बल्कि काम करनेसे स्वास्थ्य अच्छा रहता है और सुस्ती नहीं आती । बिना काम खाली पड़े पड़े आदमी सुस्त हो जाता है और सुस्ती बीमारीका घर है । नौकर लोग एक तो आजकल मँहगे बहुत हैं, दूसरे उनको

घरकी चीजोंसे इस कदर प्रेम नहीं हो सकता जितना गृहिणीको होता है। उदाहरणमें बरतनोंको लीजिए। यदि नौकर बरतनोंको साफ करेगा तो वे जल्दी घिस जायँगे। परन्तु यदि गृहिणी अपने हाथसे उन्हें साफ करे, तो वे जियादा दिन तक रहेंगे और अच्छे रहेंगे। इससे हमारा यह मतलब नहीं कि अमीर लोगोंको जिनके पास काफी रुपया है, नौकर नहीं रखने चाहिए। हमारे कहनेका तात्पर्य यह है कि यदि तुम वास्तवमें देखो कि काम जियादा है, नौकरकी जरूरत है, स्त्री अपने हाथसे सब कामोंको नहीं कर सकती और तुम्हारी आमदनी भी काफी है, नौकरको आसानीसे रख सकते हो, तब तो नौकर रक्खो, अन्यथा थोड़ेसे कामके खातिर आमदनी भी थोड़ी होनेपर नौकर रखना फिजूल है। साधारण स्थितिके मनुष्योंके लिए नौकरकी जरूरत नहीं है। तुम अपनी स्त्रीको समझा दो कि नौकरका रुपया जमा करती जाओ। यह रुपया सुख-दुःखके समय काम आयगा—तुम्हारे बच्चोंकी शिक्षामें लगेगा। यदि तुम उस रुपयेको स्त्रीको ही दे दो, तो स्त्री बड़ी खुशीसे घरका काम करने पर राजी हो जायगी। राजी न होनेकी कोई बात नहीं। हजारों घरोंमें स्त्रियाँ काम करती ही हैं। ग्रामोंमें शायद ही किसी घरमें नौकर होगा। शहरोंमें अमीरोंकी देखादेखी नौकरोंकी जरूरत होती है। यदि तुम शुरूसे स्त्रीको काम करनेका अभ्यास कराओ तो उसको कोई उजर नहीं हो सकता। भारतीय स्त्रियोंमें यही तो एक गुण है कि वे अपने पतिकी आज्ञाका उल्लंघन नहीं करतीं। जिन घरोंमें स्त्रियाँ काम नहीं करतीं, उसका कारण उनके पति होते हैं। अतएव यह तुम्हारा कर्त्तव्य है कि, तुम अपनी स्त्रीको किफायतसे खर्च करनेका पाठ शुरूसे पढ़ाते रहो। स्त्रियाँ प्रायः जेवर और कपड़ोंमें, विवाह और शादियोंमें, जन्म और मरणके अवसरों पर बहुतसा फिजूल खर्च कर देती हैं। इनके विषयमें तुम उन्हें शिक्षा देते रहो कि इनमें रुपया लगा-

नेसे कुछ लाभ नहीं होता। रुपया बच्चोंकी शिक्षामें, स्वास्थ्य-रक्षामें और गरीबोंकी सहायतामें खर्च करना चाहिए।

दूसरी बात जिसका प्रत्येक पतिको ध्यान रखना जरूरी है यह है कि वह अपनी विवाहिता स्त्रीसे पूर्ण प्रेम करे। विचार करनेकी बात है कि जिस स्त्रीने जन्मपर्यंतके लिए अपनेको आपके अर्पण कर दिया है, अपने सुख-दुःखको, अपने मन और शरीरको आपकी भेंट कर दिया है, उससे प्रेम करना, उसको अपना अंग समझना आपका धर्म है। स्त्रीके लिए इस संसारमें पतिके सिवाय और कोई शरण नहीं है। पति ही एक मात्र उसका अवलम्ब है। चाहे पति उसे सुखसे रक्खे, चाहे कष्ट दे—कोई उसका देखनेवाला नहीं है। ऐसी दशामें यदि पति अपने पत्नीव्रत-धर्म्मका पालन न करे, तो उसके समान जगतमें कोई निंद्य नहीं है।

प्रायः देखा जाता है कि जितना प्रेम पतिको अपनी स्त्रीपर विवाहके समय होता है, जो भाव वह उसके विषयमें पहले पहले रखता है वह धीरे धीरे कम होता जाता है। इससे प्रकट होता है कि वह झूठा प्रेम विषयवासनाकी तृप्तिके लिए होता है। सच्चा प्रेम क्षणिक नहीं होता; किन्तु पत्थरकी लकीरके समान स्थायी होता है। स्त्रीको विषयवासनाके लिए मत समझो। तुम्हारा उसके साथ सम्बन्ध इसलिए नहीं हुआ कि तुम पशुवत् उससे अपनी कामकी इच्छाको ही पूरी किया करो। यदि तुमने स्त्रीको इसी लिए समझा है और विवाहका यही उद्देश्य ख्याल किया है, तो तुम्हें धिक्कार है। तुमने लाख रुपयेकी चीजको पाकर उससे दो कौड़ीका काम लिया। याद रक्खो स्त्री तुम्हारी सच्ची मित्र है। स्त्रीसे बढ़कर तुम्हारा हित चाहनेवाला संसारमें कोई नहीं है। सुबहसे शामतक और शामसे सुवहतक चौबीसों घंटे वह तुम्हारे हितकी कामना करती रहती है। तुम्हारे सुखोंसे सुखी होना,

तुम्हारे दुःखोंमें दुःखी होना वह स्वभावतः अपना कर्त्तव्य समझती है। अतएव उसके साथ तुम्हें निरंतर प्रेमभाव रखना चाहिए और वह प्रेम दिन दिन बढ़ाते जाना चाहिए।

स्त्रीका आदर करना, उसके भावोंकी रक्षा करना, उसके मनकी बातको जानना, उसके सिवाय समस्त स्त्रियोंको माता बहिन समान समझना, तुम्हारा कर्तव्य है। केवल बातोंसे ही उसके मनको प्रसन्न न करो-किंतु अपने कार्योंसे भी उसे इस बातका निश्चय करा दो कि तुम सच्चे दिलसे उसके साथ प्रेम करते हो। दुःख आपत्तिके समय तुम उसकी पूरी पूरी रक्षा करो। धन श्रम आदि किसी बातसे भी संकोच न करो। यदि तुम्हारे पास हजार रुपयेकी पूँजी है और तुम्हारी स्त्री बीमार है, तो उसके इलाजमें हजारके हजार खर्च करते हुए भी मत घबराओ। यदि तुम्हारी स्त्रीके पास कभी काम जियादा हो तो उसके काममें सहायता देना भी तुम अपना फर्ज समझो। अपने अवकाशके समयको इधर उधर फिजूलमें मत गवाँओ। खाली वक्तमें अपने घरमें अपनी स्त्री और अपने बच्चोंके पास बैठो और उनके साथ मनोरंजनकी बातें करो। समाचारपत्र देखो, अच्छी अच्छी पुस्तकें पढ़ो, देश और समाजकी उन्नतिके उपाय सोचो, बच्चोंको शिक्षा दो।

बहुतसे आदमियोंको बहुत रात गये तक बाहर रहनेकी आदत होती है। यह बुरी आदत है। स्त्रीको घरपर अकेली छोड़ना अच्छा नहीं है। अकेले उसका जी भी नहीं लग सकता। दिनभर आदमी काममें लगा रहता है। स्त्रीको भी घरके धंदे रहते हैं। रातका समय ही ऐसा समय है, जिसमें स्त्री पुरुष दोनों मिलकर अपने घरमें बैठ सकते हैं। स्त्री पुरुषके ज्ञानसे लाभ उठा सकती है और पुरुष स्त्रीसे गृहसम्बंधी बहुतसी बातें मालूम कर सकता है। जो पुरुष रातको घरसे बाहर रहते हैं उनपर स्त्रियोंका विश्वास नहीं रहता और ऐसी दशामें गृहधर्म सुखके स्थानमें दुःखका कारण होता है।

स्त्रियोंसे हरएक बातको छिपाना भूल है । इसमें संदेह नहीं कि बहुतसे गुप्तभेद ऐसे होते हैं कि यदि उन्हें स्त्रियोंपर प्रकट कर दिया जाय तो उनसे लाभके स्थानमें हानि होती है, परंतु साधारण बातोंसे भी स्त्रियोंको अज्ञान रखना भूल है । स्त्रियोंको अपना द्रोही या द्वेषी मत समझो । वे तुम्हारे सुख-दुःखकी साथिन हैं । बहुत जल्दी उनसे क्रोध भी मत करो । यदि उनसे कोई भूल हो जाय, तो क्षमा करो । भूल करना मनुष्यका स्वभाव है । भूलें तुमसे भी होती हैं । भूलें जान-बूझकर कोई नहीं करता ।

शास्त्रोंका कथन है कि जहाँ स्त्रियोंका आदर होता है वहाँ देवता निवास करते हैं । स्त्री देवी है, घरकी लक्ष्मी है, प्रेमकी साक्षात् मूर्ति है । यदि तुम्हें परोपकार सीखना है तो स्त्रीसे सीखो । किस तरह स्वार्थकी आहुति दी जाती है, इसका दृष्टांत तुम्हें स्त्रीसे बढ़कर और किसीमें नहीं मिल सकता । देखो, एक कन्या किस तरहसे युवावस्थामें अपनी सम्पत्ति, स्वाधीनता, शरीर और जीवन तकको एक पुरुषको समर्पित कर देती है । चाहे जिस समाजमें, चाहे जिस अवस्थामें और चाहे जिस दशामें उसे रक्खो उसे उजर नहीं हो सकता । चाहे किसी कन्याने अपने माता पिताके घर कभी भूमिपर भी पैर न रक्खा हो, चाहे उसने निर्धनताका नाम भी न सुना हो, परंतु वही कन्या पतिके घर आकर पतिके साथ नंगे पैर काटोंपर चलने और दो दो दिन तक भूख और प्यासकी वेदना सहनेके लिए तैयार हो जाती है और पतिदेवका संग छोड़ना क्षणमात्रके लिए भी पसंद नहीं करती । सीताजीकी कथा किसने नहीं सुनी ? उसी जनकनंदिनी जानकीने—जिसकी राज्यमहलोंमें सैंकड़ों दासियाँ सेवा करती थीं—रामचंद्रजीके साथ वन वनकी खाक छानी । द्रौपदीको पांडवोंने दाव पर लगा दिया, सहस्रों राजपूत महिलायें पतिके साथ चितामें जलकर राख हो गईं । क्या ये दृष्टान्त इस

बातके लिए काफी नहीं हैं कि स्त्री सर्वथा अपनेको पुरुषके अर्पण कर देती है। कठपुतलीकी तरह जिधरको चाहे वह उसे नचा सकता है।

स्त्री पुरुषके लिए कैसे कैसे दुःख सहती है, संतानोत्पत्तिके समय उसे जिस भीषण वेदनाको सहना पड़ता है, उसका पुरुष अनुमान भी नहीं कर सकता। बच्चोंका पालना स्त्रियोंका ही काम है। उन्हीं देवियोंको प्रकृति माताने यह शक्ति दी है। पुरुष इस कामके लिए सर्वथा अशक्त है। जिन बच्चोंकी माँ मर जाती है, उनका जीना कठिन हो जाता है। बे-माँके बच्चे आधे भी नहीं जीते। पिता चाहे बच्चोंसे कितना ही प्रेम रखता हो और चाहे कितना ही शक्तिशाली हो, उसे एक बच्चेका पालना भी कठिन हो जाता है; परंतु माता घरके सब कामधंदे करते हुए भी कई कई बच्चोंकी पालना करती है और आश्चर्यकी बात यह है कि इतना करने पर भी उसे तनिक भी व्याकुलता नहीं होती। रातको यदि बच्चा हिलता तक भी है तो तुरंत माताकी आँख खुल जाती है। जब तक स्वास चलती है, माता अपने बच्चेका बाल बाँका नहीं होने देती। आप गीलेपर सोती है, परंतु उसे सूखेपर सुलाती है। सारी सारी रात जागती रहती है। दस दस बार उसके कपड़े साफ करती है और मलमूत्र उठाती है। यह निस्स्वार्थ प्रेम माताहीमें पाया जाता है।

मूल पुस्तकके लेखक विलियम कावेट साहब लिखते हैं कि एक बार मैं गाड़ीमें जा रहा था। मैंने दूरसे देखा कि एक लड़की जिसकी उमर लगभग दो वर्षके होगी, सड़कके बीचमें धूपमें पड़ी हुई थी। उधरसे तीन बड़ी बड़ी गाड़ियाँ जिनमें हरएकमें पाँच पाँच घोड़े जुते हुए थे, बड़ी तेजीसे आ रही थीं और बच्चेके पास आना ही चाहती थीं कि मैंने अपनी गाड़ीको सड़कपरसे जितनी जल्दी हो सका, हटाया। मुझे पूरा यकीन था कि लड़की कुचली जायगी-उसका बचना

असम्भव है । गाड़ियाँ हाँकनेवालोंसे इस बातकी आशा करना फिजूल था कि वे लड़कीको सड़कमें पड़े हुए देखकर गाड़ियाँ थाम लेंगे। कारण कि एक तो गाड़ियाँ बहुत तेजीसे जा रहीं थीं, दूसरे बिल्कुल लड़कीके सिरपर आ गई थीं, तीसरे हाँकनेवाले शराबके नशेमें मस्त थे। एक घोड़ेकी टापें लड़कीकी छाती पर पड़ने ही वालीं थीं कि इतनेमें एक बढ़ईने जो वहीं पर सड़कके पास लकड़ी काट रहा था, झटसे लड़कीको पकड़ कर घसीट लिया । यद्यपि उसके घोड़ेकी लात लगी, परंतु लड़कीकी जान बच गई । लड़कीकी माँ भी जो कहीं पास ही कपड़े धो रही थी, घोड़ोंकी टापोंकी आवाज सुनकर और अपने बच्चेको सड़क पर पड़ा देखकर बेतहाशा दौड़ी और ज्योंही बढ़ईने लड़कीको खींचा, उसने गोदीमें उठाकर ऐसी जोरसे चीख मारी कि मैंने कभी नहीं सुनी । इसके बाद वह जमीनपर मुरदेकी तरह गिर गई। इससे अधिक वीरता, निःस्वार्थता और मातृप्रेमका अनुमान करना असम्भव है । वह घोड़ोंके पैरोंमें और गाड़ीके पहियोंमें बढ़ी चली जा रही थी। उसे अपने तन-बदनकी कुछ सुध न थी। लड़कीकी जानके खातिर वह अपनी जान खोनेको तयार थी । उसने असीम हर्षमें चीख मारी थी। लड़कीको गोदमें पाकर उसकी खुशीकी कोई हद न थी । खुशीमें ही बेहोश होकर वह जमीनमें गिर पड़ी थी । ऐसी दशामें १०० पीछे ९९ मातायें ऐसा ही करतीं। शायद ही ऐसी कोई चांडालिनी माता होगी जिसे अपने बच्चोंसे प्रेम न हो । देखो, याद रक्खो, विवाह करते समय इस बातका भी ध्यान रक्खो कि यदि कन्याको बच्चोंसे प्रेम नहीं है, तो उस कन्याके साथ भूलकर भी विवाह मत करो ।

पुरुषोंको भी स्त्रियोंके समान बच्चोंसे प्रेम होना चाहिए। स्त्रीके साथ अपना प्रेम प्रकट करनेका यह भी एक उपाय है । चाहे तुम अपनी स्त्रीकी कितनी ही प्रशंसा करो, परंतु यदि बच्चेसे प्यार नहीं करते हो तो

उसके हृदयमें तुम्हारी प्रशंसाका कोई असर नहीं हो सकता । भद्देसे भद्दे और कुरूपसे कुरूप बच्चेको भी माँ प्रेमकी दृष्टिसे देखती है और उसे चाँदसे अधिक सुन्दर और प्यारा समझती है । वह उसे देखते हुए नहीं थकती । यदि कोई उसके बच्चेसे प्रेम करता है तो वह अंगमें फूली नहीं समाती, परंतु यदि कोई उससे घृणा करता है तो वह उसकी आँखोंमें तीरकी तरह चुभता है । अतएव पुरुषको उचित है कि अपनी स्त्रीको प्रसन्न करनेके लिए बच्चेसे प्यार किया करे । बच्चेसे प्यार करना मानो उसकी मातासे प्यार करना है ।

बहुतसे आदमी बच्चोंसे प्यार करते और उन्हें खिलाते पिलाते हुए लज्जा करते हैं । वे समझते हैं कि यह काम स्त्रियोंका है । जिनके पास कुछ काम नहीं, जो आलसी हैं, वे इस कामको करते हैं । इसके उत्तरमें हम यही कहेंगे कि जो लोग ऐसा समझते हैं वे स्वयं आलसी हैं । इस कामके करते हुए उन्हें आलस आता है, इस लिए इस कामसे बचते हैं । काबेट साहब अपने विषयमें लिखते हैं कि " मैंने महीनों बच्चोंको अपने हाथोंसे खिलाया है । जितनी देर मैं घरपर रहता था, उसमेंसे आधा समय बच्चोंके खिलाने और आधा पुस्तकें लिखनेमें व्यय करता था । मैं कभी आलसी नहीं रहा और न कभी मैंने अपने समयको व्यर्थ नष्ट किया ।

पुरुषो, जितनी तुम्हें इस बातकी आवश्यकता है कि तुम अपनी स्त्रीसे प्रेमका व्यवहार करो, उतनी ही इस बातकी आवश्यकता है कि वह तुम्हारी आज्ञाओंका पालन करे । जिन बातोंमें वह सम्मति देनेके अयोग्य है उनमें हस्तक्षेप न करे । तुम्हारे विरुद्ध औरोंके सामने कुछ कहनेका साहस न करे । हमने देखा है कि कुछ पुरुष स्त्रियोंके अधीन बने रहते हैं । स्त्रियाँ उन्हें जिस तरह चाहे डपटती रहती हैं । स्त्रियोंको ऐसी स्वाधीनता देनी ठीक नहीं है । उनकी जबान तुम्हारे काबूमें रहनी

चाहिए। जिन बातोंसे उनका सम्बन्ध है, उनमें उनकी राय जरूरी है; परंतु जिन बातोंके समझनेकी उन्हें योग्यता नहीं, उनमें उनकी रायको प्रधानता देना भूल है। जैसे विवाहमें कितना रुपया खर्च किया जाय, कितने आदमी बुलाये जायँ, कपड़ा कितने रुपयेका बनाना चाहिए और जेवर कितने रुपयोंका। इन बातोंमें स्त्रियाँ कभी योग्य सम्मति नहीं दे सकतीं। वे तुम्हें कर्ज तक लेकर खर्च कर देनेकी सम्मति दे देंगी। ऐसे अवसरोंपर तुम्हें स्वयं सोचना चाहिए कि तुम कितना रुपया आसानीसे खर्च कर सकते हो और कितना तुम्हें खर्च करना चाहिए। स्त्रियोंको जेवरका बुरा शौक होता है। उसमें भी वे तुमको ठीक राय नहीं दे सकतीं। यदि तुम स्त्रियोंके कहनेमें आ जाओगे तो याद रक्खो पीछे बहुत पछताओगे,। इससे यह तात्पर्य नहीं कि स्त्रियोंको बिलकुल तुच्छ समझो, उनके शब्दों और भावोंकी इज्जत न करो। अभिप्राय यह है कि हरएक घरका एक मुखिया होना चाहिए। उसीके अनुसार घरभरको चलना चाहिए। मुखिया पदके योग्य स्त्री नहीं है। पुरुषको ही प्रकृतिने इसके योग्य बनाया है। अतएव पुरुषकी राय ही प्रधान है। धर्मसे, न्यायसे, युक्तिसे, प्रमाणसे पुरुष घरका शासक है। उसीकी अधीनतामें स्त्री और बच्चोंको रहना जरूरी है। परंतु स्मरण रहे कि पुरुषको अपने इस अधिकारकी रक्षाके लिए किसी हुक्मके निकालनेकी जरूरत नहीं है। उसको शुरूसे ही इस प्रकारका व्यवहार करना चाहिए कि जिससे उसकी स्त्री उसकी आज्ञामें रहे। कहकर अथवा जोर देकर आज्ञाका पालन नहीं कराना चाहिए। इससे कुछ लाभ नहीं। तारीफकी बात यह है कि पुरुष एक शब्द भी अपने मुखसे न कहे और स्त्री स्वतः उसकी आज्ञानुसार चलना अपना धर्म समझे।

जिस घरमें स्त्री-पुरुषमें परस्परमें नहीं बनती, वह घर कभी सुखी नहीं

हो सकता, न उसमें लक्ष्मी रहती है और न सरस्वती । निःसंदेह पुरुषको उचित है कि स्त्रीकी बातको ध्यानसे सुने, जो युक्तियाँ वह अपने पक्षमें रखती है उनपर विचार करे; परंतु यदि वे ठीक न हों तो उसे शांतिसे अपनी युक्तियाँ देकर समझावे और उसे निश्चय करा देनेका उद्योग करे । परंतु यदि तिस पर भी वह न माने, तो फिर अपनी ही रायके अनुसार काम करना चाहिए । समझाना तुम्हारा काम है परंतु यदि समझानेसे न माने तो कोई चारा नहीं । साथमें हम यह भी कहे देते हैं कि कभी कभी पुरुष भी अपनी रायके बनानेमें भूल कर बैठते हैं । यदि स्त्रीकी युक्तियाँ अकाट्य हैं, तुम उनका उसे संतोषजनक उत्तर नहीं दे सकते हो, तो इस दशामें तुम्हें सहसा अपनी रायके अनुसार भी नहीं कर बैठना चाहिए । कुछ समय तक उस बात पर विचार करो, यदि तुमसे कोई बुद्धिमान, अनुभवी पुरुष तुम्हारे पड़ोसमें रहता हो तो उससे सलाह लो । यदि वह भी स्त्रीकी रायको पसंद करे और तुम्हारी अंतरात्मा भी यही कहती हो तो अपनी रायको वापिस लेते हुए लज्जा न करो । इसमें लज्जाकी कोई बात नहीं है ।

अनेक पुरुष स्त्रियोंकी जरा जरासी बातमें हस्तक्षेप किया करते हैं । यह ठीक नहीं है । स्त्री गृहिणी है । खान-पान, रहन-सहन, पालन-पोषण, वग़ैरहके मामलोंमें स्त्रियोंको स्वतंत्रता देनी चाहिए । इसमें पुरुषोंकी राय मान्य नहीं है । स्त्रियाँ इस बातको अधिक अच्छा समझ सकती हैं कि किस तरह घरका प्रबंध किया जाय, किस तरह घरको सजाया जाय, कितना सामान मँगाया जाय, नौकरोंसे क्या और किस तरह काम लिया जाय ।

एक और बात जिसकी मैं पुरुषको शिक्षा देना उचित समझता हूँ यह है कि वह अपनी स्त्रीके मनमें अपनी ओरसे तनिक भी संदेह न उत्पन्न होने दे, अर्थात् उसे पत्नि-व्रत धर्मका अखण्ड रूपसे पालन करना

चाहिए। जिस स्त्रीके साथ तुम्हारा धर्मानुकूल पाणिग्रहण हुआ है, उसे छोड़कर शेष स्त्रियोंको अपनी माता और भगिनीके समान समझना चाहिए। यदि तुम्हारी स्त्रीके मनमें तुम्हारे विषयमें जरासा भी संदेह पड़ गया हो, तो उसे तुरंत निकाल दो, अन्यथा उसका परिणाम बुरा होगा। वह दिन दिन बढ़ता जायगा और तुममें और तुम्हारी स्त्रीके मनमें भेदभाव डालता जायगा। परिणाम यह होगा कि दोनों दुःखावस्थामें घुल-घुलकर मर जाओगे।

जिस तरह पुरुषको अपने चरित्रपर ध्यान देनेकी आवश्यकता है, उसी तरह अपनी स्त्रीके चरित्रपर भी पूर्ण रूपसे दृष्टि रखना आवश्यक है। यद्यपि कुशील या व्यभिचार स्त्री और पुरुष दोनोंके लिए बुरा है, दोनों निंदा घृणा और पापके भागी हैं; परंतु स्त्रीका व्यभिचारिणी होना प्रत्येक समाज और प्रत्येक देशमें असह्य है। व्यभिचारी पुरुष निःसंदेह अपनेको, अपनी संतानको, अपने कुटुम्बको और अपने समाजको कलंकित करता है, परंतु व्यभिचारिणी स्त्री इन दोषोंके अतिरिक्त परपुरुषसे अनुचित संबंध करके ऐसी नाजायज संतान उत्पन्न करती है कि जो पुरुषपर भारस्वरूप होती है और उसकी असली संतानके हकको नाश करनेवाली होती है। जो स्त्री शीलव्रतका पालन नहीं करती, पतिव्रत धर्मको अंगीकार नहीं करती, परपुरुषसे सम्बन्ध रखती है उसमें और वेश्यामें कोई अंतर नहीं है। ऐसी स्त्रीको समाज क्षणमात्रके लिए भी क्षमा करनेको तैयार नहीं है। प्रत्येक जाति उसे एकदम बहिष्कृत कर देती है। भारतवर्षमें एक पुरुष कई कई स्त्रियाँ रख सकता है, परंतु स्त्री एक पुरुषसे अधिक सम्बंध नहीं रख सकती। यद्यपि एक पुरुषको एक स्त्रीसे अधिक रखना उचित नहीं है; परंतु वह इतना बुरा नहीं माना जाता, जितना एक स्त्रीका एकसे अधिक पुरुषसे सम्बंध रखना।

विवाहके समय पति-पत्नीमें जो प्रतिज्ञायें होती हैं, उनपर दृढ़ रहना दोनोंका कर्त्तव्य है। दोनोंको एक दूसरेसे गाढ़ प्रेम रखना उचित है। न पुरुष परस्त्रीकी इच्छा रक्खे और न स्त्री परपुरुषकी चाहना करे। शास्त्रोंमें स्त्रीके लिए पतिव्रतसे बढ़कर दूसरा धर्म नहीं है। स्त्रीके लिए उसका पति ही आराध्यदेव है। उसकी सेवा करना, उसकी आज्ञाका पालन करना उसका धर्म है। सीता, अंजना, सावित्री आदि देवियोंकी जो इतनी प्रशंसा की जाती है उसका कारण उनका पतिव्रत धर्म ही है। जो स्त्री पतिव्रता नहीं होती, शील-धर्मका पालन नहीं करती, उसकी इस लोक और परलोक दोनोंमें निंदा होती है। सारा संसार उसे घृणाकी दृष्टिसे देखता है। ऐसी स्त्रीसे भूलकर भी सम्बंध करना बुरा है। उसको अपने घरमें रखना मानो वेश्याको अपने घरमें रखना है। अतएव तात्पर्य यह है कि यदि किसी पुरुषको यह मालूम हो जाय कि मेरी स्त्री किसी दूसरे पुरुषसे सम्बंध रखती है, तो उसे उचित है कि उससे तुरन्त अपना सम्बंध तोड़ दे। बच्चोंको भी उसके पास न रक्खे। परंतु स्मरण रहे, इस बातमें जल्दी करना बहुत हानिकर है। बहुत सोच समझ कर पूर्ण रूपसे निश्चय करके, यह करना उचित है। दूसरोंकी सुनी-सुनाई बातसे अथवा संदेह मात्रसे सम्बंध त्याग देना महान् अन्याय है—एक अबला स्त्रीको जन्मपर्यंतके लिए दुःखसागरमें डालना है। इससे अधिक अन्याय और पाप संसारमें और कोई नहीं है। कितने ही पुरुषोंने संदेह मात्रसे अपनी निर्दोष स्त्रियोंके प्राणोंको हरण कर लिया। और तो और स्वयं भगवान् रामचंद्रजीने केवल प्रजाके कहनेसे अपनी प्राणवल्लभा जानकी-जीको वनवास दे दिया। अतएव किसीके कहनेमें आकर इस हत्याके करनेके लिए तैय्यार न हो जाओ। इसमें अनुमानसे काम मत लो। जबतक अपनी आँखोंसे न देख लो, तबतक विश्वास करना भूल है। लोग किसीकी बढ़तीको देखकर प्रसन्न नहीं होते। किसी किसी मनु-

ष्यकी प्रवृत्ति ही दूसरोंकी निंदा करनेकी होती है। चाहे उनका कुछ स्वार्थ न निकले, परंतु उन्हें दूसरोंमें मुठभेड़ करा देनेमें ही आनंद आता है। दोको लड़ाकर तमाशा देखना उनका काम होता है। शेक्सपियर कविने एक नाटक लिखा है। उसका नाम उथेलो है। उसमें उसने 'आयगो' नामक एक मनुष्यका चित्र खींचा है कि जिसने अपने स्वामीके मनमें—जिसको उस पर अत्यन्त विश्वास था—अपनी स्वामिनीकी ओरसे भेद डाल दिया। स्वामिनी साक्षात् देवी थी। शीलव्रत और पातिव्रत धर्ममें यदि उसकी सीताजीसे समानता की जाय तो अत्युक्ति नहीं। स्वप्नमें भी कभी उस देवीने परपुरुषकी ओर दृष्टि नहीं की थी। अंतसमयतक भी उसने पतिव्रत धर्मसे मुँह नहीं मोड़ा। यद्यपि उसका पाषाणहृदय पति हाथमें तलवार लिये उसकी गर्दन काटनेके लिए तैयार था, परंतु वह सती, पतिव्रतधर्मकी मूर्त्ति, 'प्राणनाथ,' 'पतिदेव' इन्हीं शब्दोंका उच्चारण कर रही थी। जब ऐसी ऐसी देवियोंपर दुष्ट पुरुष अपना प्रहार किये बिना नहीं रहे, तो साधारण स्त्रियोंकी तो बात ही क्या है।

कितनी ही बार अनुमान झूठा होता है, आँख धोखा खा जाती है, बुद्धि मलिन हो जाती है, मन विवेकशून्य हो जाता है। इसलिए क्रोधके आवेशमें आकर संदेह मात्रसे स्त्रीके विषयमें कोई विरुद्ध राय मत बनाओ, अन्यथा पीछे पछताओगे और संसारमें हत्यारे कहलाओगे। स्त्री अबला होती है। उसकी आह पत्थरको भी चीर देती है।

पुरुषोंको इस बातपर भी ध्यान देना आवश्यक है कि, स्त्रियोंके चरित्रपर हमारा तो कोई बुरा असर नहीं पड़ता। जो पुरुष व्यभिचारी है, शराबी है, बुरी संगतिमें बैठता है, लुच्चे-गुंडोंको अपने यहाँ बुलाता है, वेश्याओंसे सम्बंध रखता है अथवा जो नपुंसक है, नामर्द हैं, प्रमेह आदि रोगोंसे ग्रसित है, यदि उसकी स्त्री अपने शीलधर्मसे डिग जाय,

तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं। इसका अपराधी वह है, न कि उसकी स्त्री। जब स्त्रियाँ पुरुषोंको परस्त्रियोंसे आसक्त हुआ देखती हैं, तो वे भी प्रायः अपने मार्गसे च्युत हो जाती हैं। १०० पीछे ८० स्त्रियाँ पुरुषोंके कारण बिगड़ती हैं। पुरुष स्वयं भी बिगड़ते हैं और स्त्रियोंको भी बिगाड़ते हैं। सच पूछो तो पुरुष ही सारी बुराईयोंकी जड़ हैं। यदि पुरुष स्वदारसंतोषव्रतके धारी बने रहें तो हम बलपूर्वक कह सकते हैं कि स्त्रियाँ कभी अपने पतिव्रतधर्मसे च्युत न हों।

बहुत से आदमी इन बातोंको देखकर गृहस्थीको जंजाल समझते हैं। वे कहते हैं कि विवाह करना मानो बैठे बिठाये एक आपत्ति मोल लेना है, परंतु यह उनकी भूल है। पहले तो गृहस्थीमें रहे बिना संतानोत्पत्ति नहीं हो सकती। यदि सब आदमी कुँवारे रहें तो संसार चलना कठिन हो जाय। दूसरे कामकी इच्छा स्त्री-पुरुष दोनोंमें होती है। विवाह हो जानेसे एक पुरुषका एक स्त्रीसे सम्बंध हो जाता है और दोनों समय समय पर अपनी इच्छाकी पूर्त्ति कर सकते हैं। यदि विवाह न हो तो इच्छाकी पूर्तिके लिए पुरुष वेश्याओंके पास जाने लगें और व्याभिचारकी वृद्धि हो जाय। तीसरे जिस पुरुषका विवाह नहीं होता, उसका कोई घर निश्चित नहीं होता। स्त्री और बच्चोंकी चिंताके न होनेसे उसके अवकाशका समय बुरी संगतिमें व्यतीत होता है। वह दिन दिन आलसी होता जाता है। चौथे सुख-दुःखमें कोई उसका मददगार नहीं होता। पाँचवें उसका घर नौकरोंके हाथमें रहता है। वे अच्छी तरह उसका सफ़ाया करते रहते हैं। कोई देखभाल करनेवाला नहीं होता। वह दिनभर अपने काम पर रहता है। नौकर पीछेसे मौज उड़ाते हैं।

विवाहित पुरुषोंको ये कठिनाइयाँ नहीं होतीं। वे घरको स्त्रीके भरोसे पर छोड़कर जहाँ चाहे जा सकते हैं। स्त्री घरकी पूरी पूरी

देखभाल रखती है। स्त्रीके सामने नौकरोंकी दाल नहीं गल सकती। गृहिणीसे ही घर है। घरकी रत्ती रत्ती भर चीज उसकी निगाहमें रहती है। दिनभर काम करनेके बाद जब शामको मालिक घर पर आता है, तो स्त्री और बच्चोंके प्रेमभरे शब्दोंको सुनकर उसकी सारी थकावट दूर हो जाती है। यदि उसे कभी कुछ तकलीफ हो जाती है तो उसकी स्त्री और बच्चे उसके लिए अपने प्राणतक दे देनेको तैय्यार रहते हैं। नौकरोंसे यह आशा करनी नितांत मूर्खता है। वे स्वार्थवश सेवा करते हैं; परंतु स्त्री निःस्वार्थभावसे उसको अपना एक अंग समझकर सेवा करती है। नौकरसे कुछ बेजा कह दो, अथवा उसका वेतन कम कर दो, वह उसी समय आपको छोड़ देगा। परंतु स्त्रीको आप चाहे जो कहें, चाहे उसे खाने तकको न दें, तो भी वह बेचारी आपकी सेवा करनेको तैयार रहती है; जीवन भरके लिए वह आपकी हो चुकी है। उसका और सेवकका मिलान करना ही भूल है। भूमि और आकाशमें जितना अंतर है उतना ही स्त्री और सेवकमें है, बल्कि स्त्री और मित्रमें है। आपत्तिके समय मित्र हितैषी भी संग छोड़ देते हैं। पास तक आते हुए डरते हैं। परंतु स्त्रीके मनमें यह भाव तक भी नहीं आ सकता। हमने देखा है कि प्लेगके दिनोंमें मित्र सम्बन्धी बात भी नहीं पूँछते हैं, परंतु स्त्री अपनी जान दे देती है और प्लेगपीड़ित पतिका सिर पकड़े हुए बैठी रहती है। गरज यह कि स्त्रीसे बढ़कर आपत्तिकालमें कोई सहायक नहीं है। अतएव अपनी जीवनयात्राको आनंदसे बितानेके लिए विवाह करना परमावश्यक बात है।

विवाहित पुरुषोंको अपनी जिम्मेवारियोंका भी ख्याल रहता है। ज्यों ज्यों बच्चे होते जाते हैं, उन्हें अपनी आमदनी बढ़ाने और श्रम करनेका स्वयमेव उत्साह होता जाता है। मूल पुस्तकके लेखक विलियम कार्बट साहब लिखते हैं कि "यदि मेरा विवाह न होता तो जितना मैंने काम किया है उसका हजारवाँ भाग भी मैं न कर सकता। विवाह हो

जाने पर मुझे अपने कर्त्तव्योंका ज्ञान हो गया और मैं अपने समयका सदुपयोग करने लगा ।"

इस अध्यायको समाप्त करनेसे पहले पुरुषोंको यह बतला देना भी उचित है कि जीवनका कोई भरोसा नहीं, न जाने कब मौत आजाय । इसलिए वे अपनी स्त्री और बच्चोंके लिए कुछ रुपया अवश्य जमा रक्खें, जो बादमें उनके काम आय । बहुतसे लोगोंका ख्याल है कि यदि स्त्री अपने पिताके घरसे कुछ नहीं लाई तो रुपये पर उसका कोई हक नहीं है । रुपया पुरुष कमाता है और वही उसका अधिकारी है । परंतु यह ख्याल ठीक नहीं है । प्रथम तो स्त्री कुछ न कुछ अपने पिताके घरसे लाती ही है । यदि न भी लाय तो यह क्या कम बात है कि वह रुपयेके स्थानमें स्वयं अपनेको लाई । जब वह अपने मन, वचन, कायको पतिके अर्पण कर चुकी, फिर उसके सामने रुपया क्या चीज है । विवाहके समय जो प्रतिज्ञायें स्त्री-पुरुषमें होती हैं उनसे स्त्रीका धन पुरुषका और पुरुषका धन स्त्रीका हो जाता है । इसके अतिरिक्त धन-संचय करनेमें स्त्री पुरुषको निरंतर सहायता देती रहती है । यद्यपि वह अपने पतिके साथ बाजारमें जाकर व्यापार नहीं करती, दफ्तर या कारखानेमें जाकर काम नहीं करती, तथापि वह घरपर रहकर घरका प्रबंध करती है, घरके सामानकी देख भाल रखती है, उसका सेवकों-द्वारा दुरुपयोग नहीं होने देती, घरको साफ सुथरा रखती है, शुद्ध-तया भोजन बनाती है, बच्चोंका पालन पोषण करती है, और उनके झगड़े तै करती है । ये काम भी जरूरी काम हैं । नौकर इन कामोंको कर सकते हैं; परंतु जीसे नहीं करते । वे पैसेकी जगह आना खर्च कर देते हैं । आना खर्च करते हैं और आना जेबमें रखते हैं । काम बिगाड़ते हैं और वेतन लेते हैं । स्त्रियोंके कारण फिजूलखर्ची नहीं हो सकती । अतः इस ख्यालको कि स्त्रियोंको पुरुषके रुपयेपर कोई

अधिकार नहीं है कभी मनमें नहीं लाना चाहिए, किंतु आमदनीमेंसे थोड़ा थोड़ा बचाकर आगेके लिए जमा करते रहना चाहिए।

बहुतसे आदमियोंको मरते समय यह भय होता है कि मेरे मरनेके बाद मेरी स्त्री दूसरा विवाह कर लेगी और उस दशामें यदि मेरा सारा धन मेरी स्त्रीके हाथमें रहा तो वह दूसरे पुरुषके हाथमें चला जायगा और उस पुरुषसे यह आशा कदापि नहीं की जा सकती कि वह मेरे बच्चोंकी रक्षा करेगा। वास्तवमें यह बात ठीक है। परपुरुषको सौतेले बच्चोंसे प्रेम नहीं हो सकता और न सौतेली माँको ही हो सकता है। परंतु जिस स्त्रीके बच्चे हैं, जो बहुत दिनों तक गृहसुख भोग चुकी है, वह यदि पुनर्विवाह करके अपने बच्चोंके सुखका नाश करे तो उसके समान दुष्टा माता कौन हो सकती है? यद्यपि जिसतरह पुरुषको भी पुनर्विवाहका अधिकार है उसी प्रकार स्त्रीको भी पुनर्विवाहका अधिकार होना न्याययुक्त है; परंतु शीलकी दृष्टिसे इसमें भिन्नता है। परपुरुषमें आसक्त रहनेवाली स्त्री परस्त्रीसे आसक्त रहनेवाले पुरुषसे अधिक निंद्य है।

प्रायः ऐसा भी देखनेमें आता है कि कोई कोई पुरुष स्त्री और बच्चोंके लिए जमा तो क्या करेंगे, उनके कपड़े और जेवर भी बेचकर उड़ा देते हैं। अमेरिकामें एक युवक था। देखनेमें वह बड़ा सभ्य और सुशील मालूम होता था। उसका विवाह भी एक सुंदर युवतीसे हो गया था। युवतीका पिता बड़ा धनवान् था और वह भी बड़ी सुशीला थी। परंतु दुर्दैवसे उस युवकको जुवा खेलने और शराब पीनेका व्यसन लग गया। न अब उसे अपने कामकी चिंता रही और न कुटुम्बकी रही। ४ वर्षके अंदर अंदर उसने अपनी जायदाद बेच डाली। फूटी कौड़ी भी उसके पास न रही। लाचार उसके श्वशुरको उसका और घरका खर्च उठाना पड़ा। यदि इतनेपर भी वह बस करता तो भी गनीमत थी; परंतु अब उसे ऐय्याशीका चसका लग गया और उसके लिए रातदिन रुपयेकी माँग होने लगी। यद्यपि उसके सुधा-

रनेके अनेक उपाय किये गये, परंतु कोई भी कारगर नहीं हुआ। वह दिन दिन विगड़ता गया। जब तक उसका दाव चला वह सास-ससुरको लूटता रहा। अंतमें एक अँधेरी रातमें शराव पीकर नौकामें बैठकर नदीमें गया और वहीं डूब गया। उसकी मौतसे उसकी अवला पतिव्रता स्त्रीको छोड़कर और सबको आनंद हुआ। लुच्चे वदमाशके मरनेसे किसे खुशी न होगी? चोर और डाकू भी ऐसे आदमीसे कहीं अच्छे होते हैं। जो आदमी चोरी करके और डाका डालके सजा पाते हैं, वे भी उस मनुष्यकी अपेक्षा कम दोषी हैं, जो डर और धमकी दिखाकर सीनाजोरीसे अपनी स्त्री और सास-ससुरका माल छीनकर वदमाशीमें खराव करते हैं और अपने कुलको कलंकका टीका लगाते हैं। ऐसे दुष्टोंको चोरों और डाकुओंसे बढ़कर सजा मिलनी चाहिए। घरसे एकदम उन्हें वाहर निकाल देना चाहिए। उनके वचनोंका विश्वास मत करो और उनकी सूरत तक भी मत देखो। उस युवकने एक वेचारी अवला कन्याको झूठे वचन देकर ठग लिया। माता पिताको चाहिए कि वे ऐसे पुत्रका एब कदापि न छिपावें। एव छिपानेसे वह दुष्ट कभी न मानेगा, किंतु सदा तुम्हें लूटता खसोटता रहेगा। जबतक वह घरमें रहेगा, घरका सत्यानाश करता रहेगा। कितने ही घर इस तरहसे नष्ट हो गये हैं। माता पिताने लाड़में पहले कुछ परवा नहीं की, वादमें जब घरका सफाया हो गया, वाहरवालोंका कर्जा हो गया तब क्या उपाय हो सकता है।

हमें आशा है कि हमारे पाठकगण ऐसे जीनेसे मरना अच्छा समझेंगे। विवाह करते समय उन्हें इस वातका ज्ञान होगा कि अब तक हम अकेले थे, परंतु अब हमपर अपना और अपनी स्त्रीका भार है। आगे जो संतान होगी उसका भार भी हम पर होगा। स्त्री और बच्चोंकी रक्षा करना, धर्म, अर्थ, कामसे उनकी पालना करना, उनके सुख दुःखका चिंतवन करना हमारा मुख्य धर्म है। जिस स्त्रीने अपने प्यारे जन्मदाता माता पिताको त्याग कर हमारी शरण ग्रहण की है उससे हम स्वप्नमें भी बुरा व्यवहार न करेंगे। उसे छोड़कर दूसरी स्त्रीकी ओर दृष्टि न करेंगे।

पाँचवाँ अध्याय ।
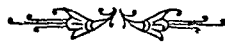
बाइबलमें लिखा है कि छोटे बच्चे देवके हाथमें तीरोंके समान हैं। वह आदमी बड़ा भाग्यवान् है जिसका तरकश ऐसे तीरोंसे भरा हुआ है, अर्थात् जिसके घरमें बच्चे हैं। पिताको जितना भरोसा अपने पुत्रपर होता है उतना और किसीपर नहीं हो सकता। पुत्र ही बुढ़ापेका सहारा होता है। पुत्रोंको देखकर युवावस्थामें आनंद होता है और वृद्धावस्थामें सान्त्वना होती है। पुत्र पिताके भावों और विचारोंका प्रतिबिम्ब होता है। पुत्रसे बढ़कर संसारमें कोई आनंददायक वस्तु नहीं है। पुरुषको स्त्रीसे भी इतना प्रेम नहीं रहता, जितना पुत्रसे हो जाता है। कारण कि पुत्र पुरुष और स्त्रीके परस्परके प्रेमका फल होता है। पुत्रहीन मनुष्यका जीवन निष्फल है। हिंदू शास्त्रकारोंने तो पुत्रके बिना पिताकी गति नहीं होती, यहाँतक लिखा है! तात्पर्य यह है कि संतान माता-पिताके हर्ष और आनंदका कारण होती है, परन्तु हर्ष और आनन्द उसी समय हो सकता है, जब कि संतानका भलीभाँति पालन-पोषण किया जाय और पिता संतानके प्रति अपने कर्त्तव्योंका पालन करे। अन्यथा संतान सुखके बदले क्लेश और दुःखका कारण होती है और सहारेके बजाय भार होती है। बहुतसे आदमी अपनी औलादकी शिकायत किया करते हैं। उनकी सूरत तक भी वे देखना नहीं चाहते। यह उनकी भूल है। वे स्वयं खराबीके कारण हैं। उन्होंने स्वयं अपनी असावधानीसे अपनी संतानके प्रति अपने कर्तव्योंका पालन नहीं किया। यदि वे शुरूसे सावधानी रखते और उनके मन और हृदयपर अच्छा प्रभाव डालते तो वास्तवमें वे उनके लिए आनन्दका कारण होते।

सबसे पहली बात जिसपर प्रत्येक पिताको ध्यान देना आवश्यक है यह है कि वह अपने बालकोंको उनकी माताके सिवाय और किसीका

दूध न पिलावे । माताके दूधपर बच्चोंका पूर्ण अधिकार होता है । बच्चे-का आहार ही माताका दूध है । उस दूधको प्रकृतिने बच्चेके लिए ही माँकी छातीमें पैदा किया है । और कोई चीज दुनियामें ऐसी नहीं है जो माँके दूधका बदला हो सके । माँके दूधके पले हुए बच्चे मोटे ताजे और तन्दुरुस्त होते हैं; परंतु यदि किसी कारणसे माँकी दूधीमें दूध न उतरे, अथवा माँ इतनी कमजोर हो कि दूध न पिला सके तो उस हालतमें गाय वगैरहके दूधका प्रबंध कर देना चाहिए, परन्तु धायको भूलकर भी नहीं रखना चाहिए । आजकल धनवानोंमें धाय रखनेकी प्रथा हो गई है, यह बड़ी हानिकर है । प्रथम तो जिन बच्चोंपर धाय रहती है वे माताकी अपेक्षा धायसे अधिक प्रेम करने लगते हैं । माताकी गोदमें जाकर वे इतने प्रसन्न नहीं होते, जितने धायकी गोदमें । बड़े होकर भी उन्हें मातासे प्रेम नहीं रहता । दूसरे जिस धायको बच्चेके लिए रक्खा जाता है उसके दूधपर तुम्हारे बच्चेका इतना अधिकार नहीं है, जितना स्वयं उसके बच्चेका है । क्या यह अन्याय नहीं है कि उसके बच्चेको अपनी माताके दूधसे वंचित कराकर तुम अपने बच्चेको उसकी माताका दूध पिलाते हो ? यदि तुम जरा आँख उठाकर प्रकृतिकी ओर देखो तो तुम्हें मालूम होगा कि कोई भी जानवर चाहे पशु हो चाहे पक्षी; अपना दूध दूसरे बच्चेको नहीं पिलाता । अपने बच्चेको दूध पिलाकर सब प्रसन्न होते हैं, परन्तु दूसरेके बच्चेको वे भी दूध नहीं पिलाते हैं जिनके बच्चे मर गये हों । माँ बच्चेको पहचानती है और बच्चा माँको पहचानता है । जंगलके पशुपक्षियोंको देखो वे अपने बच्चोंसे कितना प्रेम रखते हैं । भेड़ अपने बच्चेके मर जानेपर कितना चिल्लाती है । परन्तु यदि उसके बच्चेकी खाल अथवा खून उसे दिखा दिया जाय तो उसे कुछ संतोष हो जाता है । गाय अपने बच्चेके मर जानेपर प्रायः दूध

देना बंद कर देती है। दूसरी गायके बच्चेको पास तक नहीं आने देती। मुरगी अपने बच्चोंकी रक्षाके लिए कितने कष्ट उठाती है। जब तक उनको नहीं खिला लेती तबतक एक कण भी आप ग्रहण नहीं करती। जंगली चिड़ियाँ चाहे आदमीसे कोसों दूर भागती हों, परंतु जब अपने बच्चोंको आपत्तिमें देखती हैं तो वे उसके सिरके चारों तरफ उड़ती और चिल्लाती फिरती हैं और अपनी जानतककी परवा नहीं करतीं। अतएव किसीके बच्चेको उससे पृथक् कराकर उसे अपने बच्चेके लिए रखना अस्वाभाविक और प्रकृतिके विरुद्ध है।

बहुत सी अमीर घरोंकी मातायें इस ख्यालसे अपने बच्चोंको अपना दूध पिलाना छोड़ देती हैं कि कभी कभी बच्चा छातीको काट लेता है, अथवा उसमें सिर मार देता है। छिः! छिः! भला यह भी कोई कारणमें कारण है। जो माता अपने प्यारे बच्चेके लिए इतना कष्ट भी नहीं उठा सकती उसने व्यर्थ ही गर्भधारण किया। माताको तो इस कष्टसे प्रसन्न होना चाहिए और इसे सहर्ष सहना चाहिए। जब बच्चे जरा बड़े हो जाते हैं और वे अपनेसे छोटे भाई-बहिनोंके लिए माताको कष्ट उठाते देखते है तो उनको इस बातका विश्वास हो जाता है कि हमारे लिए भी माताने ऐसे कष्ट उठाये होंगे और इससे उनका प्रेम माताके प्रति और भी दृढ़ हो जाता है। जिन बच्चोंको अपने माता पितासे प्रेम होता है वे कभी बड़े होकर उन्हें दुःखमें नहीं देख सकते। इस कारण माताको उचित है कि अपने बच्चेको अपना दूध पिलावे और उसे अपने पास ही सुलावे।

प्रायः देखा जाता है कि बहुतसे बच्चे अपनी माँसे इतना प्रेम नहीं करते, जितना अपनी दादी (पिताकी माता) अथवा भुवा वगैरहसे करते हैं। इसका क्या कारण है? यही कि वे माँके पास इतना नहीं रहते जितना उनके पास रहते हैं। दादी, भुवा वगैरह फिर

भी घरकी औरतें हैं; परंतु यदि माताको छोड़कर धायसे बच्चा प्रेम करने लगे तो इसमें बड़ी हानि है, कारण कि धाय वर्ष दो वर्षके बाद चली जायगी। एक तो धायके चले जानेसे बच्चेको दुःख होगा, वह अबतक धायको ही वास्तवमें अपनी माता समझता रहा है। माताके मर जानेसे अथवा कहीं चले जानेसे जैसा दुःख बच्चेको होता है, वैसा ही दुःख धायके चले जानेसे होगा। दूसरे माताके प्रति उसे प्रेम न होगा। माता उसे गैर मालूम होगी। माताकी बातोंसे उसका मन रंजायमान न होगा। बड़े होकर भी उसे मातासे प्रीति न होगी। एक प्रकारसे माँ और बच्चेका सम्बन्ध ही जाता रहेगा। ऐसी संतान ही माता पिताको दुःख दिया करती है।

दूसरी बात जिस पर पिताको ध्यान देना उचित है यह है कि बच्चोंका उत्तम रीतिसे पालन-पोषण किया जाय। एक बार महात्मा ईसाके पास बहुतसे बच्चे इस अभिप्रायसे लाये गये थे कि, वे उनके सिर पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दें, परंतु उनके शिष्योंने बच्चोंको उनके पास जानेसे रोक दिया। इस पर महात्मा ईसाने कहा कि "नहीं, रोको मत, बच्चोंको मेरे पास आने दो, कारण कि आसमानी राज्य ऐसा ही है।" वास्तवमें बच्चे सरलता और पवित्रताकी सुंदर और अनुपम मूर्तियाँ हैं। जिस मनुष्यको बच्चोंसे प्रेम नहीं, जिसका हृदय बच्चोंके मीठे स्वरसे गद्गद नहीं हो जाता वह मनुष्य कहलानेके योग्य नहीं है। कठोरसे कठोर हृदय मनुष्य भी यदि एक बार उससे भोले भाले निष्पाप बालकोंकी ओरसे अपील की जाय तो पसीजे बिना न रहेगा। महाकवि शेक्सपियरने लिखा है कि जिस मनुष्यको गायन विद्यासे प्रेम नहीं, वह घृणा और निंदा किये जाने योग्य है। वह या तो हत्या या वध करेगा, या डाका डालेगा, या पापाचार या दुराचार फैलायेगा। परंतु ऐसा नहीं है। लोगोंने गाते बजाते हुए ही

अनेक घोर अत्याचार किये हैं। जिस समय रोममें अग्नि जाज्वल्यमान हो रही थी और बड़ी बड़ी विशाल इमारतोंको भस्म कर रही थी, उस समय वहाँका बादशाह नीरो (Nero) सितार बजा रहा था और उसीकी तानमें मस्त हो रहा था। मनुष्य-भक्षक (आदमखोर) लोग उस समय नाचा और गाया करते हैं जब मनुष्योंका मांस भूना जाया करता है। शेक्सपियरने इस विषयमें निःसंदेह भूल की है। मनुष्यकी पहिचान इस तरहसे नहीं होती; बल्कि कहा जा सकता है कि जिस मनुष्यको गाने-बजानेका बहुत शौक है उसमें बड़ी निर्बलता है। उसका मन बिलकुल खाली है। उसमें किसी विषयपर गम्भीरतासे शोचनेकी शक्ति नहीं है। असलमें उस मनुष्यकी और विशेषकर उस पिताकी दशा बड़ी शोचनीय है, जिसे बच्चोंको देखकर हर्ष नहीं होता। उनके कोमल अंगोंका स्पर्श करके, उनके मनोहारी नेत्रोंका अवलोकन करके, उनके मीठे मीठे शब्दोंको श्रवण करके आनन्द नहीं होता।

पिताको माताके भावोंका भी विचार करना चाहिए। माताके लिए बच्चेसे बढ़कर संसारमें और कोई पदार्थ नहीं है। जिस समय बच्चा गोदमें होता है, वह सारे कष्टोंको भूल जाती है। माँकी ममता लोकमें प्रसिद्ध है। बच्चेके लिए वह घोरसे घोर कष्ट उठाने, श्रम करने, यहाँ तक कि अपने प्राणोंतकको न्योछावर करनेको तैय्यार रहती है। उसकी दृष्टिमें उसका बच्चा सबसे सुंदर मालूम होता है। पृथिवीपर सात आश्चर्यजनक पदार्थ हैं, परंतु आठवाँ पदार्थ माँको अपना बच्चा मालूम होता है। वह समझती है कि ऐसा सुन्दर बच्चा न कभी किसीके दुनियामें पैदा हुआ और न कभी होगा। उसीसे मोहित होकर वह रातादिन बच्चेके लिए दुःख सहती रहती है। अतएव पिताको उचित है कि इस काममें वह अपनी स्त्रीकी सहायता करे। जिस समय

माता काममें लगी हो, पिताको बच्चेकी देखभाल करनी उचित है। इसमें कोई लज्जाकी बात नहीं है। बहुतसे पिताओंको यह भय होता है कि यदि हम बच्चोंको खिलायें पिलायँगे, उनके पास बैठेंगे तो लोग हमारी हँसी करें। यह उनका ख्याल ही है। मूर्ख लोग भले हँसी करें; परंतु बुद्धिमान् प्रशंसा करेंगे। इसमें एक बड़ेभारी तत्त्वकी बात है। वह यह है कि जो पिता अपने बच्चोंकी देख-भालमें अपने अवकाशके समयको व्यय करता है वह सदाचारी होता है। उसे अपनी स्त्री और बच्चोंसे वास्तविक प्रेम होता है।

ऐसा कोई पिता नहीं है जो कुछ न कुछ समय बच्चोंके लिए न निकाल सके। निःसंदेह पिताको बहुत करके आजीविकाके लिए घरसे बाहर रहना पड़ता है; परन्तु २४ घंटोंमेंसे एक दो घंटे निकालना कुछ कठिन नहीं है। उसका कितना ही समय फिजूलकी गप्पोंमें नष्ट हो जाता है, कितना ही समय बिस्तरपर जरूरतसे जियादा आलसमें व्यतीत हो जाता है। इन कामोंमें किफायत करके समयको निकालना चाहिए। बच्चोंका पालन-पोषण करना एक जरूरी काम है। खाने, पीने, सोनेसे भी अधिक आवश्यक है। यदि तुम इसके लिए समय नहीं निकाल सकते तो व्यर्थमें अपनेको पिता कहते हो। तुम्हें क्या अधिकार है कि तुम अपनी स्त्रीके शरीर पर पूर्ण अधिकार रक्खो, पतिके उच्च पदपर प्रतिष्ठित रहो, पिताके अपरिमित अधिकारोंके स्वामी बने रहो।

इस बातमें तुम्हें गरीबोंसे शिक्षा लेनी चाहिए। तुमने देखा होगा कि वे किस तरहसे अपने बच्चोंकी खबरगीरी रखते हैं। खेतमें जब काम करते करते थक जाते हैं तब वे अपनी थकान उतारनेके लिए बच्चोंको खिलाने लगते हैं। शामको जब दिनभरकी मिहनतके बाद घर पर आते हैं तो किस तरह उनके बच्चे उनके चारों तरफ जमा हो जाते हैं, और उनकी मनमोहिनी मूर्तियोंको देखकर वे अपने सारे श्रमको भूल जाते

हैं। माता खाना पकाती है, पिता बच्चोंको खिलाता है। अमीरों और साधारण स्थितिके लोगोंको भी ऐसा करना चाहिए। यहाँपर यह प्रश्न किया जा सकता है कि जो लोग नौकर रख सकते हैं, धनवान् हैं, उन्हें बच्चोंकी टहल और रखवालीके लिए नौकर रख देने चाहिए; इसमें क्या हर्ज है ? इसके उत्तरमें हम यही कहेंगे कि बच्चोंके लिए भूल कर भी नौकर नहीं रखने चाहिए। नौकरोंसे जो चाहे काम करा लो, परंतु बच्चोंको उनके सुपुर्द कभी मत करो। बच्चोंकी रखवाली माता पिताको स्वयं करनी चाहिए। नौकरोंमें इतनी बुद्धि और योग्यता नहीं कि जो बच्चोंके मन और शरीरकी पुष्टि कर सकें। यदि उनमें इतनी योग्यता होती तो वे इतने पुण्यहीन क्यों होते जो पाँच पाँच, सात सात रुपयेकी तुम्हारी नौकरी करते। कितने ही बच्चे हरसाल नौकरोंकी बेपरवाहीसे मृत्युके ग्रास बन जाते हैं और बुरी बुरी आदतें सीख जाते हैं। बच्चे पर दूसरोंका निरंतर प्रभाव पड़ा करता है। जैसा वह अपने नौकरोंको करता देखता है उसी प्रकारके भाव उसके मनमें पैदा होते जाते हैं। जो बच्चे नौकरोंके हाथोंमें रहते हैं उनमें बड़े होकर नौकरों जैसे भाव आ जाते हैं। अतएव माता-पिताका कर्त्तव्य है कि बच्चोंको कभी नौकरोंके हाथमें न देवें। स्वयं दोनों मिलकर उनका पालन करें। बड़े भाई, बहिन अथवा कुटुम्बके और आदमियोंमेंसे कोई न कोई हर समय बच्चेके पास रहे। और कोई काम ऐसा न करे जिससे बच्चे पर बुरा असर पड़े। बच्चेके सामने अपनेको दर्पणवत् समझो। वह सदैव तुम्हें देखता रहता है। तुम्हारे भावों, विचारों, शब्दों और कार्योंका प्रतिबिम्ब उसके हृदयमें सदैव पड़ता रहता है। जो कुछ बोलोगे, जो कुछ करोगे और जो कुछ सोचोगे वह सब उस समय अपना असर डालता रहेगा। काबेट साहब लिखते हैं कि " मैंने कभी अपने घरमें एक घंटेके लिए भी नौकरको नहीं रक्खा। या तो मैं, या मेरी स्त्री, या मेरे बच्चे

जब वे बड़े हो गये तब, छोटे बच्चोंकी सँभाल करते रहे। पहले पहल जब केवल एक बच्चा था हममेंसे कोई न कोई हर समय घर पर रहता था। यदि कभी हम दोनोंको बाहर जाना होता था तो बच्चेको भी हम अपने साथ ले जाते थे। यद्यपि कभी कभी हमें बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती थी, परंतु हमने तकलीफको खुशीसे झेल लिया, पर नौकरको नहीं रक्खा। बादमें इसका फल भी हमें बहुत अच्छा मिला।" सच है मेहनतके बाद ही आराम मिलता है।

बच्चोंके पालनपोषणमें दृढ़ रहनेकी भी बड़ी आवश्यकता है। बहुतसे माता पिता ऐसे कोमलहृदय होते हैं कि उनमें इतना साहस भी नहीं होता कि वे बच्चोंकी भलाईके लिए जरासी देर भी उनको रुला सकें। बच्चोंको जब नहलाया धुलाया जाता है तब वे प्रायः रोया करते हैं। इस रोनेकी परवा नहीं करनी चाहिए। इसके कारण उन्हें नहलाना धुलाना ही न छोड़ देना चाहिए। आँखमें कज्जल लगाते, कपड़े पहनाते, आँखें धोते, कड़वी दवा पिलाते वक्त बच्चोंके रोनेकी परवा नहीं करनी चाहिए। बहुतसी मातायें इस भयसे कि बच्चा रोयेगा, न उसका मुँह धोती हैं, न उसकी आँखें साफ करती हैं और न उसके बदनको पोंछती हैं। उनके बच्चे गंदे और फूहड़ बने रहते हैं और बारहों महीने रोगी रहते हैं।

जिस समय बच्चा रोवे, माताको उचित है कि मीठे स्वरसे गाने लगे। उसे सम्बोधन करके बातें करने लगे और उसे इधर उधर टहलाने लगे। माताकी आवाजको सुनकर बच्चेका रोना कम हो जायगा। बच्चेको इधर उधर हिलानेसे उसके बदनको थपथपाने और मलनेसे बड़ा लाभ है। इससे बच्चेका व्यायाम हो जाता है। उसकी आँखें खुल जाती हैं, इन्द्रियाँ काम करने लगती हैं, मन प्रसन्न हो जाता है और बच्चा चैतन्य हो जाता है। इसके विपरीत जो माता बोलती चालती नहीं

है, योंही कठपुतलीकी तरह बच्चेको लिये रहती है, न उसे हिलाती चलाती है और न उसके शरीरको मलती है, उसका बच्चा दिन दिन दुबला-पतला और कमजोर हो जाता है। उसके अंग लग जाते हैं और वह जन्मभर दुःख उठाता है।

अतएव माताको बच्चेके रोनेके भयसे अपने काममें असावधानी नहीं करनी चाहिए। इस समय यद्यपि बच्चेको कुछ तकलीफ होती है परंतु यह तकलीफ बादमें फायदा पहुँचाती है। हररोज सबेरे ठंडे पानीसे बच्चेको अच्छी तरह मलकर नहलाओ और साफ सुथरे कपड़े पहनाओ। देखो, उस समय बच्चा कैसा सुंदर और प्रसन्नचित्त मालूम होता है। बदनमें हर्कत होनेसे उसे भूख लग आती है और दूध पीनेके बाद नींद आ जाती है। दिन दिन उसका शरीर बढ़ता जाता है और वह अपनी मनोमोहनी सूरतसे अपने माता-पिताके आनंदको बढ़ाता रहता है।

हमने कुछ लोगोंको कहते सुना है कि ‘भाई, बच्चोंके शोरके कारण कुछ नहीं कर सके।’ हम नहीं समझते उनका यह कहना कहाँ तक ठीक है। रोना बच्चेका स्वभाव है। जो बच्चा रोता नहीं उसे बीमार समझना चाहिए। रोना इस बातको सूचित करता है कि बच्चेकी इंद्रियाँ ठीक तौरसे काम कर रही हैं। बच्चेका रोना काममें बाधक नहीं है। बाधक कारण कुछ और हुआ करता है; परंतु नाम रोनेका हो जाता है। मूल ग्रंथके लेखक लिखते हैं कि “मैंने बच्चोंके शोरमें सैकड़ों पृष्ठ लिख डाले हैं। मैंने कभी अपने जीवनमें बच्चोंको चुप करनेके लिए नहीं कहा। जब वे जरा बड़े हो गये और खेलने-कूदने लगे, तब भी मैंने उन्हें शोर न करनेके लिए नहीं कहा। उनके शोरोगुलने कभी मुझे परेशान नहीं किया। असल बात यह है कि जिस चीजसे आदमीको प्रेम होता है वह बाधक नहीं हो सकती। हाँ, जिस चीजसे प्रेम नहीं होता चाहे वह कितनी ही अच्छी क्यों न हो, बाधा पहुँचाती है।”

गरीब घरोंमें बच्चेके लिए पालनेकी बड़ी जरूरत है। माता पालनेमें बच्चेको लिटाकर अपना घरका काम कर सकती है और मजदूरी भी कर सकती है; परंतु अमीरों तथा उन लोगोंके घरोंमें जिनकी औरतोंको आजीविकाकी चिंता नहीं करनी पड़ती, पालनेकी बिलकुल जरूरत नहीं है। पालनेसे बच्चेको नींद जियादा आती है; परंतु वह नींद गाढ़ी नींद नहीं होती। बच्चा ऊँघता रहता है। इससे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। गरीबोंको भी दूसरा तीसरा बच्चा हो जानेपर पालनेका उपयोग नहीं करना चाहिए। बड़े बच्चे छोटे बच्चोंकी रक्षा कर सकते हैं। छोटे भाई-बहिनोंको खिलानेकी उनमें स्वभावतः योग्यता और रुचि होती है। पाँच वर्षका बच्चा अपने दो वर्षके भाई बहिनको २० वर्षकी उमरके नौकरकी अपेक्षा अच्छी तरहसे रख सकता है।

यदि बच्चा बीमार हो जाय, तो माताको खास तौरसे सावधान रहनेकी जरूरत है। उसे ऐसी चीजका सेवन नहीं करना चाहिए जिससे बच्चेको हानि पहुँचे। चेचककी बीमारीमें माताको बहुत ही सादा भोजन करना चाहिए। बहुत गर्म और बहुत ठंडे पानीसे भी परहेज करना चाहिए। माताको अपने हाथसे दवा पिलानी और लगानी चाहिए।

जीवन, शक्ति, स्वास्थ्य और सुंदरताके अतिरिक्त इस बातकी तरफ माता पिताको ध्यान देना जरूरी है कि बच्चेका मनोबल बढ़ता जाय। स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर दोनोंकी आवश्यकता है। स्वस्थ मनके बिना स्वस्थ शरीरका होना न होना एकसा है। कुछ बच्चे तो अनेक कारणोंसे जन्मसे ही पागल पैदा होते हैं; परन्तु कुछ बच्चे माता पिताकी असावधानी—बेपरवाही और काहिलीसे पागल हो जाते हैं। नौकरोंके भरोसेपर बच्चोंको छोड़ दिया जाता है। नौकर कभी कभी उनके दिलमें ऐसा डर पैदा कर देते हैं कि जिससे वे जन्मभर

भयभीत रहते हैं। एक बार एक माता अपने बच्चेको एक टहलनीके पास छोड़कर किसी जगह चली गई। बादमें बच्चा–जिसकी उमर लगभग तीन वर्षके थी–रोने लगा। टहलनीने बच्चेको चुप करनेके लिए पहले तो बहुत धमकाया, पर जब धमकानेसे चुप न हुआ तो उसे एक छोटीसी अँधेरी कोठरीमें बंद कर दिया और आप बाहर चली आई। थोड़ी देरके बाद जब उसने दर्वाजा खोला तो देखा कि बच्चा बेहोश पड़ा है। यद्यपि कुछ देरमें उसे होश आगया; परंतु वह जन्म-भरके लिए पागल हो गया। इसी तरह एक बार एक माता-पिता बच्चेको नौकरके सुपुर्द करके कहीं जल्से बगैरहमें चले गये थे। जब बच्चा रोने लगा तो नौकरने उसके सामने एक भयानक शकलका हव्वासा बनाकर रख दिया और आप नीचे आकर और नौकरोंके साथ गप्पें हाँकने लगा। बच्चा उसे देखकर ऐसा डरा कि एकदम चुप हो गया और उसका स्वास बंद हो गया। थोड़ी ही देरमें माताने आकर देखा कि बच्चा आँखें तो खोले हुए है, परंतु हर्कत बिलकुल नहीं करता। डाक्टरको बुलाया तो उसने कह दिया कि इसमें जान नहीं, यह मर गया है। उस डरावनी चीजसे इसके दिल पर ऐसा धक्का लगा कि यह एक-दम मर गया। देखिए, माता पिताकी असावधानीका क्या परिणाम हुआ? नौकरोंको बच्चेसे प्रेम नहीं होता। उन्हें अपने आरामकी फिकर रहती है। अतएव माता पिताको एक मिनिटके लिए भी बच्चेको आँखोंसे ओझल नहीं करना चाहिए। यदि माताके पास घरका काम जियादा हो तो उसके लिए नौकर भले ही रख लो; बच्चेको अपनेसे पृथक् कभी नहीं करना चाहिए।

जब बच्चे जरा बड़े हो जायँ, नौकरों और टहलिनियोंकी असाव्-धानीसे मारे जाने अथवा पागल हो जानेके भयसे निकल जायँ तब उनको शिक्षा देना प्रारम्भ किया जाय। यद्यपि आजकल शिक्षाका अर्थ

केवल लिखना पढ़ना हो रहा है, परंतु बच्चोंका पालन-पोषण ही वास्तविक शिक्षा है। बच्चोंके पालन-पोषणके लिए सबसे पहली बात यह है कि अच्छी खुराकसे उनका शरीर पुष्ट किया जाय और उत्तम उदार उदाहरणोंसे उनका मन बढ़ाया जाय। अर्थात् मातापिताको उचित है कि वे सदा ऐसे ऐसे उत्तम कार्य करते रहें जिनसे बच्चेके मनपर उत्तम प्रभाव पड़ता रहे। बच्चोंमें अनुकरण करनेकी शक्ति होती है। वे जैसा अपने मातापिताको करते देखते हैं, वैसा ही स्वयं करने लगते हैं।

अच्छी खुराकसे मतलब सादी और जल्द पचनेवाली खुराकसे है। रोटी, दूध, चावल, तरकारी, दाल ये चीजें बच्चोंके लिए बहुत अच्छी हैं। मिठाईकी आदत बच्चोंको कभी मत डालो। मिठाई बड़ी हानि-कारक होती है। मिठाई खानेवाले बच्चे एक तो चटोरे हो जाते हैं, दूसरे उनका पेट फूल जाता है, तीसरे जियादा खा लेनेके कारण बीमार हो जाते हैं। बिना मीठेकी चीज बच्चा कभी जियादा नहीं खायगा और अगर कभी खा भी लेगा तो कुछ हानि न होगी, परंतु मीठा थोड़ासा भी खा लेनेसे बच्चेको नुकसान होता है। चाय, काफी वगैरह भी बच्चोंको कभी मत दो। इन चीजोंसे जिस्म बढ़ता नहीं है। सादी खुराक जल्द पच जाती है और बदनको ताकतवर बनाती है। आपने देखा होगा, गरीब लोग अमीरोंकी अपेक्षा जियादा ताकतवर होते हैं। क्यों? इसलिए कि अमीर लोग ऐसी चीजें खाते हैं, जो होती तो कीमती हैं पर बहुत देरमें पचती हैं और गरीब लोग ऐसी चीजें खाते हैं, जो बहुत सस्ती और हलकी होती हैं और जल्द हजम हो जाती हैं।

स्वास्थ्यके लिए दूसरी जरूरी चीज साफ हवा है। आदमीकी जिंदगी हवा पर है। यदि एक मिनिटके लिए हवा न मिले तो बड़ेसे बड़ा

ताकतवर आदमी भी मर जायगा । कितनी ही हवायें ऐसी होती हैं जिनके सूँघनेसे आदमी एकदम मर जाता है । कितनी ही हवाओंसे आदमी बेहोश हो जाते हैं और कितनी ही हवाओंसे बेहोशीसे होशमें आजाते हैं । गरज यह कि हवा आदमीकी जिंदगीके लिए बड़ी ,जरूरी चीज है । अतएव इस बातका ध्यान रखना माता-पिताका कर्तव्य है कि बच्चा साफ खुली हवामें रहे । रहनेका मकान किसी गंदी मैली गलीमें न हो । घरकी नाली साफ हो । मल-मूत्र बहुत दूर डाला जाय । इसकी तरफ साधारण स्थितिके लोगोंको मुख्य रूपसे ध्यान देना चाहिए। प्रायः देखा जाता है कि शहरोंमें किरायेका लालच करके लोग गंदे मकानोंमें रहते हैं। किफायत करना अच्छा है; परंतु कलको गंदगीके कारण बीमारी हो जानेसे चार रुपये डाक्टरको देने पड़ेंगे । औसत वही पड़ जायगी । हमारी रायमें रुपये गजकी जगहमें चार आने गजका कपड़ा पहन लो, परंतु मकान ४) रु० की जगह ८) रु० का लेकर रहो। किरायेका लोभ करके गंदा मकान कभी मत लो । हवादार मकानमें रहनेसे तुम्हारा स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा और तुम्हारे बच्चेका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा । मकान बनाते समय भी तुम्हें हवाका सबसे पहले ख्याल रखना चाहिए । हरएक कमरेमें खिड़कियाँ होना जरूरी है ।

हवाके बाद बच्चेके लिए व्यायाम (कसरत) की जरूरत है । जब बच्चा गोदमें होता है, उसी समयसे उसे व्यायामकी जरूरत है । इसी कारणसे तुम्हें हिलाते चलाते रहना चाहिए । धीरेधीरे उनको अपने पैरों खड़ा होना सिखलाना चाहिए। यदि बच्चा शुरूमें कुछ तिरछा देखता हो तो माताको उचित है कि जब बच्चा सोकर उठे तो कोई सुंदर खिलौना ठीक उसके सामने रख दे । बच्चा सामने देखने लगेगा । यदि बच्चा किसी शब्दको हकला कर बोलता हो तो माता स्वयं उस शब्दको धीरेधीरे कहने लगे । बच्चा भी धीरेधीरे शुद्ध बोलने लगेगा । बच्चेको

तंग कपड़े कभी नहीं पहनाने चाहिए । उसके वदन पर ढीले कपड़े होनें चाहिए और उसको घुटनोंके वल फिरनेका पूरा पूरा मौका देना चाहिए । वच्चा अपनी आवश्यकतानुसार स्वयमेव व्यायाम कर लेगा । हाँ, जव वच्चे वड़े हो जायँ, चलने फिरने लगें तो उस समय माता· पिताका कर्त्तव्य है कि उनको ऐसे खेल खेलनेकी आज्ञा दे कि जिनमें उनका मन भी लग जाय और उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहे। माता पिताको अपने वच्चोंके आरामके सामने अपने आरामको भी त्याग देना चाहिए। चाहे स्वयं भूखे रहें, पर वच्चोंको अच्छा खाना खिलाना चाहिए। उनके मनको कभी दुखी नहीं करना चाहिए और न उनके उत्साहको भंग करना चाहिए । कावेट साहव लिखते हैं कि "चौथे वच्चेके पैदा होनेके वाद मैं लंदन छोड़कर गाँवमें रहने लगा । गाँवकी आव हवा शहरके मुकाविलेमें अच्छी होती है । वहाँ रहनेसे मेरे वच्चोंका स्वास्थ्य अच्छा रहा । मैं सदा अपने वच्चोंको सवेरे उठने, संयमसे रहने और हरसमय कुछ न कुछ करते रहनेके लिए उत्साहित करता रहा। उनके लिए ऐसे ऐसे खेल निकालता रहा कि जिनसे उनमें श्रम और साहससे काम करनेका उत्साह पैदा होता रहे और उनका शरीर हृष्टपुष्ट होता रहे । मेरा कोई वच्चा वगीचेमें फूल लगाता था, कोई मिट्टी खोदता था, कोई घोड़ेपर चढ़ता था, कोई कुत्तेके साथ खेलता था, कोई वंदूक चलाता था और कोई तीर-कमान चलाता था। मैं किसीको मना नहीं करता था । मैं स्वयं कष्ट उठा लेता था, परंतु उन्हें कष्ट न देता था। मैं इस वातके वहुत खिलाफ हूँ कि वच्चोंको छोटी उमरमें ही जव वे अच्छी तरहसे वोलना चालना भी नहीं सीखते, पाठशालामें भेज दिया जाय और वहाँ उन्हें रटंत करना सिखलाया जाय।" ५-६ वर्षकी उमरमें वच्चेको श्लोक रटाना ऐसा ही है जैसा उसके सिरपर एक मन भर वोझ लाद देना । इतना वोझा रख देनेसे

वह गिर पड़ेगा और उसका सिर टूट जायगा। इसी तरहसे इस उमरमें रटानेसे उसका मन कमजोर हो जायगा और स्मरणशक्ति नष्ट हो जायगी। मनकी भीतरी हालतको हम देख नहीं सकते, इसी कारण हानिको नहीं समझते। हरएक कामके लिए समय और योग्यताकी आवश्यकता है। शरीर और मन दोनोंके बढ़नेकी जरूरत है। इनके लिए अच्छी खुराक, साफ हवा और काफी कसरतके साथ साथ इस बातकी भी जरूरत है कि किसी प्रकारकी चिंता न हो। यह बात प्रत्यक्ष है कि बहुतसे शारीरिक रोग ऐसे होते हैं, जिनसे मन कमजोर हो जाता है और बहुतसी मानसिक चिंतायें और व्याधियाँ ऐसी होती हैं जिनसे शरीर नष्ट हो जाता है। अतएव माता पिताका-कर्त्तव्य है कि इस बातका ध्यान रक्खें कि उनके बच्चे शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकारकी उन्नति करें। लार्ड बेकनका कथन है कि "स्वस्थ शरीरमें स्वस्थ मनसे बढ़कर और कोई आनंद नहीं है। जिसका शरीर निरोगी है और मन स्वस्थ है, वह अत्यंत सुखी है।"

अब हम थोड़ासा उस शिक्षाके विषयमें भी कहते हैं जो पुस्तकोंसे मिलती है। पुस्तकीय ज्ञानकी हमें अवज्ञा नहीं करनी चाहिए। वह भी बच्चोंके लिए अत्यंत आवश्यक है। उससे न केवल जगतमें कीर्ति होती है, किंतु देश, जाति और समाजका भी बहुत कुछ कल्याण हो सकता है। दूसरोंके कल्याणमें अपना कल्याण है। परोपकार और परसेवासे आत्माको शांति मिलती है। तथापि हम प्रत्येक पितासे इस बातका अनुरोध करते हैं कि वह अपनी संतानके सुखके सामने और सब चीजोंको तुच्छ और हेय समझे। यदि पुस्तकोंसे सुखमें बाधा पहुँचती है तो उन पुस्तकोंको दूरसे ही नमस्कार कर लेना चाहिए। सुखकी आहुति देकर ज्ञानकी प्राप्तिकी आवश्यकता नहीं है। सुखके सामने धन, सम्पदा, ऐश्वर्य सब तुच्छ हैं। सुख क्या वस्तु है ? पोपने सुखके लिए तीन बातें

बतलाई हैं—१ स्वास्थ्य, २ शांति, ३ आवश्यक वस्तुओंकी पूर्ति। शांति मनकी उस शांत अवस्थाका नाम है, जो निष्पाप जीवन और सम्यक् चारित्रसे प्राप्त होती है। सुखके लिए स्वास्थ्य कितना उपयोगी है, इसके कहनेकी तो कोई आवश्यकता ही नहीं। आवश्यक वस्तुओंकी पूर्ति, इससे कोई निश्चित बात समझमें नहीं आती। बहुतसे आदमी तो केवल यही चाहते हैं कि हमें खाने पीनेको मिल जाय, बस यही काफी है; परंतु बहुतसे आदमी चाहते हैं कि हमारे पास घोड़ा, गाड़ी, नौकर, चाकर, बंगला कोठी ये चीजें भी हों। इसकी कोई सीमा नहीं। इस बातको प्रत्येक पिता जिसमें तनिक भी बुद्धि है, समझ सकता है कि धन-सम्पदासे न कभी किसीको सुख मिला और न कभी मिल सकता है। अतएव उसे उचित है कि वह अपने बच्चोंके मनमें इस बातको अच्छी तरहसे जमा दे कि धन-सम्पदाके लोभमें आकर कभी अपने उद्देश्यसे, सन्मार्गसे च्युत न होओ। यदि झूठ बोलकर तुम्हें लाख रुपये भी मिलते हों तो उन्हें खाक समझो। यदि किसीकी बेजा खुशामद करके तुम्हें उच्चपद मिलता हो तो ऐसे पदसे पद-हीन रहना उत्तम समझो। धर्म और न्यायसे कमाया हुआ एक पैसा चोरी और पापाचारके एक रुपयेसे अच्छा है। ईमानदारीसे रहकर सूखी रोटी खाना, भूखों मरना भी अच्छा है; परंतु बेईमानसे दूध मलाई तकके खानेको धिक्कार है। धन-सम्पदा अथवा पद-प्रतिष्ठाके लिए स्वास्थ्यको बिगाड़ देना भी बुरा है। स्वाथ्यके लिए दुनियामें सब काम किया जाता है। धन-दौलत भी स्वास्थ्यके लिए पैदा की जाती है। जिस धनके लिए स्वाथ्यका घात होता है उससे निर्धन रहना अच्छा है। काबेट साहब लिखते हैं कि "इन सिद्धांतोंको अपने हृदयमें अंकित करके, मैं एक कुटुम्बका पिता बना और इन्हीं सिद्धांतोंके अनुसार मैंने अपने बच्चोंका पालन पोषण किया। मुझे स्वयमेव पुस्तकें पढ़नेका शौक था, मैं जानता था कि पुस्तकोंके पढ़नेसे क्या लाभ

होता है, अतएव स्वभावतः मेरी इच्छा थी कि मेरे बच्चे भी पढ़ें; परंतु मैंने कभी किसीको पढ़नेके लिए मजबूर नहीं किया, मैं उनके लिए सबसे पहले यह जरूरी समझता था कि उनका स्वाथ्य अच्छा रहे, वे बलवान् बनें और प्रकृतिके अवलोकनसे जितना ज्ञान प्राप्त कर सकें उत्पन्न करें । मैं कितने ही वनों उपवनों, बाग बगीचों पुष्पवाटिकाओंमें घूमा हूँ, पहाड़ोंकी चोटियों पर चढ़ा हूँ, गुफाओंमें गया हूँ, नदी-सरोवर, झील-तालाबोंको वर्षाऋतुमें देखा किया हूँ, हरेहरे खेतोंमें फिरा हूँ, मैंने रंग-बिरंगी चिड़ियोंको उड़ते और गाते हुए देखा है, उनसे मैंने बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त किया है और उन दृश्योंका मेरे हृदय पर अद्भुत असर हुआ है। अतएव मैं चाहता था कि मेरे बच्चे भी इन पदार्थोंको देखकर हर्षित हों और उनसे यथेष्ट लाभ उठायें । ”

लोगोंकी ऐसी भिन्न भिन्न अवस्थायें हैं कि सबके लिए एक नियम बनाना कि इस तरह बच्चोंका पालन पोषण किया जाय, कठिन है। काबेट साहब लिखते हैं कि “ मैंने अपने विषयमें जो कुछ ऊपर लिखा है उससे यह न समझ लिया जाय कि प्रत्येक पिता ऐसा ही कर सकता है, अथवा उसे ऐसा ही करना चाहिए, परन्तु हाँ यह बात अवश्य है कि हजारों पिता ऐसा कर सकते हैं और उन्हें करना चाहिए। मैंने अपने बच्चोंको कभी नहीं घुड़का और न जबरदस्ती हुकम देकर कोई काम उनसे कराया । मेरे बच्चे, लड़के और लड़कियाँ दोनों विद्वान् हैं; परंतु मैं शपथपूर्वक कह सकता हूँ कि, मैंने अपने जीवनमें कभी भी उनमेंसे किसीको पुस्तक पढ़नेके लिए बाध्य नहीं किया । मैंने सिर्फ अपने दो बड़े लड़कोंको बहुत थोड़े कालके लिए एक पादरीके पास रक्खा था और बड़ी लड़कीको कुछ मीलकी दूरी पर एक स्कूलमें छोड़ा था और यह भी इस लिए कि मैं जाड़ेमें उन्हें लंदन ले जाना नहीं चाहता था । इसके सिवाय बचपनमें वे किसी स्कूल या पाठशालामें

नहीं गये और न मैंने और किसीसे उन्हें पुस्तकसे कुछ लिखना पढ़ना सिखलाया। मैंने जो कुछ उन्हें बतलाया वह सब मौखिक बताया। मैंने उनके स्वास्थ्यपर सब बातोंसे अधिक जोर दिया। स्वास्थ्यके अच्छा रखनेके लिए उनके पास सामान काफी था। चारों तरफ जंगल, बगीचे और खेत थे। उनमें फिरना, घूमना, खेलना यही उनका काम था। मेरे घरमें हजारों किस्मके जानवरों, पौधों फूलों, औजारों, मशीनोंके चित्र थे। चित्रोंके नीचे उनका थोड़ा थोड़ा हाल भी लिखा हुआ था। बरसातके दिनोंमें मेरे बच्चे घरमें बैठकर उन चित्रोंको देखा करते थे। कोई घरके कुत्तेका चित्र खींचता था, कोई घोड़ेकी नकल करता था, कोई अपनी मातासे किसी चित्रके विषयमें पूछता था, कोई मुझसे प्रश्न करता था। बस, इसी तरह मैं उनका ज्ञान बढ़ाता रहा और उनके मनमें स्वयमेव पदार्थोंके जाननेकी उत्सुकता पैदा करता रहा। न हमको अपने बच्चोंके लिए स्कूलों और पाठशालाओंकी जरूरत थी, न डाँटने-डपटनेकी, और न लुभाने-फुसलानेकी। हम ताश, चौसरमें भी अपना समय नष्ट न करते थे। हम सदा किसी न किसी काममें लगे रहते थे। कभी किसी कामके लिए किसी बच्चे पर जोर–दबाव नहीं डाला गया। बच्चोंमें सबेरे जल्दी उठनेकी आदतका डालना कितना जरूरी है और बच्चे सबेरे उठते हुए कितना आलस करते हैं यह सब किसीको मालूम है। परंतु मैंने इस बातमें जोरसे काम नहीं लिया। मैंने सब बच्चोंके सामने केवल यह कहा कि तुममेंसे जो कोई सबसे पहले उठकर मेरे पास आयगा उसे मैं उस दिन कालावा (एक चिड़ियाका नाम है) कहूँगा और खानेके वक्त उसे अपनी दाहिनी तरफ बिठाऊँगा। बच्चोंने बहुत जल्दी इस बातको समझ लिया कि सबेरे जल्दी उठनेके लिए रातको जल्दी सोना चाहिए। बस, मेरा मतलब हल हो गया। सब बच्चे रातको जल्दी सोने लगे और सबेरे जल्दी उठने लगे। यदि मैं

ऐसा न करके रातको जल्दी सोनेका उन्हें जोर देता और सबेरे बेत लेकर उन्हें उठाता तो उन्हें बहुत बुरा लगता और उनमें कभी जल्दी उठनेकी आदत न पड़ती। वे सदा जल्दी उठनेको बुरा समझते और उससे जी चुराते तथा नित्यप्रति मुझे उनके साथ अपना समय भी नष्ट करना पड़ता। अतएव प्रत्येक पिताको उचित है कि इनाम वगैरह देकर बच्चोंमें सबेरे उठनेकी आदतको डालनेका उद्योग करे। सबेरे उठना स्वास्थ्यके लिए अत्यंत उपयोगी है। सबेरेकी हवा दिमागको ताजा कर देती है और दिन भर मनुष्यको चैतन्य रखती है। जो मनुष्य देरमें सोकर उठते हैं उन्हें सारे दिन आलस घेरे रहता है और वे शामतक भी अपने कामको पूरा नहीं कर पाते।"

"बच्चोंका भलीभाँति पालन-पोषण करनेके लिए इस बातकी भी आवश्यकता है कि, जहाँ तक हो सके पिता घर पर रहे। इससे यह न समझ लेना चाहिए कि बाहर जाकर काम करना छोड़ दे; नहीं, छुट्टीके समयमें घरपर रहे जिससे बच्चोंको इस बातका निश्चय हो जाय कि हमारे पिताको हमसे इतना प्रेम है कि वे काम खतम होते ही घर पर आ जाते हैं। मेरे बच्चोंको इस बातका यकीन था और इसी कारणसे वे भी अपने समयको मेरे पास बैठने और बातचीत करनेमें व्यय करके खुश होते थे। मैं उनसे मित्रोंकी भाँति बातचीत करता था, उनके साथ बाहर सैर करनेको जाता था और खेलता था। यदि मुझे कहीं बाहर जानेका मौका होता था तो उनमेंसे किसी न किसीको अपने साथ ले जाता था। अतएव प्रत्येक पिताको उचित है कि वह बच्चोंके साथ इस तरहसे व्यवहार करे कि वे उससे एक क्षणभरके लिए भी अलग होनेकी इच्छा न करें। बहुतसे बच्चे अपने बापकी सूरत देखते ही डरके मारे काँपने लगते हैं। जब तक वह घर पर रहता है वे बेचारे अंदरसे बाहर भी नहीं निकलते और यही मनाते रहते हैं कि, कब बाप घरसे जाय

और हमें खेलने कूदनेका मौका मिले । मैंने कभी अपने बच्चोंके साथ ऐसा बुरा व्यवहार नहीं किया । मेरे बच्चे मुझसे इतना प्रेम रखते थे कि जब मैं बाहर जाता था तो सबके सब मेरे पीछे दरवाजे तक जाते थे—गाड़ी या घोड़ेको दूर तक देखते रहते थे । जब मेरे आनेका समय होता था, सब मेरी वापसीका इंतिजार करने लगते थे । यदि कभी रात बहुत चली जाती थी तो वे बेचारे जबतक हो सकता था, जागते थे । यदि कभी मुझे अपने कमरेमें काम करते हुए देर हो जाती थी, तो सबसे छोटे बच्चेके हाथ चिट्ठी लिखकर भेजते थे कि मैं उनसे जाकर बातचीत करूँ । जब मुझमें और मेरे बच्चोंमें इतना घनिष्ठ सम्बन्ध था तो आप स्वयं विचार सकते हैं कि घरसे बाहर बुरे लड़कोंकी संगतिमें जाकर खेलनेसे उन्हें कितनी घृणा होगी । ”

“ बचपनका जमाना ही ऐसा है कि जिसमें बच्चोंको विश्वासपात्र और दयालु होना सिखलाना चाहिए । जो आदत बचपनमें पड़ जाती है, वह जन्मभर नहीं छूटती । बच्चोंको शुरूसे ही यह सिखला देना चाहिए कि सब जीवोंके साथ प्रेम करो । सबमें अपनीसी जान समझो, किसीको मत सताओ और न किसीके प्राणोंका घात करो । चोट लगनेपर, बीमार होनेपर, किसी सम्बंधीके मरनेपर जैसा हमें दुःख होता है वैसा ही औरोंको भी होता है । मेरे बच्चे कभी किसीको नहीं सताते थे और न उनके मनमें किसीको दुःख देनेका भाव उत्पन्न होता था । ”

“ यद्यपि मैंने अपने बच्चोंको लिखना पढ़ना नहीं सिखलाया, [illegible] स्वयं सीख गये । बच्चे स्वभावतः अपने बापका अनुकरण [illegible] और वही होना चाहते हैं जो उनके बाप होते हैं । [illegible] बापके ऊपर होते हैं और लड़कियाँ माँके ऊपर । चूँकि, मैं अधिकतर लिखा पढ़ा करता था, मेरे लड़कोंको भी लिखने पढ़नेका शौक हो गया । एक बार मैंने किताबमें एक नवीन रीतिसे खरबूजे

बोनेका हाल पढ़ा। मैंने उसका जिकर अपने लड़कोंसे भी किया और कहा—देखो हम एक नये तरीकेसे खरबूजे बोएँगे। अब लड़कोंको इस बातके जाननेकी इच्छा हुई कि वह नया तरीका कौनसा है। मैंने तब किताबमेंसे पढ़कर नया तरीका बताया। बस अब क्या था, मैंने तो केवल एक बार पढ़ा था, मेरे बड़े लड़केने कमसे कम बीस बार उसे पढ़ा और तमाम बच्चोंको समझाया और फिर बागके मालीको बुलाकर उसे जरूरी हिदायतें कीं। देखिए, जितना ज्ञान बच्चोंको केवल इस पाठसे हुआ, उतना शायद् स्कूलमें सालभर पढ़ने पर भी नहीं होता। इसी तरह मेरे बच्चे भिन्न भिन्न विषयोंपर परस्परमें बातचीत किया करते थे। यदि किसी बातमें उनका मतभेद होता था तो वे पुस्तक खोल कर उसमें देखने लगते थे और यदि पुस्तकमें समझमें नहीं आता था तो मुझसे पूँछते थे।"

"लिखना भी मेरे बच्चे योंही अपने आप सीख गये। मुझे लिखते हुए देखकर पहले तो वे योंही कागज पर लकीरें खींचा करते थे, परंतु बादमें छपी हुई पुस्तकमेंसे एक एक अक्षरको लेकर उसकी नकल किया करते थे और मुझसे पूँछते जाते थे कि यह कौनसा अक्षर है। थोड़े दिनोंमें उन्हें अक्षराभ्यास हो गया। अब वे शब्दोंको लिखने लगे और जिस रीतिसे मैं लिखता था उसी रीतिसे वे लिखने लगे। जब कुछ शब्दोंको जान गये, तो मुझे चिट्ठी लिखने लगे। जिस तरह मैं अपने मित्रोंको पत्र लिखा करता था, उसी तरह वे मुझे लिखा करते थे। मैं भी उनकी चिट्ठियोंका तुरंत जवाब दे देता था। पहले पहल उनकी चिट्ठियोंमें योंही बिना मतलबके दो चार शब्द हुआ करते थे; परंतु मैंने कभी उनसे यह नहीं कहा कि, तुमने यह गलती की अथवा वह गलती की। वे मनमें आता था सो लिखते और मैं उनका जवाब दे देता था। उन्हें लिखनेका शौक था और मुझे जवाब देनेका शौक था। इसी तरह वे चिट्ठी लिखना सीख गये।"

"मेरे मोहल्लेके आदमी बहुधा मुझसे कहा करते थे कि तुम्हारे लड़के क्या पढ़ते हैं? उनको स्कूलमें क्यों नहीं भेजते? उन्हें घरपर क्यों रख छोड़ा है? इन प्रश्नोंके उत्तरमें, मैं यही कह दिया करता था कि मेरे लड़के खेलना, कूदना, घोड़ेपर चढ़ना, गाय, बैल, भेड़, बकरियोंकी रखवाली करना, बागमें काम करना, कुत्तोंको खिलाना-पिलाना आदि कितनेक काम जानते हैं। मैं उन्हें हृष्ट-पुष्ट और मोटा-ताजा बनाना चाहता हूँ। इस उत्तरको सुनकर चाहे लोग अपने मनमें मुझे मूर्ख समझते हों; परंतु सामने वे चुप हो जाते थे। मेरे बच्चे यह सुनकर मुझसे और भी अधिक प्रेम करने लगते थे।"

"इस दशामें हम कुछ दिनों तक रहे; परंतु सन् १८१० ई० में गवर्नमेंटने मुझे कैदमें डाल दिया। इस कारण मुझे अपने प्यारे बच्चोंसे पृथक् होना पड़ा; परंतु जेलमें रहते हुए भी मैं अपने बच्चोंको बराबर पत्र लिखता रहा। बच्चे भी घरका सब हाल अपनी टूटी-फूटी भाषामें लिखते रहे। खेतमें क्या चीज बोनी चाहिए, किस तरह जानवरोंको रखना चाहिए, ये सब बातें मैं पत्रद्वारा उन्हें बतलाता रहा। इन दिनोंमें हिसाब किताब भी उन्हें रखना पड़ता था, इस कारण वे हिसाब भी जान गये। जरूरतने धीरेधीरे उन्हें कानून भी सिखला दिया। १४ वर्षकी उमरमें हरएक बच्चेको लिखना पढ़ना आगया। काव्यग्रंथों अथवा देशी पुस्तकोंके सिवाय जिनको मैंने व्यावहारिक ज्ञानके लिए उपयोगी समझा और कोई पुस्तक मैं अपने घरमें नहीं लाया। मैं अपने बच्चोंसे कहा करता था कि जाओ, जरा चींटीके घरको पैरसे ठोकर मार दो। देखो, किस तरहसे जराजरासी चींटियाँ फिर अपने घरको बनाने लगती हैं। चाहे तुम बीस बार ठोकर मारो, वे बीसों बार उसे बनाएँगी। कभी नहीं थकेंगी। उनसे तुम साहस और दृढ़ताका पाठ सीखो। चाहे लोग तुम्हारा कितना ही विरोध करें; परंतु तुम उद्योग किये जाओ। चींटीकी भाँति उद्योगमें तत्पर रहो।"

"मैं जानता हूँ कि जो कुछ मैंने अपने बच्चोंके लिए किया, वैसा सब पिता नहीं कर सकते हैं, परंतु हाँ, इतना अवश्य सब कोई कर सकते हैं कि खाली समयमें घरपर रहकर बच्चोंको श्रम, संयम और मितव्ययताका पाठ पढ़ावें और उन्हें उन बुरीबुरी आदतोंसे बचावें जो बचपनमें बच्चोंमें बुरे लड़कोंकी संगतिमें रहकर पड़ जाती हैं तथा उनके सामने अपनेको न्याय और दयालुताकी मूर्ति बनाकर दिखलावें। जल्दी सोने और जल्दी उठनेकी भी आदत बचपनमें डाल देनी चाहिए। इतना काम हर कोई कर सकता है। इसके लिए अधिक समयकी जरूरत नहीं है। यदि घरपर तुम अपने बच्चोंको शिक्षा नहीं दे सकते तो मजबूरी है। इस दशामें तुम्हें बच्चोंको स्कूलमें भेजना ही पड़ेगा, परंतु याद रक्खो जिस स्कूलमें तुम बच्चोंको पढ़नेको भेजते हो उसमें अधिक लड़के न हों। जितने कम लड़के हों उतना अच्छा है। अधिक लड़कों-के होनेसे बच्चोंके चाल-चलनके बिगड़ जानेका डर है। अधिकता हर जगह खराब होती है। कैदखानों, कारखानों और बारगोंमें लोग क्यों खराब हो जाते हैं? इस लिए कि वहाँ लोगोंकी संख्या अधिक होती है। ग्रामोंकी अपेक्षा शहरोंमें लोगोंके चाल-चलन क्यों जियादा बिगड़ जाते हैं? इस लिए कि वहाँ ज़ियादा आदमी रहते हैं। दूसरे, स्कूलोंमें जियादा लड़कोंके होनेके कारण अध्यापक सब लड़कोंकी ठीक ठीक देख-भाल नहीं कर सकता। तीसरे, स्कूलमें लड़कोंको लड़कोंका सहवास अधिक रहता है, इस कारणसे उनमें लड़कों जैसी बातें रहती हैं। उनसे यह आशा नहीं की जा सकती कि उनमें मर्दों जैसी आदतें होंगी। जैसी सोसाइ-टीमें मनुष्य रहता है, वैसा ही वह होता है। अतएव लड़कोंकी सोसा-इटीमें ही बच्चोंको छोड़ देनेसे उनमेंसे बड़े होनेपर भी लड़कपन नहीं जाता। चौथे, स्कूलमें अच्छे बुरे सब तरहके लड़के होते हैं और प्रायः नये लड़कोंपर अच्छे लड़कोंका इतना असर नहीं पड़ता जितना बुरे लड़कोंका। पाँचवें, बच्चोंको उनकी रुचिके अनुसार जिस समय उनका

मन हो उसी समय शिक्षा देनी चाहिए। स्कूलोंमें ऐसा नहीं होता। एक तो वहाँ सब लड़कोंके लिए समय नियत रहता है, दूसरे नियत समयमें नियत विषय रहता है। सम्भव है कि जो विषय एक समयमें एक कक्षामें पढ़ाया जाता हो उसमें दस लड़कोंका तो उस समय जी लगता हो और दसका न लगता हो। दस लड़के तो उससे लाभ उठाते हैं, परंतु दसको समय विताना कठिन हो रहा है।" तथापि आजकल भारत जैसे देशमें जहाँ कि माता पिताओंको अपने बच्चोंकी शिक्षा एक भार मालूम होती है, स्कूलोंके सिवाय और कोई उपाय शिक्षा देनेका नहीं है। यहाँके माता पिता एक तो स्वयं अधिक पढ़े लिखे नहीं हैं; दूसरे जो थोड़े बहुत हैं भी उन्हें उस बातका शौक नहीं कि वे अपने बच्चोंको घरपर आप पढ़ावें।

कन्याओंके लिए यद्यपि मातासे बढ़कर कोई शिक्षक नहीं हो सकता, परंतु भारतवर्षकी मातायें स्वयमेव शिक्षिता नहीं हैं; कन्याओंको तो क्या शिक्षा देवें? अतएव कन्याओंकी शिक्षाके लिए इस बातकी आवश्यकता है कि पिता अथवा भ्राता उन्हें स्वयं शिक्षा देवें या उनके लिए योग्य अध्यापक या अध्यापिका घरपर रक्खें, परंतु यदि यह सम्भव न हो, तो उन्हें ऐसी कन्या-पाठशालाओंमें भेजें जहाँ कन्याओंकी संख्या कम हो और अध्यापिकायें सुशीला और विदुषी हों।

अब प्रश्न यह है कि बालकोंको किन विषयोंकी शिक्षा दी जाय। यद्यपि यह पहले बतलाया जा चुका है, तथापि यहाँपर भी यह कहना आवश्यक है कि जो कुछ लड़के बड़े होकर बनना चाहते हैं, उसी पेशेकी शिक्षा उन्हें देनी चाहिए। जैसे यदि कोई लड़का वकील बनना चाहता है, तो उसे कानून पढ़ाया जाय, यदि डाक्टर होना चाहता है, तो उसे डाक्टरी सिखलाई जाय। यदि कोई दूकानदार बनना चाहता है, तो उसे दूकानदारी सिखलाई जाय और व्यापार-सम्बंधी पुस्तकें पढ़ाई

जायँ और यदि कोई कारीगर होना चाहता है तो उसे कारीगरीकी शिक्षा दी जाय; परंतु ऐसी शिक्षाके देनेसे पहले कुछ प्रारम्भिक शिक्षाकी भी जरूरत है। प्रारम्भिक शिक्षाके बिना किसी पेशेकी शिक्षा नहीं दी जा सकती और न देनी चाहिए। प्रारम्भिक शिक्षा प्रत्येक बालकके लिए आवश्यक है। प्रारम्भिक शिक्षामें साधारण लिखना पढ़ना, हिसाब-किताब और अपने देशका इतिहास और भूगोल शामिल हैं। अपनी मातृभाषाके साहित्यका इतना ज्ञान हो जाना जरूरी है कि वह शुद्ध लिख बोल सके, तथा समाचारपत्रों और साधारण पुस्तकोंको समझ सके। हिसाब इतना जरूरी है कि जिससे बड़े होकर अपनी आमद-खर्चका, लेन-देनेका लेखा रख सके। इस भावसे इतने दामोंकी चीज कितनी आयगी, इतने रुपयोंपर इतने दिनोंमें कितना व्याज हो जायगा, इत्यादि बातोंको समझ सके। इतिहास, भूगोलका जानना भी जरूरी है। इतिहाससे पता लगता है कि हम लोगोंकी पहले क्या दशा थी, अब क्या है। हम उन्नति कर रहे हैं या अवनति। भूगोलसे अपने देशके पहाड़ों, नदियों, झिरनोंका देशकी उपज, जलवायु पर क्या प्रभाव पड़ता है, इन बातोंका हाल मालूम होता है। कौन चीज किस जगह पैदा होती है, कौन शहर किस लिए प्रसिद्ध है, ये बातें भी भूगोलसे मालूम होती हैं। भूगोलके पढ़नेकी सबसे उत्तम रीति यह है कि नकशा सामने रख लिया जाय। अपने देशका इतिहास, और भूगोल पढ़ लेने पर अन्य देशोंका इतिहास, और भूगोल भी यदि देखा जाय तो अच्छा है; कारण कि भूगोल इतिहास पढ़नेसे अपने देशका अन्य देशोंसे मिलान किया जा सकता है। यदि दूसरे देश तुम्हारे देशसे किसी बातमें बढ़े हुए हैं, तो वहाँके इतिहाससे हमारे मनमें भी उन जैसा बननेका भाव पैदा हो सकता है।

खाली वक्तमें पुस्तकें पढ़ना अच्छा है; परंतु पुस्तकोंके केवल पढ़-लेनेसे कुछ लाभ नहीं है। और न कोई मनुष्य पढ़ने मात्रसे विद्वान्

बन सकता है। हम कह सकते हैं कि वे लोग जो नित्यशः पुस्तकें पढ़ा करते हैं प्रायः आलसी होते हैं। चुपचाप खाली बैठनेके लिए पुस्तक हाथमें लेलेना अच्छा बहाना है। कहनेका तात्पर्य यह है कि; वही पुस्तक पढ़ना चाहिए जो अच्छी तरह समझमें आवे और जिससे या तो कुछ शिक्षा मिलती हो या कोई नई बात मालूम होती हो। जहाँ तक हो सके, प्राकृतिक इतिहास, जीवनचरित, कृषि और यात्रासम्बन्धी पुस्तकें पढ़नी चाहिए।

कन्याओंके लिए भी साधारण लिखने, पढ़ने, हिसाब, भूगोल और इतिहासकी आवश्यकता है। साथमें ही उन्हें खाना बनाने, कपड़े सीने, घरका प्रबंध करने और बच्चोंके पालन प्रोषण करनेकी शिक्षा देनी चाहिए। खाली समयमें वे पुस्तकें पढ़कर मनोरंजन कर सकती हैं परंतु उनके लिए भी वे ही पुस्तकें उपयोगी हो सकती हैं, जिनसे कुछ लाभ हो। प्रायः देखा जाता है कि आजकल लड़कियाँ जहाँ कुछ पढ़ना लिखना सीखीं, गंदे गंदे उपन्यास पढ़ने लगती हैं। माता-पिताको उचित है कि ऐसे उपन्यास कभी अपनी लड़कियोंको न पढ़ने दें। यदि उपन्यास पढ़नेका ही शौक है तो प्रतिभा, अन्नपूर्णाका मंदिर, शान्ति-कुटीर, सरस्वती, स्वर्णलता, सुशीला आदि सामाजिक शिक्षाप्रद उपन्यास पढ़नेको देने चाहिए। नहीं तो गृहिणिभूषण, स्वर्गकी सुंदरियाँ जैसी उपयोगी पुस्तकें पढ़नी चाहिए।

लड़कोंको प्रारम्भिक शिक्षा देनेके बाद जिस पेशेकी ओर उनकी स्वभावतः रुचि हो, उसीकी शिक्षा देनी चाहिए और वही काम कराना चाहिए। जहाँतक हो सके तुम अपने उपदेशसे उनपर ऐसा प्रभाव डालो कि वे नौकरीकी इच्छा न रखकर कोई स्वतंत्र रूपसे आजीविका प्राप्त कर सकें। किसीके आधीन न रहें। नौकरी करना महान् निकृष्ट है। कहावत भी है, "उत्तम खेती, मध्यम बान, निकृष्ट चाकरी, भीख निदान।" नौकरीमें दूसरोंके अधीन रहना होता है। दूसरेकी हाँमें

हाँ मिलाना पड़ता है । बहुधा अपनी अंतरात्माका घात करना होता है । नौकरी और गुलामीमें बहुत कम अंतर है । बल्कि हम कह सकते हैं कि किसी अंशमें तो नौकरी गुलामीसे बद्तर है । कारण कि गुलामी रहते हुए इस बातका डर तो नहीं कि मालिक देगा और बेरोजगार भूखों मरना पड़ेगा । मालिक भला बुरा खानेको देवेहीगा, परन्तु नौकरीमें जब चाहे मालिक निकाल दे इसका भय लगा रहता है । जिस आदमी-को कोई हुनर आता है वह कभी भूखा नहीं रह सकता । कहीं भी चला जायगा, कमा खायेगा ।

इसी तरह लड़कियोंको घरके कामकाजमें खूब चतुर कर देना चाहिए कि जिससे उन्हें नौकरोंका मुँह न देखना पड़े और वे किफायत-शारीसे आनंदपूर्वक गृहस्थीको चला सकें ।

एक अंतिम शिक्षा पिताके लिए और है और वह यह कि यदि उसके कई लड़के-लड़कियाँ हों, तो अपने जीवनकालमें ही अपनी जायदादको इनकी योग्यता और आवश्यकताके अनुसार बसीयत कर दे; जिससे बादमें उनमें आपसमें झगड़ा फिसाद न हो । यदि कोई लड़का बदचलन अथवा फिजूलखर्च हो तो ऐसा प्रबंध करे कि जिससे उसके हाथमें एकदम रुपया न आ जाय । नहीं तो वह सबका सब चंद ही दिनोंमें बर्बाद कर डालेगा । किसी बैंकमें अथवा और किसी जगह उसके नामके रुपयेको जमा कर दे कि जिससे साधारण खर्चेके लिए सूद मात्र मिलता रहे । परंतु स्मरण रहे कि बदचलन और फिजूल-खर्च लड़केके लिए यह भी आवश्यकता नहीं कि रुपया जमा ही किया जाय । ऐसे पुत्रकी सहायता करना पिताका कर्त्तव्य नहीं है । उसे अपनी करनीका फल चखने दो । तुम उसकी बदनामीसे मत डरो । यदि वह बुरे काम करेगा तो अवश्य बदनाम होगा । तुम अपना काम किये जाओ । उसके बदनाम होनेसे तुम बदनाम नहीं हो सकते । झूठी बदनामीके भयसे उसे तुम रुपया देकर और जियादा खराब करते हो और रुपयेको बरबाद करते हो ।

छट्ठा अध्याय।

नागरिक शब्दसे यहाँ मतलब केवल किसी शहर या नगरके निवासियोंसे ही नहीं है; किंतु एक सभ्य समाजके सभासद और जातिके सदस्य भी नागरिक कहला सकते हैं। इस देशमें एक समय वह था कि जब जाति या समाजका नाम भी लोगोंको मालूम न था। प्रकृतिदेवीके शासनमें प्रत्येक मनुष्य स्वच्छंदतासे रहता था। यह वस्तु मेरी है, वह भूमि मेरी है, मैं इसका स्वामी हूँ, वह मेरे अधीन है, इन बातोंका सर्वथा अभाव था। प्रकृतिकी जल, भूमि, वायु और वनस्पति पर किसी एक व्यक्तिका अधिकार नहीं था। जो जितना बलवान् होता था अपने बलसे उतना ले लेता था। कोई किसीकी फर्याद सुननेवाला नहीं था। प्रत्येक मनुष्यको अपनी रक्षा आप करनी पड़ती थी और प्रत्येक मनुष्य प्राकृतिक पदार्थोंसे लाभ भी आप उठाता था। न कोई किसीका रक्षक था और न कोई किसीका सहायक। न किसीको किसी राज्यका भय था और न कोई किसीके प्रति अपना कुछ कर्त्तव्य समझता था। हरएक आदमी स्वतंत्रतासे चाहे जहाँ जा सकता था और चाहे जो काम कर सकता था। कोई रोक-टोक अथवा नियम-व्यवस्था नहीं थी। परन्तु धीरे धीरे इस अवस्थामें परिवर्तन होता गया और कुछ कालके बाद लोगोंने मिलकर कुछ कानून बनाये। प्रत्येक मनुष्यको उसकी योग्यताके अनुसार भूमि दी गई और उस भूमि पर उसे पूर्ण अधिकार दिया गया, तथा आपत्तिके समय उसकी रक्षा करनेका भार लोगोंने अपने ऊपर लिया। इसके बदलेमें उसे कुछ कानूनोंके अधीन होना पड़ा। अर्थात् लोगोंने मिलकर एक सभा या जाति स्थापित की और उसके कुछ नियम या कानून बनाये। उन कानूनोंको माननेवाला और उन नियमोंपर चलने-

वाला मनुष्य उस सभाका सदस्य ठहराया गया। जहाँ प्रत्येक सदस्यको कुछ अधिकार दिये गये वहाँ कुछ कर्त्तव्योंका पालन करना भी उसके लिए आवश्यक समझा गया। अबतक लोग मनमाना करते थे, जिसकी लाठी उसकी भैंस थी, परंतु अब सबको कानूनके अधीन होना पड़ा। जितनी जिसकी योग्यता थी उसको मिलीं। प्रबलोंका निर्बलों पर अत्याचार होना बंद हुआ, सबको आनंदसे जीवन व्यतीत करने और एक दूसरेके सुख-दुःखमें साथ देनेका अवसर मिला।

वास्तवमें जाति या समाजके प्रादुर्भाव होनेके मुख्य कारण दो हैं। एक तो यह कि संसारमें सुखपूर्वक रहनेके लिए मनुष्यको समाज या सोसाइटीकी जरूरत है। अकेला मनुष्य कुछ काम नहीं कर सकता। हमें जितनी चीजोंकी जरूरत होती है, उन सबको हम अकेले नहीं बना सकते। उनमें हमें दूसरोंकी अवश्य सहायता लेनी पड़ती है और सहायता तभी मिल सकती है, जब हममें और दूसरे मनुष्यमें कोई किसी प्रकारका सम्बंध हो। सम्बंध हो जानेपर एकको दूसरेके प्रति कुछ कर्त्तव्य बजाने होते हैं। एकको दूसरेकी हितकी चिंता करनी पड़ती है। दूसरा कारण समाजके प्रादुर्भावका यह है कि समाजके अस्तित्वके बिना सब मनुष्योंको सुख नहीं मिल सकता। केवल वे ही लोग सुख भोग सकते हैं जो प्रबल होते हैं। निर्बलोंका कोई सहायक नहीं होता। परंतु समाजके होनेपर प्रबल, निर्बल सब नियमोंके अधीन रहते हुए समान सुख भोग सकते हैं। जनताको लाभ पहुँचाना और सर्वसाधारणके हितकी रक्षा करना समाजका मुख्योद्देश्य होता है। जिस समय समाज अपने उद्देश्यसे गिर जाता है, केवल श्रीमानों और बलवानोंकी चिंतामें लगकर जनताको भुला देता है उसी समय समाजका संगठन टूट जाता है, नियम और कानून बेकार हो जाते हैं और फिरसे प्रकृतिका शासन होने लगता है। जाति, समाज अथवा राज्य उसी समय तक स्थिर रहते हैं जब तक उनके

सदस्योंके कर्त्तव्यों और अधिकारों दोनोंपर ध्यान दिया जाता है। अधिकार और कर्त्तव्य दोनोंका परस्पर सम्बन्ध है। यह नहीं हो सकता कि किसी मनुष्यको अधिकार तो कुछ न हो; परंतु कर्त्तव्योंका उसे पालन करना पड़ता हो। कर्त्तव्योंका पालन करना अधिकारों पर है। पहले मनुष्यको अपने अधिकार देखना चाहिए, पीछे उसे कर्त्तव्योंके पालन करनेकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। पहले सौदा ले लिया जाता है, पीछे मूल्य दिया जाता है।

अतएव नागरिकोंका पहला कर्त्तव्य यह है कि वे अपने अधिकारोंको सुरक्षित रक्खें। राज्य और समाजमें हमारे अधिक अधिकार हैं, जैसे अपने जीवन और धनकी रक्षासे लाभ उठाना, अपनी मानसिक और शारीरिक शक्तियोंको शांतरूपसे उपयोगमें लाना तथा जिन नियमोंसे हम पर शासन किया जाता है उनके वनानेमें योग देना। यह अधिकार सवसे वड़ा है और इसीके आधारपर सभा, समाज अथवा राज्यकी नींव स्थिर होती है। इसके बिना कोई भी व्यक्ति प्राकृतिक सुखको छोड़कर सभा अथवा समाजमें प्रविष्ट होनेको तैयार नहीं है। सभा अथवा समाज उसके सदस्योंके लाभके लिए हैं। कुछ व्यक्तियोंने मिलकर ही उन्हें सबके लाभके लिए वनाया है। उनके नियम-कानून सबकी रायसे वनाये जाते हैं। यदि उनमें सबकी राय नहीं ली जाती तो वे समाज कदापि नहीं चल सकते। यही हाल राज्यका है। राज्य भी वही स्थिर रह सकता है, जिसके कानून लोगोंकी रायसे वनाये जाते हैं।

अब प्रश्न यह है कि यदि किसी नगरमें अथवा राज्यमें हजार दो हजार आदमी हों तो सबको बुलाकर राय ली जा सकती है, परंतु यदि दस वीस लाख अथवा लाख दो लाख ही हों तो सबको बुलाकर राय लेना किस तरह सम्भव है? इसका उपाय यह है कि हरएक प्रांत

अथवा हरएक जिले अथवा हरएक शहरके आदमी अपने यहाँके योग्य पुरुषोंको प्रतिनिधि चुन लेते हैं और उनको अपनी तरफसे सर्व अधिकार दे देते हैं। हमारी सरकार भी व्यवस्थापक सभाओंके लिए लोगोंको अपने प्रतिनिधि चुननेका अवसर देती है। म्युनिसिपल बोर्डोंमें लोगोंको मेम्बर (म्युनिसिपल कमिश्नर) चुननेका अधिकार होता है। परंतु मूल ग्रंथके लेखक काबेट साहब यहाँ पर इस बातपर जोर देते हैं कि प्रायः उन्हीं लोगोंको अपनी ओरसे अपने नगर अथवा मोहल्लेका प्रतिनिधि चुननेका अधिकार होता है जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती है, जिनके पास कुछ जायदाद होती है अथवा जिनकी आमदनी अच्छी होती है । यह ठीक नहीं है । जब मेम्बरों द्वारा बनाये हुए कानून अमीर गरीब सब पर लागू होते हैं, जब सब राज्यकी समान प्रजा है, सब नगरके समान नागारिक हैं तब कोई कारण नहीं कि सब लोगोंकी राय न ली जाय। हाँ, वे आदमी जिनका चालचलन अच्छा नहीं, जिनका दिमाग ठीक नहीं, जो अभी बच्चे हैं उनकी रायकी जरूरत नहीं। स्त्रियोंकी भी रायकी जरूरत नहीं, कारण कि उनके पुरुष उनकी ओरसे प्रतिनिधिस्वरूप हैं। परंतु औरोंकी सबकी रायकी जरूरत है। सबको अपने प्रतिनिधि चुननेका अधिकार मिलना चाहिए। गरीबी अमीरीका सवाल इसमें नहीं होना चाहिए। सच पूछो तो गरीब लोग जरूरतके समय राज्यके अधिक काममें आते हैं । युद्धके समय प्रायः गरीब लोग ही रणभूमिमें जाकर राज्यके लिए अपने प्राण न्योंछावर करते हैं। गरीब होना पाप नहीं है । बाइबिलमें लिखा है कि गरीबोंकी निंदा मत करो, उन्हें घृणासे मत देखो । इसमें संदेह नहीं कि अनेक आदमी सुस्ती, बदमाशी, शराबखोरी, जुए और फिजूलखर्चीसे गरीब हो जाते हैं; परंतु अधिकतर शारीरिक व्याधियों और अन्य आपत्तियोंके कारण होते हैं । गरीबीकी मुसीबत उनपर पहलेसे

है, उसपर उन्हें इस बातसे भी वंचित कर देना कि वे अपने हितकी रक्षाके लिए अपना प्रतिनिधि चुन सकें, कहाँतक न्याययुक्त है, यह पाठक स्वयं समझ सकते हैं। अतएव देशहितैषियों और बुद्धिमानोंको उचित है कि वे इस बातपर जोर दें कि गरीबोंको भी अमीरोंकी भाँति राय देनेका अधिकार दिया जाय। अमीरोंके पक्षका समर्थन करनेवाले बहुत अधिक हैं; परंतु गरीबोंके दुःखोंकी चिंता करनेवाले बहुत कम हैं। गरीबी कोई नवीन या असाधारण बात नहीं है। सदासे गरीबी रही है और सदा रहेगी। धर्म-ग्रंथोंमें लिखा है कि दुनियामेंसे गरीबोंका कभी अंत न होगा। जब तक दुनिया है, गरीब लोग रहेंगे। प्रकृति और अनुभवसे भी यही बात सिद्ध होती है। गरीबीकी गिरीसे गिरी हालत भी समाजके लिए लाभदायक है। सत्य, शील, संयम, श्रम, मितव्ययता तथा सदाचारके अभ्यासमें दो उद्देश्य हुआ करते हैं। एक यह कि धन और प्रतिष्ठा प्राप्त हो, दूसरा यह कि निर्धनतासे बचे रहें। इनमें दूसरा उद्देश्य प्रबल होता है। इसलिए हमें उचित है कि हम उन बेचारे गरीब लोगोंको दया और करुणाकी दृष्टिसे देखें और उनके साथ यथाशक्ति सहानुभूति प्रकट करें, जिनकी दुःखमय अवस्थासे हम भयभीत होकर निर्धनतासे बचना चाहते हैं। हम लोगोंको जो हाथसे श्रम नहीं करते हैं उन लोगोंके कृतज्ञ होना चाहिए जो हाथसे काम करते हैं। हम जो कुछ खाते, पीते और पहनते हैं वह सब उन्हींकी बदौलत। फिर क्या हमें ऐसा कृतघ्न होना चाहिए कि उनके हितकी रक्षाका ध्यान बिल्कुल भुला दें और उन्हें गुलामके सदृश बना दें? जिन नियमों और कानूनोंसे लोगोंपर शासन किया जाता है, यदि उनके बनानेमें उनको कुछ अधिकार नहीं है तो उनका जीवन गुलामोंके जीवनके सदृश है। अभिप्राय यह कि प्रत्येक मनुष्यको प्रतिनिधिद्वारा अपने देश, नगर और समाजके कानून बनानेका अधिकार होना

चाहिए। इस अधिकारको प्राप्त करके फिर उसे अपने कर्त्तव्यका पालन करना चाहिए। कर्त्तव्योंका पालन करते हुए उसे युक्ति और नीतिपर सदैव ध्यान रखना चाहिए। बहुतसे काम ऐसे होते हैं जिनमें सफलता जल्दी नहीं होती। उनमें जल्दी करना भूल है। ऐसे कामोंके लिए निरंतर उद्योग करते रहना चाहिए। यदि उद्योग करते करते प्राणांत हो जाय तो भी कोई चिंता नहीं।

उत्तम और उपयोगी नागरिकोंके लिए दो गुणोंकी अत्यंत आवश्यकता है—१ साहस और २ संतोष। जब मनुष्यको चिरकालकी पड़ी हुई बुराइयोंसे सामना करना पड़ता है, तब बड़े साहस और संतोषकी जरूरत होती है। एकदम बुराई दूर नहीं हो सकती। धीरे धीरे संतोषके साथ उद्योग किये जाओ और उन सब कारणोंको दूर करते जाओ जिनसे वे पैदा हुई हैं, तब कहीं जाकर सफलता होगी। इस विषयमें असंतोष बड़ा हानिकर है। जिन लोगोंको एक बारगी सफलता नहीं होती, और जो निराश होकर अपने साथियोंको कायरताका दोष लगाने लगते हैं, वे असलमें सच्चे देशहितैषी नहीं हैं। वे दूसरोंको व्यर्थमें कायर कहते हैं। असलमें वे स्वयं कायर हैं। उनमें स्वार्थ भरा हुआ है और उन्हें नामकी चाह है। जो लोग नामकी चाह न रखते हुए निःस्वार्थ भावसे देश या समाजकी सेवा करते हैं, उन्हें उद्योग करनेमें आनंद होता है। वे अपना कर्त्तव्यपालन किये जाते हैं। उन्हें इस बातकी अभिलाषा अवश्य होती है कि सफलता शीघ्र हो जाय। परंतु यदि शीघ्रता नहीं होती, तो वे निराश नहीं होते, साहस नहीं छोड़ते, दूसरोंको दोष नहीं देते, किंतु उत्तरोत्तर अधिक उद्योग करते जाते हैं। उन्हें विश्वास रहता है कि सफलता एक दिन अवश्य होगी। यदि हमारे भाग्यमें उसे देखना नहीं लिखा है, तो हमारी संतान अवश्य देखेगी।

एक बार एक आदमी जिसकी उम्र ८० वर्षकी थी एक सुपारीका वृक्ष लगा रहा था। उसे देखकर कुछ जवान लड़कोंने उसका बड़ा हास्य

किया और उससे कहा कि तुम कैसे मूर्ख हो जो इस उमरमें ऐसा देरमें फल देनेवाला वृक्ष लगा रहे हो। क्या तुम्हें उस समय तक अपने जीनेकी आशा है? बूढ़ने जवाव दिया—ऐ वच्चो! मैं इस वृक्षके लगानेमें ही संतुष्ट हूँ। मुझे इस वातकी चिन्ता नहीं कि इसके फलसे मैं लाभ उठाऊँगा अथवा कोई दूसरा उठावेगा। यदि मैं नहीं, तो मेरे वच्चे इसके फलको खायँगे। ठीक ऐसा ही विचार देशहितैषियोंका होना चाहिए। उनमें देशकी सेवा करते हुए स्वार्थकी गंध भी नहीं होनी चाहिए। देशहित और समाजहित वस इसीकी धुन उन्हें सर्वदा रहनी चाहिए। चाहे देशहितैषीको स्वयं कष्ट सहना पड़ें, आपत्तियाँ उठानी पड़ें, परंतु जवतक उसका स्वास चलता है वह अपने देशके मुख पर कालिमा नहीं लगने देगा। चाहे मेरा मुँह काला हो जाय, परंतु मेरी जननी जन्मभूमिका मुख उज्ज्वल हो, उसकी कीर्ति दिग्दिगन्तमें व्याप्त हो, मरते दम तक उसकी यही भावना रहेगी।

अतएव प्यारे नागरिको, तुम्हारा परम कर्त्तव्य है कि तुम किसी समय भी अपने मनमें स्वार्थवासना और असंतोषको न आने दो। संसारमें जितने मनुष्य हैं उन सवकी शक्ति, वुद्धि और योग्यतामें भिन्नता है। एक एकसे अधिक गुणी है। एक एक एकसे अधिक परिश्रमी है। यदि कोई मनुष्य तुमसे पदमें, प्रतिष्ठामें, धनमें, सम्पदामें, वुद्धिमें योग्यतामें वढ़ा हुआ है तो तुमको उससे ईर्ष्या करनेकी जरूरत नहीं है और यदि कोई मनुष्य तुमसे इन सव वातोंमें कम हो, तो उससे घृणा करनेकी जरूरत नहीं है। हमें आशा है, तुम ऐसे विचारोंको अपने मनमें स्थान तक भी न दोगे। सार्वजनिक कार्योंमें चाहे तुम्हारा दर्जा औरोंकी अपेक्षा वहुत नीचा हो, तो भी तुम प्रेम और उत्साहसे काम करोगे और उन लोगोंकी शक्तिभर सहायता करोगे जो चाहे किसी भी कारणसे अगुआ अथवा नेता वने हुए हैं। तुम स्वयं अपनेको वुद्धि और योग्यतामें उच्च समझकर ऐसा काम न कर वैठो, जो देशके लिए हानिकर

हो । याद रक्खो जिस देशमें तुमने जन्म लिया है, जिसके जलवायुसे पलकर तुम इतने बड़े हुए हो, उसके हितके वास्ते यदि लोग तुम्हें बुरा कहें, तुम्हारी निंदा करें, तो भी सहनशीलतासे तुम सब कुछ सहन कर लो । ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसके हृदयमें स्वदेशप्रेम न हो । प्रकृति माताने इसे प्रत्येक मनुष्यके हृदयमें उत्पन्न किया है । सौभाग्यसे हम ऐसे देशमें उत्पन्न हुए हैं जिसका हमें पूर्ण अभिमान है । यही वह देश है जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम महाराजा श्रीरामचन्द्रजी उत्पन्न हुए और यही वह देश है जिसमें माता जगदम्बा जानकीजीने जन्म लिया । यही वह देश है जिसमें ऐसे ऐसे महापुरुषोंने अवतार लिया कि—

" लक्ष्मी नहीं, सर्वस्व जावे सत्य छोड़ेंगे नहीं;
अंधे बनें पर सत्यसे सम्बंध तोड़ेंगे नहीं ।
निज सुत-मरण स्वीकार है पर वचनकी रक्षा रहे,
है कौन जो उन पूर्वजोंके शीलकी सीमा कहे ॥
आमिष दिया अपना जिन्होंने श्येन-भक्षणके लिए,
जो बिक गये चाण्डालके घर सत्य-रक्षणके लिए ।
दे दीं जिन्होंने अस्थियाँ परमार्थ-हित जानी जहाँ,
शिवि, हरिश्चंद्र, दधीचिसे होते रहे दानी कहाँ ? ॥
सत्पुत्र पुरुसे थे जिन्होंने तात-हित सब कुछ सहा,
भाई भरतसे थे जिन्होंने राज्य भी त्यागा अहा ।
जो धीरताके, वीरताके प्रौढ़तम पालक हुए,
प्रह्लाद, ध्रुव, कुश, लव तथा अभिमन्यु-सम बालक हुए ॥
वह भीष्मका इन्द्रिय-दमन उनकी धरासी धीरता,
वह शील उनका और उनकी वीरता, गम्भीरता ।
उनकी सरलता और उनकी वह विशाल विवेकता,
है एक जनके अनुकरणमें सब गुणोंकी एकता ॥ "

—भारतभारती ।

भारतमें केवल महापुरुष ही उत्पन्न नहीं हुए, किन्तु यहाँ पर एक समय जितना विद्याका प्रकाश था और जितना साहित्यका प्रचार था उतना संसारमें कहीं भी नहीं हुआ।

" जिसकी प्रभाके सामने रवि-तेज भी फीका पड़ा॥
अध्यात्मविद्याका यहाँ आलोक फैला था बड़ा।
मानस-कमल सबके यहाँ दिन रात रहते थे खिले,
मानो सभी जन ईशकी ज्योतिच्छटामें थे मिले॥
हम वेद, वाकोवाक्यविद्या, ब्रह्मविद्या-विज्ञ थे,
नक्षत्रविद्या, क्षत्रविद्या, भूतविद्याऽभिज्ञ थे,
निधि-नीति-विद्या, राशि-विद्या, पित्र्यविद्यामें बढ़े।
सर्पादि-विद्या, देवविद्या, दैवविद्या, थे पढ़े॥
आये नहीं थे स्वप्नमें भी जो किसीके ध्यानमें,
वे प्रश्न पहले हल हुए थे एक हिन्दुस्तानमें।
सिद्धांत मानव-जातिके जो विश्वमें वितिरत हुए
बस भारतीय तपोवनोंमें थे प्रथम निश्चित हुए॥"

—भारतभारती।

भारतवर्षसे ही प्राचीन कालमें सम्पूर्ण संसारमें ज्ञान फैला था और यहीं पर संसारके भिन्न भिन्न देशोंसे लोग ज्ञानप्राप्तिके लिए आये थे।

" फैला यहींसे ज्ञानका आलोक सब संसारमें,
जागी यहीं थी जग-रही जो ज्योति अब संसारमें।

—भारतभारती।

शिल्पकला-कौशल्य तथा वीरता शूरतामें हम संसारमें सबसे बढ़े हुए थे। अतः भारतवासियो, भारतमाताकी संतान कहलानेवालो, अपने देशका प्राचीन गौरव सुरक्षित रखनेके लिए, उसमें गुण ज्ञानका प्रचार करनेके लिए शक्तिभर प्रयत्न करो।

भारतभूमि स्वर्गभूमि है। इस गये गुजरे जमानेमें भी यदि उसे स्वर्ण-भूमि कहें तो अनुचित नहीं। यद्यपि इसकी छाती पर बीसों बा-

आक्रमण हुए, इसके स्वर्णभण्डारोंको लूट-खसोटकर खाली कर दिया गया, परंतु लक्ष्मीदेवीके अनुग्रहसे शत्रुको देशसे जाते देर लगी; परंतु इसके भण्डारोंके फिरसे भरनेमें देर नहीं लगी। इसकी प्रशंसामें कविवर मैथिलीशरणजीने कहा है कि—

ब्राह्मी-स्वरूपा जन्मदात्री, ज्ञानगौरव-शालिनी
प्रत्यक्ष लक्ष्मीरूपिणी, धन-धान्य-पूर्णा पालिनी।
दुर्द्धर्ष रुद्राणी-स्वरूपा, शत्रु-सृष्टि-लयङ्करी,
यह भूमि भारतवर्षकी है भूरिभागोंसे भरी॥

अंतमें हम इस पुस्तकको मूल ग्रंथकारके इन शब्दोंपर समाप्त करते हैं कि जीवनके लिए स्वास्थ्यकी आवश्यकता है। स्वास्थ्यके लिए सबेरे उठना, व्यायाम करना, शील और संयमसे रहना उचित है। दुःख सुखका मनसे सम्बंध है। मनुष्यके शरीरमें यदि कोई वस्तु जीवित है तो मन है।

अतएव जीवनको घंटों, दिनों और वर्षोंकी कमीबेशीसे नहीं, किंतु उत्तम और आवश्यक विचारोंकी वृद्धिसे कम जियादा समझना चाहिए। किसी आदमीको उसकी दौलत देखकर, अथवा उसे किसी बड़े पदपर प्रतिष्ठित देखकर बड़ा मत समझो। तुम नेकी और भलाईकी कदर करो, चाहे वह कहीं पर और किसीमें हो। गुणीको पहचानो और उसका आदर करो—चाहे वह शूद्र हो या ब्राह्मण। यदि वह अपने गुणको सत्य और न्यायके लिए तथा निर्बलोंको प्रबलोंके अत्याचारोंसे बचानेके लिए उपयोगमें लाता है तो उसे देवताके सदृश समझो, उसकी शुद्ध अन्तःकरणसे पूजा करो। प्रियपाठको, क़ाबेट साहब कहते हैं कि मेरी यही अंतिम प्रार्थना है कि सदा सत्यमार्गका ग्रहण करो, संयमी और परिश्रमी बनो और प्रसन्न रहो। मुझे आशा है कि यदि तुम इन बातों-पर ध्यान दोगे तो जीवनपर्यंत सुखी रहोगे।

चुने हुए उपयोगी उपदेश।

उन लोगोंको ईर्ष्यासे मत देखो, जो तुमसे बढ़े हुए हैं। बड़ी बड़ी पदवियाँ, विशाल इमारतें, सुन्दर बाग बगीचे, सुनहले रुपहले रथ, बड़े बड़े हाथी घोड़े ये सब क्या हैं? ये किसको लुभाते हैं? क्या उसको जिसके पास मौजूद हैं? नहीं, किंतु उसको जिसके पास नहीं हैं। जिसके ये चीजे हैं, जो इनको नित्य प्रति काममें लाता है उसके लिए ये सस्ती और साधारण चीजें हैं। इनके कारण उसे किसी प्रकारका विशेष आनन्द नहीं होता। जैसा कुछ भाव उस मनुष्यका होता है जिसके पास इतने बहुमूल्य पदार्थ नहीं है वैसा ही भाव उसका होता है। जैसी बेपरवाईसे हम और आप अपने अपने झोपड़ोंमें चले जाते हैं वैसी ही बेपरवाईसे वह अपनी कोठियों और महलोंमें जाता है। उनमें जो नक्काशी और चित्रकारीका काम हो रहा है अथवा वहाँ जो बढ़िया बढ़िया सामान रक्खा हुआ है उसकी तरफ उसका ध्यान भी नहीं जाता। यह ठीक ही है। इन चीजोंकी तरफ क्या ध्यान जायगा जब मनुष्योंकी दृष्टि उन पदार्थों पर भी नहीं पड़ती जो सुन्दरतामें अपना सानी नहीं रखते। इस जगतसे बढ़कर, सूर्य चन्द्रमा और तारागणसे बढ़कर, क्या कोई चीज सुन्दर, मनोहर और विशाल हो सकती है? कदापि नहीं। फिर बतलाइए कितने मनुष्योंकी दृष्टि इनपर पड़ती है और कितने इन पर विचार करते हैं? —**एडीसन।**

* * * * *

तुम्हारा जीवन चाहे कितना ही छोटा और नीचा क्यों न हो तुम्हें चाहिए कि उसका स्वागत करो और उसे आनन्दपूर्व्वक व्यतीत करो। उससे दूर मत हटो, उसे बुरा मत समझो और उसकी निन्दा मत करो। वह इतना बुरा नहीं है, जितने तुम हो। जब तुम बहुत धनी होते हो तब यह बहुत निर्धन मालूम होता है। दोष निकालनेवाले

स्वर्गमें भी न मानेंगे। वे वहाँ भी दोष निकालते ही रहेंगे। अपने जीवनसे प्रेम करो, चाहे वह कितना ही तुच्छ हो। गरीबसे गरीब घरमें भी तुम्हें कुछ घंटे आनन्ददायक मिलेंगे। प्रकृतिकी सुन्दरतासे अमीर, गरीब दोनों एकसा लाभ और आनन्द उठा सकते हैं। सूर्य्यास्तकी सुन्दरता जैसी गरीबोंके झोपड़ोंमें मालूम होती है वैसी ही अमीरोंके महलोंमें भी मालूम होती है। संतोषी आदमीको झोपड़ोंमें भी वैसा ही आनन्द मिलता है, जैसा महलोंमें। —**थारो।**

* * * * *

मनुष्यके जीवनमें मुख्य चीज उसका चरित्र है। चरित्रसे बढ़कर कोई भी बहुमुल्य चीज नहीं है। जीवनकी सफलता असफलता एक मात्र चरित्र पर निर्भर है। चरित्रसे ही मनुष्यकी प्रतिष्ठा है। धनमें उतनी शक्ति नहीं, जितनी चरित्रमें है। चरित्रका प्रभाव अद्भुत है। जैसे सूर्यका प्रकाश छोटे छोटे छेदोंमेंसे दृष्टिगोचर होता है, वैसे ही छोटी छोटी बातोंसे मनुष्यके चरित्रका अनुमान किया जा सकता है। छोटे छोटे कामोंको अच्छी तरह करनेसे ही चरित्र निर्माण होता है और यह प्रति दिन होता रहता है। चरित्र-गठनके लिए किसी विशेष कार्य और विशेष समयकी आवश्यकता नहीं। किसी मनुष्यके चरित्रकी सबसे अच्छी पहिचान यह है कि, वह दूसरोंके साथ किस तरह व्यवहार करता है। यदि वह उन्हें आदर और प्रेमकी दृष्टिसे देखता है, उनके साथ यथायोग्य व्यवहार करता है तो समझना चाहिए कि वह अपने चरित्रको सुधार रहा है। दूसरोंके साथ व्यवहार करनेसे दूसरोंको भी हर्ष होता है और स्वयं अपनेको भी; इसमें कुछ खर्च भी नहीं होता। —**स्माइल्स।**

* * * * *

मनुष्यको बहुतसा दुःख इस कारण होता है कि वह प्रायः सदा इसी बातकी चिन्तामें रहता है कि लोग मेरे विषयमें क्या कहते हैं। यह फिजूलका ख्याल है। इस ख्यालमें पागल बने रहना मूर्खता है। जरा

सोचो तो कि तुम्हारे कामोंका जो कुछ वे कहते हैं उससे कुछ सम्बंध भी है या नहीं। इसके अतिरिक्त यह भी निश्चय नहीं है कि वे तुम्हारे विषयमें कुछ कहेंगे भी या नहीं। कितने आदमी यह ख्याल करते रहते हैं कि हमारे कामोंको दुनिया देख रही है, परंतु उन्हें देखता कोई नहीं। वे सोचते हैं कि हरएक राहगीरकी हम पर दृष्टि पड़ती है, परन्तु यह केवल ख्याल है।

अस्तु, मान लो कि यह ख्याल नहीं किंतु सत्य है, वास्तवमें लोग तुम्हारे विचारों और कार्योंकी झूठी निन्दा करते हैं और तुम्हारे विषयमें अनुचित सम्मति रखते हैं; परन्तु इससे क्या ? किसीने ठीक कहा है कि दूसरेके बुरा कहनेसे तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगड़ता। यदि तुम वास्तवमें निर्दोषी हो तो दूसरोंकी कड़ी समालोचनासे तुम्हें उतना ही दुःख होना चाहिए जितना कि तुम्हें उस समय होता। जब किसी ऐसे मनुष्यकी वही समालोचना की जाती जिससे तुम तनिक भी परिचित नहीं हो, अर्थात् तुम्हें रंच मात्र भी दुःख नहीं होना चाहिए। —हेल्प्स।

* * * * *

जो चीज अच्छीसे अच्छी तुम्हारे पास हो उसे दुनियाको दे दो; उसके बदलेमें तुम्हें अच्छी चीज अपने आप मिलेगी। किसी चीजको छिपाकर मत रक्खो। यदि कोई चीज तुम्हारे पास ऐसी है जो तुम दुनियाको बाँट सकते हो तो आज ही उसे दे डालो, प्रत्येक मनुष्यकी जहाँ तक सेवा कर सकते हो करो, यह न कहो कि मैं केवल इतना काम करूँगा, कारण कि मुझे उसके बदलेमें इतना मिलता है। इस विचारने बहुत मनुष्योंको जीवनपर्यन्त दुखी रक्खा है। यदि तुम अपनी उत्तमसे उत्तम वस्तुयें दूसरोंको देते रहोगे तो सदा प्रसन्न रहोगे। पब्लिककी सेवा करनेसे जो आनन्द आत्माको मिलता है उसके सदृश संसारके किसी भी काममें आनन्द नहीं है। जो मनुष्य पब्लिक सेवा करते हैं वे सदा आनन्दित रहते हैं। इसमें संदेह नहीं कि पब्लिक-

सेवामें अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है, स्वार्थकी आहुति देनी पड़ती है, अभिमानको चूर करना होता है, क्रोधको शान्त करना होता है, इच्छाओंको रोकना होता है, इन्द्रियोंको दमन करना होता है, अपनेको तुच्छ सेवक और दूसरोंको उच्च और स्वामी समझना होता है; परन्तु आनन्दप्राप्तिके लिए इन्हीं बातोंकी आवश्यकता है। जो मनुष्य इन बातोंको हर्षपूर्व्वक कर लेता है, जिसे इनके करनेमें तनिक भी संकोच या लज्जा नहीं होती वह आनन्दका अनुभव करने लगता है; परन्तु जब तक मनुष्य इन बातोंसे हिचकिचाता है— इनको करनेमें संकोच करता है, वह आनंदसे वंचित रहता है।

* * * * *

बुरी बातोंको भूल जाना चाहिए। हम कई कई दिन इसलिए दुखी रहते हैं कि किसी बुरी बातका स्मरण करते रहते हैं। यदि सारी दुनिया तुम्हें बुरा कहती है तो कहने दो; इससे कोई हानि नहीं होती। तुम्हारे अपने ही विचार और अपने ही शब्द तुम्हारे दुःखका कारण होते हैं। यदि लोग तुम्हारा समुचित आदर नहीं करते तो तुम कुछ परवा मत करो, उनकी भूलको भूल जाओ और अपने पथ पर जमे रहो।

व्यर्थकी बातें सोचते रह कर अपने समयको नष्ट मत करो। तुम्हारी स्मरणशक्ति अच्छी चीजोंके स्मरण करनेके लिए है, न कि बुरी चीजोंके। जिन लोगोंसे तुम्हें दुःख पहुँचे, यदि तुम उन्हें माफ़ कर दो तो तुम्हें बड़ा आनन्द होगा। आनन्द तभी तक नहीं होता, जबतक तुम उन्हें क्षमा नहीं करते। कारण उस समय तक तुम्हारे मनमें बार बार वही विचार आया करता है, पर जब तुम उन्हें क्षमा कर दोगे तब वह विचार ही जो दुःखका कारण था निकल जायगा।

* * * * *

केवल अच्छे विचारोंके ग्रहण करनेके लिए अपने मनको खुला रक्खो। दुनिया विचारोंसे भरा हुई है, परन्तु तुम्हारे पास वे ही विचार

आवेंगे, जिनको तुम बुलाओगे। विचारोंसे बढ़कर कोई वस्तु जीवन-पर असर नहीं डाल सकती और जब हरएक वस्तुके विषयमें अच्छे विचार पैदा होंगे तो जीवनमें महान् परिवर्तन हो जायगा और आनन्दका अनुभव होने लगेगा।

* * * * *

सदा आदर्शकी जोहमें रहो। हर एक जगह उसे ढूँढ़नेका उद्योग करो। आदर्श पुरुषोंकी संगतिमें रहो। साधारण मनुष्योंकी संगतिमें समय नष्ट करनेके लिए हमारे पास समय नहीं है। जब हम उत्तम वस्तुको चाहते हैं और उसके योग्य बनना चाहते हैं तो हमें चाहिए कि हम मन, वचन, कायसे उसके लिए शक्तिभर उद्योग करें मन-शरीर और आत्मा तीनोंकी उन्नति करें।

* * * * *

मीठी वाणी भी आनन्ददायक है। प्रत्येक विचार और प्रत्येक शब्द जो तुम्हारे मुँहसे निकलता है वह लौटकर वापिस नहीं आता है। अतः कोई ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए जिससे दूसरोंको कष्ट या दुःख हो। कारण प्रकृतिके नियमानुसार वह तुम्हें ही वापिस मिलेगा। खोटा वचन खोटे रुपयेके सदृश है। जिसको तुम दोगे वही तुमको लौटा देगा। प्रत्येक मनुष्यके विषयमें तुम अच्छी बातें कह सकते हो। इससे हरएक सुननेवालेको खुशी होगी। दूसरोंके केवल गुणोंको देखो। हर एकसे प्रसन्नचित्त होकर बातचीत करो, तुम्हें कभी दुःख उठाना नहीं पड़ेगा और जिस दिनसे यह आदत डालोगे तुम्हें आनन्दका रस आने लगेगा।

* * * * *

आज कल जेंटिलमेन (सभ्य पुरुष) बहुत ही साधारण शब्द हो गया है; परन्तु जेंटिलमेन असलमें हैं बहुत कम। जेंटिलमेनके लिए बाहरी बातोंकी जरूरत नहीं है। अच्छे अच्छे कपड़ों और बड़े बड़े

बंगले, कोठियोंकी भी जरूरत नहीं है । असलमें जेंटिलमेन वह है जिसके विचार उदार हैं, उद्देश्य उच्च हैं, सत्य पर जिसका अटल विश्वास है और सत्य ही जिसके जीवनका आधार है, जिसकी आवश्यकतायें बहुत थोड़ी हैं, जिसकी बड़े और छोटे, अमीर-गरीब सबके साथ समान सहानुभूति है और जिसको अभिमान छूकर भी नहीं गया ।

* * * * *

आज हमें अपने विचार प्रकट करने चाहिए और आनेवाले दूसरे दिन उनपर विशेष रूपसे प्रकाश पड़ने पर यदि उनमें भ्रम मालूम हो तो उन्हें बदल देना चाहिए ।

* * * * *

दूसरोंकी आलोचनाओं, दूसरोंके मतों और दूसरोंके विचारों पर आधार रखनेवाले मनुष्योंको कभी कोई लाभ नहीं होता । ऐनिंग साहब एक जगह लिखते हैं—"जो मनुष्य यह सोचकर कि लोग मेरी आलोचना करेंगे—अपनी आन्तरिक उच्च भावनाओंको दबा देता है और दूसरे मनुष्योंके साथ हिल-मिलकर रहनेका योग्यायोग्यके विचार विना प्रयत्न करता है; उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और चरित्र हल्का—नीच हो जाता है ।"

* * * * *

सुख-शान्तिवर्धक नियम ।

१ हमको प्रतिदिन आपत्तियाँ सहने और पग-पगपर निराश होनेके लिए तय्यार रहना चाहिए ।

२ संसारमें कोई भी मनुष्य पूर्ण नहीं है, अतएव बहुत अधिककी लालसा मत करो ।

३ प्रत्येक मनुष्यके स्वभावको देखो, कि जिससे तुम उनको अच्छी तरह समझ सको ।

४ यदि किसी पर दुःख या आपत्ति आ जाय तो उसके साथ सहानुभूति प्रकट करो, और यदि किसीकी उन्नति या बढ़ती होती हो, तो उसको देखकर हर्षित होओ।

५ यदि तुम्हें क्रोध आ रहा हो तो मौन धारण करो। क्रोधावस्थामें बोलना ठीक नहीं है।

६ दूसरोंको प्रसन्न करनेके लिए शक्तिभर उद्योग करो।

७ जीवनको निःसार मत समझो, किंतु हर्ष और आनन्दकी दृष्टिसे देखो।

८ अपनेसे बड़ोंके साथ आदरसे पेश आओ और छोटोंसे प्रेमके साथ व्यवहार करो।

९ नौकरोंके साथ धीरे और प्रेमके साथ बोलो।

१० किसीके अवगुण एकान्तमें देखो; लोगोंके सामने उसकी प्रशंसा करो।

११ प्रशंसा जब हो सके तब करो; परन्तु निन्दा उसी समय करो, जब उसकी अत्यंत आवश्यकता हो।

१२ मुलायम जवाबसे प्रायः क्रोध जाता रहता है।

१३ यदि वास्तवमें किसीने अपराध किया हो और तुम उस पर क्रोध करते हो, तो उस समय याद करो कि तुमने भी कभी अपराध किया होगा।

१४ हर्षमें पहिले दूसरोंका ख्याल रक्खो।

१५ दूसरोंकी प्रतिष्ठाका ख्याल रक्खो।

१६ जब हो सके दूसरोंके विषयमें अच्छे विचार रक्खो।

[उक्त सब उपदेश ‘ जैनहितैषी ’ मासिकपत्रसे उद्धृत किये गये हैं और इनमेंसे बहुतोंको स्वर्गीय बाबू दयाचन्दजीने ही लिखा था।]